॥ श्रीः ॥

चिकित्सा-चन्द्रोदय ।

छठा भाग ।

लेखक—

बाबू हरिदास वैद्य ।

प्रकाशक—

हरिदास एण्ड कम्पनी ।

१७ए, मदनमित्र लेन के 'ललित-प्रेस' में ललित

मोहन राय द्वारा मुद्रित ।

जनवरी, सन् १६२५ ई० ।

पहलीबार २५००

मूल्य—अजिल्दका ३॥)

विषय-सूची

छठाँ भाग

पहला अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क
खाँसी रोगका वर्णन	१
खाँसी किसे कहते हैं ?	१
खाँसीका विशेष सम्बन्ध किस अँगसे है ?	१
खाँसीके निदान कारण	२
हिकमतसे खाँसीके कारण	३
डाक्टरीसे खाँसीके कारण	४
खाँसीकी सम्प्राप्ति	४
हिकमतसे खाँसीका सम्प्राप्ति	५
वातज खाँसीके निदान कारण	८
वातज खाँसीके लक्षण	८
सूखी खाँसीपर हिकमतका मत	९
हूपिंग काफ—सूखी खाँसी	१०
पित्तज खाँसीके निदान-कारण	११
पित्तज खाँसीके लक्षण	११
पित्तकी खाँसीपर हिकमत	१२
कफज खाँसीके निदान	१३
कफज खाँसीके लक्षण	१३

विषय	पृष्ठाङ्क
क्षतज खाँसीकी सम्प्राप्ति	१५
क्षतज खाँसीके लक्षण	१६
हकीमी मत	१७
क्षयज खाँसीके निदान-कारण	१८
क्षयज खाँसीकी सम्प्राप्ति	१८
क्षयज खाँसीके लक्षण	१८
डाक्टरी मत	१६
होमियोपैथिक मत	२१
वात पित्तज खाँसीके लक्षण	२१
पित्त कफज खाँसीके लक्षण	२१
त्रिदोषज खाँसीके लक्षण	२२
कव्वेकी खाँसीके लक्षण	२२
नजलेकी खाँसीके लक्षण	२२
रोगोंमें खाँसी	२३
आमकी खाँसी	२४
खाँसीकी उपेक्षासे हानि	२४
साध्यासाध्यत्व	२५
हिकमतके मतसे खाँसीका वर्णन	२६
खाँसीकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें ...	३४
खाँसीमें पथ्यापथ्य	३७
खाँसीकी सामान्य चिकित्सा	४१
मरिचादि बटी	४१
लवङ्गादि गुटिका	४२
काससंहार बटी	४३
कासहर बटी	४३
हरीतक्यादि बटी	४४
अर्कादि बटी	४४
व्योषान्तिका बटी	४४
पथ्यादि बटी	४५
त्रिफलादि बटी	४५
चणकादि बटी	४५
हरिद्रादि बटी	४६
मधुयष्ठ्यादि बटी	४६
कत्थेकी गोलियाँ	४६
टंकादि बटी	४६
गुड़्च्यादि बटी	४७
कासहर मोदक	४७
कासान्तक गुटिका	४७
कणादि गुटी	४८
शृंगी बटी	४८
अमृतादि बटी	४८
कासान्तक बटी	४६
अकरकरादि बटी	४६
रसराज बटी	५०
कासगज केसरी बटी	५०
शिंगार अभ्रक	५१

विषय	पृष्ठाङ्क
पारेकी कजली	५३
कासलक्ष्मी-विलास बटी	५५
श्वास कुठार रस	५५
सम शर्कर लौह	५६
वृहत् शंगाराभ्र	५६
वसन्तराज रस	५७
वसन्त तिलक रस	५७
शृंग्यादि चूर्ण	५७
पिप्पल्यादि चूर्ण	५६
सम शर्कर चूण	५६
मरिचादि चूण	५६
तालीसादि चूर्ण	६०
तालीसादि मोदक	६०
सितोपलादि चूर्ण	६०
सितोपलादि चटनी	६१
जातीफलादि चूर्ण	६१
अश्वगन्धादि क्काथ	६३
वासकादि क्काथ	६४
वृहती क्काथ	६४
कंटकार्यावलेह	६४
वासावलेह	६५
पिप्पल्यादि घृत	६५
रास्नादि घृत	६६
बालकोंकी खाँसीपर नुसखे	७८
खाँसीकी विशेष चिकित्सा	८२
वातज खाँसीकी चिकित्सा	८२
पित्तज खाँसीकी चिकित्सा	८६
कफज खाँसीकी चिकित्सा	६५
वात कफज खाँसीकी-चिकित्सा	१०५
पित्त कफज खाँसीकी-चिकित्सा	१०६
क्षतज खाँसीकी चिकित्सा	१०६
क्षयज खाँसीकी चिकित्सा	११०
नजलेकी खाँसीकी-चिकित्सा	११२
कव्वा लटकनेकी खाँसीकी चिकित्सा	११३
घरकी चीज़ोंसे खाँसी नाश	११८
बालकोंकी खाँसीपर और नुसखे	१२१
बच्चोंकी कुकुर खाँसीकी चिकित्सा	१२३
डाक्टरी मतसे फेंफड़ोंका वर्णन	१२५
हिकमतके मतसे फेंफड़ोंका	

विषय पृष्ठाङ्क

दूसरा अध्याय।

प्रतिश्यायका वर्णन (जुकाम या नजला) १३१
सामान्य निरूपण १३१
सद्योजनक निदानपूर्वक सम्प्राप्ति १३१
चयादि क्रमजनक निदान-पूर्वक सम्प्राप्ति १३२
पूर्व्वरूप १३२
प्रतिश्यायके भेद १३३
वायुजनित प्रतिश्यायके लक्षण १३३
पित्तजनित प्रतिश्यायके लक्षण १३३
कफजनित प्रतिश्यायके लक्षण १३४
त्रिदोषज प्रतिश्यायके लक्षण १३४
दुष्ट प्रतिश्यायके लक्षण १३४
रुधिरके प्रतिश्यायके लक्षण १३४
सभी प्रतिश्याय उचित चिकित्सा के अभावमें, कालान्तरमें असाध्य। १३५
प्रतिश्यायोंमें कीड़े १३५
प्रतिश्यायके बढ़नेसे और रोग १३५
कच्चे पीनसके लक्षण १३७
पके पीनसके लक्षण १३७
पके हुए प्रतिश्यायके लक्षण १३७
प्रतिश्यायमें याद रखने योग्य बातें १३६
प्रतिश्याय नाशक नुसख़े १४३
जुकाम और नजले पर यूनानी नुसख़े १४८
जुकामके उपद्रवोंके उपाय १५७
पसलीके दर्द के उपाय १५७
खाँसीके उपाय १५८
सिर दर्द के उपाय १५८
दस्तक़ब्ज़के उपाय १६०

तीसरा अध्याय।

श्वास रोगका वर्णन १६२
श्वास रोग किसे कहते हैं? १६२
श्वास रोगके कारण १६२
श्वास रोगके भेद १६३
श्वास रोगकी सम्प्राप्ति १६४
श्वास रोगके पूर्व्व रूप १६४
महाश्वासके लक्षण १६५
ऊर्ध्वश्वासके लक्षण १६६
छिन्न श्वासके लक्षण १६७
तमक श्वासके लक्षण १६८

विषय	पृष्ठाङ्क
प्रतमक श्वासके लक्षण	१७०
तमक और प्रतमकमें फ़र्क़	१७१
क्षुद्रश्वासके लक्षण	१७१
पाँचों श्वासोंके संक्षिप्त लक्षण	१७२
साध्यासाध्यत्व	१७३
श्वास-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	१७४
श्वास रोगमें पथ्यापथ्य	१८४
श्वास रोगकी सामान्य चिकित्सा	१८६
शृंगवेर क्काथ	१८६
महाकटफलादि चूर्ण	१८६
भारंगी गुड़	१८६
शृंग्यादि चूर्ण	१८७
पञ्चमूली क्षीर	१८८
दशमूल रस	१८८
दशमूल क्काथ	१८८
दशमूलादि क्काथ	१८६
बिल्वादि घृत	१८६
हरीतक्यादि घृत	१६०
श्वासारि घृत	१६१
वासक घृत	१६१
भृंगराज तैल	१६२
हरिद्रादि अवलेह	१६२
बहेड़ेका अवलेह	१६३

विषय	पृष्ठाङ्क
श्वास कुठार रस	१६३
सूर्यावर्त्त रस	१६४
कालेश्वर रस	१६४
शृंग्यादि चूर्ण	१६५
त्रिकटु बटी	१६६
फलत्रय बटी	१६६
शठ्यादि चूर्ण	१६६
सितोपलादि चूर्ण	१६६
अकरकरादि बटी	१६७
पिप्पल्यादि बटी	१६७
कंटकारी क्काथ	१६८
शुण्ठ्यादि चूर्ण	१६८
शर्बत पान	१६८
शृंगवेरादि रस	१६८
श्वास नाशक लपसी	१६६
श्वासान्तक लेह	१६६
अर्कादि बटी	२००
श्वासान्तक चूर्ण	२००
श्वास नाशक शर्बत	२००
श्वास नाशक चूर्ण	२०१
दमेकी अकसीर दवा	२०१
श्वासका अपूर्व नुसख़ा	२०१
श्वासारि अवलेह	२०२
कनक बीज योग	२०३
लोहासब	२०३

विषय	पृष्ठाङ्क
श्वास या दमे पर ग़रीबी नुसख़े	२०४
बालकोंके श्वासकी चिकित्सा	२२१
श्वास रोग पर हिकमत	२२३

चौथा अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क
हिचकी रोगका वर्णन	२३६
निदान-कारण	२३६
सामान्य लक्षण	२३६
हिचकीके भेद	२३६
हिचकीके पूर्वरूप	२३७
अन्नजा हिचकीके लक्षण	२३७
यमला हिचकीके लक्षण	२३७
क्षुद्रा हिचकीके लक्षण	२३७
गंभीरा हिचकीके लक्षण	२३८
महती हिचकीके लक्षण	२३८
असाध्य लक्षण	२३६
हिचकीकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	२३६
हिचकीमें पथ्यापथ्य	२४०
हिचकी नाशक नुसखे	२४२
हिचकी पर बढ़िया नुसख़े	२४६

पाँचवाँ अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क
रक्तपित्त वर्णन	२५१
रक्तपित्तके सामान्य लक्षण	२५१
" निदान-कारण	२५१
" पूर्वरूप	२५२
वातज रक्तपित्तके लक्षण	२५३
कफज रक्तपित्तके लक्षण	२५३
पित्तज रक्तपित्तके लक्षण	२५३
संसर्गसे मार्ग-भेद	२५३
रक्तपित्तके उपद्रव	२५३
असाध्य लक्षण	२५४
रक्तपित्त-चिकित्सामें याद रखनेयोग्य बातें	२५४
रक्तपित्त रोगमें पथ्यापथ्य	२६०
रक्तपित्तनाशक ग़रीबी नुसख़े	२६४
रक्तपित्तनाशक अमीरी नुसख़े	२७८
ह्रीवेरादि क्वाथ	२७८
प्रियंग्वादि क्वाथ	२७८
अटरुषकादि क्वाथ	२७६
धान्यकादि हिम	२७६
एलादि गुटिका	२७६
शतावरी घृत	२७६
खण्डकाद्य लौह	२८०
खण्डकूष्माण्डक	२८१
खण्डकूष्माण्ड अवलेह	२८१
वासा कूष्माण्ड खण्ड	२८२
वासा घृत	२८३

विषय	पृष्ठाङ्क
सप्तप्रस्थ घृत	२८४
वृहद्वासा घृत	२८४
दूर्वाद्य घृत	२८५
महादूर्वाद्य घृत	२८५
शृंगाद्य घृत	२८६
महाशतावरी घृत	२८६
दूर्वाद्य तैल	२८७
कामदेव घृत	२८७

छठा अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क
अम्लपित्त-वर्णन	२८६
अम्लपित्तके निदान-कारण	२८६
अम्लपित्तके लक्षण	२८६
अम्लपित्तके दो भेद	२६०
ऊर्द्ध्वग अम्लपित्तके लक्षण	२६०
अधोग अम्लपित्तके लक्षण	२६०
अम्लपित्तकी विशेष अवस्था	२६०
अम्लपित्तमें दोषोंका संसर्ग	२६१
दोष-भेदोंसे लक्षण-भेद	२६१
साध्यासाध्य विचार	२६२
अम्लपित्त-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	२६२
अम्लपित्त रोगमें पथ्यापथ्य	२६५
अम्लपित्त नाशक नुसखे	२६७
श्लेष्मपित्त नाशक नुसखे	२६६
अम्लपित्त नाशक उत्तमोत्तम योग	३००
रसायन योग	३००
नारिकेल खण्ड	३०१
जीरकादि घृत	३०१
खण्ड कूष्माण्डकावलेह	३०१
दूसरा नारिकेल खण्ड	३०२
वृहन्नारिकेल खण्ड	३०२
पिप्पली घृत	३०३
वृहत् पिप्पली खण्ड	३०३
शुण्ठी खण्ड	३०३
अम्लपित्तान्तक लौह	३०४
सिता मण्डूर	३०४
श्री बिल्व तैल	३०४
पानीय भक्त बटी	३०५
लीला विलास रस	३०५
अविपत्तिकर चूर्ण	३०६
रसामृत चूर्ण	३०६
शतावरी घृत	३०७
द्राक्षाद्य घृत	३०७
द्राक्षादि गुटिका	३०७
पिप्पल्यादि अवलेह	३०७

सातवाँ अध्याय।

विषय	पृष्ठाङ्क
स्वरभेद वर्णन	३०६

विषय	पृष्ठाङ्क

स्वरभेदके निदान-कारण ३०६
स्वरभेदकी सम्प्राप्ति ३०६
स्वरभेदकी क़िस्में ३०६
वातज स्वरभेदके लक्षण ३१०
पित्तज स्वरभेदके लक्षण ३१०
कफज स्वरभेदके लक्षण ३१०
सन्निपातज स्वरभेदके लक्षण ३१०
क्षयज स्वरभेदके लक्षण ३१०
मेदज स्वरभेदके लक्षण ३११
असाध्य लक्षण ३११
चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें ३११
स्वरभेदकी विशेष चिकित्सा ३१२
वातज स्वरभेदकी चिकित्सा ३१२
पित्तज स्वरभेदकी चिकित्सा ३१३
कफज स्वरभेदकी चिकित्सा ३१३
मेदज स्वरभेदकी चिकित्सा ३१४
समस्त स्वरभेद नाशक नुसखे ३१४
स्वरभंग रोग पर उत्तमोत्तम योग ३१६
स्वरभंगादि बटी ३१६
कंटकारी घृत ३१६
भृङ्गराजादि घृत ३२०
त्र्यम्बकाभ्रक ३२०

विषय	पृष्ठा

त्रिबंग भस्म ३२
निदिग्धिकावलेह ३२
मृगनाभ्यादि अवलेह ३२
सारस्वत या ब्राह्मी घृत ३२
ब्राह्म्यादि अवलेह ३२

आठवाँ अध्याय ।

अरोचक रोग वर्णन ३२४
अरुचिकी व्याख्या ३२४
अरोचकके निदान-कारण ३२४
अरोचककी क़िस्में ३२५
वातज अरुचिके लक्षण ३२५
पित्तज अरुचिके लक्षण ३२५
कफज अरुचिके लक्षण ३२५
त्रिदोषज अरुचिके लक्षण ३२५
आगन्तुक अरुचिके लक्षण ३२६
अरुचि नाशक नुसखे ३२६
लवणार्द्रक योग ३२६
श्रृङ्गवेर रस योग ३२६
इमलीका पना ३२७
अरुचि नाशक माठा ३२७
भीमसेनी शिखरिणी ३२७
दाड़िमादि चूर्ण ३२८
अनार दानेका चूर्ण ३२८
लवंगादि चूर्ण ३२८
खाण्डव चूर्ण ३२६

विषय	पृष्ठाङ्क
हमारा अनुभूत कलहंस	३२६
यवानी खाण्डव	३३०
हिंग्वष्टक चूर्ण	३३०
ज़म्बीर द्राघ	३३०
अरुचि गजकेशरी अवलेह	३३१
चन्द परीक्षित साधारण नुसख़े	३३२
अरुचिमें पथ्यापथ्य	३३३

नवाँ अध्याय ।

विषय	पृष्ठाङ्क
छर्दि रोगका वर्णन	३३५
छर्दि रोगके सामान्य लक्षण	३३५
वमन रोगके निदान कारण	३३५
वमनकी सम्प्राप्ति	३३६
वमनकी क़िस्में	३३७
वातज छर्दिके लक्षण	३३७
पित्तज छर्दिके लक्षण	३३७
कफज छर्दिके लक्षण	३३८
त्रिदोषज छर्दिके लक्षण	३३९
आगन्तुक वमनके लक्षण	३३९
वमनके पूर्व्व रूप	३४०
वमनके उपद्रव	३४०
असाध्य वमनके उपद्रव	३४१
साध्यासाध्य लक्षण	३४१
वमनकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	३४१
वमन रोगकी विशेष चिकित्सा	३४५
वातज वमन नाशक नुसख़े	३४६
पित्तज वमन नाशक नुसख़े	३४६
कफज वमन नाशक नुसख़े	३४७
वमन रोगकी सामान्य चिकित्सा	३४९
वमन रोगमें पथ्यापथ्य	३५६

दशवाँ अध्याय ।

विषय	पृष्ठाङ्क
तृष्णा रोगका वर्णन	३५८
तृष्णा रोगके लक्षण	३५८
तृष्णा रोगके निदान	३५८
तृष्णा रोगकी सम्प्राप्ति	३६०
तृष्णा रोगकी संख्या	३६१
तृष्णा रोगके पूर्व्व रूप	३६१
वातज तृष्णाके लक्षण	३६१
पित्तज तृष्णाके लक्षण	३६२
कफज तृषाके लक्षण	३६२
त्रिदोषज तृषाके लक्षण	३६३
क्षतज तृषाके लक्षण	३६३
क्षयज तृषाके लक्षण	३६४
आमज तृषाके लक्षण	३६४
अन्नजा तृषाके लक्षण	३६५
तृषाके उपद्रव	३६५
उपद्रवयुक्त तृषाकाअरिष्ट	३६५

विषय	पृष्ठाङ्क
असाध्य तृषाके लक्षण	३६६
तृषा रोग-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें	३६६
तृषा रोगकी विशेष चिकित्सा	३७२
पित्तज तृषा नाशक नुसख़े	३७२
कफज तृषा नाशक नुसख़े	३७४
तृषाको सामान्य चिकित्सा	३७६
तृषा रोगमें पथ्यापथ्य	३८१
दवाएँ बनाने और सेवन करनेमें जानने योग्य बातें	३८२
स्वरस	३८२
कल्क	३८३
पुटपाक	३८३
क्वाथ या काढ़ा	३८४
हिम	३८५
फाँट	३८६
चूर्ण	३८६
बटिका या गोली	३८८
अवलेह या लेह	३८८
गुग्गुल पाक	३८६
तेल और घी पकानेकी तरकीबें	३८६
तिलीके तेलको मूर्च्छित करने की विधि	३८६
वात नाशक तेलमें एक ख़ास बात	३६०
सरसोंका तेल मूर्च्छित करने की विधि	३६१
रेंडीका तेल मूर्च्छित करने की विधि	३६१
घीको मूर्च्छित करनेकी विधि	३६१
तेल और घी पकानेकी विधि	३६२
गन्धपाक-विधि	३६५
दवा सेवन करनेके समय	३६५
अनुपान-विधि	३६६
वातादि रोगोंमें अनुपान	३६७
ज्वरमें अनुपान	३६७
विषम ज्वरमें अनुपान	३६७
अतिसारमें अनुपान	३६७
श्वास खाँसीमें अनुपान	३६८
रक्तभेद, रक्तवमन और रक्तस्रावमें अनुपान	३६८
शोथरोग या सूजनमें अनुपान	३६८
पाण्डु रोगमें अनुपान	३६८
दस्त करानेके लिये अनुपान	३६८
पेशाब करानेके लिये अनुपान	३६८
बहुमूत्र नाशार्थ अनुपान	३६६
प्रदर रोग नाशार्थ अनुपान	३६६
मन्दाग्नि रोगमें अनुपान	३६६
वमन रोगमें अनुपान	३६६
वात रोगमें अनुपान	३६६
वीर्यवृद्धिके लिए अनुपान	३६६
गिलोय सेवनके अनुपान	४००
त्रिफलेके अनुपान और अन्य कामकी बातें।	४००—४१६

समाप्त।

श्रीः

चिकित्सा-चन्द्रोदय

छठा भाग

पहला अध्याय

खाँसी रोग का वर्णन।

खाँसी किसे कहते हैं?

जब मनुष्य के मुँह से काँसी के फूटे हुए बर्तन की जैसी आवाज़ निकलती है— वह घों-घों या खों-खों करता है, तब कहते हैं कि खाँसी हुई है। खाँसी को संस्कृत में "कास" अंगरेज़ी में "काफ़" और बोलचाल की ज़बान में "खाँसी" कहते हैं।

खाँसीका विशेष सम्बन्ध किस अंगसे है?

खाँसी का विशेष सम्बन्ध फैंफड़ों से है; पर फैंफड़ों के सिवा उन अंगों से भी है, जो श्वास लेने में फैंफड़ों के साथी हैं। मतलब यह है कि, दिमाग़ के लिए जिस तरह छींक है; उसी तरह फैंफड़ों के

लिए खाँसी है। दिमाग़ छींक से अपनी तकलीफ को दूर करता है और फैंफड़े खाँसी से अपने कष्ट को दूर करते हैं। खुलासा यह है, कि फैंफड़े और उनसे सम्बन्ध रखने वाले श्वास-यंत्रों में जब कुछ ख़राबी होती है, प्रायः तभी खाँसी होती है।

नोट—फैंफड़ों और उनसे सम्बन्ध रखने वाले अंगों के सम्बन्ध में हमने पहले भाग में लिखा है। पाठकों को उनके सम्बन्ध की बातें अच्छी तरह याद कर लेनी चाहियें। बिना उनका ज्ञान प्राप्त किये, खाँसी और श्वास की अच्छी चिकित्सा हो नहीं सकती।

खाँसी के निदान-कारण।

आयुर्वेद-ग्रन्थों में लिखा है,— श्वास के साथ धूल और धूआँ के श्वास-नली में जाने, जल्दी-जल्दी खाने के कारण खाने-पीने की चीज़ों के श्वास-नली में होकर अन्दर जाने, रूखे पदार्थ ज़ियादा खाने, मल-मूत्र और छींक आदि वेगों के रोकने एवं ज़ियादा मिहनत करने से खाँसी होती है। "वैद्यविनोद" में लिखा है :—

धूमोपघाताद्रजसो व्यायामाद्रूक्षभोजनात् ।
विमार्ग गत्वादन्नस्य क्षवथोश्च विधारणात् ।
उदानानुगतः प्राणो भग्न कांस्यसम स्वरः ।
निरेति वक्त्रा दुष्टः सन सकासो मुनिभिर्मतः ॥

धूआँ लगने से, मुँह में धूल भर जाने से, कसरत या मिहनत करने से, रूखा अन्न खाने से, भोजन के समय अन्न के विमार्ग *

* हमारे गले में दो नलियाँ हैं :— (१) श्वास-नली, और (२) अन्न-प्रणाली। श्वास-नली से हम साँस लेते हैं और अन्न-प्रणाली से अन्न को पेट में पहुँचाते हैं ; यानी हमारे शरीर में हवा और राह से जाती है और भोजन-पान दूसरी राह से। अगर कोई आदमी जल्दी-जल्दी खाता है, तो खाये-पिये पदार्थ, अन्न की नली में न जाकर, श्वास-नली में चले जाते हैं। इसी को विमार्ग में जाना कहते हैं। ऐसा होने से खाँसी होती है।

में जाने से और छींक के रोकने से—— "प्राणवायु" कुपित हो जाता है। कुपित हुआ प्राणवायु, उदान वायु से मिलकर, फूटे हुए काँसी के बर्तन की जैसी आवाज़ करता हुआ बाहर निकलता है। इस आवाज़ को ही मुनि लोग "खाँसी" कहते हैं।

खुलासा यों समझिये कि, ऊपर लिखे हुए कारणों से वायु कुपित होता है। एक दोष दूसरे दोष को कुपित करता है। इस नियम के अनुसार, कुपित 'वायु' कफ और पित्त को कुपित करता है। उस समय काँसी के फूटे हुए बासन में चोट लगने से जैसी आवाज़ निकलती है, वैसी ही आवाज़ मनुष्य के गले से निकलती है। उस आवाज़ का निकलनाही खाँसी का साधारण लक्षण है।

हिकमत से खाँसी के कारण।

हिकमत की किताबों में लिखा है कि, खाँसी फेंफड़ों और उन अंगों की गति है, जो श्वास लेने में उसके साथी हैं। खाँसी के यों तो बहुत से कारण हैं, पर निम्न-लिखित कारण मुख्य हैं:—

(१) फेंफड़ों के मुख या मांस में गरमी-सर्दी होना।

(२) फेंफड़ों में घाव या फुन्सियाँ होना।

(३) श्वास-नली में धूल या धूआँ आदि का जाना।

(४) खट्टी, कसैली या तेज़ चीज़ें खाना।

(५) खाये-पीये पदार्थोंका ग़फ़लतसे श्वास-मार्ग में जा पड़ना।

(६) श्वासवाही अंगों के निरोग रहने पर भी, आमाशय, नरखरा, तिल्ली और जिगर आदि में ख़राबी होना।

नोट—यद्यपि आयुर्वेद में खाँसी का होना और तरह से लिखा है, पर खाँसी होने के कारण हिकमत और वैद्यक दोनों में एकही मिलते हैं। तीसरे, चौथे और पाँचवें कारण हमारे यहाँ भी यही लिखे हैं। फेंफड़ों में घाव होने से क्षतज खाँसी होती है। वायु से वातज, गरमी से पित्तज और सर्दी से कफ़ज खाँसी होती है। हमारे यहाँ लिखा है, अपने कारणों से पहले वायु—प्राणवायु कुपित होता है, फिर-

वह पित्त और कफ को कुपित करता है, तब खाँसी होती है। हिकमत में लिखा है, फेफड़ों में गरमी-सर्दी पहुँचने या घाव होने अथवा आमाशय, तिल्ली और जिगर आदि में खराबी होने से खाँसी होती है। यद्यपि मतलब एक ही निकलता है, तोभी मानना पड़ेगा कि, हिकमत का निदान, खाँसी के सम्बन्ध में, हमारे यहाँ से अच्छा है। वास्तव में, खाँसी का सम्बन्ध फेफड़ों से ही है।

डाक्टरी से खाँसी के कारण।

डाक्टरी में खाँसी के निम्न-लिखित कारण लिखे हैं:—

(१) शरीर की कमज़ोरी। (२) अति मैथुन।
(३) बहुत मिहनत। (४) जुकाम होना।
(५) सर्दी लगना। (६) तेज़ चीज़ सूंघना।
(७) मौसम का बदलाव। (८) बुरी हवा वगैरः।

डाक्टरी में पहले छै कारणों से क्षयज खाँसी का होना लिखा है और लिखा है, कि क्षयज खाँसी कोढ़ की तरह पुश्तैनी भी होती है। सातवें और आठवें कारण से "हूपिङ्ग काफ़" या सूखी खाँसी का होना लिखा है।

खाँसी की सम्प्राप्ति।

"हारीत संहिता" में लिखा है,—जब कण्ठ में रहने वाला 'उदान वायु' ऊपर की ओर विपरीत हो जाता है और कफ के साथ 'प्राण वायु' का मेल हो जाता है, तब हृदय में जमा हुआ कफ खाँसी के साथ कण्ठ में आ जाता है; इसी से खाँसी चलती है। हरीत मुनि कहते हैं:—

न वातेन विना श्वासः,
कासो न श्लेष्मणा विना।
न रक्तेन विना पित्तं।

बिना वायु के श्वास रोग नहीं होता, बिना कफ के खाँसी नहीं होती, बिना रक्त के पित्त नहीं होता और बिना पित्त के क्षय नहीं होता। यह सिद्धान्त है। इसे वैद्य को खूब याद रखना चाहिये।

खुलासा यह है कि, बिना वायु के कोप किये श्वास रोग नहीं होता, बिना छाती पर कफ जमे खाँसी नहीं होती, रक्त के बिना पित्त नहीं बढ़ता और बिना पित्त के कुपित हुए क्षय रोग नहीं होता।

मतलब यह है कि, खाँसी के इलाज में वैद्य को 'कफ' का पूरा ध्यान रखना चाहिए; क्योंकि जब तक छातीपर कफ आता रहेगा, खाँसी किसी दवा से आराम न होगी। यही वजह है कि, जुकाम या नजले की खाँसी का आराम करना कठिन हो जाता है। न जुकाम जाता है और न खाँसी पीछा छोड़ती है। मूर्ख वैद्य खाँसी नाशार्थ गरम-सर्द दवाएँ दिये जाते हैं; पर धातु की ओर ध्यान नहीं देते, इससे उल्टी खाँसी बढ़ती रहती है; क्योंकि बिना जुकाम के मिटे खाँसी जा नहीं सकती, और जुकाम बिना धातु ठीक किये आराम हो नहीं सकता। जब तक जुकाम रहेगा, छाती पर कफ जमा होता रहेगा। जब तक कफ छाती से अलग न होगा, खाँसी कभी न जायगी। खाँसी के बहुत दिनों तक बने रहने से क्षय और शोष रोग हो जायेंगे। फिर तो रोगी सूख-सूख कर मर जायगा।

खाँसी के इलाज में कफ का ध्यान रखना परमावश्यक है, क्योंकि, बकौल हारीत मुनि के खाँसी की जड़ "कफ" और श्वास की जड़ "वायु" है। बहुत से अज्ञानी वैद्य कफ और वायु नाश करने के लिए दमादम गरम दवाएँ और गरम रस दिये जाते हैं, जिससे कफ सूख कर जम जाता है। उस हालत में, मरीज़ को खाँसते समय बड़ी तकलीफ होती है और हर समय कफ घर-घर घर-घर किया करता है। अव्वल तो ऐसा सूखा हुआ कफ बड़ी मुश्किल से निकलता है और यदि निकलता है तो बड़ा कष्ट होता है। इस दशा में, रोगी को गरम दवा और गरम पथ्य देना जान-बूझ कर मारना है। जब तक कफ छाती से छूटकर मुंह या गुदा द्वारा न निकल जाय, गरम दवा न देनी चाहिये, बल्कि कफ को छुड़ाने और निकालने वाली दवा देनी चाहिये।

हिकमत से खाँसी की सम्प्राप्ति।

तिब्बे अकबरी आदि ग्रन्थों में लिखा है :—

(१) फेंफड़ों के मुँह या मांस में, सादा गरम दुष्ट प्रकृति पैदा हो जाने से खाँसी हो जाती है।

सब तरह की खाँसियों के निदान लक्षण।

वातज खाँसी का वर्णन ।

निदान या कारण ।

"चरक" के मतानुसार वातज खाँसी के निम्न-लिखित कारण हैं:—

(१) रूखे, शीतल और कसैले पदार्थ खाना ।

(२) कम खाना ।

(३) एक ही रस खाने की आदत रखना ।

(४) बहुत ही ज़ियादा मैथुन करना ।

(५) मलमूत्रादि वेगों को रोकना ।

(६) ज़ियादः मिहनत करना ।

वातज खाँसी के लक्षण ।

(१) हृदय, कनपटी, पसली, पेट, छाती और सिर में दर्द होता है ।

(२) कुपित वायु छाती, कंठ और मुख को सूखा रखता है ।

(३) रोएँ खड़े हो जाते हैं ।

(४) ग्लानि होती है ।

(५) खाँसी की आवाज़ ज़ोरदार होती है ।

(६) मोह होता है ।

(७) मुँह की कान्ति या रौनक़ बिगड़ जाती है ।

(८) बल, ओज, इन्द्रियाँ और स्वर क्षीण हो जाते हैं ।

(९) गला बँधा रहता या बैठ जाता है ।

(१०) नींद सी आया करती है ।

(११) स्वर फटा रहता है।

(१२) सूखा कफ गले में लिहसा रहता है।

(१३) सूखी खाँसी आती है, जिसमें कफ का नाम भी नहीं रहता। अगर कफ निकलता है, तो बड़ी कठिनता से निकलता है और उसके निकलने पर रोगी का चैन आजाता है। कफ के सूख जाने या कम हो जाने का कारण 'कुपित वायु'' है।

(१४ चिकने, खट्टे, नमकीन और गरम पदार्थ खाते ही "वातज" खाँसी शान्त हो जाती है; लेकिन भोजन के पचते ही वायु फिर बलवान हो जाता है और खाँसी आने लगती है।

नोट—वातज खाँसी को साधारण लोग "सूखी खाँसी" कहते हैं। इसकी मुख्य पहचान ये हैं:—

(१) कफ बिलकुल नहीं आता। अगर कभी आता है, तो रोगी को आराम आ जाता है।

(२) चिकने, खट्टे, नमकीन और गरम पदार्थ खाते ही खाँसी दब जाती है और भोजन पचते ही फिर उठने लगती है।

(३) छाती, कनपटी, पसली और सिर में दर्द होता है।

सूचना—ऐसी खाँसी में दवाओं के मेल से पकाये हुए घी, तैल अथवा अवलेह पीने-चाटने से जल्दी लाभ होता है। जैसे "पिप्पल्यादि घृत"।

सूखी खाँसी पर हिकमत का मत।

हिकमत में सूखी खाँसी कई तरह से लिखी है:—

(१) अगर कोई गरम और पतली चीज़, सिर से उतर कर, फेंफड़ों के मुँह में जलन और खुजली करती है, तो सूखी खाँसी आने लगती है। रात को और सोने के बाद इस खाँसी का ज़ोर बढ़ता है। जल्दी ही इसका इलाज न करने से फेंफड़ों में घाव हो जाते हैं।

(२) फेंफड़ों पर गरमी और खुष्की पहुचने से जो खाँसी आती है, उसमें भी मवाद या कफ नहीं आता। भूख-प्यास और चलने-फिरनेके समय यह खाँसी बढ़ जाती है, क्योंकि इनसे तरी नष्ट हो जाती है। तर चीज़ों के खाने से यह खाँसी दब जाती है। इस खाँसी वाले का श्वास तंग हो जाता है, खाँसने पर कफ नहीं आता, शरीर दुबला हो जाता है, और नाड़ी जल्दी-जल्दी चलने लगती है। जब यह बढ़ जाती है और दिल पर गरमी पहुँच जाती है, तब " तपेदिक " या "यक्ष्मा" रोग हो जाता है।

(३) जो खाँसी छाती के घाव, फेंफड़ों के ज़ख्म, छाती और फेंफड़ों की सूजन, दिल और फेंफड़े के बीच के पर्दे की सूजन ; तथा जिगर, तिल्ली और नरखरे की सूजन से पैदा होती है, वह भी सूखी ही होती है। उसमें दर्द और खिंचाव होता है। उसका मेल हमारे यहाँ की क्षयज या क्षतज खाँसी से खाता है।

डाक्टरी मत ।

हूपिंग काफ—सूखी खाँसी ।

यह खाँसी दो वर्ष की उम्र से प्रायः सोलह साल की उम्र तक होती है। कभी-कभी बड़ी अवस्थावालों को भी यह खाँसी हो जाती है। यह खाँसी देर से उठती है और मुँह से थोड़ा लहेसदार पानी आनेपर शान्त हो जाती है। खाँसी के साथ लम्बी सी आवाज़ निकलती है और मुँह खुल जाता है। कभी-कभी यह वबा की तरह फैल जाती है। इसका कारण ज़ुकाम, बुरी हवा या ऋतु का बदलना है।

नोट—जिस तरह वातज खाँसी वायु के कोप से होती है, उसी तरह हूपिंग काफ भी वायु के कोप से होती है। डाक्टर लोग इस खाँसी में टिंचर स्टील यानी

मुरक्कबात फौलाद देते हैं। अथवा २।३ रत्ती हैड्रेट आफ किलोरल शहत में देते हैं। खाँसी के दस दिन की पुरानी होने पर, जैतून का तेल ६ माशे, रोगन बलसान ३ माशे और लौंग का तेल दो बूँद मिलाकर छाती पर मलने की राय देते हैं। आक के फूलोंके ज़ीरे में लौंग १ तोले, काली मिर्च १ तोले और सफेद कत्था १ तोले मिला-पीस और चने बराबर गोलियाँ बना कर चूसने से भी यह आराम हो जाती है।

पित्तज खाँसी का वर्णन।

निदान या कारण।

पित्त की खाँसी के निदान या कारण ये हैं:—

(१) कड़वे, गरम, दाहकारी, खट्टे, खारी पदार्थ अधिक खाना।

(२) आग और धूप ज़ियादा सेवन करना।

पित्तज खाँसी के लक्षण।

पित्त की खाँसी होने से रोगी में नीचे लिखे चिह्न पाये जाते हैं:—

(१) खाँसी आने से पीला और चरपरा पित्त गिरता है अथवा पीला कफ आता है या पित्त-मिला कफ आता है।

(२) आँखें, नाखून, कफ और चेहरा ये पीले हो जाते हैं।

(३) मुँह का ज़ायका कड़वा या चरपरा सा हो जाता है।

(४) बुख़ार चढ़ आता है या बुखार आयेगा, ऐसा मालूम होता है।

(५) मुँह सूखा रहता है और प्यास बहुत लगती है।

(६) गरमी बहुत मालूम होती है।

(७) कण्ठ या गले में जलन मालूम होती है।

(८) खाँसी के वेगके निरन्तर रहनेसे तारेसे चमकते दीखते हैं।

(९) मूर्च्छा या बेहोशी होती है ।

(१०) चक्कर या भौंर आती हैं ।

(११) पित्त और खून की कय होती हैं, यह वाग्भट्ट का मत है ।

(१२) आवाज़ बिगड़ जाती है ।

(१३) नशा सा बना रहता है ।

नोट—पित्तज खाँसी को साधारण लोग गरमी की खाँसी कहते हैं । इसकी मुख्य पहचान ये हैं—

(१) छाती या गले में जलन होना ।

(२) हल्का-हल्का ज्वर रहना ।

(३) मुँह सूखना ।

(४) मुँह का स्वाद कड़वा रहना ।

(५) प्यास बहुत लगना ।

(६) खाँसते समय गरमी लगना ।

(७) कड़वा और पीला कफ निकलना ।

पित्त की खाँसी पर हिकमत ।

हिकमत में कई प्रकार की खाँसी लिखी हैं:—

(१) फेंफड़ों में सादा गरम प्रकृति पैदा हो जाने से जो खाँसी होती है, उसमें प्यास बहुत लगती है, छाती में कुछ भारीपन मालूम होता है, जो गरमी पहुँचने से बढ़ जाता है । ऐसी खाँसी में ईसबगोल का लुआब या खमीरा बनफ़शा खिलाना और कोई लेप करना अच्छा है ।

(२) पित्तवाले खून के फेंफड़ों में आ जाने और उससे उनके भर जाने से जो खाँसी होती है, उसमें खिंचावट और जलन होती है । श्वास बड़ा और गरम होता है । चेहरा लाल हो जाता है । कफ नहीं आता, क्योंकि मवाद पतला होता है । कभी-कभी पित्त आता है और ज़ोर की खाँसी होने से मवाद भी आता है । इस खाँसी में

जिगर की गरमी शान्त करना और काढ़े वगेरः पिला कर तबियत को नर्म करना अच्छा है।

(३) वह खाँसी जो पित्तवाले खून के फुन्सियाँ पैदा करने से होती है, उसमें नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है, और पेशाब गरम होता है। उसमें सरदी से लाभ और गरमी से हानि होती है। उसमें पित्तनाशक जुलाब देना अच्छा है।

कफज खाँसी का वर्णन।

निदान या कारण।

कफज खाँसी के निम्नलिखित कारण हैं:—

(१) भारी, अभिष्यन्दी और मीठे पदार्थ खाना।

(२) मिहनत न करना।

(३) दिन में सोना।

कफज खाँसी के लक्षण।

कफज खाँसी के ये लक्षण हैं:—

(१) अग्नि मन्द हो जाती है।

(२) भोजन पर रुचि नहीं होती।

(३) वमन या कय होती हैं।

(४) पीनस या जुकाम होता है।

(५) रोएँ खड़े हो जाते हैं।

(६) मुँह का स्वाद मीठा रहता है।

(७) मुँह कफ से लिहसा रहता है।

(८) शरीर कफ से भरा जान पड़ता है।

(९) खाँसी में पिलाई लिये सफेद, गाढ़ा और चिकना कफ निकलता है।

(१०) शरीर भारी रहता है।

(११) खाँसते समय छाती कफ से भरी जान पड़ती है।

(१२) उबकियाँ आती हैं। मुँह से पानी और थूक गिरता है, पर अन्न बाहर नहीं आता।

(१३) हृदय में अत्यन्त वेदना होती है। अथवा हृदय ऐंठता है।

(१४) निद्रा या ऊँघ आती है।

(१५) शरीर में जड़ता होती है।

(१६) चक्कर आते हैं।

नोट—कफज खाँसी को साधारण लोग कफकी खाँसी या तर खाँसी कहते हैं। उसके मुख्य लक्षण ये हैं :—

(१) मुँह में कफ भरा रहना या गला कफ से भरा जान पड़ना।

(२) सिर में दर्द होना।

(३) गले या शरीर में खाज सी आना।

(४) बहुत ही खाँसने से गाढ़ा-गाढ़ा कफ निकलना।

हिकमत से कफज खाँसी।

(१) फेंफड़ों और छाती की तरी से खाँसी आती है। ऐसी खाँसी बूढ़ों और तर प्रकृति वालों को होती है। उसमें कफ बहुत निकलता और गले में चिपटा रहता है। छाती में खरखराहट होती है। वह खाँसी नींद में और जागने के बाद बहुत चलती है।

(२) फेंफडों में सरदी पहुँचने से एक खाँसी होती है। उसमें प्यास कम लगती है। उसमें गरमी से लाभ और सर्दी से हानि होती है।

क्षतज खाँसी का वर्णन ।

निदान या कारण ।

क्षतज खाँसी होने के निम्नलिखित कारण हैं—

(१) ज़ियादा मिहनत करना ।

(२) अपने बल-बूते से ज़ियादा बोझ उठाना ;

(३) अत्यन्त मैथुन करना ।

(४) बहुत चिल्ला कर पढ़ना ।

(५) बहुत पैदल चलना ।

(६) घोड़े हाथियों से ज़ोर करना ।

(७) अपने से अधिक बलवान से लड़ना ।

सम्प्राप्ति ।

ऊपर लिखे कारणों से जब छाती या फैंफड़ों में चोट लगती या सदमा पहुँचता है, तब उनमें ज़ख्म हो जाते हैं। उस समय मनुष्यको खाँसी आती है और उसमें खून-मिला कफ विशेष आता है ।

अथवा यों समझिये, कि बहुत मिहनत करने, अत्यन्त मैथुन करने या बहुत भारी बोझ उठाने से रूखे आदमी का वायु कुपित हो जाता है। कुपित हुआ वायु, छाती और फेंफड़ों को सख्त करके, उनमें घाव पैदा कर देता है, तब खाँसी आने लगती है ।

जब तक छाती या फेंफड़ों में घाव नहीं होते---केवल सख्ती और सूजन रहती है, मनुष्य को सूखी खाँसी आती है, जब फेंफड़ों और छाती में घाव हो जाते हैं, कफ के साथ खून आने लगता है ।

क्षतज खाँसी के लक्षण ।

जब फेंफड़ों में क्षत या घाव हो जाते हैं, तब नीचे लिखे हुए लक्षण देखने में आते हैं :—

(१) खून-मिला कफ खाँसी में आता है ।

(२) कण्ठ मे वेदना होती है । गला खरखर करता है ।

(३) छाती मे सूई चुभाने का सा दर्द होता है ।

(४) ऐसा जान पड़ता है, मानो कोई छाती को चीरता है ।

(५) छाती में ऐसा दर्द होता है, कि हाथ नहीं लगाया जाता । दर्द के मारे आदमी बेचैन हो जाता है ।

(६) जोड़ों मे दर्द या सन्धियों में फूटनी होती है ।

(७) ज्वर चढ़ता है ।

(८) प्यास का ज़ोर रहता है ।

(९) साँस चलता है ।

(१०) आवाज़ बिगड़ जाती है ।

(११) रोगी कबूतर की तरह कुड़कुड़ाता या अव्यक्त शब्द निकालता है ।

(१२) पसलियों में दर्द होता है ।

(१३) कँपकँपी आती है ।

(१४) वीर्य, रुचि, बल और वर्ण नष्ट हो जाते हैं ।

(१५) क्षीण हुए मनुष्य के खून-मिला पेशाब आता है ।

(१६) पीठ और कमर जकड़ जाती हैं ।

नोट—नं० ११ तक के लक्षण सभी आचार्यों ने लिखे हैं ; पर नं० १२से १६ तक के लक्षण वाग्भट्ट जी ने विशेष लिखे हैं । जब खून की कय होती हैं, खून-मिला पेशाब होता है, पसलियों में दर्द होता है, कमर और पीठ जकड़ जाती हैं तब रोग असाध्य समझा जाता है ।

उरःक्षत, सिल और क्षतज खाँसी के लक्षण सर्वथा एक ही हैं। उरःक्षत के सम्बन्ध में हमने पाँचवें भाग में विस्तार से लिखा है, पाठकों को उसे भी देख लेना ज़रूरी है।

हकीमी मत।

ज़ियादा खाँसी आने से, चोट लगने से, गिर पड़ने से, धक्का लगने से, किसी रगका मुँह खुल जाने या टूट जाने से और फेफड़ों में घाव हो जाने से सिल, उरःक्षत या क्षतज खाँसी होती है।

लक्षण

(१) हर समय धीमा-धीमा ज्वर बना रहता है, तपेदिक या क्षय के सारे चिह्न प्रकट हो जाते हैं।

(२) गाल लाल हो जाते हैं, ख़ासकर ज्वर की दशा में।

(३) खाँसने से पीप निकलता है।

(४) कभी-कभी रात को या दूसरे समय पसीने आते हैं।

अन्तिम दशा।

(५) जब शरीर का क्षय अन्तिम दशा को पहुँच जाता है और रोगीका अन्त समय आ जाता है, तब, तपेदिक को तरह, नाखून शीतल हो जाते हैं और पाँव की पीठ सूज जाती है।

(६) पीप में फ़ेफ़ड़े के टुकड़े आते हैं।

(७) जो दोष निकलता है, वह बहुत गाढ़ा होकर निकलता-निकलता बन्द हो जाता है। मूर्ख हकीम समझता है, कि रोगी को आराम है; पर वह चार दिन से अधिक नहीं जोता।

नोट—बहुधा ऐसा होता है, कि फैंफड़े के घावों के अन्त में, खाँसी पैदा होकर साफ खून आने लगता है। अगर इस दशा में खाँसी और खून को बन्द करते हैं, तो खून फैंफड़ों में रुककर रोगी को मार डालता है। अगर बन्द नहीं करते, तो खून के बहुत निकलने से भी रोगी मर जाता है।

क्षयज खाँसी का वर्णन ।

निदान या कारण ।

(१) विषम भोजन ।
(२) प्रकृति-विरुद्ध भोजन ।
(३) अत्यन्त मैथुन ।
(४) मलमूत्र और अधोवायु रोकना ।
(५) बहुत ही चिन्ता-फिक्र करना ।

सम्प्राप्ति ।

ऊपर लिखे कारणों से मनुष्य की जठराग्नि बिगड़ जाती है । जठराग्नि की ख़राबी से वात, पित्त और कफ़ कुपित होकर "क्षयज खाँसी" करते हैं । खुलासा यह है, कि विषम भोजन आदि से जब जठराग्नि बिगड़ जाती है, तब रस ठीक तरह से नहीं बनता । जब रस ही नहीं बनता, तब रक्त आदि धातुएँ कहाँ से बन सकती हैं ? अतः सब धातुएँ क्षय होने लगती हैं । उस समय क्षयज खाँसी होती है । बहुत करके यह खाँसी वीर्य-क्षय से होती है । इस विषय को हमने पाँचवें भाग में, राजयक्ष्मा के बयान में, कई तरह से समझाया है ।

क्षयज खाँसी के लक्षण ।

(१) शरीर में शूल चलते हैं ।
(२) ज्वर होता है ।
(३) दाह या जलन होती है ।
(४) मोह होता है ।

(५) बल क्षीण हो जाता है।

(६) दुर्बल रोगी थूकता है।

(७) जब मांस क्षीण होने लगता है, तब खखार में पीप-मिला खून आता है। सुश्रुत।

वाग्भट्ट में लिखा है :—

(१) बदबूदार, राध के समान पीला, गंधवाला, हरा और लाल कफ मनुष्य थूकता है।

(२) पसलियाँ स्थानभ्रष्ट हो जाती हैं।

(३) हृदय गिरता-सा जान पड़ता है।

(४) आप-ही-आप गरमी और शीत की इच्छा होती है।

(५) बहुत-सा खाने पर भी बल-क्षय होता है।

(६) मुँह चिकना और प्रसन्न हो जाता है।

(७) दाँत और नेत्र सुन्दर हो जाते हैं।

(८) अन्त में पीनस और श्वास आदि पैदा होते हैं।

नोट—हमारे शास्त्रों में विशेषकर यही पाँच खाँसी लिखी हैं। पर इनके सिवा और भी खाँसी होती हैं। उनके सम्बन्ध में भी हम आगे लिखेंगे।

डाक्टरी मत से क्षयज खाँसी।

डाक्टरों ने भी क्षयज खाँसी—जिसे से वे "थाइसिसपिलमोनेलस" कहते हैं,—होने के कारण अति मैथुन, अति परिश्रम, जुक़ाम, सर्दी लगना और तेज़ चीज़ सूँघना आदि लिखे हैं। वे लोग इसे पुश्तौनी भी कहते हैं।

लक्षण।

(१) पहले बिना ज्वर और सरदी के सूखी खाँसी होती है।

(२) कफ-मिला खून या साफ खून आता है।

(३) हाथों के तलवे सदा गर्म रहते हैं।

(४) गले में ख़राश रहती है।

(५) पसलियों में दर्द नहीं होता या थोड़ा-थोड़ा होता है।

(६) फेंफड़े के ऊपर एक तरह का शब्द होता है।

(७) सिर में दर्द होता है।

(८) भूख कम लगती है।

(९) किसी काम में दिल नहीं लगता।

(१०) कमज़ोरी रहती है।

(११) रात में बेकली रहती है।

(१२) बाल गिरते हैं।

(१३) अंगुलियों के अगले भाग मोटे हो जाते हैं।

(१४) सवेरे और रात को खाँसी का ज़ोर रहता है।

(१५) मिहनत करने से खाँसी बढ़ जाती है और मिहनत के बाद जल्दी-जल्दी श्वास आने लगता है।

(१६) कभी-कभी ज्वर चढ़ता है।

(१७) जीभ पर सफेद लेप-सा दीखता है।

(१८) अगर स्त्री-रोगी होती है, तो उसका रजोधर्म बन्द हो जाता है या अधिक होता है।

(१९) इलाज करनेसे आराम हो जाता है और यदि रोग फिर प्रकट होता है, तो पैर फूल जाते हैं और ज्ञान नहीं रहता। ऐसा रोगी मृत्यु-यन्त्रणा से अधीर होकर मर जाता है।

होमियोपैथिक मत से क्षयज खाँसी।

होमियोपैथी के मत से नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं :—

[१] भूख की कमी।

[२] पाचनशक्ति न होना।

[३] प्यास लगना।

[४] वमन होना या वमन की इच्छा होना।

[५] थोड़ी खाँसी चलना।

[६] छाती में वेदना होना।

[७] कमज़ोरी।

[८] देह में गरमी मालूम होना।

[९] हवा लगते ही जाड़ा लगना।

[१०] यह रोग प्रायः १२ वर्ष से २२ वर्षकी उम्रवालों को अधिक होता है। यह ख़ास पहचान है, कि नाखूनों के अगले हिस्से नीचे हो जाते हैं।

नोट (१)—डाक्टरी या एलोपैथी के मत से रोगी को दूध, शोर्बा, मक्खन, अण्डे और रोटी वग़ैरः पुष्टिकर चीज़ें देनी हित हैं। खटाई बिलकुल न देनी चाहिये। मकान साफ़ और हवा खुली रखनी चाहिये। गरम कपड़े पहनने चाहियें और खारी जल से नहाकर शरीर फौरन पोंछ लेना चाहिये।

नोट (२)—क्षयज खाँसी और क्षतज खाँसी में जो भेद है, उसे पाठकों को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये। इन दोनों की पहचान यद्यपि साफ है; फिर भी नौसिखिये चक्कर खा जाते हैं, इसीसे हमने यह नोट लिखा है। "हारीत-संहिता" में वातपित्तज प्रभृति खाँसियों के लक्षण भी लिखे हैं। उन्हें हम पाठकों के लाभार्थ नीचे लिखते हैं। उनके सिवाय कव्वे की खाँसी वग़ैरः के लक्षण भी यूनानी ग्रन्थों से लिखते हैं :—

वातपित्तज खाँसी।

इस खाँसीमें धसक, खुजली, प्यास, कूखमें शूल, नींद न आना और सूखी खाँसी चलना—ये लक्षण होते हैं।

पित्तकफज खाँसी।

इस खाँसी में धूएँ की सी गन्ध आती है, आँखे पक जाती हैं, नेत्र खूब लाल हो जाते हैं और कफ में खून आता है।

त्रिदोषज खाँसी ।

इस खाँसी में खुजली, जलन, श्वास, वमन, शोष, अरुचि, सिरदर्द सूजन और मुँह से थूक गिरना—ये लक्षण होते हैं ।

कव्वे की खाँसी ।

एक प्रकार की खाँसी कव्वा लटकने से भी होती है । कव्वा कमज़ोर होने से लटक जाता हैं अथवा बहुत खाँसी चलने और कमज़ोरी होनेसे लटक जाता है । छोटे बालकों का कव्वा बहुधा लटक जाता है । कव्वा लटकने से, हर समय, गले में सुरसुराहट या खसखसी सी लगी रहती है । ऐसा मालूम होता है, मानो गले में कोई चीज़ अटक रही हो । कव्वे की खाँसीवाले को ज़रा भी आराम नहीं मिलता, हर समय खस-खस होती रहती है । नातजुर्बेकार हकीम-वैद्य खाँसी की दवा करते रहते हैं पर वह आराम नहीं होती ; प्रत्युत बढ़ती ही जाती है । यह खाँसी बिना कव्वा उठाये नहीं जाती, अतः ऐसी खाँसी होने पर कव्वा उठाना चाहिये ।

नजलेकी खाँसी ।

एक खाँसी जुकाम या नजले से होती है । यह खाँसी बड़ी मुश्किल से आराम होती है । अगर चढ़ो उम्रमें यह खाँसी होती है, तो शायद ही आराम होती है । जिन लोगों की धातुपर गरमी पहुँच जाती है, उन्हें प्रायः जुकाम बना ही रहता है । जुकाम के आराम न होने से खाँसी हो जाती है । जबतक धातुरोग आराम नहीं होता, खाँसी नहीं जाती ; क्यों कि जुकाम बना रहता है और उसकी वजह से गले में कफ आया करता है । जबतक कफ आता रहता है, खाँसी आराम नहीं होती । यह खाँसी कई तरह की होती है:—

(१) एक चीज़ गरम और पतली सदा ऊपर से यानी सिर की तरफ से उतरती रहती है और फैफड़ों के मुँह में खुजली और जलन पैदा करती है।

इसकी वजह यह है, कि दिमाग़ में गरमी और कमज़ोरी होने से वह अपने पोषक रस को पचा नहीं सकता। जब वह उसे भारी मालूम होता है, जब वह अधिक हो जाता है, तब वह नजले की तरह फफड़ों के ऊपर उतर आता है। इस मौक़े पर दिमाग़ी गरमी से उसमें तेज़ जलन हो जाती है।

इस हालत में सूखी खाँसी आती है। उसमें कफ नहीं निकलता। रात के समय और सोने के बाद इस खाँसी का ज़ोर होता है। दिमाग़ी गरमी और नजले का असर दिखता है। यह खाँसी बहुत बुरी है। अगर इसका शीघ्र ही उपाय नहीं किया जाता, तो फेंफड़े दुबले हो जाते और उनमें घाव हो जाते हैं। थूक में मवाद इसलिये नहीं आता कि वह पतला होता है।

(२) एक और खाँसी होती है, उसमें भी सिर से मवाद उतर कर फैफड़ों में आता है और वहाँ वह गाढ़ा और चेपदार होकर रुक जाता है। इसमें यह ख़ास बात होती है, कि ज़ुकाम के बाद ऐसा होता है और खाँसी में चेपदार मवाद भी निकलता है तथा छाती भारी मालूम होती है। कभी-कभी ऐसा भी होता है, कि चेपदार तरी सिर की तरफ से फेंफड़ों पर सदा गिरा करती है और उस रोगी की हालत उरःक्षत या सिलवाले की सी हो जाती है ; यानी फेंफड़े दुबले हो जाते हैं और उनमें घाव हो जाते हैं।

नोट—इस खाँसी में मवाद को नरम और पतला करने, पकाने और छातीसे हठानेवाली दवा देनी चाहिये। जब मवाद पक जाता है, तब वह समान रूपसे गाढ़ा और पतला होता है ; यानी न बहुत गाढ़ा होता है और न पतला। अगर मवाद नीला, पीला, पिघले हुए शीशे के जैसा हो तो उसे बदबूदार समझो। यह पकने का चिन्ह नहीं है।

रोगों में खाँसी।

पाण्डु रोग में, राजयक्ष्मा में, गुल्म या गोले के रोग में, चोट लगने पर, धातुक्षय होने में, बवासीर और जुकाम में खाँसी होती है। माता के कुपथ्य से छोटे बालकों को खाँसी आने लगती है।

नोट— क्षय और त्रिदोष की खाँसी में "मुलहटी" सेवन करना सबसे अच्छा है। मुलेठीका सत्त या रुब्बोसूस औरभी अच्छा होता है।

आमज खाँसी।

आम यानी कच्चे रस से पैदा हुई खाँसी में शूल रोग की पीडा होती है, जोडों में फूटनी होती है; भ्रम, ग्लानि, शोष, सिरदर्द और नेत्र-गंभीरता ये लक्षण होते हैं।

खाँसी की उपेक्षासे हानि

खाँसी बहुत बुरा मर्ज़ है। यह अनेक रोगों का पैदा करनेवाला है, इसीसे कहते हैं, कि "लडाई का घर हाँसी और रोगका घर खाँसी"। अतः खाँसी होते ही, सौ काम छोड़कर पहले उसकी चिकित्सा करनी चाहिये। कहा है :—

कासाच्छ्वास क्षयच्छर्दिस्वरसादादयो गदाः।
भवन्त्युपेक्षया यस्मात्तस्मात्तं त्वरयाजयेत्॥

खाँसीका इलाज न करने से श्वास, क्षय, छर्दि और स्वरकी शिथिलता आदि रोग होते हैं, इसलिये खाँसी को जल्दी जय करना चाहिये। वाग्भट्टने भी कहा है—कासवृद्ध्या भवेच्छ्वासः अर्थात् खाँसी के बढ़ने से श्वास रोग होता है। इसी वजहसे उन्होंने अपने ग्रन्थमें खाँसी के बाद "श्वास" लिखा है।

साध्यासाध्यत्व ।

जुकाम वगैरः से लोगों को खाँसी आने लगती है। अगर धातु शुद्ध होती है, तो बिना किसी प्रकारके इलाजके ही खाँसी आराम हो जाती है। अगर धातु दूषित होती है, तो खाँसी जड़ पकड़ लेती है—बिना धातु शुद्ध किये आराम नहीं होती। अतः खाँसी जब अनेक उपायोंसे भी न जाय, कम-से-कम तब तो धातुका ख़याल करना चाहिये। कितनी ही बार शरीर पर सर्दी या गरमी का असर पड़ने से खाँसी हो जाती है, उसमें वातादिक दोषोंके लक्षण नहीं मिलते। वह शीघ्रही आराम हो जाती है; पर जो खाँसी कुपथ्य करनेसे होती है, उसमें वात, पित्त और कफ के लक्षण मिलते हैं। वह शरीर में घर कर लेती और दिक्कतों से जाती है।

जो खाँसी यक्ष्मा से होती है, वह ताक़तवर से ताक़तवर के शरीर का नाश कर देती है। हाँ, अगर बलवान आदमी की जठराग्नि प्रभृति बलवान हों, तो साध्य होती है, पर ऐसा बहुत कम होता है; यानी वह असाध्य ही होती है। यही बात क्षतज या उरःक्षत खाँसी के सम्बन्ध में समझिये।

क्षयज खाँसी सब दोषों से होती है; यानी उसमें तीनों दोषों के लक्षण मिलते हैं। इसीसे वैद्य उसे दुश्चिकित्स्य कहते हैं। जब वह बुढ़ापे में होती है, तब उसे याप्य कहते हैं।

कितनों ने लिखा है, कि क्षयज और क्षतज खाँसी क्षीण मनुष्यों को मार डालती हैं; किन्तु बलवान की ऐसी खाँसी कष्टसाध्य होती हैं; यानी बड़ी-बड़ी दिक्कतों से आराम होती हैं।

नयी पैदा हुई क्षत और क्षय की खाँसी अच्छी दवा, श्रेष्ठ परिचारक— रोगी की सेवा करने वाला, उत्तम वैद्य और आज्ञाकारी रोगी—इन चार पादों के ठीक होने से साध्य होती है; अन्यथा नहीं।

एक खाँसी बूढ़ों को होती है। उसे 'जरा कास' या बुढ़ापे की खाँसी कहते हैं। वह भी कष्टसाध्य या असाध्य होती है।

वातज, पित्तज और कफज— ये तीन खाँसियाँ साध्य होती हैं; यानी अच्छा इलाज होने से, सहज में, आराम हो जाती हैं। बिना चिकित्सा या जल्दी चिकित्सा न करने से ये भी क्षय की खाँसी-जैसी हो जाती हैं।

जुकाम की खाँसी जुकाम आराम होने से जाती रहती है। अगर उसमें ग़फ़लत की जाती है, तो वह भी असाध्य हो जाती है। अतः उसे सर्दी की मामूली खाँसी समझ कर उपेक्षा न करनी चाहिये।

दो दोषों से हुई वातपित्तज और पित्तकफज खाँसी कष्टसाध्य होती हैं।

सब खाँसियों में क्षतज और क्षयज खाँसी बुरी हैं। ये स्वभाव से ही असाध्य होती हैं। पर रोगी का बल-मांस क्षीण न होने तथा थोड़े दिन की होने से आराम होने की उम्मीद हो सकती है।

हिकमत के मत से।

खाँसी का वर्णन

हिकमत की किताबों में ग्यारह तरह की खाँसी लिखी हैं :—

पहली खाँसी

सादा गरम दूषित प्रकृति फेंफड़ों के मुख या मांस में पैदा हो जाने से खाँसी हो जाती है।

इस खाँसी में प्यास बहुत लगती है, फेंफड़े का सिर और नरखरा लाल हो जाता है, छातीमें कुछ भारीपन जान पड़ता है और गरमी पहुचने से बढ़ जाता है, किन्तु सर्दी पहुँचने से आराम मालूम होता है।

इस का कारण गर्म हवा में रहना, गर्म चीज़ें खाना और गरम इत्र वगैरः सूंघना है। इन की वजह से, दुष्ट प्रकृति शरीर में और ख़ासकर दिमाग़ और फेंफड़े प्रभृति श्वास लेने के अंगों में पैदा हो जाती है

नोट—फेंफड़ेकी और आमाशय की गरमी में यह फर्क है, कि जिस के फेंफड़े में गरमी होगी, उसे शीतल जल को अपेक्षा शीतल हवा से आराम मालूम होगा; किन्तु जिस के आमाशय में गरमी होगी, उसे शीतल हवा से तो कम लाभ होगा, पर शीतल जल से चैन मिलेगा और खाँसी न होगी। ऐसी खाँसी में गरमी को शान्त करने वाली दवा और पथ्य देना चाहिये। जैसे,—ईसबगोल का लुआब या ख़मीरा बनफ़शा। कोई लेप करना भी अच्छा है।

दूसरी खाँसी।

(२) एक खाँसी पित्त वाले ख़ूनके फेंफड़ों में आ जाने और उससे उनके भर जाने से होती है, क्योंकि वह ख़ून फेंफड़ों में भर कर खिंचा-वट और जलन करता है। उस समय उस जलन और खिंचाव से बचने या उन्हें दूर करने को खाँसी चलती है

ऐसी खाँसी होने से श्वास बड़ा और गर्म होता है, चेहरा लाल हो जाता है, थूक नहीं आता, क्योंकि मवाद पतला होता है। लेकिन कभी-कभी पित्त या ज़ोरकी खाँसी होने से कुछ-कुछ मवाद आता है।

नोट—इस प्रकार की खाँसी में वास्लीक की फस्द खोलो। काढ़े वगैरः पिला कर तबियतको नर्म करो। बिना मवाद की सूखी खाँसी में जो दवा दी जाती है, वही दो। अगर जिगर में गरमी हो, तो उसे शान्त करो। उस की शान्ति से फेंफड़ों को पोषक ख़ून सुधरेगा

तीसरी खाँसी।

(३) एक चीज़ गरम और पतली सदा सिर से नीचे उतरती और फेंफड़ों के मुँह में खुजली और जलन करती है। फिर उस से खाँसी होती है।

यह खाँसी सूखी होती है। इस में थूक नहीं आता। रात को और सोने के बाद खाँसी का ज़ोर होता है। यह खाँसी ख़राब है। जल्दी उपाय न करने से फेंफड़ों में घाव हो जाते हैं।

सोने के बाद यह खाँसी इसलिये आती है, कि जागते में जो रुतूबत दिमाग़ से उतर कर फेंफड़ों पर जाती है, उसे आदमी गिरने से पहले ही खखार कर निकाल देता है, वह फेंफड़ों तक नहीं जाती, अगर जाती भी है तो थोड़ी; पर नींद के समय मनुष्य उसे खखार कर निकाल नहीं सकता, अतः वह फेंफड़ों पर गिरती है और इसी से सोने के बाद यह खाँसी उठती है।

चौथी खाँसी।

(४) सादा ठण्डी दुष्ट प्रकृति फेंफड़ों में पैदा होकर खाँसी करती है। इस के कारण (पहली खाँसी में लिखे हुए) सादा गरमी के कारणों से विपरीत हैं। इस दशा में प्यास कम लगती है। गरम दवा और नहाने से लाभ होता है।

नोट—अगर शीतल हवा और बर्फ के पास रहने या शीतल जल पीने से यह रोग हो, तो पहले इन कारणों को दूर करो। जहाँ तक हो सके, श्वास को रोको। क्योंकि श्वास के रोकने से फेंफड़े गरम होते हैं और सरदी जल्दी ही नाश हो जाती है।

पाँचवीं खाँसी।

(५) सिर से मवाद उतर कर फेंफड़ों में गाढ़ा और चेपदार होकर रुक जाता है, तब खाँसी होती है। इस की पहचान यह है, कि यह जुकाम के बाद होती है तथा खाँसी में चेपदार दोष जियादा निकलता और छाती पर बोझा सा मालूम होता है।

नोट—इस खाँसी में मवाद को नर्म करने, पकाने और छाती से छुड़ाने वाली दवा दो। अगर इस का इलाज जल्दी नहीं किया जाता, तो फेंफड़ों में घाव हो जाते हैं।

छठी खाँसी ।

(६) फेंफड़ों और छाती की तरी से खाँसी होती है। ऐसी खाँसी बूढ़ों और तर प्रकृति वालों को अधिक होती है। उस खाँसी में कफ बहुत निकलता और गले में चिपटा रहता है तथा छाती में खरखराहट होती है। यह खाँसी नींद में और जागने के बाद बहुत होती है।

नोट—मवाद को पकाओ। जब पका लो, फौरन निकालने के उपाय करो।

सातवीं खाँसी ।

(७) फेंफड़ों पर खुश्की और गरमी पहुँचने से होती है। यह खाँसी भूख-प्यास की हालत में और चलने-फिरने के समय बढ़ जाती है, क्योंकि इन से तरी का नाश होता और खुश्की बढ़ती है। तर चीज़ों से यह खाँसी दब जाती है।

इस खाँसी के होने से श्वास तंग हो जाता है, थूक में मवाद नहीं निकलता, शरीर दुबला हो जाता है. और नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है। जब यह रोग बढ़ जाता है और दिल पर गरमी ज़ियादा हो जाती है, तब तपेदिक हो जाता है।

नोट—इस खाँसी में ये उपाय करोः—

(१) सूंड़ी, गुदा और पैरों को बादाम के तेल से तर रखो।

(२) पीने के पानी में बिहीदाने का लुआब मिला दो।

(३) तरी बढ़ाने वाले पदार्थ खाने को दो

(४) जौ खाने वाली बकरी का दूध पिलाओ। अगर ज्वर हो तो दूध न दो। इस रोग में दूध अमृत है।

(५) भुसी का हरीरा और बादाम का तेल खिलाओ।

(६) मीठे पानी से नहाना और तरी लाने वाले भफारे में बैठना अच्छा है।

आठवीं खाँसी।

(८) फेंफड़ों में धूल या धूआँ भरने अथवा ज़ोर से चिल्लाने से खरखरापन होकर खाँसी आती है।

नोट—इस खाँसी में ये उपाय करोः—

(१) चटनी या अवलेह चटाओ।

(२) हरीरा पिलाओ, जिस से फेंफड़े का खरखरापन और सुस्ती मिटे तथा सफाई हो।

(३) तरी बढ़ाने वाली गोली मुख में रखो

(४) तर तेल घूंट-घूंट भर पीओ।

(५) गले पर तेल मलो और सूंड़ी तथा गुदा पर तेल चुपड़ो।

नवीं खाँसी।

(९) फेंफड़े या छाती के घाव, इन की सूजन या छाती के पर्दे की सूजन; दिल और फेंफड़े के बीच के पर्दे की सूजन, जिगर-लिवर और तिल्ली की सूजन और नरखरे की सूजन—इन से भी खाँसी होती है। यह खाँसी भी खुश्क होती है। इस में दर्द और खिंचाव होता है। जिस अंग में तकलीफ होती है, उस में तकलीफ के चिह्न प्रगट होते हैं।

नोट—जिगर या पर्दे के सिर में या उसके नीचे सूजन पैदा होती है, तब जिगरके लटकने की जगह खिंचती है, क्योंकि झिल्लियाँ मिली हुई हैं। अतः फेंफड़ों की जगह भी खिंचाव होता और उसमें तकलीफ होती है। इन भागों के खिंचाव से श्वास-मार्ग तंग हो जाते हैं, तब जिगर वाली शक्ति अपनी तकलीफ दूर करने को हवा चलाकर खाँसी पैदा करती है। इस तरह सूखी खाँसी आती है।

सूचना—इस खाँसी का मेल उरःक्षत या सिल और क्षयज खाँसीसे खाता है। उन्हीं का सा इलाज इस में करना चाहिये। लिवर और उरःक्षत वगैरः के लिए पाँचवें भाग का अन्तिम अंश देखिये।

दसवीं खाँसी।

(१०) फफड़े में पित्त वाला खून फुन्सियाँ पैदा करके खाँसी करता है। इस रोगीकी नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है। पेशाब गरम होता है। इस में सरदी से लाभ और गरमी से हानि होती है।

नोट—फस्त खोलना, पछने लगाना और पित्त के दस्त कराना अच्छा है।

ग्यारहवीं खाँसी।

(११) आमाशय के संयोग से भी खाँसी होती है। जिस समय आमाशय भरा होता है, खाँसी ज़ियादा चलती है, पर ख़ाली होने पर खाँसी कम हो जाती है।

नोट—वमन और दस्तों से आमाशय को साफ करो। शर्बत बनफशा और जूफा पिलाओ।

सिल या फेंफड़ों में पीप पड़ना।

यह रोग उन्हें होता है, जिन के दिमाग़ से चेपदार रुतूबतें फेंफड़े पर गिरा करती हैं। इस से श्वास तंग हो जाता और खाँसी आने लगती है। अगर फेंफड़े में घाव हो जाते हैं, तो बहुत कम आराम होता है।

यह रोग उत्तर दिशा के शीतल देशों में, गरमी और जाड़े में होता है; पर पूर्व्वीय देशों में ख़रीफ़ के मौसम में होता है। जिसे यह रोग ख़रीफ़ में होता है, वह आराम नहीं होता। गरमी में तो इस का पैदा होना बहुत ही ख़राब है।

हकीमों के मत में "सिल" से मतलब उस घाव से है, जो फेंफड़ो में होता है। हकीम कुरसी इसे अलग रोग नहीं मानता। वह कहता है, ज्वर के सदैव बने रहने के कारण, तपेदिक के साथ फेंफड़े में जो घाव हो जाता है, उसे "सिल" कहते हैं। कामिलुस्सनाआ का लेखक कहता हैं, फेंफड़े या छाती के घाव को "सिल" कहते हैं। अनेक हकीमों का मत है, कि सीने और फेंफड़ों में जो पीप जमा हो जाती है, उसे सिल कहते हैं।

सिल रोग कैसे होता है ?

(१) तेज़ नजला फेंफड़ों पर गिरता है और मवाद के पकने से पहले अपनी तेज़ी से फेंफड़ों को जला कर ख़ाक कर देता है।

(२) फफड़ों की सूजन में पीप पड़ जाती है और वह घायल हो जाता है।

(३) पसली की सूजन का मवाद या सीने की सूजन या उस झिल्ली की सूजन जो पीठ के पास है पक जाय और उस में पीप पड़ जाय और जब वह खाँसीसे निकलती हुई फेंफड़ोंके ऊपर जावे, तो उसे जला कर ख़ाक कर दे।

(४) ज़ियादा खाँसी होने से अथवा चोट वग़ैरः लगने या गिर पड़ने से या धक्का लगने से किसी रग का मुँह खुल जाय या कोई रग टूट जाय और गले से खून आने लगे [illegible] फेंफड़े में घाव हो जाय।

मतलब यह कि, इन चार प्रकारों से सिल या उरःक्षत या क्षतज खाँसी होती है।

लक्षण

इस रोगी को हर समय धीमा-धीमा ज्वर बना रहता है। तपेदिक या क्षयके सारे चिन्ह प्रकट हो जाते हैं, गाल लाल हो जाते हैं, खास-

र ज्वर की हालत में। खाँसने से पीप निकलता है। कभी-कभी रात ो या दूसरे समय पसीने आते हैं।

जब शरीर का क्षय या घटाव अन्त को पहुँच जाता है, तब तपेदिक ी तरह नाखून शीतल हो जाते हैं। जब मनुष्य का अन्त समय आ ाता है, तब पाँव की पीठ सूज जाती है। पीप में फेंफड़ों के टुकड़े ौर रगों के तार या तन्तु आते हैं। जो दोष निकलता है, वह ुत गाढ़ा होकर बन्द हो जाता है। मूर्ख हकीम समझता है कि गी आराम हो गया, पर रोगी इस हालत में चार दिन से ज़ियादा ही जीता।

बहुधा ऐसा होता है कि फेंफड़ों के घावों के अन्त में खाँसी पैदा कर साफ खून आने लगता है। अगर इस दशा में खाँसी और खून ी बन्द करते हैं, तो खून फेंफड़ों में रुक कर रोगीको मार डालता है। ार उसे बन्द नहीं करते, तो उसके बहुत निकलने से भी रोगी मर ाता है।

खाँसी की चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।

(१) सब से पहले यह देखना चाहिये कि, रोगी की उम्र क्या है उस में बल है कि नहीं, जठराग्नि का बल कैसा है और खाँसी म किस दोष (वात, पित्त, कफ) की अधिकता है। इन बातों को अच्छी तरह देख-भाल कर और साध्यासाध्य का विचार करके दवा देनी चाहिये।

(२) गरमी की खाँसी में गरम और सरदी की खाँसी में सर्द दवा न देनी चाहिये। जिस दवा या रस से कफ सूख कर छाती पर जम जाय, वैसी दवा या रस न देना चाहिये। बहुत से अनाड़ी खाँसी में गरम दवा और गरम पथ्य दिये जाते हैं, जिस से रोगी को खाँसते समय बड़ा कष्ट होता है। छाती पर कफ घर-घर घर-घर करता है। छाती से कफ छूटते समय छाती में पीड़ा होती है। अगर ऐसे ही मौक़े पर रोगी हाथ में आवे, तो आप भी गरम दवा न दें। ऐसा करने से रोगी फ़ौरन ही मर जायगा। इस हालत में ऐसे उपाय करने चाहियें, जिन से छाती पर जमा हुआ कफ मुँह या गुदा की राह से निकल जावे। ऐसे मौक़े पर एक या दो तोले अलसी के काढ़े में तोले भर मिश्री मिला कर पिलाने से कई रोज़ में कफ छूट कर निकल जाता है। अलसी खाँसी की रामवाण दवा है। हमने कफ छाँटने वाली दवाएँ आगे कितनी ही लिखी हैं।

(३) वातज या सूखी खाँसी जब पुरानी हो जाती है, बड़ी मुश्किलों से जाती है। ऐसी खाँसी बिना तेल पिये नहीं जाती। ऐसे मौके पर अलसी का तेल बड़ा काम करता है। पर तेल पीने से रोगी जी चुराते हैं। कुछ भी हो, जब सूखी खाँसी किसी तरह न जाय, तब 'पिप्पल्यादि घृत' बना कर खिलाओ अथवा तेल पिलाओ, पर तेल पिलाओ तो रोगी

को दूध भूल कर भी न दो। ६ माशे या १ तोले गुड़ को बराबर के सरसों के तेल में मिला कर चटाने से भी सूखी खाँसी आराम हो जाती है। अलसी के काढ़े में मिश्री मिला कर पिलाने या तिलों के काढ़े में मिश्री मिला कर पिलाने से सूखी खाँसी जाती रहती है। मतलब यह है, कि सूखी खाँसी में तेल या तेलिहा पदार्थ अवश्य लाभ दिखाते हैं। कहा है:—

रुक्षस्यानिलजं कासमादौ स्नेहैरुपाचरेत्।
सर्पिभिर्वस्तिभिः पेयाक्षीरयूषरसादिभिः॥

अगर रूखे आदमी को वातज खाँसी हो, तो पहले स्नेह पान आदि उपचारों से काम लेना चाहिये; यानी घी तेल आदि पिलाने चाहिय। घी, दूध, पेया और मांस-रस आदि देने चाहियें और गुदा में पिचकारी लगानी चाहिये।

बहुत करके तैल आदि चिकने पदार्थ, दूध, ईख का रस, गुड़ के पदार्थ, दही, काँजी, खट्टे फल, शराब, स्वादिष्ट खट्टे और नमकीन पदार्थ वातज खाँसी में पथ्य हैं। ग्राम्य, अनूप और जलचर जीवों का मांस-रस, जौ, शालि चाँवल गेहूँ, कौंच के बीजों का रस अथवा यूष भी पथ्य है। दशमूल के काढ़े के साथ पकाई हुई पेया भी वातज खाँसी में हित है।

(४) पित्तज खाँसी हो, तो मुलेठी का काढ़ा पिलाकर या अमलताश आदि का नर्म जुलाब देकर पहले पित्त को निकाल देना चाहिये। इस खाँसी में मीठी चीज़ें ज़ियादा फायदा करती हैं। इस खाँसी में गरम दवा कभी न देनी चाहिये।

(५) कफज खाँसी में नमक-मिला गरम जल पिलाकर पहले कफ को निकाल देना चाहिये; तब और दवा देनी चाहिये। अगर छाती पर जमा हुआ कफ न निकाला जायगा, तो कोरी दवाओं से लाभ न होगा। अगर किसी दवा से लाभ होगा भी, तो देर से होगा। इस खाँसी

में हरड़ या मैनसिल आदि का धूआँ पिलाने से भी जल्दी फायदा होता है। सरसों के तेल में सेंधानोन मिला कर छाती पर मलने से भी, कफ की गांठें बधकर, कफ निकल जाता है। इस खाँसी में लंघन कराने से भी लाभ होता है ; लेकिन लंघन और वमन कराने में इस बात को न भूलना चाहिये कि, अगर कफ कच्चा हो, तो पहले लंघन कराये जायँ और यदि कफ पका हो तो पहले वमन करानी चाहियें। इस खाँसी में जौ का पथ्य अधिक हितकर है।

(६) क्षतज खाँसी की चिकित्सा बलकारक, शमन और पित्तज खाँसी नाशक औषधियों तथा अन्यान्य मीठी दवाओं से करनी चाहिये। इस खाँसी में यवागू खूब ठण्डी करके पीनी चाहिये।

इस रोगी को ईख, इक्षुवालिका, कमल, कमलनाल, कमोदनी और सफेद चन्दन के द्वारा औटाया हुआ दूध 'शहद' मिलाकर घाव भरने को पिलाना चाहिये। अगर पेया देनी हो, तो इन्हीं दवाओं के काढ़े के साथ पकाकर और 'शहद' मिला कर पिलानी चाहिये। यह पेया भी घाव भरने में उत्तम है।

(७) क्षयज खाँसी मनुष्यों के मारने के वास्ते पैदा होती है। अगर यह नयी होती है और चिकित्सा के चार पाद ठीक होते हैं, तो शायद कभी आराम हो जाती है। क्षयज और क्षतज खाँसी बलवान के होती है तो साध्य या याप्य होती है। बूढ़े और कमज़ोर के होने से आराम होने की आशा नहीं। क्षयज खाँसी विशेष करके सन्निपात से होती है, इसलिये इस में सन्निपात में हितकारी हो वैसी ही चिकित्सा करनी चाहिये।
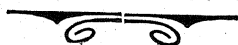
खाँसी में पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

स्वेदन—पसीने लेना, विरेचन—जुलाब लेना, वमन—कय करना, धूमपान—धूआँ पीना, नियम से एक समान भोजन करना और दिन में सोना—शास्त्रकारों ने खाँसी में पथ्य लिखे हैं ।

नोट—पित्तज खाँसी में नर्म दस्तावर दवा देकर दस्त की राह से अथवा मुलेठी का काढ़ा पिला कर मुँह की राह से पित्त को निकाल देना चाहिये । पित्त के निकल जाने से खाँसी जल्दी आराम हो जाती है । इसी तरह कफ की खाँसी में, आध सेर गरम पानी में दो तोले सांभर नोन मिलाकर पिला देने से, कय होकर कफ निकल जाता है अथवा आध सेर गरम पानी में २ तोले सांभर नोन और २ तोले शहद मिला कर पिला देने और उँगली डालकर कय करा देने से भी कफ निकल जाता और खाँसी जल्दी आराम हो जाती है । कफ की खाँसी में धूआँ पीना भी अच्छा है । शुद्ध मैनसिल को पानी के साथ सिल पर पीसकर, उसे बड़बेरी के पत्तों पर ल्हेस कर सुखा लेने और सूखे पत्तों को चिलम में तमाखू की जगह रखकर, ऊपर से आग रखकर, पीने से कफ की खाँसी चली जाती है। इसी तरह वातज खाँसी बिना स्नेहपान कराये यानी घी तेल पिलाये नहीं जाती । अलसी का तेल पीने से वातज—सूखी खाँसी बहुत जल्दी आराम हो जाती है । किस खाँसी में घी तेल आदि चिकनी चीजें पिलाना हित है, किस खाँसी में दस्त कराने चाहियें और किस में वमन कराने से लाभ होगा—ये सब बातें याद रखने से ही वैद्य खाँसी-जैसे भयंकर रोग को जीत सकता है । 'सब धान बाईस पसेरी' वाली कहावत चरितार्थ करने से हानि होती है ।

कटेहली, बिजौरा नीबू, छुहारे, पुहकरमूल, अड़सा, छोटी इलायची, मुलेठी, हरड़, गोमूत्र, लहसन, त्रिकुटा—सोंठ-मिर्च-पीपर, शहद, धान की खील, अदरख, काकड़ासिंगी, पुराना गुड़, अलसी, कपूर, नेत्रवाला, दाख, पीपरामूल, चव्य, चीता, दशमूल—ये सब चीज़ें किसी

न किसी प्रकार की खाँसी में काम आती हैं। पर कौनसी खाँसी में कौन चीज़ पथ्य है, यह बात वैद्य को जाननी चाहिये।

नोट—शहद गर्म होता है और कफ के रोग नाश करने में रामवाण दवा है; पर शहद पुराना उत्तम होता है—नया नहीं। नया शहद नुक़सान करता है। कम-से-कम १ साल का पुराना शहद दवा के काम में लेना चाहिये। अदरख का स्वरस ६ माशे और पुराना शहद ६ माशे मिला कर चाटने से कफज खाँसी, सरदी की खाँसी, जुकाम और श्वास रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं, पर पित्तज खाँसी में यही नुसखा हानि करता है। अड़ूसा खाँसी की हुकमी दवा है। रक्तपित्त—खाँसी के साथ खून आने पर भी अड़ूसा तत्काल फल दिखाता है। अड़ूसे के पत्तों का रस ६ माशे और शहद ६ माशे तथा छोटी पीपरों का चूर्ण १ माशे मिला कर तीन चार दिन पीने से असाध्य खाँसी भी आराम हो जाती है। यह नुसखा पांचों प्रकार की खाँसियों पर रामवाण और अनेक बार का परीक्षित है। इसी तरह मुलेठी और दोनों तरह की कटेली भी खाँसी में महोपकारक हैं।

खाने पीने के पदार्थ—जौ की रोटी, गेहूं की रोटी, साँठी चाँवल, शालि चाँवल, पुराने चाँवलों का भात; बिना छिलकों की उड़द, मूंग और कुलथी की दाल; परवल, नैनुआ, पुराना सफेद कुम्हड़ा, बैंगन, गूलर, सहँजना, बथुआ, खरबूज़ा, केला, नरम मूली,—इन सब की घी और सेंधेनोन के साथ छोंकी हुई तरकारी, नरम बैंगन का भुरता, गाय या बकरी का दूध, घी, मलाई, पुराना घी, दवाओं के साथ पकाया हुआ घी, मिश्री, बिजौरा नीबू, कैथ की चटनी, लहसन, प्याज़, सोंठ, अदरख, कालीमिर्च, सफेद ज़ीरा, छोटी इलायची, सेंधानोन, शहद चाटना, धान की खील खाना और गरम करके शीतल किया हुआ खूब साफ पानी पीना—ये सब खाँसी में पथ्य हैं। मांस खाने वालों के लिये मागुर आदि छोटी मछलियों का शोरबा, बकरे आदि गाँव के पशुओं का मांसरस, अनूप देश के हिरन आदि का मांस-रस और शराब—ये सब पथ्य हैं।

क्षयज खाँसी या यक्ष्मा रोगी को नीचे लिखा हुआ जूस परम हित और पुष्टिकर है:—जौ २ तोले, कुलथी २ तोले और बकरे का मांस

८ तोले—इन को ९६ तोले पानी में औटाओ। जब २४ तोले पानी रह जाय, उतार कर पानी छान लो। इस पानी को फिर दो तोले घी डाल-कर छौंक दो। फिर इस में अन्दाज़ की हींग, सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर पीस कर डाल दो। जब अच्छी तरह पक जाय, इसे नीचे उतार लो और थोड़ा सा 'अनार का रस' मिला दो। यह यूष कमज़ोर यक्ष्मा-रोगियों को बड़ा ही लाभदायक है।

खाँसी या यक्ष्मा वालों को, सवेरे के समय, पुराने चाँवल का भात और तरकारी देनी चाहिये ; पर रातको गेंहू की पतली रोटी, परवल, बैंगन आदि का साग और बकरी का दूध देना चाहिये। लेकिन कफ का कोप ज़ियादा हो, तो दिन में भी भात न देना चाहिये। भात के बदले गेंहू की रोटी देनी चाहिये।

अगर रोगी कमज़ोर हो और अग्नि भी मन्दी हो, तो दिन को पुराने चाँवलों का भात या रोटी दो, पर रात को दूध में पकाया हुआ साबू-दाना, अरारुट या बारली दो। अगर सवेरे भी भात रोटी न पचे, तो दोनों समय साबूदाना और बारली दो। पथ्य देने में दवा से कम विचारकी ज़रुरत नहीं है।

सूखी खाँसी वालों को, रात को सोते समय, सूखी मलाई और मिश्री खाना पथ्य है, पर मलाई खाकर पानी भूल कर भी ४।५ घन्टों तक न पीना चाहिये। सवेरे ही गायका ताज़ा मक्खन २ तोले और मिश्री २ तोले मिला कर नित्य खाने से भी सूखी खाँसी जाती रहती है और साथ ही बल बढ़ता है, पर ऊपर से पानी न पीना चाहिये। खाँसी में पुराना घी खाना पथ्य लिखा है, लेकिन पुराना घी खाने से बहुधा गले में जलन होते देखी गई है ; इसलिये हम पुराने घी की राय नहीं दे सकते। खाँसी में कच्चा घी खाने से भी अवश्य हानि होती है, इसलिये पिप्पल्यादि घृत या और कोई घी पका कर खाना चाहिये। ये घी अकेले भी पिये जाते हैं और भोजन के साथ भी खाये जा सकते

है। इन से घी का काम भी हो जाता है और खाँसी भी आराम हो जाती है। पिप्पल्यादि घृत वातज खाँसी में तो रामवाण है ही—पर और सब खाँसियों को भी आराम करता है।

पानी।

खाँसी रोग में औटा कर शीतल किया हुआ पानी व्यवहार करना चाहिये। कच्चा—बिना औटाया पानी खाँसी और जुकाम में बड़ी हानि करता है। पानी औटाने की तरकीबें हमने "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भाग में लिखी हैं।

अपथ्य।

गुदा में पिचकारी लगाना, नस्य सूंघना, धूप में फिरना-बैठना, आग के सामने रहना, बहुत राह चलना, धूएँ में रहना, स्त्री-प्रसंग करना, दस्त क़ब्ज़ करने वाले पदार्थ खाना-पीना, छाती में जलन करने वाली चीज़ें खाना, बाजरा चना प्रभृति रूखे अन्न खाना, मैला और कच्चा पानी पीना, विरुद्ध भोजन करना, मछली खाना, दिशा-पेशाब और छींक प्रभृति बेग रोकना, कफ को छाती पर सुखाने वाले गरम पदार्थ खाना या बहुत गरम दवाएँ खाना, रात में जागना, चिल्लाकर बोलना, कसरत करना, मिहनत के काम करना, दाँतुन करना, फल या घी खाकर पानी पीना, आलू, अरबी और लाल मिर्च आदि खाना—ये सब खाँसी में अपथ्य या हानिकारक हैं। स्त्री-प्रसंग तो खाँसी रोग में भूल कर भी न करना चाहिये। स्त्री-प्रसंग करते हुए अमृत खाने से भी खाँसी आराम न होगी। भोजन भी हलका और कम करना चाहिये।

शास्त्रकारों ने फस्त आदि से खून निकालना, दाँत घिसना, कन्द, सरसों, पोई का-साग, भारी और शीतल अन्नपान भी खाँसी में अपथ्य लिखे हैं।

खाँसी की सामान्य चिकित्सा।

मरिचादि बटी।

काली मिर्च १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, जवाखार ६ माशे और अनार का छिलका २ तोले,—इन चारों को महीन कूट-पीस कर छान लो। फिर इस चूर्ण में ८ तोले शुद्ध साफ गुड़ मिला कर एक-दिल कर लो और तीन-तीन माशे की गोलियाँ बना लो। यही वैद्यक-शास्त्र की मशहूर "मरिचादि बटी" है।

इन गोलियों के चूसने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती है। वैद्य लोग इन गोलियों से बहुत काम लेते हैं। हमने भी अनेक बार परीक्षा की है।

जिसे खाँसी आती हो उसे चाहिये, कि खाँसी उठते ही एक गोली मुँह में रख कर चूसे—उसे खाय नहीं। जब एक गोली खतम हो जाय, दूसरी गोली फिर मुँह में रख ले। पथ्यापथ्य का ध्यान रखे। अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

कास मर्दन बटी।

सफेद पपरिया कत्था ४ तोले, सेलखड़ी २ तोले, शुद्ध कपूर १ तोले और छोटी इलायची के बीज आधे तोले—इन सब को अलग-अलग पीस-छान लो।

डेढ़ पाव बबूल की छाल लाकर कुचल लो। फिर उसे एक कोरी हाँडी में रख कर, ऊपर से अढ़ाई सेर पानी डाल दो और चूल्हे पर

चढ़ा कर मन्दी-मन्दी आग से पकाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। अब इस काढ़े में ऊपर का पिसा-छना मसाला मिला दो और फिर आग पर पकाओ और चलाते रहो, जब मसाला गोली बनाने लायक़ गाढ़ा हो जाय, उतार लो। इसके बाद चने-समान गोलियाँ बना कर, छाया में, सुखा लो। अगर मसाला हाथ के चिपकने लगे, तो थोड़ी सी सेलखड़ी पीस कर पास रख लो। मसाले को सेलखड़ी के, परथन की तरह, लगा-लगा कर गोली बना लो।

इन गोलियों को मुख में रख कर चूसने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं। २४ घन्टे बाद ही छाती पर जमा हुआ कफ निकलने लगता है। २।३ गोली मुँह में रख कर सो जाने से रात को खाँसी तकलीफ नहीं देती। २४ घन्टे में, हर दिन, २० गोली तक चूसी जा सकती हैं। नयी खाँसी पर तो ये गोली रामवाणही हैं, पर पुरानी में भी कम लाभ नहीं दिखातीं। हम इनको २५ सालसे आज़मा रहे हैं। इन से मुँह के छाले और घाव भी आराम हो जाते हैं। छोटे बच्चे जो गोली चूसना न जानते हों, उन के मुँह में गोली पीस कर जीभ पर लगा देनी चाहिये। परीक्षित हैं

लवंगादि गुटिका।

लौंग १ तोले, काली मिर्च १ तोले, बहेड़े का छिलका १ तोले और सफेद पथरिया कत्था ३ तोले—इन सब को पीस-छान कर रख लो। फिर ऊपर लिखी "कासमर्दन बटी" की तरह, बबूल की छाल का काढ़ा बना-छान कर, उस में ऊपर की पिसी छनी दवाएँ मिला कर मन्दाग्नि मे पका कर, मटर-समान गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लो यही "लवंगादि गुटिका" हैं।

इन गोलियों के मुँह में रख कर चूसते रहने से पाँचों तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं। २।३ घन्टे बाद ही लाभ नज़र आने लगता

और २४ घन्टों में तो ख़ासा फायदा दीखने लगता है। ५।६ दिन में
r की नयी खाँसी आराम हो जाती है। पुरानी खाँसी में भी ये
ꣻसीर का काम करती हैं, पर कुछ देर लगती है। परीक्षित हैं।

कासंसहार बटी।

कालीमिर्च, भुना सुहागा, काकड़ासिंगी, लौंग, भुनी फिटकरी,
रंगी, हरड़ का छिलका, छोटी पीपर और लाहौरी नमक—इन सब
बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो और फिर इन
। के वज़न के बराबर नौ तोले पिसी-छनी "सौंठ" इस में मिला दो।
। मसाले को खरल में डाल कर, ऊपर से "नीबू का रस" देदे कर
। खरल करो। जब मसाला गोली बनाने लायक़ हो जाय, जंगली
के समान गोलियाँ बना कर, छाया में, सुखा लो।

इन गोलियों के दिन में ३।४ बार खाने और रात को एक या दो
ली खाकर सो जाने से सब तरह की खाँसी जल्दी ही आराम हो
ती हैं। यह नुसख़ा हमारे एक वैद्य-मित्र ने अपना आज़मूदा बताया
। वे इस की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं, इसी से हमने लिखा है और
लूम भी ठीक ही होता है, पर हम खुद परीक्षा नहीं कर सके।
5क ज़रूर बना कर देखें, उन्हें निराश न होना पड़ेगा।

कासहर बटी।

कालीमिर्च, छोटी पीपर, करंजे के बीजों की गिरी, कटाई के बीज,
ना सुहागा और सफेद कत्था एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो।
र इस में "शुद्ध अफीम" छै माशे भी मिला दो और खरल में डाल
: "अदरख के रस" के साथ ३ घन्टे तक घोटो और रत्ती-रत्ती भर की
लियाँ बना कर, छाया में, सुखा लो।

इन गोलियों से यों तो सभी तरह की खाँसियों में फायदा होते देखा है, पर बूढ़ों की और नजले या जुकाम की खाँसी में विशेष उपकार होते देखा है। जिस रोगी को श्वास और खाँसी से चैन न मिलता हो, उसे ये अवश्य दी जानी चाहिएँ।

एक-एक गोली सवेरे-शाम खानी चाहिये। अगर रात को नींद न आती हो, तो एक गोली मुँह में रख कर रस चूसते हुए सो जाना चाहिए। परीक्षित हैं।

हरीतक्यादि बटी।

हरड़ का छिलका, करंजे के बीजों की मींगी, काकड़ासिंगी, कालीमिर्च और छिली हुई मुलहटी—इन्हें एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। फिर खरल में डाल, पानी के साथ घोट कर, चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों में से एक-एक गोली मुँह में रख कर चूसने से निश्चय ही खाँसी में लाभ होता है। परीक्षित हैं।

अर्कादि बटी।

आक की मुँहबन्द कलियाँ १ तोले, सफेद पपरिया कत्था १ तोले और कालीमिर्च १ तोले—इन सब को खरल में घोट कर, आधी-आधी रत्ती का गोलियाँ बना लो और छाया में सुखा लो। ये गोलियाँ भी सब तरह की खाँसी आराम करने में रामबाण हैं। सवेरे-शाम एक-एक गोली खानी चाहिये। परीक्षित हैं।

व्योषान्तिका बटी।

तालीसपत्र, चीते की जड़ की छाल, चव्य, सोंठ, अम्लवेत, कालीमिर्च और छोटी पीपर, ये सब एक-एक तोले, दालचीनी, छोटी इलायची और तेजपात चार-चार माशे लेकर महीन पीस-छान लो।

फिर इस चूर्ण को साफ गुड़ में मिला कर जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो।

इन गोलियों के, बलाबल-अनुसार, खाने से खाँसी, श्वास, अरुचि, पीनस, हृद्रोध, वाणी-रोध, ग्रहणी और बवासीर रोग नाश होते हैं। यह योग "चदक्रत्त" का है। हमने कभी परीक्षा नहीं की, पर उत्तम होने में सन्देह नहीं।

पथ्यादि बटी।

हरड़, सोंठ, नागरमोथा और गुड़—इन को बराबर-बराबर लेकर गोलियाँ बना लो। ये गोलियाँ हर तरह की खाँसी में मुफीद हैं। इन के भी मुँह में रखने से खाँसी शान्त होती है। वृन्दने कहा है:—

पथ्याशुण्ठीघनगुडैर्गुटिकां धारयेन्मुखे।
सर्व्वेषु श्वासकासेषु केवलं वा विभीतिकम्॥

सब तरह के श्वास और खाँसी में ऊपर की गोली या ख़ाली बहेड़े का छिलका मुँह में रखने से लाभ होता है।

त्रिफलादि बटी।

हरड़, बहेड़ा, आमला, सोंठ, देवदारु, छोटी पीपर, शोधा हुआ मीठा तेलिया विष, छोटी हरड़, कालीमिर्च और शोधे हुए काले धतूरेके बीज—इन सब को एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। फिर खरल में डाल कर, ऊपर से "भांगरे का रस" दे दे कर घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों से श्वास और खाँसी नाश होते हैं। सवेरे-शाम एक-एक गोली खानी चाहिये।

चणकादि बटी।

भुने-छिले चने १ तोले, सफेद सज्जी १ तोले और काली मिर्च १ तोले—इन को पीस-छान कर खरल में डालो और ऊपर से

अदरख का रस दे दे कर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लो। इन गोलियों में से एक-एक गोली सवेरे-शाम खाने से सब तरह की खाँसी नाश हो जाती हैं।

हरिद्रादि बटी।

हल्दी १ तोले और सफेद सज्जी ३ माशे,—इन दोनों को महीन पीस-छान कर, पानी के साथ घोटो और छोटे बेर-समान गोलियाँ बना कर सुखा लो। इन गोलियों के सवेरे-शाम मुँह ख कर चूसने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं

मधुयष्ठ्यादि बटी।

छिली हुई मुलैठी, कतीरा, सम्मग अरबी, निशास्ता और मिश्री—समान-समान लेकर, कूट-पीस-छान लो। फिर पानी के साथ खरल कर, चने-समान गोली बना कर मुख में रखो। इन गोलियों के चूसने से तर और खुष्क—सूखी और गीली, दोनों तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं।

कत्थे की गोलियाँ।

सफेद पपरिया कत्था महीन पीस-छान कर खरल में डालो और ऊपर से "अड़ूसे के पत्तों का स्वरस" दे दे कर घोटो। जब घुट जाय, मटर-समान गोलियाँ बनाकर, छाया में, सुखा लो। इन में से एक या दो गोली दिन में २।३ बार खाने से सब तरह की खाँसी नाश हो जाती हैं।

नोट—अगर अड़ूसे के पत्ते न मिलें, तो अदरख के स्वरस में भी गोली बना सकते हो।

टंकादि बटी।

भुना हुआ सुहागा १ तोले, कच्चा सुहागा १ तोले और कालीमिर्च

२ तोले—इन तीनों को महीन पीस-छान कर, खरल में डालो और ऊपर से "घीग्वार का रस" देदे कर घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना कर, छाया में, सुखा लो। इन में से एक-एक गोली, दिन में तीन बार, चार-चार घन्टे पर, खाने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं। कई बार आज़माइश की है। परीक्षित हैं।

नोट—ये गोलियाँ बालकों की कफज खाँसी पर खूब चमत्कार दिखाती हैं। एक या दो रत्ती भुना हुआ सुहागा, बँगला पान में रख कर, दिन में २।३ बार खाने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं। कई बार परीक्षा की है।

गुडूच्यादि बटी।

गिलोय का सत्त ६ माशे, निर्दोष ताम्बा भस्म ६ माशे और बेल का गूदा ६ माशे—इन को पीस-छान कर, खरल में रखो और ऊपर से "अडूसे के पत्तों का स्वरस" देदे कर ३ घन्टे तक घोटो। घुट जाने पर, दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना कर, छाया में, सुखा लो। इन गोलियों के सवेरे-शाम खाने से खाँसी चली जाती है।

कासहर मोदक।

हरड़, पीपर, सोंठ, कालीमिर्च और गुड़ इनको बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान लो और गुड़ में मिलाकर छै-छै माशे के मोदक बना लो। इनके सवेरे-शाम खाने से खाँसी नाश होकर अग्नि तेज़ होती है। परीक्षित हैं।

कासान्तक गुटिका।

कायफल, पिठवन, भारंगी, नागरमोथा, धनियाँ, बच, हरड़, सोंठ, पित्तपापड़ा, काकड़ासिंगी और देवदारू—इनको तीन-तीन माशे लेकर, अधकचरा कर लो और आध सेर पानी के साथ काढ़ा बना लो। जब चौथाई पानी रहे, इसी काढ़े में पिसी हुई काली मिर्च १

तोले, छोटी पीपर १ तोले, जवाखार ६ माशे और अनार के छिलके २ तोले, इन सब का पिसा-छना चूर्ण मिला दो और आठ तोले गुड़ भी मिला दो। जब पकते-पकते गोली बनाने योग्य गाढ़ा हो जाय, आग से उतार कर, चार-चार माशे की गोलियाँ बनालो। इन गोलियों के मुख में रख कर चूसते रहने से सब तरह की खाँसी निश्चयही आराम हो जाती हैं। परीक्षित हैं।

नोट—जब काढ़ा चौथाई रह जाय, मलकर छान लेना, फिर उस में पिसी हुई कालीमिर्चादि मिला कर आग पर पकाना; जब गाढ़ा हो जाय, आग से उतार कर गोली बनाना।

कणादि गुटी।

छोटी पीपर, कचूर, पोहकरमूल, हरड़, सोंठ और नागर मोथा—इनको एक-एक तोले लेकर, महीन पीस-छान लो। फिर चूर्ण से दूना साफ गुड़ लेकर, उसमें चूर्ण को मिलाकर, गोलियाँ बना लो। इन गोलियों से भयानक श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं। एक-एक गोली मुख में रख कर चूसते रहना चाहिये। परीक्षित हैं।

शृंगी बटी।

काकड़ासिंगी को महीन पीस कर, पानी के साथ खरल करलो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। इनमें से एक-एक गोली, तीन-तीन घन्टे पर, मुख में रख कर चूसने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं।

अमृतादि बटी।

गिलोय, कौड़ी की भस्म और काली मिर्च,—इनको क्रम से २ माशे, ५ माशे और ६ माशे लेकर पीस-छान लो। फिर अदरख के

रसके साथ खरल करके, मिर्च-समान गोली बना लो और छाया में सुखा लो ।

सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से वायु, कफ, अफारा और खाँसी रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित हैं ।

कासान्तक बटी ।

निरुत्थ बंगभस्म १ तोले, छोटी पीपर २ तोले, हरड़ का छिलका ३ तोले, बहेड़े का छिलका ४ तोले, रूसे की पत्ती ५ तोले और भारंगी ६ तोले—इन सब को अलग-अलग पीस-कूट कर छान लो ।

फिर इन दवाओं को खरल में डाल कर बबूल के काढ़े के साथ १२ घन्टे तक घोटो । दूसरे दिन, फिर बबूल का काढ़ा बनाकर, उसी के साथ घोटो । तीसरे दिन, काढ़े के साथ घुटी हुई दवाओं को शहद डाल-डाल कर १२ घन्टे तक घोटो । चौथे दिन, शहद डाल-डाल कर फिर १२ घन्टे तक घोटो । जब मसाला गाढ़ा हो जाय, जंगली बेर के समान गोलियाँ बना कर सुखा लो । श्वास और खाँसी नाश करने में यह नुसखा रामवाण है ।

सवेरे शाम एक-एक गोली खाने से श्वास, खाँसी और क्षय रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। परीक्षित हैं

नोट—काढ़ा बबूल की छाल का बनाना चाहिये । पाव भर छाल में २ सेर पानी डाल कर काढ़ा बनाओ, जब डेढ़पाव पानी रह जाय, मलकर छान लो । इसी तरह दूसरे दिन की घुटाई को फिर ताज़ा काढ़ा बना लो ।

अकरकरादि बटी

अकरकरा १ तोला, लटज़ीरा १ तोला, हींग १ तोला, छोटी पीपर १ तोला, चनेकी भुनी दाल १ तोला, अफीम ६ माशे और लौंग ६ माशे—इन सबको ज़रा कूटकर, मदारके दूधमें २४ घन्टे तक भिगो रखो । इसके बाद सेंहुड़के डण्डेका गूदा निकालकर, उसमें मदारके दूधमें

भीगी हुई दवाको भरकर, उसे बन्द कर दो और उसपर मिट्टी का गाढ़ा-गाढ़ा लेप करके सुखा दो। फिर सात सेर जंगली कण्डोंकी आगमें उस दवा-भरे डण्डेको रख कर फूँक दो, पर ध्यान रखो कि दवा जलने न पावे। आग शीतल होने पर, डण्डे मेंसे दवाको निकाल कर खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो।

इन गोलियोंके सवेरे-शाम खानेसे नजले और जुकामकी खाँसी तथा दमा निश्चयही आराम हो जाता है। हम इतनाही आज़मा सके हैं। पर कहते हैं, कि इनसे सब तरहका दमा और खाँसी आराम हो जाते हैं। पाठक और तरहकी खाँसियोंमें इन्हें आज़मा देखें। नजलेकी खाँसी पर तो इन्हें बेखटके दें। परीक्षित हैं।

नोट—अफीमको शुद्ध कर लेना या अदरखके रसमें घोट लेना। लटजीरेका दूसरा नाम अपामार्ग या अपांग अथवा चिरचिरा है।

रसराज बटी।

शोधा हुआ पारा ६ माशे, शोधी हुई गंधक ६ माशे, शोधा हुआ मैनसिल ६ माशे, कालीमिर्च ६ माशे और छोटी पीपर ६ माशे—इन को तैयार करो।

पहले पारे और गंधक को १२ घन्टे तक घोटो। इस के बाद मैनसिल मिला कर २ घन्टे तक घोटो। अन्त में, मिर्च और पीपर मिलाकर २ घन्टे तक घोटो। इस के बाद पानों का रस दे दे कर ६ घन्टे तक घोटो। जब मसाला गोली बनाने लायक़ हो जाय, मटर-समान गोली बना कर सुखा लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से सब तरह के श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं।

कासगजकेसरी बटी।

सेंहुड़ के पत्ते आग पर तपा-तपा कर पीसो और एक पाव रस निचोड़ लो। फिर मदार के पत्ते आग पर तपा-तपा कर पीसो और

कपड़े में निचोड़ कर एक पाव रस निकाल लो।

फिर काले धतूरे के पत्तों को पीस कर, कपड़े में निचोड़ कर एक पाव रस निकाल लो।

फिर डेढ़ पाव अड़ूसे के पत्तों को एक सेर गाय के दूध में डालकर पकाओ, जब पाव भर रस रह जाय उतार कर छान लो।

शेष में, ऊपर के चारों रसों को मिला कर, हाँडी में, आग पर पकाओ; जब पकते-पकते गाढ़ा हो जाय, उस में पीपर, लौंग, भुना सुहागा, छोटी इलायची के बीज़, शुद्ध अफीम और सोंठ—एक-एक तोले पीस-छान कर मिला दो और उतार कर खरल में कुछ देर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो।

इन गोलियों में से एक-एक गोली सवेरे-शाम खाने से खोकला खाँसी और दमा-श्वास आराम हो जाते हैं। अच्छा नुसखा है।

शिंगार अभ्रक।

अभ्रक भस्म निश्चन्द्र १६ माशे, चन्द्रोदय, शुद्ध गंधक, सार शिंगरफ, शुद्ध कपूर, खस, बालछड़, लौंग, तज, नागकेशर, तालीस पत्र, जावित्री, गजपीपर, तेज़बल और धाय के फूल, एक-एक माशे; छोटी इलायची ३ माशे, जायफल ३ माशे; सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, हरड़ के छिलके, बहेड़े के छिलके और आमलों के छिलके चार-चार माशे—सब को पीस कर, ३ घन्टे तक, पानी के साथ खरल में खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो। यह यूनानी ढँगका शिंगार अभ्रक है।

सेवन-विधि। खाँसी में एक-एक गोली सवेरे-शाम खा लो। अगर ताक़त लानी हो, तो गोली खाकर दूध पीओ। अगर जीर्ण ज्वर हो, तो गोली को पीस कर शहद या शर्बत अनार में खाओ। अगर पेशाब

बहुत आते हों, तो एक गोली फालसे की छाल के लुआब में मिश्री मिलाकर उस के साथ खाओ

नोट—दो रुपये भर फालसे की छाल रातको आध पाव पानी में भिगोदो। सवेरे मल-छान कर लुआब निकाल लो और तोले-भर मिश्री मिला दो।

शृंगाभ्र।

अभ्रक भस्म निश्चन्द्र ८ तोले, शुद्ध कपूर, जावित्री, सुगन्धबाला, गजपीपर, तेजपात, लौंग, जटामासी, तालीसपत्र, दालचीनी, नागकेशर, कूट और धाय के फूल तीन-तीन माशे; हरड़, बहेड़ा, आमला और त्रिकुटा डेढ़-डेढ़ माशे; जायफल, इलायची, और शुद्ध गंधक छै-छै माशे तथा शुद्ध पारा ३ माशे लो।

पहले पारे और गंधक को चौबीस घण्टे तक खरल करो। जब उसमें चमक न रहे, उसमें अभ्रक भस्म और कपूर मिला कर घोटो। फिर सारी पिसी-छनी दवायें भी उसी खरल में डाल दो और पानी दे-देकर घोटो। जब सारा मसाला घुट जाय, भीगे चने-समान गोलियाँ बना लो।

इस दवा से खाँसी आदि नाश होकर बल-वीर्य बढ़ता है। अनुपान—अदरख का रस और पान का रस। दवा खाकर थोड़ा सा जल पीना चाहिये। मात्रा—एक से चार गोली तक। एक या दो गोली खाकर, ऊपर से अदरख और पान का मिला हुआ एक या दो तोले रस पीना चाहिये। रस के बाद पानी पीना चाहिये। कफ-प्रकृति या सर्द मिज़ाज वाले की पुरानी खाँसी, श्वास और पेट के रोग में इस से निश्चय ही लाभ होता है। हमने सर्द मिज़ाज वालों की पुरानी खाँसी इस दवा से अनेक बार आराम की है।

शास्त्र में इसकी बड़ी लम्बी चौड़ी तारीफ़ लिखी है, पर उतना हम आज़मा नहीं सके। शायद तारीफ सच्ची ही हो, पर हम बिना आज़माये कैसे कह सकते हैं? लिखा है,— इन गोलियों से आमाशय

से पैदा हुए सभी रोग एवं वात, पित्त और कफके सभी रोग आराम होते हैं। ये बल वीर्य और पुरुषार्थ बढ़ातीं तथा बूढ़े को जवान बनाती हैं और सभी रोगों में दी जा सकती हैं। इन पर गाय का घी, दूध और मांस-रस— ये पथ्य हैं। इनके सिवा, औरभी अनेक पदार्थ अपनी प्रकृति के अनुसार, रूपवती नारियों के हाथों से बनवा कर, खाये जा सकते हैं। इन गोलियों के खाने वाला सौ स्त्रियों से संभोग करके भी सन्तुष्ट नहीं हो सकता। इनके सेवन करने वाला अगर कुछ दिनों के लिए साग सब्ज़ी और खटाई छोड़ दे तो अच्छा। अपनी प्रकृति के अनुसार पथ्य पदार्थ खाने वाला, इन गोलियों के सेवन से, दीर्घायु और कामदेव के समान रूपवान हो सकता है और उसके बाल कभी भी सफेद न होंगे।

हम पाठकों को सलाह देते हैं, कि वे इन गोलियों को सर्द मिज़ाज वालों को अवश्य दें, गरम मिज़ाज वालों को न दें। अभ्रक, जहाँ तक हो, हज़ार आँच की लें। अगर न मिले, तो सौ आँच की ही लें। पहले पारे और गंधक को ठीक २४ घन्टे घोट लें, तब और दवाएं मिलावें। पारा और गंधक भूल कर भी अशुद्ध न लें। परीक्षित हैं।

पारे की कजली।

शोधी हई गंधक १६ तोले और त्रिकुटा एक तोले—इन को मिलाकर, काजल के समान महीन कर लो। पीछे सवा हाथ लम्बे सफेद कपड़े पर इस पिसी हई दवा को फैला दो और कपड़े को लपेट कर बत्तीसी बनालो। ऊपरसे बत्ती पर एक डोरा भी लपेट दो। इसके बाद उस बत्ती को ३ घण्टे तक काले तिलों के तेलमें भिगो रखो।

इसके बाद, ज़मीन में एक काँच का साफ गिलास रक्खो। बत्ती के एक सिरे को चिमटे से पकड़लो और दूसरे सिरे को

दियासलाई से जला लो। जलता हुआ सिरा गिलास पर कर दो। बत्तीके जलनेसे तेल टपक-टपक कर गिलास में गिरेगा। जब बत्ती जल जाय और तेल टपक चुके, तेल को तोलो। जितना तेल हो, उतना ही या उसका आधा शुद्ध पारा उस तेल में मिला कर, एक मोती घोटने के खरल में या विलायती खरल में घोटो। जब बिना चमक की कजली हो जाय, निकाल कर शीशी में रखदो। कम-से-कम २४ घण्टे घुटाई होनी चाहिये; क्योंकि चमक रहना अच्छा नहीं। यही "पारेकी कजली" है।

सेवन विधि—इस कजली के सेवन करने से सर्द मिज़ाज वालों की पुरानी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है। हमने इस से ऐसे अनेक रोगी आराम किये हैं, जिनको खाँसी ने बरसों से घेर रखा था, जिनकी उम्र भी ४०।४५ को पार कर गई थी और जिन्हें शीतल पदार्थोंके खाने और शीतल स्थानों में रहने से खाँसी हैरान करती थी। हमारी रायमें, यह उन्हीं को देनी चाहिये, जिनकी खाँसी में कफ बहुत गिरता हो, जिन्हें गरम चीज़ें खाने से लाभ दीखता हो और खाँसी दबती हो। जिन के मुह से कफ तो बहुत गिरता हो, पर भीतर जलन मालूम होती हो, उन्हें न देनी चाहिये। सारांश यह, कि जिन्हें गरम दवा और गरम पथ्य से फायदा होता हो, जिन्हें सर्द स्थान और सर्द चीजों से हानि होती हो, जिनकी उम्र ५० के क़रीब हो, जिनके गलेसे कफ बहुत गिरता हो, उन्हींको यह कज्जली देनी चाहिए। उनके लिए यह अमृत है।

इसकी मात्रा आधी रत्ती से दो रत्ती तक है। अनुपान शहद है, यानी कज्जली को शहद में मिला कर सवेरे--शाम चाटना चाहिये। इसके कुछ दिन चाटने से असाध्य पुरानी खाँसी, श्वास और शूल प्रभृति रोग आराम हो जाते हैं। यह आम को नाश करके शरीर को हलका करती है।

इसके सेवन करने वाले को नमक, खटाई, लाल मिर्च, साग-तरकारी, दही, अचार, स्त्री-प्रसंग और राह चलना वगेरः से बचना चाहिये। परीक्षित है।

कास लक्ष्मी-विलास बटी।

निरुत्थ बंगभस्म, निश्चन्द्र अभ्रक भस्म, ताम्बा भस्म, काँसी-भस्म, शुद्ध पारा, हरताल भस्म, शुद्ध मैनसिल और शुद्ध खपरिया—इन में से हरेक को एक-एक तोले लेकर मिला लो और फिर तीन दिन तक केशुरिया के रस और कुल्थी के काढ़े में खूब खरल करो।

इसके बाद इस में छोटी इलायची के दाने, जायफल, तेजपात, लौंग, अजवायन, ज़ीरा, त्रिकुटा, तगरपादुका, दालचीनी और नीला बंसलोचन छै-छै माशे पीस कर मिला दो और फिर केशुरिया का रस और कुल्थी का काढ़ा दे-दे कर घोटो और चने-समान गोलियाँ बना लो।

इन गोलियों से राजयक्ष्मा, खून की खाँसी, श्वास, पीलिया, हलीमक, शूल, बवासीर और प्रमेह आदि रोग नाश होते तथा अग्नि बढ़ती और बल आता है। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर शीतल जल पीना चाहिये।

श्वास कुठार रस।

शुद्ध हिंगुल, शुद्ध गंधक, भुना सुहागा, कालीमिर्च और त्रिकुटा—एक-एक तोले लेकर महीन पीस लो और खरल में डाल कर पानी के साथ घोटो। घुटने पर दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लो।

इन गोलियों से सब तरह की खाँसी और सन्निपात नाश होते हैं। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर, ऊपर से अदरख का रस एक तोले पीना चाहिए।

समशर्कर लौह ।

लौंग, जायफल, कूट, अजवायन, त्रिकुटा, चीते की जड़, पीपरामूल, अड़ूसे की जड़ की छाल, कण्टकारी, धान की खील, काकड़ासिंगी, दालचीनी, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, हरड़, कचूर, शीतलचीनी, और नागरमोथा,—इन को बराबर-बराबर एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्ण में लोह भस्म १ तोले, अभ्रक भस्म १ तोले और जवाखार १ तोले पीस कर मिला दो। फिर इस में, सारे चूर्ण के बराबर, २२ तोले सफेद चीनी मिला दो और घी की चिकनी हाँडी में रख दो।

इस दवा के सेवन करने से सब तरह की खाँसी, रक्तपित्त, श्वास और क्षयज खाँसी नाश होकर बल और अग्नि की वृद्धि होती है। मात्रा चार माशे की है।

वृहत् शंगाराभ्र ।

शुद्ध पारा, शुद्ध आमलासार गंधक, शुद्ध सुहागा, नागकेशर, कपूर, जायफल, लौंग, तेजपात और काले धतूरे के शोधे हुए बीज—एक-एक तोले लो।

निश्चन्द्र अभ्रक भस्म १००० या १०० आँच की ४ तोले, तालीसपत्र, नागर-मोथा, कूट, जटामासी, दालचीनी, धाय के फूल, छोटी इलायची के बीज, त्रिकुटा, त्रिफला और गजपीपर दो-दो तोले लो।

पहले पारे और गंधक को २४ घन्टे तक खरल कर लो। पीछे इस में और सब दवाएँ पीस-छान कर मिला दो और पीपर का काढ़ा दे-दे कर ६ घन्टे तक घोटो। घुट जाने पर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो।

सेवन-विधि—डेढ़ माशे दालचीनी के चूर्ण और ६ माशे शहद के

साथ सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से मन्दाग्नि, अरुचि, पीलिया, पेट के रोग, सूजन, ज्वर, ग्रहणी, खाँसी, श्वास और यक्ष्मा आदि रोग नाश होकर बल वीर्य और अग्नि की वृद्धि होती है।

वसन्तराज रस।

त्रिकुटा, त्रिफला, कुटकी, हरड़, शुद्ध धतूरे के बीज, गुजराती इलायची, चिरायता, कपूर, लौंग और जायफल,—इन को बराबर-बराबर, एक-एक तोले, लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्ण में १ तोले लोहाभस्म और १ तोले शुद्ध अफीम भी मिला दो। शेष में, सारे मसाले को, १२ घन्टे तक, सहँजने के रस में घोटो। यही "वसन्तराज रस" है। इस के सेवनसे सब तरह की खाँसी, श्वास और स्वरभंग रोग नाश होते हैं।

वसन्त तिलक रस।

सोना भस्म १ तोले, अभ्रक भस्म २ तोले, लोहा भस्म ३ तोले, शुद्ध पारा ४ तोले, शुद्ध गंधक ४ तोले, बंग भस्म २ तोले और अबीध मोती ४ तोले—इन सब को, बारह-बारह घण्टे, अड़ूसे के रस, गोखरू के रस और ईख के रस में, खरल करके बद्धमूष में रखो। फिर उस मूष को गज़-भर गहरे चौड़े लम्बे खड्डे में रख कर, जंगली कण्डों की आग लगातार २४ घन्टे तक दो। इसके बाद, आग ठण्डी होने पर, मूष को निकाल लो। मूष में से रस निकाल कर खरल में रखो। फिर ऊपर से कस्तूरी ४ तोले और कपूर ४ तोले डाल कर खरल करो। यही "वसन्त तिलक रस" है। इस की मात्रा २ रत्ती की है। यह श्वास और खाँसी की महौषधि है।

शृंग्यादि चूर्ण।

काकड़ासिंगी, सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपर, पोहकरमूल, हरड़,

का वक्कल, बहेड़े का बक्कल, बीजहीन आमले, कटेरी या भटकटैया का पञ्चाङ्ग, भारंगी, सेंधानोन, संचरनोन, बिड़नोन, समन्दर नोन और कँचिया नोन—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस कर, कपड़े में छान लो और शीशी में रख दो।

यह चूर्ण हमने ही नहीं, हमारे गुरु जी ने भी अनेकों बार आज़माया है। यह श्वास और खाँसी की अचूक महौषधि है। इसके सेवन करने से, छाती पर जमा हुआ कफ छुटकर, श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं। इतना ही नहीं, इस चूर्ण से हिचकी, श्वास, उर्द्ध्वश्वास और अरुचि एवं मन्दाग्नि भी नाश हो जाती है। वैद्यविनोद-कर्त्ता ने इसे खाँसी रोग में लिखा है, पर हमने देखा है कि यह श्वास को भी नष्ट करता है। जब मनुष्य की भीतरी नाड़ियों और छाती पर कफ जम जाता है, कफ के जम जाने से श्वास-नली में हवा के आने जाने की राह बन्द हो जाती है; तब मनुष्य कष्ट के साथ बारम्बार श्वास लेता है। ऐसी हालतमें, अगर रोगके आरंभ में, प्रस्वेद कराकर यानी पसीने निकाल कर, कफ पतला कर लिया जाय और फिर यह चूर्ण दिया जाय, तो पतला हुआ कफ दस्त की राह से निकल जायगा और रोगी का पीछा श्वास और खाँसी से छुट जायगा। शरीर का पसीना निकालने से शरीर हलका और कफ पतला हो जाता है। उस समय "शृंग्यादि चूर्ण" जैसी वात-कफ नाशक दवा देने से कफ सहजमें निकल जाता है। ध्यान रखो, यह चूर्ण वात-कफ नाशक है और श्वास में 'वात-कफ' प्रधान होते हैं, अतः वात-कफकी खाँसी और श्वास में ही इसका देना हितकर है।

सेवन विधि—इस चूर्ण की मात्रा, जवानके लिए, तीन से ६ माशे तक है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाकर, गरम जल पीना चाहिए। फिर लिखे देते हैं, कि इसे वात-कफज या कफज खाँसी में ही देना चाहिए। सुपरीक्षित है।

पिप्पल्यादि चूर्ण ।

पीपर, काली मिर्च और सूखा अनार दाना —इनको बराबर-बरा-बर लेकर पीस-छान लो । इस चूर्ण में जवाखार और गुड़ मिलाकर सेवन करने से दारुण क्षय से पैदा हुई खाँसी, श्वास, पीनस, वमन, ज्वर और मन्दाग्नि रोग नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

समशर्कर चूर्ण ।

लौंग १ तोले, जायफल १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, काली मिर्च २ तोले और सोंठ ४ तोले,—इन सब को पीस-छान कर तोलो। जितना चूर्ण हो, उतनी ही उत्तम "मिश्री" पीस कर उसमें मिला दो और साफ बर्तन में रख दो । यही "समशर्कर चूर्ण" है ।

यह नुसख़ा अनेक ग्रन्थों में लिखा है और आज़माने पर अच्छा पाया गया है, इसीसे हमने भी लिखा है । इसके सेवन करने से खाँसी, ज्वर, अरुचि, प्रमेह, गुल्म, मन्दाग्नि और संग्रहणी रोग नाश हो जाते हैं । लिखा है:--

> सितासमं चूर्णमिदं प्रसह्य, रोगाननेकान्प्रबलान्निहन्ति ।
> कासज्वरारोचकमेहगुल्म, श्वासाग्निमाँद्यग्रहणीप्रदोषान् ॥

मरिचादि चूर्ण ।

काली मिर्च १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, अनार के सूखे छिलके २ तोले जवाखार ६ माशे और साफ पुराना गुड़ ८ तोले—इनको पीस-छान कर चूर्ण बना लो । वृन्द ने लिखा है:—

> सर्वौषधैरसाध्या ये कासाः सर्व वैद्यनिर्मुक्ताः ।
> अपि पूयं छर्दयतां तेषामिदमौषधं पथ्यम् ॥

इस चूर्ण से वैद्यों द्वारा सर्वथा असाध्य कह कर त्यागे हुए अथवा पीप वमन करने वाले, भयंकर खाँसी से दुखी रोगी भी आराम हो

जाते हैं।

नोट—मरिचादि बटी और मरिचादि चूर्ण एक ही हैं। कोई चूर्ण से काम लेते हैं और कोई गोलियों से। इस योग के उत्तम होने में जरा भी शक नहीं।

तालीसादि चूर्ण।

तालीस पत्र १ तोले, काली मिर्च २ तोले, सोंठ ३ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, तेजपात ६ माशे, छोटी इलायची ६ माशे और सफेद चीनी २० तोले ले लो। पहले दवाओं को कूट-पीस कर छान लो। फिर चीनी मिलाकर रख दो। यही "तालीसादि चूर्ण" है।

इस चूर्ण के सेवन करने से खाँसी, श्वास और अरुचि आदि रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—अगर यह चूर्ण पित्तज खाँसी में देना हो, तो इसमें पाँच तोले नीली झाँई का बंसलोचन भी मिला देना चाहिए। इसे सवेरे-शाम सेवन करना चाहिए।

तालीसादि मोदक।

ऊपर के चूर्ण की चीनी में बराबर पानी मिलाकर चाशनी कर लो। फिर उसमें दवाओं का चूर्ण मिला कर मोदक—लड्डू बना लो। आग पर पकने से लड्डू चूर्ण से हलके हो जाते हैं। इनके सेवन करने से खाँसी, श्वास, अरुचि, पीलिया, ग्रहणी, तिल्ली, सूजन, अतिसार, जी मिचलाना और शूल आदि नाना रोग नाश होते हैं।

नोट—हारीतने इस चूर्ण या मोदक में दालचीनी और लौंग भी लिखी हैं।

सितोपलादि चूर्ण।

मिश्री १६ तोले, नीली झाँई का बंसलोचन ८ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, छोटी इलायची के बीज २ तोले और दालचीनी १ तोले—इन को पीस-छान कर रख लो। यही "सितोपलादि चूर्ण" है।

सेवन-विधि—इसे ना-बराबर घी और शहद में मिला कर चाटने

से श्वास, खाँसी, क्षय, हाथ पैरों की जलन, मन्दाग्नि, जीभ-जकड़ना, पसलीका दर्द, अरुचि, जीर्ण ज्वर और ऊपर का रक्तपित्त नाश होकर शरीररक्षा होती है। इससे पुराने बुख़ार और खाँसी-श्वास में अवश्य-अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

सितोपलादि चटनी।

मिश्री १६ तोले, बंसलोचन ८ तोले, छोटी इलायची के बीज ४ तोले, तज २ तोले और छोटी पीपर १ तोले—सब को पीस-छान कर रख लो।

सेवन-विधि—इस की मात्रा १ से २ माशे तक है। यह "शहद" या "शर्बत अनार" में मिला कर खाने से बुख़ार और खुष्की को नाश करता, तरावट लाता और भूक बढ़ाता है। अगर ताक़त बढ़ानी हो, तो मूंगे की शाख और अबीध मोती, गुलाब जल में घोटकर, इसमें मिला दो और शेष में कुछ चाँदी के वर्क भी मिला दो। पीछे शहत या शर्बत अनार में मिला कर चाटो। इस तरह चाटने से खाँसी और क्षय रोग भी नाश होंगे तथा बल बढ़ेगा। यह चटनी ऊपर वाले "सितोपलादि चूर्ण' से शीतल है।

ज़ातीफलादि चूर्ण।

जायफल, लौंग, छोटी इलायची के बीज, तेजपात, दालचीनी, नागकेशर, शुद्ध कपूर, सफेद चन्दन का बुरादा, काले तिल, नीली झाँई का बंसलोचन, तगर, सूखे आमले, तालीसपत्र, छोटी पीपर, बहेड़े का छिलका, काला ज़ीरा, चीते की छाल, सोंठ, बायबिडंग और कालीमिर्च—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर, कपड़े में छान लो। फिर इस चूर्ण को तोलो। यह चूर्ण जितना हो, उतनी ही खूब धुली हुई "भाँग" इस में पीस-छान कर मिला दो। इस के बाद इसे फिर तोलो और सारे चूर्णके बराबर उत्तम "मिश्री" पीस-छान कर

मिला दो और किसी साफ बर्तन में मुख बन्द करके रख दो। यही "जातीफलादि चूर्ण" है। शास्त्र में लिखा है:—

> कर्षमात्रं ततः खादेन्मधुनोऽप्लावित सुधीः।
> अस्य प्रभावात् ग्रहणी कास श्वासारुचिक्षयाः।
> वातश्लेष्मप्रतिश्यायाः प्रशमंयान्तिवेगतः॥

इस में से १ कर्ष चूर्ण शहद में मिला कर खाने से ग्रहणी, खाँसी, श्वास, अरुचि, क्षय—कफक्षई, वात-कफ की वृद्धि और ज़ुकाम ये रोग नाश होते हैं।

यद्यपि इस से ग्रहणी और श्वास-खाँसी आदि का आराम होना लिखा है, पर संग्रहणी रोग पर यह चूर्ण प्रधान है; इसी से हमने "चिकित्साचन्द्रोदय" तीसरे भाग में, संग्रहणी रोग नाशार्थ, इसे लिखा है। पर हमने अनेक बार देखा है, कि इसके सेवन से श्वास और खाँसी भी निश्चय ही नाश हो जाते हैं और रोगी की रात चैन से कटती है। इसी से हमने इसे यहाँ फिर लिखा है।

शास्त्र में इस की मात्रा एक कर्ष की लिखी है। कोई कर्ष को १ तोले के बराबर और कोई १६ माशे का समझते हैं। अगर कोई अनजान वैद्य, केवल शास्त्र पर भरोसा करके, भाँग न खाने वाले कमज़ोर रोगी को १ कर्ष चूर्ण दे दे, तो लाभके बजाय हानि ही होगी। इसलिये काम विचार कर करना चाहिये। शास्त्र में जो मात्रा लिखी है, वह ग़लत नहीं; पर आजकल ग़लत है; क्योंकि अब पहले जैसे बलवान आदमी नहीं होते। जो लोग प्राचीन ग्रन्थों के नुसख़ों से इलाज करते हैं, उन्हें सावधान होना ज़रूरी है। इसी से अनुभवी वैद्य अच्छा माना गया है।

सेवन-विधि—स्त्रियों और कमज़ोर रोगियों को १ से ३ माशे तक की मात्रा ठीक होगी। पर हाँ, जो भाँग खाने के अभ्यासी हैं; उन्हें चार छै माशे भी दे सकते हैं। इसकी एक मात्रा को "शहद" में मिला

कर चाट जाना चाहिये। कोई-कोई इसे "शर्बत गुलबनफ़शा" या "शर्बत उन्नाव" के साथ भी चटाते हैं। यह बात रोगी के मिज़ाज और वैद्य की समझ पर मुनहसिर है। इस चूर्ण को शाम के वक्त चाटना और ऊपर से निवाया दूध पीना अच्छा है।

नोट—आजकल, धातु पर गरमी पहुंचने वगेरः कारणों से, लोगों को जुकाम बना रहता है। जुकाम या नजले से खाँसी और क्षय हो जाते हैं। क्षय होने पर, बहुधा, कफ के साथ खून भी आता है। इस दशा में हम सवेरे ही १ या दो माशे "लवंगादि चूर्ण" शहद या शर्बत बनफशा में चटाकर, ऊपर से मिश्री-मिला गाय का दूध आध पाव पिलाते हैं और शाम को "जातीफलादि चूर्ण" "शहत" या "शर्बत बनफशा" में चटाकर मिश्री-मिला गुनगुना दूध पिलाते हैं। अगर रोगी को पाखाना साफ नहीं होता और कफ में खून भी आता दीखता है, तो दिन-रात में तीन बार ६ माशे से २ तोले तक "द्राक्षारिष्ट" भी चटाते हैं। यक्ष्मा और क्षयज खाँसी की यह सिद्ध और अनुभूत चिकित्सा है। लवंगादि चूर्ण और द्राक्षारिष्ट बनाने की विधि "चिकित्सा-चन्द्रोदय" पाँचवें भाग के पृष्ठ ६०६—६११ में लिखी है।

अश्वगन्धादि क्वाथ।

असगन्ध, गिलोय, शतावर, दशमूल, खिरेंटी, अड़ूसा, पोहकर-मूल और अतीस,— इन आठों दवाओं को चार-चार या पाँच-पाँच माशे— बराबर-बराबर,—लेकर, काढ़े की विधि से, काढ़ा बना लो। इस काढ़े के सवेरे-शाम पीने से क्षय रोग और खाँसी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—गिलोय, अड़ूसा, असगन्ध और शतावर आदि सदैव गीले लेने चाहियें, पर सूखे नहीं। काढ़े की दवाएं कुल मिला कर दो से चार तोले तक ले सकते हैं। जितनी दवा हो, उस से सोलह गुने पानी में, मिट्टी की हाँडी में, काढ़ा पकाना चाहिये और आठवाँ भाग पानी रहने पर, उतार कर मल छान लेना और निवाया-निवाया पीना चाहिये। हाँडी पर ढकना न रखना चाहिये। विशेष जानने के लिए "चिकित्सा चन्द्रोदय दूसरे भाग" के पृष्ठ १७३, १३२-१३५ और १३१-१३३ देखिये।

वासकादि क्वाथ ।

अड़ूसा, सोंठ, नागरमोथा, भारंगी, चिरायता और नीम की छाल—इनको बराबर-बराबर चार-चार माशे लेकर काढ़ा बना लो और शीतल होने पर "शहद" मिलाकर पी लो। इस काढ़े से श्वास और खाँसी निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

बृहती क्वाथ ।

दो तोले कटेरी का पञ्चाङ्ग या जड़ लेकर, ३२ तोले पानी में काढ़ा बनाओ, जब आठवाँ भाग या चार तोले पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो और २ माशे "पीपरका चूर्ण" मिलाकर पी लो। इस काढ़े से अनेक बार ७ दिन में ही दारुण खाँसी आराम होते देखी है। परीक्षित है।

कंटकार्यावलेह ।

कटेरी या भटकटैया का पञ्चाङ्ग ४०० तोले लेकर, १०२४ तोले पानी में डाल कर, मन्दाग्नि से पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। यह काढ़ा तैयार हुआ।

गिलोय ४ तोले, चव्य चार तोले, चीते की छाल ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, काकड़ासिंगी ४ तोले, सोंठ ४ तोले, पीपर ४ तोले, काली मिर्च ४ तोले, धमासा ४ तोले, भारंगी ४ तोले, रास्ना ४ तोले और कचूर ४ तोले, इन १२ चीज़ों को अलग-अलग पीस-छान कर, चार-चार तोले चूर्ण तैयार कर लो और फिर एक में मिला दो।

नीली झाँई का बंसलोचन ८ तोले और छोटी पीपर १६ तोले—इन को भी पीस कर रख लो।

अब काली तिली का तेल ३२ तोले, घी बत्तीस तोले और शहद ३२ तोले भी तैयार कर लो।

अब उस पके हुए काढ़े को किसी क़लईदार बर्तन में भर कर चूल्हे पर चढ़ाओ और मन्दाग्नि से पकने दो। पकते समय इस में, गिलोय प्रभृति १२ दवाओं का पिसा-छना चूर्ण, तेल और घी भी डाल दो और चलाते रहो। जब अवलेह के जैसा गाढा होने पर आवे, नीचे उतार लो। जब शीतल हो जाय, उसमें शहद, बंसलोचन और पीपर मिला दो। बस, यही "कंटकार्यावलेह" है।

इस अवलेह के चाटने से श्वास और खाँसी निस्सन्देह आराम हो जाते हैं।

वासावलेह।

दो सेर अड़ूसे की छाल और १६ सेर पानी को एक क़लईदार बर्तन में चढ़ाकर काढ़ा बनाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

फिर इस काढ़े में एक सेर 'बूरा' और पाव भर 'घी' डाल कर पकाओ। जब गाढ़ा होने पर आवे, उसमें छोटी पीपरों का पाव भर "चूर्ण" मिलाकर नीचे उतार लो। जब शीतल हो जाय, उसमें एक सेर "शहद" भी मिला दो। यही "वासावलेह" है।

इस अवलेह के चाटने से यक्ष्मा, खाँसी, श्वास, पसली का दर्द, हृदय का शूल, ज्वर और रक्तपित्त ये आराम होते हैं। परीक्षित है।

पिप्पली घृत।

पहले छोटी पीपर १ पाव लेकर महीन पीस लो। फिर उस चूर्ण को बकरी के दूध के साथ सिल पर पीस लो। यही "कल्क" है।

अब गाय का घी अढ़ाई सेर, बकरी का दूध दस सेर और ऊपर की पीपरों की लुगदी—तीनों को, क़लईदार बर्तन में, मन्दाग्नि से पकाओ। जब दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतार लो। फिर

इसे छान कर अच्छे बर्तन में रख दो। यही "पिप्पली घृत" है।

इस घी की मात्रा ४ तोले तक है। इसके पीने से सब तरह की नई और पुरानी खाँसी आराम होती हैं। अगर रोगी पथ्य से इसे पिये और घी पच जाय, तो खाँसी खड़ी न रहेगी। घी पीकर पानी कभी न पीना चाहिए। परीक्षित है।

रास्नादिक घृत।

रास्ना, खिरेंटी, त्रिकुटा और गोखरू—इन सब को बराबर-बराबर पाँच-पाँच तोले लेकर, पानी के साथ, सिल पर पीस कर लुगदी बनालो।

फिर एक सेर घी और चार सेर बकरी का दूध तथा ऊपर की लुगदी को क़लईदार बर्तन में रख, मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही "रास्नादि घृत" है।

इस घी की मात्रा ६ माशे से चार तोले तक है। इसे पीकर ऊपर से "कंटकारी का स्वरस" पीने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं।

भृगु हरीतकी।

जड़, छाल और पत्तों समेत कटेरी का सर्वांग ४०० तोले और हरड़ १०० नग लेकर, दोनों को एक बासन में डालकर, १०२४ तोले जल में पकाओ। पकते-पकते जब चौथाई काढ़ा रह जाय, उतार कर महीन कपड़े में छान लो और हरड़ों को अलग रख दो।

फिर उस काढ़े में पहले की पकाई हुई १०० हरड़ और ४०० तोले गुड़ डाल कर मन्दाग्नि से पकाओ। जब पक कर अवलेह के समान हो जाय, उसे उतार कर शीतल कर लो।

इसके बाद उस तैयार हुए अवलेह में सोंठ ४ तोले, काली मिर्च

४ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, छोटी इलायची के बीज ४ तोले, दाल-चीनी ४ तोले, तेजपात ४ तोले, नागकेशर ४ तोले और शहद २४ तोले—इनको मिला दो। शहद के सिवा, सोंठ, मिर्च आदि को पीस-छान कर मिलाना । बस, अब "भृगुहरीतकी" तैयार हो गई। यह अवलेह चाटा जाता और हरड़ खाई जाती है ।

इस अवलेह के बल और अग्नि अनुसार चाटने से खाँसी रोग निश्चय ही आराम हो जाता है ।

खाँसी पर ग़रीबी नुसख़े ।

नोट—नीचे के नुसख़ों का सम्बन्ध "सामान्य चिकित्सा" सेही नहीं हैं। यहाँ सब तरह की खाँसियों को आराम करने वाले नुसख़े अलग-अलग लिखे जाते हैं। जो नुसख़ा सब तरह की खाँसियों पर लिखा हो, उसी का सम्बन्ध "सामान्य चिकित्सा" से समझना चाहिये, सब का नहीं। यहाँ बहुत से नुसख़े खास तरह की खाँसियों पर भी लिखे जाते है ।

(१) कटेरी की जड़ का चूर्ण १ माशे और छोटी पीपरों का चूर्ण १ माशे—दोनों को ६ माशे "शहद" में मिलाकर चाटने से समस्त खाँसी नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

नोट—कटेरी के फूलों का चूर्ण १ माशे और पीपर का चूर्ण १ माशे—इन दोनों को "शहद" में मिलाकर चाटने से भी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित हैं।

(२) काकड़ासिंगी को महीन पीस-छान कर, पानी के साथ जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम, एक-एक गोली मुँह में रख कर चूसने से सब तरह की खाँसी—ख़ासकर कफ की खाँसी—आराम हो जाती है। परीक्षित है ।

(३) शलग़म पर कपड़-मिट्टी करके सुखा लो और फिर उसे भूभल या तन्दूर में भून लो। भुन जाने पर, उस में से ६ माशे रस निकाल लो। उस रस में २ माशे "मिश्री" मिला कर पीलो। इस तरह सवेरे-शाम पीने से ४।६ दिन में खाँसी जाती रहती है।

(४) गेहूँ १ तोले लेकर पाव भर पानी में पकाओ और पकते समय उसमें १ या २ माशे "लाहौरी नमक" भी डाल दो। जब तीसरा भाग जल रह जाय, उतार कर छान लो और पी जाओ। इस से ७ दिन में खाँसी जाती रहती है।

(५) गावज़ुबाँ ३ माशे ६ रत्ती, सौंफ ४ माशे, छिली मुलेठी १६ माशे, खस का पोस्ता नग १, सम्मग अरबी २ माशे, लिसौढ़े नग १७, ख़तमी के बीज ४ माशे और बड़े मुनक्के नग ११—इन को आध सेर पानी में औटाओ, जब छटाँक या डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, उतार कर छान लो और रुपया-भर 'मिश्री' मिला कर पीलो। इस नुसख़े को एक हकीम साहब सूखी और पित्त की खाँसी पर बहुत ही अच्छा कहते हैं। उनका कहना है, कि कई बार यह नुसख़ा सभी तरह की खाँसियों में अच्छा पाया गया है।

(६) छिली मुलेठी १६ माशे, बड़े मुनक्के १६ माशे, खस-खस के डोडे दानों समेत ७ नग, लिसौढ़े ४ माशे, अलसी ४ माशे, सादा अंजीर ३ दाने, सौंफ की जड़ २ माशे और ज़ूफा २ माशे—सब को तीन पाव जल में डाल कर काढ़ा करो। जब एक पाव पानी रह जाय, उस में आध सेर "मिश्री" मिला कर चाशनी करो।

फिर बादाम की गरी ४ माशे, निशास्ता ४ माशे, चिलगोज़े की मींगी ४ माशे, काकड़ासिंगी ८ माशे, रुब्बेसूस—मुलेठी का सत्त ४ माशे, सम्मग अरबी ४ माशे, छोटी पीपर २ माशे और मुनक्का बिना बीज के १ माशे—इन सब को पीस कर उसी चाशनी में डाल दो

और उतार लो। इसकी मात्रा ७॥ माशे के क़रीब है। इस के सेवन करने से खाँसी जाती रहती हैं।

(७) गोंदी का लुआब निकाल कर, उस में बराबर की "चीनी" मिला कर चाशनी करो। अन्त में थोड़ी सा "बबूल का गोंद" पीस कर मिला दो। इस में से चार--चार माशे खाने से खाँसी जाती रहती है।

(८) गुदा के मुँह पर "सरसों का तेल" दिन में कई बार चुपड़ना खाँसी नाश करने के लिए बहुत ही उत्तम उपाय है; ख़ास कर वातजनित सूखी खाँसी में तो अक्सीर ही है।

(९) अड़ूसे के पत्तों को केले के पत्तोंमें लपेट कर, ऊपरसे कपड़-मिट्टी कर दो और भूभल में पका लो। पक जाने पर, छै माशे रस, निचोड़ लो। फिर उस रस में १ माशे पीपर का चूर्ण और ३ माशे शहद मिला कर चाटो। इस उपाय से सब तरह की खाँसी जाती रहती हैं। परीक्षित है।

(१०) अड़ूसे की छाल २०तोले को ३२ तोले पानी में औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। शीतल होने पर, उस में १ माशे पीपर का चूर्ण और ४ माशे शहद मिला कर चाटो। इससे सब तरह की खाँसी जाती रहती हैं। परीक्षित है।

(११) अड़ूसे के ६ माशे स्वरस में ६ माशे शहद मिला कर, ७ या २१ दिन, चाटने से धातु--क्षय, श्वास और खाँसी रोग अवश्य आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१२) अड़ूसे का स्वरस ६ माशे, शहद ६ माशे और साँभर नोन १ माशे,—तीनों को मिलाकर ज़रा गरम कर लो और पी जाओ। इस नुसखे से सब तरह की खाँसी ३।४ दिन में ही दब जाती हैं। जब खाँसी में किसी दवा से लाभ न हो, इसे काम में लाइये। अवश्य लाभ होगा। डबल परीक्षित है।

नोट---इस नुसखे से पहली ही खूराक में फायदा नज़र आता है। अगर दैवात् कम लाभ हो (ऐसा असंभव है) तो नमक के बजाय १ माशे "छोटी पीपर" पीस कर मिला दो और पी जाओ। इस तरह तो जरूर ही लाभ होगा। यह नुसखा फेल होते नहीं देखा गया। इस से सब तरह की खाँसी, मुँह से खून गिरना और श्वास—ये सब निस्सन्देह नाश हो जाते हैं।

(१३) अड़ूसे का स्वरस २ तोले और शहद ६ माशे—इन दोनों को मिलाकर दिन में ३।४ बार पीने से रक्तपित्त और पित्तकफ की खाँसी,—ये अवश्य आराम होते हैं। यद्यपि यह नुसख़ा शास्त्रोक्त है, पर हमारा परीक्षित है। कहा है:—

> वासकस्वरसः पेयो मधुयुक्तो हिताशिना।
> पित्तश्लेष्मकृते कासे रक्तपित्ते विशेषतः॥

यह नुसख़ा पित्त-कफ की खाँसी को नाश करता है, पर रक्तपित्त को ख़ास तौर से आराम करता है।

(१४) कालीमिर्च और दोनों तरहकी थूहरों का दूध "गुड़" में मिलाकर खाने से श्वास, खाँसी, क्षय और हृदय–रोग नाश होते हैं।

(१५) सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर—इन्हें महीन पीस-छान कर रख लो। इस में से ३ या ४ माशे चूर्ण ६ माशे "शहद" में मिला कर चाटने से श्वास, कफ और खाँसी नाश हो जाते हैं।

(१६) कड़वे तेल में गुड़ औटा कर चाटने से श्वास और सूखी खाँसी जाते रहते हैं।

(१७) चार तोले सेंधेनोन को "आकके दूध" में मसल कर सुखा और पीस लो। इस में से एक-एक माशे नमक, सवेरे-शाम, खाने से क्षय और क्षय की खाँसी नाश हो जाते हैं।

(१८) बच, असगन्ध, लटज़ीरा—औंगा, तुलसी की पत्ती और सरसों—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण के खाने से क्षय और खाँसी नाश हो जाते हैं।

(१६) अमलताश का गूदा आध पाव और मिश्री एक पाव—दोनों को पीस-कूट कर रख लो। इस में से एक तोले दवा, पानी के साथ, नित्य खाने से छाती पर जमा हुआ कफ छूट जाता और पाख़ाने की राह से निकल जाता है। कफ के छूटने से खाँसी आराम होती और तबियत हलकी होती है। परीक्षित है।

नोट—अगर किसी खाँसी वाले की छाती का कफ न छुटता हो और उसे दस्त भी न होता हो, तो उसे इस अमलताश के चूर्ण को खिलाइये और हमारी लिखी "कास-मर्दन बटी" दिन भर चूसने को दीजिये। बालकों को यही चूर्ण, अवस्थानुसार, कम दीजिये,। बच्चे कफ को निगल जाते हैं—थूकना नहीं जानते। इस से कफ गुदा-द्वारा निकल जायगा और खाँसी जाती रहेगी।

(२०) ३ माशे हालिम को ३ माशे शहद में मिला कर चाटने से खाँसी जाती, पसली का दर्द मिटता और छाती पर जमा हुआ कफ छुट जाता है। यह नुसख़ा ख़ासकर कफ की खाँसी को नष्ट करता और मल को छाती पर गिरने से रोकता है। परीक्षित है।

(२१) तीन रत्ती चिरचिरे का खार, तीन माशे शहद में मिला कर चाटने से कफ और खाँसी नाश होते तथा गले और छाती का जमा हुआ कफ छुट जाता है।

(२२) तीन चार दाने कुचले के एक या डेढ़ तोले घी में डाल कर जलाओ और कोयले कर लो। फिर कोयलों को पीस कर रखलो। इस में से दो रत्ती राख सवेरे ही पान में रख कर खाने से कफ और खाँसी नाश हो जाते हैं। यह नुसख़ा कफ की खाँसी पर मुफीद है।

(२३) अदरख का स्वरस ६ माशे, शहद ६ माशे और साँभर नमक १ माशे मिला कर चाटने से सब तरह की खाँसी नाश हो जाती हैं। ख़ासकर कफ-जनित खाँसी और ज़ुकाम। परीक्षित है।

नोट—हम अदरख का स्वरस २ तोले और शहद ६ माशे मिला कर सवेरे-शाम पिलाते हैं। इस से श्वास, कफजनित्त खाँसी, कफ और ज़ुकाम नाश होते हैं। पर यह किसी-किसी को गरमी करता है। अगर गरमी करे तो मात्रा घटा

दो। फिर भी गरमी करे तो दवा को बदल दो, क्योंकि जो दवा गरमी करेगी, वह फायदा न करेगी। परीक्षित है।

(२४) कुछ बहेड़ों पर "घी" चुपड़ दो और उन पर दो-दो अंगुल गाय का गोबर लपेट दो। फिर धूप में सुखा कर आग में दबा दो। पकने पर, गोबर से बहेड़े निकाल कर पोंछ लो। इन के छिलके, सुपारी की तरह, मुँह में रखो और चूसो अथवा पीस कर दो-दो रत्ती मुँह में डालो और चूसो। इस उपाय से पाँचों प्रकार की खाँसियों में लाभ होता है। परीक्षित है।

(२५) अडूसा, कटेरी, सोंठ, पोहकरमूल, कुलथी, भारंगी, काकड़ासिंगी, पीपर, कचूर और बहेड़े का छिलका—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्ण को "घीग्वार के रस" में खरल करके, जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली मुँह में रख कर चूसने से खाँसी आराम हो जाती हैं।

(२६) सोंठ, अडूसा, पीपर, चव्य और छोटी कटेरी—इन को बरबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा खाकर, गरम पानी पीने से खाँसी आराम हो जाती है।

(२७) कायफल की छाल का रस "शहद" में मिलाकर चाटने से खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(२८) विलायती अनार का छिलका, छोटी पीपर और काकड़ासिंगी,—छै-छै माशे; लाहौरी नोन १ तोले, काला नोन १ तोले और बड़ी हरड़ का बक्कल २ तोले—इन को पीस कर छान लो। इस में से एक-एक माशे चूर्ण, दिन में कई बार, फाँकने से खाँसी जाती रहती है।

(२९) काकड़ासिंगी, छिली मुलेठी, बबूर का गोंद, खसखस का

पोस्ता, छोटी पीपर और समन्दर-फल की गरी—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमें से ३ माशे चूर्ण नित्य खाने से खाँसी चली जाती है।

(३०) काली मिर्च, सोंठ, छोटी पीपर और छोटी इलायची चार-चार तोले और गुड़ ८ तोले, सब को पीस-कूट कर मिला लो। इसमें से एक तोले दवा, सवेरे ही, नित्य खाने से, सब तरह की खाँसी, श्वास और दम रुकना नाश होता है। परीक्षित है।

(३१) शंख की भस्म ६ माशे "नागरपान" में धर कर खाने से खाँसी आराम हो जाती है।

(३२) कतीरा-गोंद, मुलहटी और मिश्री—बराबर-बराबर लेकर पीस लो, फिर बिहीदाने के लुआब में मसाला मिलाकर गोली बना लो। सोते समय, दो चार गोली मुँह में रखने से खाँसी जाती रहती हैं।

(३३) मुलहटी, काली मिर्च और मिश्री को कूट-छान कर चने-बराबर गोलियाँ बना लो। रात को, सोते समय, दो चार गोलियाँ खाने से खाँसी नाश हो जाती है।

(३४) मदार के पत्ते १००, धतूरे के पत्ते १०० और काला नमक एक पाव --इन को एक हाँडी में रख कर फूँक दो। जब राख हो जाय, निकाल लो। इस में से रत्ती दो रत्ती राख, अदरख के रस के साथ, खाने से खाँसी, दमा और खोकला जाता रहता है।

(३५) कुछ बहेड़े जला कर राख कर लो। इस राख के चाटने से बुढ़ापे में होने वाली खाँसी और छाती का रोग नाश हो जाता है।

(३६) अलसी और इस्पन्द पीस कर, दूने "शहद" में मिला कर रख लो। इसमें से १ तोले रोज़ चाटने से बुढ़ापे में होने वाला

छाती का रोग और खाँसी नाश हो जाते हैं।

(३७) शुद्ध कुचला सवा तोले, आक के पत्ते १००, रूसे के पत्ते १००, साँभर नमक अढ़ाई तोले, पीपर अढ़ाई तोले, पीपरामूल अढ़ाई तोले, सोंठ सवा दो तोले, अजवायन दो तोले और काला-ज़ीरा सवा दो तोले—सब को एक हाँडी में रख कर, मुँह बन्द कर दो और गज़-भर गहरे चौड़े लम्बे गढ़े में रख कर फूँक दो। जब राख हो जाय, निकाल लो। इस में से चार रत्ती राख "पान" में रखकर खाने से खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(३८) आक की बहुत पुरानी जड़ लाकर, छाया में, सुखा लो। फिर उसकी मिट्टी दूर करके और उसे एक नाँद में रख कर आग लगा दो। जब जल जाय, ढक दो। शीतल होने पर, कोयले और राख अलग-अलग निकाल लो।

कोयलों को एक बोतल में भर कर काग लगा दो और बोतल को एक मिट्टी से भरे गमले के बीच में गाड़ दो। सवेरे-शाम, दोनों समय, छै महीने तक, गमले में पानी डालते रहो। इसके बाद बोतल को निकाल कर रख लो।

सेवन-विधि--दो चाँवल-भर राख "पान" में रखकर खाने से कैसी ही खाँसी क्यों न हो, आराम हो जाती है। दो चाँवल--भर कोयले "गायके दूधकी मलाई के साथ" खाने से श्वास और खाँसी निश्चय ही भाग जाते हैं। इन को पान में भी खाते हैं, पर स्त्री-प्रसंग से बचना परमावश्यक है। परीक्षित है।

(३९) छोटी कटेरी की जड़, छिली मुलेठी, काकड़ासिंगी, कुलींजन और हरड़ की छाल,—इन्हें पानी में जोश देकर गाढ़ा सा कर लो। जब गाढ़ा होने पर आवे, इस में बबूल की छाल पीस कर मिला दो और चने-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के चूसने से सब तरह की खाँसी नाश हो जाती हैं।

(४०) शुद्ध मैनसिल, शुद्ध हरताल, कालीमिर्च, बालछड़ या जटामासी और हिंगोट-गोंदी,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर महीन कर लो। फिर इस चूर्ण को एक पत्ते में रख कर बीड़ी सी बना लो और दियासलाई से जला कर धूआँ पीओ अथवा तमाखू की तरह चिलम में रख कर, ऊपर से बिना धूए की आग रख कर धूआँ पीओ। धूआँ पी चुकतेही "गुड़ मिला हुआ गरम दूध" पीओ। इस तरह धूआँ पीने से एक दोष, दो दोष और तीनों दोषों से हुई अथवा सकड़ों दवाओं से आराम न हुई खाँसी भी आराम हो जाती है। लिखा है:—

मनःशिलाले मरिचंच मांसी मुस्तैंगुदी चेतिसमं विचूर्राय।
धूमं पिबेच्चानुपयः सुखोष्णं गुड़ेन युक्त' जयतीह कासान्।

अर्थ वही है, जो ऊपर लिखा है। यह नुसख़ा बहुत अच्छा है।

नोट—अगर खाँसी के मारे नाक से पानी गिरता हो, गला बैठ गया हो, छींकें आती हों और सूँघने की शक्ति नष्ट हो गई हो—तो धूआँ पीना चाहिये। हुक्के पर आठ अंगुल की नली लगा कर धूआँ पीना चाहिये। श्वास, खाँसी, पीनस, स्वरभंग, जीभ के रोग, तन्द्रा और निद्रा प्रभृति रोग धूआँ पीने वाले के पास नहीं आते। जो प्रमेह, तिमिर, रक्तपित्त और उदर रोगों से पीड़ित हों, उन्हें धूआँ न पीना चाहिये। धूमपान का धूआँ मुँह से निकालना चाहिये—नाक से नहीं, क्योंकि नाक से धूआँ निकालने से नेत्रों को नुक़सान पहुँचता है। अगर बेसमय धूआँ पीने या ज़ियादा धूआँ पीने से कोई विकार हो जाय, तो शीतल उपचार करना चाहिए।

(४२) शुद्ध मैनसिल को सिल पर, पानी के साथ, पीस कर, बड़ी बेरीके पत्तों पर लेप कर दो और धूप में सुखा लो। फिर सवेरे ही एक या दो पत्ते लेकर चिलम में रखकर, ऊपर से आग धर कर, कई रोज़ धूआँ पीओ। धूआँ पीने के बाद, सुहाता-सुहाता गरम दूध गुड़ मिला कर पी लो। इस उपाय से भयंकर खाँसी भी नाश हो जाती है। लिखा है:—

मनःशिला लिप्तदलं वदर्या उपशोषितं।
सत्तीरं धूमपानं चै महाकासनिबर्हणं ॥

हमने इस नुसखे से कफज खाँसी में काम लिया है और फायदा

होते देखा है। हम मैनसिल को पीसकर, बेर के पत्तों पर ल्हेस देते और फिर छाया में सुखाते हैं। रोगी को, धूआँ पिलाने के बाद, मिश्री-मिला गरम दूध पिलाते हैं। बहुधा, ऐसी चीज़ों का धूआँ पीने से किसी-किसी के सिर में दर्द होने लगता, चक्कर आते और जी मिचलाता है। ऐसा होने पर, हम रोगी को अधिक धूआँ पीने से रोक देते हैं और उसे ज़रा-ज़रा सा धूआँ नित्य पीने को कहते हैं। जब आदत पड़ जाती है, ये उपद्रव नहीं होते। इस में शक नहीं, कि इस धूमपान से कफ की खाँसी या तर खाँसी, जिस में अण्ठे के अण्ठे कफ के गिरते हैं, आराम हो जाती है। परीक्षित है

(४३) "इलाजुलगुर्बा" में लिखा है,—छोटी पीपर, तमाखू की तरह, चिलम में रख कर, ऊपर से बिना धूएँ की आग रख कर, धूआँ पीने से पुरानी खाँसी जाती रहती है।

(४४) छोटी हरड़ों को चिलम में रख कर, ऊपर से बिना धूएँ की आग धर कर, धूआँ पीने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती है; पर धूआँ पीकर, ऊपर से मिश्री-मिला गरम दूध पीना ज़रूरी है। अगर इस के साथ ही, दिन में चार पाँच बार, बिहीदाने का लुआब भी मिश्री-मिला कर पिया जाय, तब तो कहना ही क्या? परीक्षित है।

(४५) आक की छाल और शक्कर बराबर-बराबर लो और इन दोनों से आधा सोंठ, कालीमिर्च और पीपर का चूर्ण ले लो। इन सब को बिना धूएँ की आग में डाल कर, नल से, धूआँ पीओ। अथवा इन सब को चिलम में रख कर, और चिलम को हुक्के पर चढ़ा कर, निगाली से धूआँ पीओ। इस के बाद, मिश्री-मिला गरम दूध पीओ और लगा हुआ पान का बीड़ा खाओ। इस तरकीब से पाँचों तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४६) आक का पत्ता ६ माशे, शोधा हुआ मैनसिल ६ माशे,

सोंठ १ माशे, छोटी पीपर १ माशे और काली मिर्च १ माशे—इन सब को पीस कर, चिलम में रखो और चिलम को हुक्के पर रख कर धूआँ पीओ। धूआँ पीने के बाद, मिश्री-मिला दूध या ख़ाली पानी पीओ अथवा लगा हुआ पान खा लो। इस उपाय से भी सब तरह की खाँसी नाश हो जाती है।

(४७) ६ माशे काले धतूरे की जड़ चिलम में रख कर, धूआँ पीने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती है।

(४६) ६ माशे जवासे की जड़ चिलम में रख कर धूआँ पीने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती है।

(५०) धतूरे के शुद्ध बीज १ तोले, रेवन्द खताई ८ माशे, सोंठ ४ माशे और बबूल का गोंद ४ माशे—इन सब को पानी के साथ महीन पीस कर मटर-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली, सवेरे-शाम, गरम जल के साथ, खाने से खाँसी जाती रहती है। इस नुसख़े को पं० रघुनाथ शर्म्मा, राजवैद्य, जम्बू अपना आज़माया हुआ कहते हैं।

(५१) बंगभस्म १ माशे, छोटी पीपर २ माशे, हरड़ का बक्कल ३ माशे, बहेड़े का बक्कल ४ माशे, अड़ूसे की जड़ की छाल ५ माशे, भारंगी ६ माशे और खैरसार २१ माशे—इन सब को महीन पीस-छान कर चूर्ण बना लो। फिर इस चूर्ण में बबूल की छाल के काढ़े की इक्कीस भावना दो और चने-समान गोलियाँ बना लो। दिन-भर में, ४।५ गोली खाने से सब तरह की खाँसी आराम हो जाती है। इस नुसख़े को भी उक्त राजवैद्य जी अपना आज़माया हुआ कहते हैं।

(५२) कत्था, मुलेठी, काली मिर्च, लौंग, बबूल का गोंद, अनार का छिलका और मिश्री—इन सब को समान--समान लेकर, एकत्र पीस कर, पानी के साथ चने-समान गोलियाँ बना लो। इन

गोलियों के दिन-रात चूसने से सब तरह की खाँसी जाती रहती हैं। कोई चौबे ज्वालादत्त जी इसे अपना आज़माया हुआ कहते हैं।

(५३) कायफल ४ माशे, काकड़ासिंगी ४ माशे, भारंगी ४ माशे, मुलेठी का सत्त १ तोले और कीकर का गोंद ४ माशे—इन सब को एकत्र पीस कर और "शहद" में मिला कर चाटने से सब तरह की खाँसियों का ज़ोर कम हो जाता है। इस योग को बाबू गौरीशंकर जी वैद्य, खेड़ा, अपना परीक्षित बताते हैं।

(५४) सोने का वर्क़ १ नग, सूखे आमलों का चूर्ण ३ माशे और शहद १ तोले,—इन को मिला कर चाटने से हृदय-रोग और खाँसी जाते रहते हैं। परीक्षित है।

(५५) अबीध मोती १ तोले लेकर, घीग्वार के ४ तोले पट्ठे में रख दो और उसी के टुकड़े से छेद को बन्द कर दो। फिर इस पट्ठे को दो सराइयों के बीच में रख कर, कपड़-मिट्टी कर दो और सुखा लो। फिर; चार सेर जंगली कंडों के बीच में सराइयों को रखकर आग लगा दो। आग शीतल होने पर मोतियों को निकाल लो।

इस में से रत्ती भर मोती सितोपलादि चूर्ण की चटनी में मिलाकर, १ चाँदी का वर्क़ भी मिला दो और चाटो। इस से हिचकी, खाँसी और श्वास रोग जाते रहते हैं। साथ ही लिंगेन्द्रिय का बल भी बढ़ता है। यह नुसख़ा हमने यक्ष्मा और उरःक्षत की खाँसी में कई दफा आज़माया है। बहुत उत्तम है।

(५६) मीठे कद्दू के बीजों की गरी, खीरे-ककड़ी के बीजों की गरी, खशखाश और निशास्ता—इन का शीरा निकाल कर, उस में मिश्री या शर्बत गुल-बनफ़शा मिला कर पीने से उरःक्षत या सिल की खाँसी और रुखी सूखी खाँसी जाती रहती है।
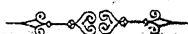
बालकों की खाँसी पर नुसखे ।

(१) सुहागा अध-कच्चा ६ माशे, भुना हुआ ६ माशे और कालीमिर्च १ तोले,—इन को महीन पीस कर, ग्वारपाठे के रस में घोट कर, गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के चूसने से बच्चों की खाँसी आराम हो जाती है।

(२) एक तोले पोस्ते भून कर, उन में एक माशे लाहौरी नोन और १ माशे कालीमिर्च मिला कर रख दो। इस में से माशे भर दवा, दिन में तीन चार बार, चाटने से छोटे बालकों की कफकी खाँसी नाश हो जाती है।

(३) "रियाज़ आलम गीरी" में लिखा है—एक कपड़े या थैली में "कव्वे की बीट" बाँध कर, बालक के गले में लटका देने से खाँसी चली जाती है।

नोट—रविवार को कव्वे की बीट थैली में रख कर, बालक के गले में लटका देने से बालक का कव्वा उठ जाता है। परीक्षित है।

(४) बालकों की गुदा में दिन में ३ बार सरसों का तेल लगा देने से सब तरह की खाँसी दब जाती है, ख़ासकर सूखी खाँसी।

(५) बड़े मुनक्के ४० माशे, शहद ५ तोले, काली मिर्च ६ माशे, पियाबांसा ६ माशे, भारंगी ६ माशे, नागरमोथा ६ माशे, अतीस ४ माशे, बच ४ माशे और खुरासानी अजवायन ४ माशे—सब दवाओं को कूट-छान कर "शहद" में मिला दो। इस में से बालकों की अवस्थानुसार दवा चटाने से बालकों की खाँसी, उर्द्धश्वास और कफ

का घरघराहट नाश हो जाता है।

(६) काकड़ासिंगी, अतीस और पीपर,—इन को कूट-पीस और छान कर, "शहद" में मिलाकर चाटने से बालकों का ज्वर, खाँसी, कय होना अवश्य आराम हो जाता है। अनेक बार का परीक्षित है।

(७) काकड़ासिंगी, नागरमोथा और अतीस को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमें से ज़रा-ज़रा सा चूर्ण "शहद" में मिलाकर चटाने से बालकों की खाँसी, ज्वर और कय होना निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(८) काकड़ासिंगी और मूली के बीज बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण को "ना-बराबर घी और शहद" में चटाने से बालकों की खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(९) काकड़ासिंगी को पीस-छान कर रख लो। इस में से १ रत्ती से चार रत्ती तक चूर्ण माशे-भर शहद में चटाने से बालकों की कफ की खाँसी और कफ का घर-घर होना आराम होकर बालक पुष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) बड़ा मुनक्का एक नग लेकर, उस में से बीज निकाल दो और एक-एक रत्ती दालचीनी और काकड़ासिंगी महीन पीस कर उस में भर दो और बालक को खिला दो। इसके नित्य खाने से बालकों की सब तरह की खाँसी निश्चय ही चली जाती हैं, साथ ही कफ का घर घर करना और कफ खाँसी आराम हो जाते हैं। यह दवा सब से अधिक गुणकारी और परीक्षित है।

(११) नागरमोथा और छिली मुलहटी—"बराबर-बराबर लेकर" पीस-छान लो। इसमें से ४ रत्ती दवा एक माशे शहद और माँ के दूध में घोलकर पिलाने से बालकों की खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(१२) काकड़ासिंगी, अतीस, छोटी पीपर, छिली मुलेठी और

सम्मग अरबी—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान कर रख दो। इस में से एक माशे चूर्ण, दो माशे शहद में मिला कर, दिन में २ वार, खास कर सवेरे, चटाने से बालकों की कफ की खाँसी और वमन आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(१३) सम्मग अरबी* १॥ तोले, कतीरा १ तोले, निशास्ता † १ तोले, छिली मुलहटी ६ माशे और सफेद मिश्री २० तोले—इन्हें पीस-छान कर रख दो। इस में से चार रत्ती दवा "शहद" में मिला कर चाटने से बालकों की खाँसी आराम हो जाती है।

नोट—मौसम गरमीका हो तो १ तोले तरबूज़ की मींगी और मिलादेनी चाहिएँ।

(१४) बहेड़े का छिलका ६ माशे, छिली मुलेठी ६ माशे, काकड़ासिंगी ६ माशे और दक्खनी अकरकरा ६ माशे—सब को पीस कर, ख़ाली अनार में भर कर, ऊपर से मिट्टी लहेस दो। फिर कण्डों की आग पर अनार को रख दो। जब दवा उफनने लगे, अनार को निकाल लो। फिर शहद दो तोले, बकरी का दूध २ तोले ८ माशे और मूंगा ३ तोले—इनको भी पीस कर उसी अनार में भर दो और अनार को फिर आग पर रख दो। जब दवा अनार के भीतर पकने लगे, उसे आग से उतार लो। इस में से बलाबल-अनुसार दवा खिलाने से बालकों की हर तरह की खाँसी जाती रहती है।

---

* सम्मग अरबी बबूल के गोंद को कहते हैं।

† निशास्ता गेहूँ के सत्त को कहते हैं।

विशेष चिकित्सा।

वातज खाँसी की चिकित्सा।

(१) कचूर, छोटी पीपर, नागरमोथा, जवासा, भारंगी और काकड़ासिंगी—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर छान लो। फिर इस में गुड़ मिला दो और रख दो।

इसकी मात्रा २ माशे की है। हर मात्रा को "काली तिली के तेल" में मिला कर अवलेह या चटनी बना लो और दिन में दो या तीन बार चाटो। इसके चाटने से वातजनित सूखी खाँसी, जिसमें कफ का नाम भी नहीं आता, अवश्य आराम हो जाता है। जिसे तेल नापसन्द हो, वह इसे शहद में चाट सकता है, पर इस दवा में गुड़ मिलाने की ज़रूरत नहीं। परीक्षित है।

नोट—यह नुसख़ा "चक्रदत्त" और "वैद्य विनोद" में लिखा है, पर हमने अनेक बार आज़माया है। वातज सूखी खाँसी जब पुरानी हो जाती है, तब बिना तेल घी पिये आराम नहीं होती, इसलिये जहाँ तक हो सके इसे तेल मिला कर ही चाटना चाहिए। इस को कोई "शठ्यादि अवलेह" और कोई "अपराजिता अवलेह" कहते हैं।

(२) वमनेटी, कचूर, काकड़ासिंगी, छोटी पीपर और सोंठ—इन को समान--समान भाग लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्ण में "पुराना गुड़" मिला दो। इसकी मात्रा २।३ माशे का है। एक-एक मात्रा "काली तिली" के तेल में मिला कर चाटने से वातज सूखी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३) सोंठ, जवासा, काकडासिंगी, कचूर, दाख और मिश्री—

बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। मात्रा ३ माशे की है। हर मात्रा को "काली तिली के तेल" में मिला कर, सवेरे-शाम, चाटने से वातज-नित सूखी खाँसी आराम हो जाती है। चक्रदत्त और वृन्द ने लिखा है, इस नुसखे से दुस्तर वातजनित खाँसी चली जाती है।

(४) बेलगिरी की जड़, खंभारी की जड़, पाटला की जड़, अरनी की जड़ और सोनापाठा की जड़--इन पाँचों को "वृहत् पंचमूल" कहते हैं। इन सबको कुल २ तोले लेकर, ३२ तोले जल में पकाओ; जब आठवाँ भाग जल रह जाय, मल-छान कर पी लो। इससे वातजनित सूखी खाँसी आराम हो जाती है।

नोट—अगर दो तीन दिन में लाभ न होवे, तो इस काढ़े में "पीपरों का चूर्ण" भी मिला लो।

चक्रदत्त ने लिखा है:—

पंचमूलीकृतः क्वाथः पिप्पलीचूर्णसंयुतः।
रसान्नमश्नतो नित्यं वातकासमुदस्यति॥

पंचमूल के काढ़े में, पीपरों का चूर्ण डाल कर पीने और मांसरस के साथ अन्न खाने से वायु की सूखी खाँसी नष्ट हो जाती है। परन्तु वृन्द ने लिखा है:—

पंचमूलीकृतः क्वाथः पिप्पलीचूर्ण संयुतः।
सेवितो मस्तुतो नित्यं वातकासमुदस्यति॥

पंचमूल के काढ़े में पीपरों का चूर्ण मिला कर, दही के तोड़ या मस्तु के साथ सेवन करने से वातज यानी सूखी खाँसी चली जाती है।

मतलब यह है, जिसने जिस तरह आज़माया है उसने उसी तरह लिखा है। हमने इसे दही के तोड़ या मस्तु के साथ कभी नहीं आज़माया। हाँ, पीपर डाल कर काढ़ा पिलाया और लाभ उठाया है। बहुत उत्तम योग है।

शास्त्र में लिखा है।

उभाभ्या पंचमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम्।
कासेश्वासे च तन्द्रायां सन्निपाते प्रशस्यते॥

वृहत्पंचमूल और लघुपंचमूल दोनों को मिलाकर "दशमूल" कहते हैं। ये खाँसी, श्वास, तन्द्रा और सन्निपात में हितकर हैं।

(५) कुछ बहेड़े "घी" से चुपड़ कर, गाय के गोबर में लपेट लो और फिर सुखा कर आग में पकालो। पकने पर गोबर से निकाल कर पोंछ लो और छिलकों को हर समय मुह में रख कर चूसो। हर प्रकार की खाँसी पर, खासकर वातज या सूखी खाँसी पर रामबाण उपाय है। परीक्षित है।

(६) सवेरे ही मक्खन और मिश्री और रात को सोते समय, मलाई और मिश्री खाने से वातज या सूखी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(७) गुदा में कड़वा तेल या नारायण तेल चुपड़ने से सब तरह की खाँसियों में लाभ होता है। वातज सूखी खाँसी में तो इसकी बहुत ही ज़रूरत है।

(८) एक केले की पकी गहर में, छिलका हटाकर, एक पीपर या ५ काली मिर्च दबा दो और रात को उसे ओस में रख दो। सवेरे ही छिलका छील कर, पहले पीपर या मिर्च खा लो और पीछे केला खा लो। इस उपाय से वातज और पित्तज दोनों खाँसियों में बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

(९) गुलबनफशा ६ माशे, हंसराज ६ माशे, छिली मुलेठी ६ माशे, खतमी के बीज ३ माशे, अलसी के बीज ३ माशे और उन्नाव ६ दाने—इन को कुचल कर डेढ़ पाव जल में पकाओ ; जब छटाँक-भर पानी रह जाय, मल कर छान लो। शीतल होने पर ३ माशे शहद और ३ माशे मिश्री मिला कर पी लो। इस नुसख़े के सवेरे-शाम पीने से वातजनित सूखी खाँसी १०।१५ दिन में जड़ से चली जाती है। बड़ा ही उत्तम नुसख़ा है। परीक्षित है।

(१०) छोटी पीपर २० तोले लाकर महीन कर लो। फिर उस चूर्ण को बकरी के दूध के साथ पीस कर लुगदी बना लो। इसके बाद

गाय का घी अढाई सेर, बकरी का दूध दस सेर और ऊपर की लुगदी को, क़लईदार बर्तन में डाल, आग पर चढ़ा दो और मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और किसी साफ बर्तन में रख दो। सूखी खाँसी जब किसी दवा से आराम नहीं होती, तब इस घी से अवश्य आराम हो जाती है। इसका नाम "पिप्पली घृत" है। सैकड़ों बार परीक्षा की है।

इसकी मात्रा जवान आदमी को १ तोले से ४ तोले तक है। घी पीकर पानी पीना तो दूर किनार है, कुल्ले भी न करने चाहियें।

(११) एक पाव गीली या सूखी भारंगी लेकर कुचल लो और रात को पानी में भिगो दो। सवेरे ही उसे सिल पर पीस कर लुगदी बना लो।

फिर सूखी भारंगी आध सेर और लाकर कुचल लो और रात को ही १६ सेर पानी में भिगो दो। सवेरे ही उसे चूल्हे पर चढ़ा कर औटाओ। जब दो सेर पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो।

अब एक सेर घी, चार सेर दही का पानी, दो सेर भारंगी का काढ़ा और भारंगी की लुगदी—इन चारों को क़लईदार बर्तन में रख कर मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और किसी साफ बासन में रख दो। इस का नाम "भार्ङ्ग्यादि घृत" है।

इसके पीने से सूखी खाँसी अवश्य आराम हो जाती है। मात्रा ६ माशे से २ तोले तक। समय—सवेरे-शाम। परीक्षित है।

(१२) छिली मुलहटी ६ माशे, नीलीझाँई का बंसलोचन ६ माशे, कतीरा १ तोले, बबूल का गोंद ६ माशे और मीठी घीया के छिले हुए बीज ६ माशे— इन सब को पीस-कूट कर छान लो और इस चूर्ण के बराबर ही "मिश्री" पीस कर मिला दो। इस चूर्ण को शहद और

पानी में मिला कर चाटने से सूखी खाँसी अवश्य नाश हो जाती है। इसकी मात्रा चार माशे की है। हर मात्रा को दो माशे शहद और ज़रा से पानी में मिला कर अवलेह सा बना लो और दिन में तीन बार, सवेरे, दोपहर और शाम को चाटो।

नोट—इस चूर्ण को चाटा जाय और इसके साथ ही नीचे लिखी नं० १३ की गोलियाँ दिन में १०।१५ तक चूसी जायँ, तब तो सोने में सुगन्ध ही हो जाय। क्योंकि ये गोलियाँ छाती पर जमे हुए कफ को पका कर निकाल देती हैं और खाँसी जाती रहती है। परीक्षित हैं।

(१३) पपरिया कत्था अढ़ाई तोले, बबूल का गोंद ६ माशे, छिली मुलेठी १ तोले, शुद्ध कपूर ३ माशे, बहेड़े का बक्कल ६ माशे, कतीरा ६ माशे और तुख्म-ख़तमी १ तोले—इन सब दवाओं को कूट-पीस कर छान लो। फिर इस चूर्ण को खरल में डाल कर, ऊपर से बिहीदाने का लुआब डाल-डाल कर घोटो। जब घुट जाय, एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के हर समय मुह में रख कर चूसने से छाती पर जमा हुआ कफ निकल जाता और खाँसी आराम हो जाती है। दिन भर में १० से १५ गोली तक चूसी जा सकती हैं। ऊपर के नं० १२ अवलेह को चाटने और इन गोलियों के चूसने से बहुत ही जल्दी लाभ होता है। परीक्षित है।

(१४) अनार का छिलका ४ माशे, मुलेठी २ माशे और बहेड़े का छिलका २ माशे—इन को पाव भर पानी में औटाओ। छँटाक भर पानी रहने पर उतार लो और १ तोले मिश्री मिला कर पिला दो। इसके सेवन करने से सूखी खाँसी जाती रहती है।

नोट—अगर खाँसी बहुत ही हो, तो २ माशे जवाखार को ४ माशे शहद में मिला कर चटाओ, इस से कफ निकल जायगा।

(१५) गेरूमिट्टी २ तोले, सेलखड़ी २ तोले और अबीध मोती २ माशे—इन सब को खरल में घोट लो। मात्रा २ रत्ती की है। इसकी

एक-एक मात्रा "लऊकसपिस्ताँ" * में मिलाकर चटाने से पेचिश और खुष्क खाँसी आराम हो जाती हैं। अगर कहीं से खून आता हो, तो दवा में "बंसलोचन और छोटी इलायची" और मिला दो। फिर उसे "शर्बत अनार या अनार के रस" में चटाओ। खून फौरन बन्द हो जायगा।

(१६) मुलेठी, दाख, जवासा और गिलोय—इन सब को कुल २ तोले लेकर, आध पाव दूध और आध पाव पानी में पकाओ। जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और १ तोले "मिश्री" डाल कर पी लो। इससे वातज--सूखी खाँसी जाती रहती है।

नोट—वातज खाँसी में रुखेपन की वजह से कफ सूख जाता है, इसलिए कफ को पतला करने के लिए पहले स्निग्ध यानी चिकनी चिकित्सा करनी चाहिए। अगर शरीर में बहुत ही रूखापन हो, तो पहले घी, दूध आदि पिला कर चिकनापन लाना चाहिये। अगर कब्ज हो, तो गुदा में तेल या घी की पिचकारी लगानी चाहिए और दवाओं के साथ पका कर दूध देना चाहिए।

(१७) असगन्ध १ तोले और मुलेठी १ तोले दोनों को आध पाव दूध और आध पाव पानी में पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, छान कर १ तोले मिश्री मिला दो और पी जाओ। इस से भी वातज सूखी खाँसी नाश हो जाती है।

(१८) लिसौड़े, दाख, मुलेठी और अड़ूसा—चार-चार माशे लेकर, पाव भर पानी में पकाओ; जब १ छटाँक पानी बाक़ी रह जाय, मल-छान लो और १ तोले मिश्री तथा १ तोले शहद डाल कर पी लो। इस से वातज और पित्तज दोनों तरह की खाँसी आराम हो जाती हैं।

---

* लिसौढ़े ५०, उन्नाव २०, मुलेठी १ तोले, तुख्म खतमी १ तोले, पोस्त के छिलके २ तोले और बिहीदाना ६ माशे—इन सब को दो सेर पानी में औटाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान लो। फिर इस काढ़े में आध सेर चीनी डाल कर पकाओ और ऊपर से बादामकी गरी ६ तोले, पोस्ता-दाना १ तोले, जौ १ तोले, कतीरा ६ माशे, गोंद ६ माशे और मुलेठी ६ माशे पीस कर डाल दो। यही "लऊक सपिस्ताँ" है और खाँसी में मुफीद है।

(१९) बादाम की मींगी, छुहारे बिना गुठली के, बिना बीज के दाख और नारियल की गरी—बराबर-बराबर लेकर एकत्र महीन पीस लो और एक-एक माशे की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को मुँह में रख कर चूसने से वातज और पित्तज खाँसी नष्ट हो जाती हैं।

(२०) मुलेठी, बंसलोचन, तुरंजबीन, दाल-चीनी और बबूल का गोंद—सब को समान-समान लेकर महीन पीस लो और चार-चार रत्ती की गोलियाँ बना लो। दिन-भर में २।३ बार गोली खाने से वातज—सूखी खाँसी आराम हो जाती है।

(२१) मुलेठी का चूर्ण १ तोले, छोटी पीपरों का चूर्ण १ तोले और कूट १ तोले—इन सब को पीस कर रख लो। इस में से ६ रत्ती चूर्ण, ६ माशे शहद में मिला कर दिन में ३।४ बार खाने से वातज खाँसी दूर हो जाती है।

(२२) तुलसी के पत्ते १ माशे, अदरख १ माशे, लौंग २ माशे और कपूर १ चाँवल-भर,—इन सब को मिला कर चबाने और खाने से वातज या सूखी खाँसी जाती रहती है।

(२३) बेल की छाल, अरलू की छाल और पोडर की छाल—चार-चार माशे लेकर, ३२ तोले जल में औटाओ; जब ८ तोले पानी रह जाय, मल कर छान लो। फिर इस में ३ रत्ती "पीपर का चूर्ण" डाल कर पी लो। इससे वातज खाँसी जाती रहती है।

(२४) दशमूल की दवाओं को दूध और पानी में पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, उस में २ रत्ती "पीपरों का चूर्ण" डाल कर पीलो। इस से वातज खाँसी जाती रहती है।

(२५) इस खाँसी में "दशमूल घृत" भी हितकारी है।

(२६) केले की पकी गहर को मिश्री, शहद और घी के साथ खाने से पुरानी खाँसी, सूखी खाँसी, क्षय की खाँसी, हृदय-रोग, श्वास

और रक्तपित्त में बहुत लाभ होता है। परीक्षित है।

नोट—घी और शहद बराबर-बराबर मत लेना; एक कम और दूसरा ज़ियादा लेना।

वातज खाँसी में पथ्य पदार्थ।

"वैद्यविनोद" में लिखा है, वातज खाँसी वाले को गाँव के, अनूप देश के या पानी के जीवों का मांस या मांस-रस, अनेक तरह की चिकनी चीज़ें, अनेक तरह के अन्न, गेहूँ, चाँवल और जौ पथ्य हैं। "चक्रदत्त" में लिखा है, कि वातज खाँसी में दही, काँजी, बिजौरा नीबू, शराब, स्वादु खट्टे और सलौने पदार्थ पथ्य हैं। शालि चाँवल, साँठी चाँवल, जौ और गेहूँ—इन के रस और उड़द तथा कौंच के बीजों के यूष हितकर हैं।
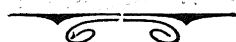
पितज खाँसी की चिकित्सा।

नोट—पित्त की खाँसी में, अगर कफ क्षीण या खुश्क हो गया हो, तो मीठे और चिकने पदार्थों से उसे नर्म करो। अथवा निशोथ आदि साधारण दस्तावर दवाओं द्वारा दस्त करा कर, कफ को पित्त से अलग करो। यदि कफ अत्यन्त गाढ़ा हो गया हो, तो जवाखार और शहद आदि चटा कर उसे पतला कर लो। (देखो पृष्ठ ८६ के नं० १४ का नोट)।

(१) खिरेंटी, अड़ूसा, छोटी कटेली, बड़ी कटेली और बीज निकाले हुए दाख,—इन को मिला कर अढ़ाई तोले लो। फिर पाव भर पानी में सारी दवाएँ डाल कर पकाओ; जब छटाँक या डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मल-छान कर शीतल कर लो। शीतल होने पर, चार माशे मिश्री और दो माशे शहद मिला कर पी जाओ। सवेरे-शाम इस

काढ़े के पीने से पित्तजनित खाँसी, जिस में खाँसते समय गरमी मालूम होती और पतला--कड़वा कफ निकलता है, आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—चक्रदत्त और वैद्यविनोद प्रभृति ग्रन्थों में इस नुसखे की खूब तारीफ लिखी है और है भी यह ऐसा ही।

(२) बिना बीज के मुनक्के, बिना गुठली के आमले और बिना गुठली के छुहारे—इन तीनों को आठ-आठ माशे लेकर, आध पाव पानी में पकाओ, जब चौथाई पानी रह जाय मल कर छान लो। फिर इस में पाँच काली मिर्च और आधी पीपर पीस कर मिला दो और चाटो। इस नुसखे के सवेरे-शाम सेवन करने से पित्त की खाँसी निश्चय ही आराम हो जाती है। यह नुसखा हमारा सैकड़ों बार का परीक्षित है।

नोट—यह योग हमने "चक्रदत्त" से लिया और अनेकों बार आज़माया, बहुत ही कम चूकता है। दवा चाट कर पानी न पीना चाहिये। अगर पित्त बहुत ही बढ़ रहा हो, तो "मुलेठी का काढ़ा" पिलाकर कय करा देनी चाहिए और "चिकित्साचन्द्रोदय पहले भाग" में लिखी मुंजिस देकर, दो चार दस्त भी करा देने चाहिएँ। दस्त और कय करा कर यह दवा खिलाने से पित्तज खाँसी बहुत ही जल्दी आराम हो जाती है। वृन्द और चक्रदत्त ने इस नुसखे में "आँवले" लिखे हैं, पर कोई-कोई आँवलों की जगह "मुलेठी" लेते हैं।

हमने इस नुसखे को काढ़े के रूप में बदल दिया है; पर चक्रदत्तने लिखा है — मुनक्के, आमले, छुहारे, छोटी पीपर और काली मिर्च बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो और ना-बराबर "घी और शहद" में एक-एक माशा चूर्ण मिला कर चाटो। इस तरह भी यह नुसखा अवश्य फायदा करता है, पर हमने जिस तरह लिखा है उस तरह ज़ियादा फायदा करता है।

(३) कमल के बीजों को महीन पीस कर छान लो। इसमें से २ या ३ माशे चूर्ण "शहद" में मिला कर चाटने से पित्त की खाँसी आराम हो जाती है। इसे सवेरे-शाम दोनों समय चाटना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—कमलगट्टों को ही कमल के बीज कहते हैं। इन के छिलके उतार कर, भीतर की हरी-हरी पत्तियाँ भी निकाल दो, तब पीसो छानो; क्योंकि हरी पत्तियाँ हानिकर होती हैं।

(४) कचूर, नेत्रवाला, बड़ी कटेरी, सोंठ और बूरा—इन को कुल दो तोले लेकर पाव भर पानी में पकाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर छान लो। फिर इस में दो माशे 'घी" मिला कर चाटो। इस के पीने से पित्त की खाँसी जाती रहती है।

(५) काकोली, बड़ी कटेरी, मेदा, महामेदा, अड़ूसा और सोंठ—इन को कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ और छान लो। इस काढ़े को चार तोले दूध में मिला कर फिर पकाओ और जब दूध मात्र रह जाय, रोगी को पिलाओ। इस दूध से पित्त की खाँसी नष्ट हो जाती है।

(६) पञ्चमूल, छोटी पीपर और दाख—इन का काढ़ा पका कर छान लो और फिर उसे दूध में मिला कर दूध पकालो। शीतल होने पर, उस में थोड़ी सी "चीनी और शहद" मिला कर पीओ। इस दूध के पीने से पित्त की खाँसी आराम हो जाती है।

(७) बिना गुठली के छुहारे, छोटी पीपर, बिना बीजों के दाख, मिश्री और धान की खीलें—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो, फिर तीन-तीन माशे चूर्ण "ना-बराबर" घी और शहद म मिला कर चाटो। इस नुसख़े से पित्त की खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(८) क्षीर-वृक्षों के फुनगे या अंकुर आध सेर लेकर, चार सेर पानी में औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो। फिर एक सेर दूध, एक सेर घी और ऊपर के एक सेर काढ़े को क़लईदार कढ़ाई में डाल कर मन्दाग्नि से पकाओ। जब दूध और काढ़ा जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और एक साफ बर्तन में रख दो और ऊपर से एक पाव उत्तम "शहद" मिला दो। इस घी

के सेवन करने से पित्तज खाँसी आराम हो जाती है। मात्रा ६ माशे से २ तोले तक है। सवेरे-शाम दोनों समय घी पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट—पीपर, गूलर, पाखर, बड़ और बेंत के वृक्ष "क्षीरवृक्ष" कहलाते हैं।

(९) बड़, पीपर और गूलर के अंकुर मिला कर १ पाव लो और बिना बीजों के मुनक्के एक पाव लो—इन सब को सिल पर पीस कर लुगदी बनाओ।

फिर गाय का घी एक सेर, बकरी का दूध चार सेर और ऊपर की लुगदी—इन सब को एक क़लईदार बर्तन में डाल कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस घी के पीने से भी पित्तज खाँसी आराम हो जाती है। मात्रा ६ माशे से २ तोले तक। समय—सवेरे-शाम। परीक्षित है।

नोट—ऊपर के नं० ८ और नं० ९ घी एक ही हैं। इनको "क्षीर घृत" कहते हैं। यद्यपि तैयार करने की तरकीबें अलग-अलग हैं, पर फायदा दोनों ही करते हैं।

(१०) दाख एक तोले, मिश्री एक तोले और शहद एक तोले—इन तीनों को मिला कर अवलेह बना लो। इस के चाटने से पित्तज खाँसी नष्ट हो जाती है।

(११) मुलेठी का सत्त, बंसलोचन, बड़ी इलायची, तुरंजबीन और दाख—इन सब को बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीस लो। फिर मिश्री और शहद में मिला कर रख दो। इसे रोज़ चाटने से पित्त की खाँसी आराम हो जाती है।

(१२) खिरेंटी की जड़ की छाल, छोटी कटेरी की छाल, बड़ी कटेरी की जड़ की छाल, अड़ूसे की छाल और दाख,—इन सब को चार-चार माशे लेकर पीस लो। फिर ३२ तोले जल में डाल कर पकाओ, जब ८

तोले पानी बाक़ी रहे, उतार कर मल-छान लो और शीतल होने पर पी लो। बालक को कम मात्रा दो। इसके पीने से पित्त की खाँसी आराम हो जाती है।

(१३) सूखे आमलों का चूर्ण २ रत्ती, दाख ३ माशे और छुहारे ६ माशे—इन को एकत्र पीस कर, ३ माशे घी और ६ माशे शहद में मिला कर चाटो। इस से पित्तज खाँसी जाती रहती है।

(१४) धान की खील, दाख, तबाशीर, मुलेठी और नागर मोथा—सब को एक-एक माशे लेकर महीन पीस लो। फिर ३ माशे घी और ६ माशे शहद में मिला कर चाटो। इस से पित्त की खाँसी आराम हो जाती है।

(१५) छोटी कटेरी के फूलों का ज़ीरा २ माशे, बिजौरे नीबू की केशर २ माशे, पीपर २ माशे और दाख ४ माशे—इन सब को एकत्र पीस कर, शहद और मिश्री में मिला कर खाने से पित्त की खाँसी आराम हो जाती है।

(१६) कटेरी के फूलों का ज़ीरा मिश्री के साथ पीसकर खाने से पित्त की खाँसी जाती रहती है।

(१७)लिसौढ़े, मुलेठी और त्रिफला—इन को कुल दो तोले लेकर और ३२ तोले पानी में काढ़ा बना कर, चार तोले पानी रहने पर उतार लो और मल-छान कर शीतल कर लो। फिर उसमें शहद और मिश्री मिला कर पी लो। इस काढ़े से पित्त की खाँसी जाती रहती है।

(१८) कमलगट्टे की गरी, गिलोय का सत्त, सूखे आमले, बंसलोचन और तुरंजबीन—इन सब को बराबर-बराबर तीन-तीन माशे लेकर एकत्र पीस लो और शहद में मिला कर चाटो। इससे पित्त की खाँसी जाती रहती है।

(१९) अंजीर एक तोले और छिली मुलेठी एक तोले,—दोनों को

कुचल कर, आध पाव दूध और आध पाव पानी में डाल कर पकाओ। जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय, उतार कर शीतल कर लो। फिर उसमें एक तोले मिश्री और ४ माशे शहद मिला कर पी जाओ। इस से पित्त की खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(२०) बहेड़े को घी में सान कर, उस परदो अंगुल गोबर लपेट कर आग में भून लो। फिर निकाल कर उसे मुख में रखो। इसके चूसने से पित्त और कफ की खाँसी नष्ट हो जाती हैं। परीक्षित है

(२१) मुलेठी, काली मिर्च और मिश्री—इन को समान--समान लेकर एकत्र पीस लो। फिर इसमें से तीन-तीन माशे दिन में चार-पाँच बार खाओ। इस से भी पित्त की खाँसी चली जाती है।

(२१) बड़ी इलायची को आग में भून कर और शहद में मिला-कर चाटने से पित्त की खाँसी नाश हो जाती है।

(२२) अडूसे को पुटपाककी विधि से पकाकर उसका "स्वरस" निकालो। फिर उस में शहद डाल कर खाओ। इससे पित्त और कफ की खाँसी नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

पितज खाँसी में पथ्य पदार्थ ।

चक्रदत्त कहता है, अगर पित्तज खाँसी वाले का कफ पतला हो, तो मीठे पदार्थों के साथ और अगर कफ कड़ा हो तो कड़वे पदार्थों के साथ निशोथ का जुलाब दो। इस खाँसी वाले को जंगली जानवरों के मांस-रस के साथ जौ और कोदों के पदार्थ तथा मूंगादि के यूष और कड़वे सागों के साथ थोड़ा-थोड़ा अन्न खाने को दो।

कफज खाँसी की चिकित्सा ।

नोट—कफ की खाँसी में अगर छाती भारी हो, मुँह में कफ भर-भर आता हो, तो पहले नमक के पानी से कय करा कर कफ को निकाल दो। अगर कफ कच्चा हो, तो २।३ लंघन करा दो। इस खाँसी में चरपरे और कड़वे पदार्थ सेवन करना पथ्य है।

(१) पोहकरमूल, कायफल, भारंगी, सोंठ और छोटी पीपर—इन को मिला कर दो तोले लो और काढ़ा बना कर पीओ। इससे कफज खाँसी, श्वास और हृदय की जकड़न अवश्य आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) अदरख का स्वरस २ तोले और शहद ६ माशे—दोनों को मिला कर सवेरे-शाम पीने से श्वास, कफ की खाँसी, जुकाम और कफ का नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर २।३ दिन पीने से कम लाभ हो, तो इस में एक माशे "नमक" भी मिला देना चाहिये। इस तरह चाटने से तो अवश्य ही आराम होगा, पर यह नुसखा कभी-कभी गरमी करता है, अगर ऐसा हो तो मात्रा घटा देनी चाहिये। फिर भी गरमी करे, तो और दवा बदल देनी चाहिये। क्योंकि जो दवा गरमी करेगी, वह हरगिज फायदा नहीं करेगी।

(३) कायफल, देवदारू, खस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, पित्तपापड़ा, सोंठ, बच, धनिया, भारंगी की जड़ की छाल और हरड़—इन के काढ़े से कफ की खाँसी उपद्रव सहित नाश हो जाती है। परीक्षित है

नोट—सब दवाएँ मिला कर कुल दो तोले लेनी चाहियें। फिर उन्हें कुचल कर सोलह गुने पानी में औटाना चाहिये और चौथा भाग जल रहने पर, उतार कर मल

छान कर पी जानी चाहिये । यही तरकीब कफ की खाँसी के काढ़ों में सर्वत्र समझनी चाहिये । अगर इस काढ़े में ४ रत्ती हींग और ६ माशे शहद भी, औट जाने पर, मिला दिया जाय तब तो कहना ही क्या ?

(४) दशमूल के काढ़े में "पीपर का चूर्ण" मिला कर पीने से कफ की खाँसी, जुकाम, श्वास, ज्वर और पसली का दर्द आदि आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

नोट—दशमूल की दसों चीजें कुल मिला कर दो या तीन तोले लेनी चाहियें । फिर १६ गुने पानी में काढ़ा बना-छान कर, उस में ३ माशे "पीपरों का चूर्ण" मिला कर पी जाना चाहिये ।

(५) शुद्ध मैनसिल को पानी के साथ सिल पर पीस कर बड़ी बेरी के पत्तों पर लीप देना चाहिये और पत्तों को छाया में सुखा लेना चाहिये । उन में से दो चार पत्ते चिलम में रख कर, ऊपर से बिना धूएँ की आग रख कर, हुक्के पर धूआँ पीनी चाहिये । धूआँ पीनेके बाद, गरम दूध मिश्री मिला कर पीना चाहिये । इस तरह कई दिन करने से कफ की खाँसी नाश हो जाती है परीक्षित है

नोट—अगर धूआँ पीने से जी घबरावे, चक्कर आवें या सिर में दर्द हो; तो थोड़ी-थोड़ी धूआँ पीने का अभ्यास करना चाहिये । यह नुसखा बहुत अच्छा है। ऐसे कितने ही नुसखे हमने पीछे लिखे हैं ।

(६) छोटी पीपर या छोटी हरड़ चिलम में रख कर, तमाखू की तरह धूआँ पीने से कफज खाँसी जाती रहती है ; पर धूआँ पीकर दूध-मिश्री का पीना परमावश्यक है ।

(७) मुलहटी और काली मिर्च—इन को बराबर-बराबर लेकर भून लो । फिर बराबर की पिसी मिश्री मिला कर पीस-छान लो और पानी के साथ घोट कर चने-समान गोलियाँ बना लो । इन गोलियों के मुँह में रखने से कफ की खाँसी जाती रहती है ।

(८) बड़ी हरड़ का छिलका, बहेड़े का छिलका, काकड़ासिंगी, भारंगी, दालचीनी, भुनी फिटकरी, भुना हुआ सुहागा, चीते की छाल,

लौंग, लाहौरी नोन और सोंठ—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पास-छान लो। फिर खरल में डाल कर पानी के साथ घोटो और जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। दिनमें तीन-चार गोली खाने से कफ को खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है

(९) लाहौरी नोन, साम्हर नोन, काला नोन, सेंधा नोन, अजवाइन और सुहागा— सब को बराबर-बराबर लेकर एक मिट्टी के कुल्हड़े में रखो और मुख बन्द करके कपड़-मिट्टी कर दो। जब सूख जाय, आध गज़ गहरे गड्ढे में रख कर जंगली कण्डों में फूँक दो। आग शीतल होने पर निकाल लो और सब चीज़ों को पीस कर, बराबर का सम्मग अरबी या बबूल का गोंद पीस कर मिला दो। इसकी मात्रा १ माशे की है। इसके सवेरे शाम खाने से कफज खाँसी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—हम इस लवणक्षार को एक-एक या दो-दो रत्ती, दिन में चार-पाँच बार, रोगी को खिलाते हैं। इससे कफ पतला होकर निकल जाता है। यदि दो तीन दिन में फायदा नहीं होता, तो फिर फायदा नहीं होता।

(१०) तीन दाने शुद्ध कुचले के एक तोले घी में भून कर पीस लो। इसमें से सवेरे ही दो रत्ती राख पान में रख कर खाने से कफ की खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(११) कुछ केले के पत्ते जलाकर राख कर लो। उस राख में से थोड़ी-थोड़ी राख "नमक" मिलाकर दिन में कई बार खाओ। इससे कफ की खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(१२) अमलताश का गूदा आध पाव और मिश्री एक पाव पीस-कूट कर मिला लो। इस में से १ तोले चूर्ण खाकर पानी पीने से, छाती म जमा हुआ कफ दूर होकर खाँसी आराम हो जाती है। बड़ा अच्छा नुसखा है। इस से सारा कफ पाखाने की राह से निकल जाता है। परीक्षित है।

(१३) अमलतास का गूदा १ पाव पानी में घोट लो। फिर उसे तीन पाव बूरे में पका कर चाटने योग्य बना लो। इस में से दो तोले चटनी चाट कर, ऊपर से "अर्क सौंफ" २ तोले पीने से कलेजे का कफ छूट कर खाँसी—ख़ास कर सूखी खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है

(१४) तीन माशे हालिम को पीस कर, तीन माशे "शहद" में मिला लो और नित्य चाटो। इस से कफ की खाँसी आराम हो जाती और छाती पर जमा हुआ बलग़म निकल जाता है। इस से पसली का दर्द भी मिट जाता है। परीक्षित है।

(१५) दो रत्ती चिरचिरे का खार दो माशे "शहद" में मिलाकर या पान में रख कर कई दिन खाने से गले और छाती का कफ दूर होकर, कफ की खाँसी जाती रहती है। परीक्षित है।

(१६) दो रत्ती भुना हुआ सुहागा बँगला पान में रख कर सवेरे-शाम, कई दिन तक, खाने से कफज खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१७) इमली के दो तोले पत्ते लेकर डेढ़ पाव जल में काढ़ा बनाओ, जब छटाँक भर पानी रह जाय, उसे मल-छान लो। फिर उस में "दो रत्ती हींग और ३ माशे सेंधा नोन" मिला कर पी जाओ। इस से कफज आदि सब तरह की खाँसी नाश हो जाती हैं। परीक्षित है।

(१८) अकरकरा, कालीमिर्च, अनार का छिलका, अजमोद, पियाबाँसे की पत्ती, छोटी कटेरी की जड़, बबूल की छाल, सज्जीखार, साँभर नोन और लाहौरी नोन—इन सब को एक-एक माशे लेकर कूट-छान लो। फिर इसमें "शुद्ध अफीम २ माशे" मिलादो और "अदरख के रस" में घोट कर चने-समान गोलियाँ बना लो। इनमें से एक-एक गोली सवेरे-शाम मुँह में रखने से कफज या तर खाँसी जाती रहती

है, पर ऊपर से कसौंदी का ताज़ा फल भून कर खाना चाहिये।

(१९) कुछ बहेड़ों को घी में चुपड़ कर, उन पर गाय का ताज़ा गोबर दो अंगुल मोटा लपेट दो और सुखा लो। इसके बाद, उस गोबर के गोले को आग में पका लो। जब पक जाय, बहेड़ों को निकाल कर कपड़े से पोंछ लो और छिलके-छिलके उतार कर पीस लो। इसमें से दो-दो रत्ती चूर्ण थोड़ा-थोड़ा "नमक" मिलाकर मुँह में रखने से कफज और वातज—हर प्रकार की खाँसी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

नोट—अगर गोबर न मिले, तो बहेड़ों को गेहूँ के गुँदे हुए आटे से भी लपेट सकते हो।

(२०) त्रिफला १ तोले, लाहौरी नोन १ तोले, विलायती अनार के छिलके १ तोले, कौंच के बीजों की गिरी १ तोले, रूसे या अड़ूसे के पत्तों की राख एक तोले, जवासे की राख एक तोले, छोटी पीपर ६ माशे और कालीमिर्च ६ माशे—इन सब को कूट-पीस और छान कर रखलो। इसमें से एक-एक माशे चूर्ण सवेरे-शाम खाने से, ३ दिन में, कफज खाँसी जाती रहती है।

(२१) सोंठ, छोटी पीपर, काली मिर्च, अजमोद, चीते की छाल, सफेद ज़ीरा, बच और चव्य—इन को तीन-तीन तोले लेकर, पानी के साथ सिल पर पीस कर लुगदी बना लो।

फिर सवा सेर घी, अड़ूसे के पत्तों का रस आध सेर और ऊपर की लुगदी—तीनों को क़लईदार कड़ाही में रख, मन्दाग्नि से पकाओ; जब घी मात्र रह जाय उतार कर छान लो। शीतल होने पर, जितना घी हो उसका चौथा भाग "शहद" मिला कर रख दो।

यह घी बहुत ही गरम है, अतः इसे कफज खाँसी के सिवाय और खाँसी में न देना चाहिये। अगर यह पित्तज खाँसी में बिना समझे-बूझे दे दिया जायगा, तो रोगी की जान संकट में पड़ जायगी। यह

कफज खाँसी पर रामबाण है । मात्रा ६ माशे से दो तोले तक । घी खाकर पानी न पीना चाहिये । परीक्षित है

(२२) अगर रोगी का मिज़ाज सर्द हो—कफ प्रकृति हो, ठण्डे स्थान में रहने और शीतल पदार्थ खाने से खाँसी बढ़ जाती हो, कफ ढेर का ढेर गिरता हो, पर छाती में जलन न हो और रोगी को गरम चीज़ों से फायदा होता हो, तो रोगी को आधी रत्ती से दो रत्ती तक "पारद की कजली" जो पहले लिख आये हैं, शहद में मिलाकर चटाओ । इस कजली से असाध्य खाँसी और श्वास भी आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

(२३) बंसलोचन, केशर, बहेड़े का छिलका, लौंग, काकड़ासिंगी, काली मिर्च, छोटी पीपर, छोटी इलायची, मुलेठी, कत्था और कुलींजन—ये सब छै-छै माशे, कस्तूरी १॥ माशे, बबूल की छाल का स्वरस ६४ माशे, अदरख का रस १० तोले ८ माशे और २५ बँगला पानों का रस—सब को खरल में घोट कर, उड़द-समान गोलियाँ बना लो । सवेरे-शाम, एक-एक गोली "अदरख के रस" में खाने से खाँसी, विशेष कर कफज खाँसी, आराम हो जाती है । इन्हीं गोलियों को प्याज़ के रस में खाने से हैज़ा आराम हो जाता है ।

(२४) टके भर शुद्ध सिंगरफ अदरख के आध सेर रस में घोट कर सुखा लो और रख दो । मात्रा ४ चाँवल से १ रत्ती तक । कफज या बलग़मी खाँसी में १ मात्रा पान में रख कर दो । शीत ज्वर वालेको बुख़ार चढ़ने से १ घन्टे पहले "तुलसी के पत्तों में" १ मात्रा दो । मैथुन-शक्ति बढ़ाने को "शहद" में चटाओ ।

(२५) एक रत्ती शीशा भस्म "सितोपलादि चटनी" में चटाने से बुख़ार और खाँसी आराम होते, बदन में ताक़त आती और पुराने [illegible]

(२६) सोंठ, मिर्च, पीपर और बायबिड़ङ्ग का डेढ़ माशे चूर्ण और एक या दो रत्ती "अभ्रक भस्म" शहद में मिलाकर चटाने से खाँसी और श्वास जाते रहते हैं। परीक्षित है।

(२७) अगर खाँसी पुरानी हो, रोगी का मिज़ाज सर्द हो, शीतल पदार्थों से हानि होती हो, तो "शिंगाराभ्रक" की गोलियाँ सवेरे-शाम खिलाओ और ऊपर से "अदरख और पान का रस" एक-एक तोले पिलाओ। शेष में, थोड़ा जल भी पिलाओ। इस से वात, पित्त और कफ से पैदा हुई सभी बीमारियाँ आराम हो जाती हैं। पुरानी खाँसी और श्वास रोग पर तो रामवाण हैं। परीक्षित हैं।

(२८) लौंग १ तोले, काली मिर्च १ तोले, बहेड़े का छिलका १ तोले और सफेद पपरिया कत्था ३ तोले—इन सब को पीस कर छान लो। फिर खरल में डाल कर, ऊपर से "बबूल की छालका काढ़ा" देदे कर घोटो। घुट जाने पर, चने-समान गोलियाँ बना लो। लोलिम्ब-राज द्वारा परीक्षित इन गोलियों के चूसने से सब तरहकी खाँसी फौरन ही आराम होती हैं, पर कफज या तर खाँसी पर तो ये गोलियाँ रामवाण हो हैं। परीक्षित हैं।

नोट—छोटी पीपर, पीपरामूल, बहेड़े का छिलका और सोंठ—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण की मात्रा २ माशे की है। हर मात्रा में ३ माशे अड़ूसे का स्वरस और ३ माशे शहद मिला कर, सवेरे-शाम और रात को सोते समय, चाटने और ऊपर की गोली चूसने से कफज खाँसी निश्चय ही नाश हो जाती है। परीक्षित है।

सूचना—अगर ये दोनों दवाएँ सेवन करने से गरमी जान पड़े, पेट में जलन हो प्यास का ज़ोर हो जाय और खुश्की मालूम पड़े, तो अवलेह की मात्रा आधी कर दो और गोली १०।१५ के बजाय ५।७ ही चूसो। अगर इन दोनों दवाओं से गरमी तो बढ़े पर लाभ न हो, तो ५।६ दिन बाद इन्हें बन्द कर दो और दूसरी दवा दो। अगर कफ सूखने लगे, तो कफ को तर करने वाली कोई दवा बीच-बीच में देते रहो।

(२९) छोटी पीपर १ तोले लेकर १ पाव जल में पकाओ, जब आधी छटाँक पानी बाक़ी रह जाय, उतार कर छान लो। फिर इस

में शीतल होने पर १ तोला "शहद" मिला दो। इस में से थोड़ा-थोड़ा दिन में ३।४ बार पीओ। इस तरह कई दिन पीने से कफ की खाँसी जाती रहती है।

(३०) दो माशे पीपर का चूर्ण ६ माशे "शहद" में मिला कर चाटने से कफ की खाँसी नष्ट हो जाती है।

(३१) ६ माशे या १ तोले अदरख के रस में ज़रा सा काला नोन मिला कर पीने से कफ की खाँसी आराम हो जाती है।

(३२) कटेरी का पंचाङ्ग २ तोले लेकर कुचल लो और पाव-भर जल में पकाओ। जब तीन तोले पानी रह जाय, उतार कर छान लो और ३ माशे "पीपर का चूर्ण" डाल कर पी लो। इस से कफ की खाँसी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(३३) कटेरी का स्वरस १ तोले, अड़ूसे का स्वरस १ तोले और शहद ६ माशे—तीनों को मिला कर पीने से वात, पित्त और कफ की खाँसी नष्ट हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३४) आक की जड़ की छाल को आग में जला कर कोयले कर लो। पीछे कोयलों को पीसकर राख कर लो। इसकी मात्रा १ माशे की है। हर मात्रा को ज़रासा "काला नोन या शहद" मिलाकर सेवन करो। इस से कफ की खाँसी जाती रहती है। साथ ही छाती का दर्द भी मिट जाता है। परीक्षित है।

(३५) सोंठ, काली मिर्च, छोटी पीपर, पोहकरमूल, दाख, हरड़, बहेड़ा और आमला—इन को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इस में से ६ माशे चूर्ण एक तोले "शहद" में मिलाकर चाटने से कफ की खाँसी नाश हो जाती है।

(३६) भारंगी की जड़ की छाल, कूट, जायफल, सोंठ और छोटी पीपर—दो-दो माशे लेकर पाव-भर जल में पकाओ। जब तीन

तोले पानी रह जाय, मल कर पीलो। इस से कफ की खाँसी नाश हो जाती है।

(३७) मोथे की जड़ का चूर्ण १ तोले, अतीस का चूर्ण १ तोले, काकड़ासिंगी का चूर्ण १ तोले और पीपरों का चूर्ण १ तोले—इन को एकत्र मिला कर, "शहद" में घोट लो और अमृतबान में रख दो। इस का नाम "बाल चातुर्भद्रावलेह" है। यह अवलेह सब तरह की खाँसी, विशेषकर बालकों की कफ की खाँसी, पर रामवाण है। इस से बालकों की ज्वर और अतिसार संयुक्त खाँसी भी जाती रहती है। जवान को १ से २ माशे तक की मात्रा है। बहुत छोटे बालकों को १ रत्ती और बड़े बालकों को २ रत्ती देना चाहिये।

(३८) मूग, आमले, जौ, अनार का छिलका, सूखे जंगली बेर, सूखी मूली, सोंठ, पीपर और कुल्थी—इन को तीन-तीन माशे लेकर आध सेर पानी में पकाओ। जब छटाँक भर पानी रह जाय, मल-छान कर पीलो। इस से कफ की खाँसी नाश हो जाती है।

(३९) कचूर, अतीस, नागरमोथा, काकड़ासिंगी, हरड़ और अदरख—इन को तीन-तीन माशे लेकर, सिल पर पानी के साथ पीस लो और चौगुने यानी ६ तोले जल में घोल लो। फिर उस पानी में "रत्ती भर हींग और दो रत्ती सेंधानोन" डाल कर गुन गुना कर लो। इस में से दो-दो तोले दिन में तीन बार पीओ। इस से सब तरह की कफज खाँसी चली जाती हैं।

(४०) पाँचों तरह के नोन, जवाखार और सज्जीखार,—इन को बराबर-बराबर लेकर, सेंहुड़ के पोले डण्डे में भर दो और मुख बन्द कर दो। इस के बाद उस पर कपड़मिट्टी करके, उसे जंगली कंडों की आग में फूँक दो। आग शीतल होने पर दवा को निकाल लो। इस की मात्रा २ से ४ रत्ती तक है। अनुपान—गरम जल है। इस के खाने से सब तरह की कफ की खाँसी जाती रहती हैं।

(४१) नागर पानों का स्वरस १ पाव और साफ चीनी १ पाव, दोनों को मिला कर पकाओ। जब पकते-पकते अवलेह के समान हो जाय, तार छूटने लगें, नीचे उतार लो और शीतल होने पर १ पाव "शहद" मिला दो। इस के बाद इस में सोंठ ६ माशे, अतीस ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, नागकेशर ६ माशे और तुलसी की मंजरी ६ माशे पीस-छान कर मिला दो। इस का नाम "नागवल्ली अवलेह" है। इस की मात्रा २ माशे की है। सवेरे-शाम या दिन-रात में चार बार चाटने से कफ की खाँसी अवश्य चली जाती है। परीक्षित है

(४२) अदरख को चाय की तरह पानी में पका कर, फिर उस में दूध और बूरा मिला कर पीने से सरदी, जुकाम और खाँसी जाती रहती है।

नोट—अदरख के स्वरस को ज़रा गरम करके, फिर उस में "मिश्री" मिला कर पीने से जुकाम जाता रहता है।

(४३) अमलताश के चार तोले पत्तों का काढ़ा पीने से कफ और खाँसी आराम हो जाते हैं।

पथ्य पदार्थ।

कफ़ज खाँसी वाला बलवान हो, तो पहले उसे नमक का पानी पिला कर कय करा दो। इस तरह कफ निकल जायगा और खाँसी जल्दी मिट जायगी। खाने को जौ की रोटी, कड़वे, रूखे और गरम पदार्थ दो अथवा पीपर और खारी पदार्थ तथा कुलथी और मूली के यूषों से मिले भोजन दो। भोजन जितना ही हलका होगा, उतना ही पथ्य होगा। कफ की खाँसी में कफनाशक सभी पदार्थ जैसे लोह, मंडूर, शंख, कौड़ी, सीप, मूंगा आदि की भस्म, सेंहुड़, आक, बैंगन, चिरचिरा, अड़ूसा और कटेरी का क्षार—ये सब हित हैं

वात-कफज खाँसी की चिकित्सा।

(१) कायफल, रोहिष तृण, भारंगी, नागर मोथा, धनिया, बच, हरड़, काकड़ासिंगी, पित्त-पापड़ा, सोंठ और देवदारु—इन सब को दो-दो माशे लेकर, डेढ़ पाव पानी में काढ़ा पकाओ। जब छटाँक भर पानी रह जाय मल-छान लो। शीतल होने पर, उस में "६ माशे शहद और ४ रत्ती हींग" मिलाकर पिला दो। इसका नाम "कट्फलादि क्वाथ" है। इस के पीने से वात-कफ की खाँसी, कंठ के रोग, श्वास, शूल, क्षय और हिचकी तथा ज्वर नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२) तालीसपत्र १ तोले, काली मिर्च २ तोले, सोंठ ३ तोले; छोटी पीपर ४ तोले, दालचीनी ६ माशे और छोटी इलायची ६ माशे—इन सब को पीस-छान कर चूर्ण बना लो। फिर इस में ३२ तोले "मिश्री" पीस कर मिला दो। इस "तालीसादि चूर्ण" से वात-कफज खाँसी नाश हो जाती है। वृन्द ने कहा है—

> वातश्लेष्मकृते कासे तालीशाद्यं प्रयोजयेत्।
> पित्तयुक्ते भवेच्छ्रेष्ठं बंशलोचनया ऽन्वितम्॥

नोट—अगर पित्तका सम्बन्ध हो, तो ५ तोले बंसलोचन भी चूर्ण में मिला दो।

(३) दशमूल की दसों दवाएं चार सेर, चौंसठ सेर जल में डाल कर काढ़ा पकाओ। जब सोलह सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

फिर कूट, कचूर, बेल की जड़, तुलसी, सोंठ, छोटी पीपर, काली मिर्च और हींग दो-दो तोले लाकर, पानी के साथ सिल पर पीस कर, लुगदी बना लो।

दशमूल के काढ़े, इस लुगदी और चार सेर गायके घी को क़लईदार कड़ाही में चढ़ाकर मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और साफ बासन में रख दो।

इस घी की मात्रा ६ माशे से २ तोले तक है। इसके पीने से वात-कफ की खाँसी और सब तरह के श्वास रोग नाश हो जाते हैं। इस का नाम "दशमूलाद्य घृत' है।

(४) खाँसी की सामान्य चिकित्सा के पृष्ठ ४२ में लिखी "लवंगादि गुटिका" भी वात और कफ को खाँसी पर रामवाण हैं। सवेरे-शाम या जब खाँसी का ज़ोर हो, ४।५ गोली मुख में रख कर चूसनी चाहिएँ। परीक्षित हैं।

पित्त-कफज खाँसी की चिकित्सा।

(१) अड़ूसे की पत्तियों का रस दो तोले और शहद ६ माशे—इन दोनों को मिला कर सवेरे-शाम चाटने से और खूब पथ्य परहेज़ करने से पित्त-कफ की खाँसी आराम हो जाती है। चक्रदत्त में लिखा है:—

वासकस्वरसः पेयो मधुयुक्तो हिताशिना।
पित्तश्लेष्मकृते कासे रक्तपित्ते विशेषतः ।।

नोट—ऊपर का नुसखा हमारा परीक्षित है। रक्तपित्त में खूब जल्दी फायदा करता है। अगर हम अड़ूसे के स्वरस और शहद को छे-छे माशे लेकर, उसमें १ माशे साँभर नोन मिलाकर और गुनगुना करके खाँसी वाले को देते हैं, तो २।३ दिन में ही भयंकर-से-भयंकर खाँसी आराम होने पर आ जाती है। अगर खाँसी किसी भी दवा से आराम न हो, तो इस नुसखे से जरूर काम लो। बड़ी खूबी यह है, कि यह नुसखा सभी खाँसियों को नष्ट करता है।

क्षतज खाँसी की चिकित्सा।

(१) मूर्वा, रसौत, चीते की छाल, छोटी पीपर, हल्दी, पाढ़ी और मँजीठ—इन को बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस कर छान लो। इस चूर्ण के बलाबल अनुसार "शहद" में मिला कर चाटने से "क्षतज खाँसी" आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) ईख के रस में घी पका कर खाने से क्षतज खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३) पीपर, मुलहटी, दाख, लाख, काकड़ासिंगी और शतावर—ये सब एक-एक तोले, बंसलोचन २ तोले और मिश्री ३२ तोले—सब को पीस-छान कर रख दो। इस की मात्रा २ माशे से ३ माशे तक है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा "ना-बराबर घी और शहद" में मिलाकर चाटने से क्षतज खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—यह नुसख़ा चक्रदत्त का है। चक्रदत्त ने जहाँ लाख कही है, वृन्द ने वहाँ लाजा-खील कही है। चक्रदत्त ने कहा है—

पिप्पली मधुकं द्राक्षालाक्षा शृंगी शतावरी।
द्विगुणा च तुगाक्षीरी सिता सर्व्वैश्चतुरगुणा॥

पर वृन्द कहता है:—

मधुकं पिप्पली द्राक्षा लाजा शृंगी शतावरी।

(४) छोटी इलायची के दाने, तेजपात, दालचीनी, दाख, और छोटी पीपर—ये सब दो दो तोले; मिश्री, मुलेठी, खजूर और दाख ये सब चार-चार तोले—इन सबको पीसकर 'शहद' में खरल कर लो

और छै-छै माशे की गोलियाँ बना लो। इनका नाम "एलादि वटी" है।

बलाबल अनुसार एक या दो गोली सवेरे-शाम खाकर, ऊपर से मिश्री-मिला धारोष्ण दूध पीने से उरःक्षत्, क्षतज खाँसी, श्वास, हिचकी वमन, क्षय, ज्वर, मूर्च्छा, मद, भ्रम, खून थूकना, पसली का दर्द, अरुचि, तिल्ली, राजरोग, आमवात और स्वरभेद रोग नाश हो जाते हैं। इतने रोगों पर तो हम परीक्षा कर नहीं सके, पर इतना कह सकते हैं, कि, इन गोलियों के लगातार विश्वासपूर्व्वक सेवन करने से उतःक्षत, सिल या क्षतज खाँसी और मुह से खून आना- ये अवश्य आराम हो जाते हैं। ये गोलियाँ कामदेव को भी उद्दीपित करती हैं; अतः कामी लोगभी इन्हें सेवन करके लाभ उठा सकते हैं। परीक्षित हैं।

(५) पोस्त के बीज ६ तोले और इसबगोल २ तोले - इन दोनों को एक सेर पानी में डाल कर काढ़ा कर लो। जब आध सेर पानी रह जाय, कपड़े में छान लो।

फिर उस छने हुए काढ़े को एक क़लईदार बर्तन मे डालकर, ऊपर से एक सेर मिश्री, डेढ़ तोले खस-खस और डेढ़ तोले बबूर का गोंद भी पीसकर मिला दो। फिर उसे आग पर पकाओ। जब चाटने लायक़ अवलेहसा हो जाय, उतार कर अमृतबान में भर कर रख दो। इस चटनी के १ तोले रोज़ चाटने से उरःक्षत, सिल या क्षतज खाँसी आराम हो जाती हैं। खूब परीक्षा की है।

(६) तीन चार माशे पीपर की लाख पीस कर और शहद में मिलाकर खाने से उरःक्षत या क्षतज खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(७) सेवती के एक हज़ार ताज़ा फूल लाकर, आध सेर घी में भ ज लो। जब लाल हो जाय, नीचे उतार लो। फिर अठाई सेर मिश्री

की चाशनी बनाकर, उस में भूंजे हुए फूल मिला दो। इसके बाद नीचे लिखी हुई दवाएँ भी पीस-छान कर मिला दो :—

छोटी इलायची, दालचीनी, तेजपात और नागकेशर तीन-तीन तोले, मुनक्का बिना बीज के १८ तोले, गिलोय का सत्त १॥ तोले, तवाखीर १॥ तोले, सफेद ज़ीरा १॥ तोले और साफ कपूर १ माशे।

दवाएँ मिलाकर नीचे उतार लो और शीतल होने पर चाशनी में चौबीस तोले "शहद" भी मिला दो। फिर इसे उत्तम वर्तन में रख दो। इस का नाम "सेवती पाक" है। इसके ईज़ाद करने वाले भरद्वाज मुनि हैं। इसके सेवन करने से यक्ष्मा और उरःक्षत अवश्य आराम हो जाते हैं, पर बरस छै महीने खाना चाहिये। मात्रा ३ से ६ मासे तक है। अनुपान—मिश्री-मिला धारोष्ण दूध है।

शास्त्र में लिखा है, कि इसके सेवन करने से जीर्णज्वर, क्षय, खाँसी, मन्दागिन, प्रमेह, दिन-रात रहनेवाला ज्वर, सिर के रोग, प्रदर रोग, खूनके रोग, कोढ़, बवासीर, नेत्र रोग और मुख-रोग नाश हो जाते हैं, पर हमने इसे उरःक्षत, क्षतज खाँसी, नेत्र रोग और सिर रोग पर ही आज़माया है। यक्ष्मा और उरःक्षत आराम होने पर अथवा कुछ-कुछ खून आने की हालत में हमने शुरु कराया। ५।७ महीने में रोगी निरोग हो गये। अमीरी चीज़ है।

सूचना—हमने उरःक्षत या क्षतज खाँसी के बहुत से नुसखे ५ वें भाग के अन्त में लिखे हैं। खून बन्द करने के उपाय भी वहीं लिखे हैं। अगर लिवर या यकृत में सूजन आदि हों, तो उनका भी खयाल कर लेना जरुरी है। इस सम्बन्ध में भी हमने वहीं लिखा है। इस रोग में "द्राक्षारिष्ट" बहुत उत्तम है। उसे भी पाँचवें भाग में देखिये।

क्षयज खाँसी की चिकित्सा।

(१) अडूसे का स्वरस १ सेर, सोनामक्खी की भस्म ८ तोले, मिश्री ८ तोले और छोटी पीपर ८ तोले—इन सबको मिलाकर, क़लईदार बर्तन में पकाओ, जब अवलेह के समान गाढ़ा हो जाय, उतार लो। फिर शीतल होने पर उस में आठ तोले "शहद" मिला दो और रख दो। इस का नाम "वासावलेह" है। इसके १ तोला रोज़ खाने से क्षय रोग, क्षयज खाँसी, कफ और बवासीर रोग नाश हो जाते हैं।

(२) मुनक्का १०० तोले, मिश्री ४०० तोले, झड़बेरी की जड़ की छाल ५० तोले, धाय के फूल २५ तोले, चिकनी सुपारी १० तोले, लौंग १० तोले, जावित्री १० तोले, जायफल १० तोले, तज १० तोले, बड़ी इलायची १० तोले, तेजपात १० तोले, सोंठ १० तोले, कालीमिर्च १० तोले, छोटी पीपर १० तोले, नागकेशर १० तोले, रूमीमस्तगी १० तोले, कसेरू १० तोले, अकरकरा१० तोले और कूट १० तोले—इन सब दवाओं को पीस कर, एक मिट्टी के घड़े में भर दो और ऊपर से दवाओं से चौगुना—सवा छत्तीस सेर पानी भी भर दो। इसके बाद घड़े का मुँह अच्छी तरह से बन्द कर दो, ताकि हवा न जाने पावे। फिर उसे ज़मीन में गहरा गढ़ा खोद कर रख दो और ऊपर-नीचे सब तरफ घोड़े की लीद भर दो। इस तरह चौदह या पन्द्रह दिन ज़मीन में गड़ा रहने दो। इस के बाद घड़े को निकाल कर, उसका, मसाला और पानी भभके में भर कर अर्क़ खींच लो। इसके बाद अर्क़ में केशर २ तोले और कस्तूरी १ माशे मिला दो और उसे चीनी या काँच

के बर्तन में रख दो।

नोट—कोई-कोई अर्क़ खिंचते समय ही, भभके में केशर और कस्तूरी को कपड़े में बाँध कर पोटली बना कर छोड़ देते हैं। अर्क़ क़लईदार भभके में खींचना चाहिये। दवा भिगोते समय, मिट्टी का घड़ा मज़बूत और इतना बड़ा लेना चाहिये, जिसमें एक मन पानी और सारी दवाएँ आजायँ और फिर भी चौथाई घड़ा खाली रहे। घड़े पर सरावा रख कर, घड़े के मुंह और सरावे के जोड़ पर कपड़-मिट्टी कर देनी चाहिये।

सेवन विधि—इस अर्क़ में से सवेरे ५ तोले, दोपहर को १० तोले और रात को १५ तोले अर्क़ पीना चाहिये। इस के ऊपर भारी भोजन करना चाहिये। इसके इस तरह सेवन करने से वीर्य बढ़ता एवं श्वास, खाँसी और क्षय रोग नाश हो जाते हैं। इस से हलका-हलका नशा आता है। इसके सेवन करने वाला स्त्रियों को अपनी दासी बना लेता है। जिन्हें क्षय रोग और क्षयज खाँसी हो, वे इसे अपने बलाबल अनुसार अवश्य पीवें। इसका नाम "द्राक्षासव" है। आज़मूदा है।

नोट—श्वास और खाँसी में सवेरे-शाम पीना ठीक होगा। शरीर के दर्द में भी इसी तरह पीना चाहिये।

(३) "द्राक्षारिष्ट," जिस की विधि राजयक्ष्मा प्रकरण में, चिकित्सा चन्द्रोदय ५ वें भाग में लिख आये हैं, क्षयज खाँसी, उरःक्षत और सिल यानी क्षतज खाँसी पर रामबाण है। उसे ऐसे मौक़े पर अवश्य सेवन करना चाहिये।

(४) पीपर, लाख, पका हुआ कटेरी का फल और पद्माख—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस की मात्रा २ से ३ माशे तक है। इसे "ना-बराबर घी और शहद" में चाटने से क्षयज खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(५) अर्जुन वृक्ष की छाल लाकर कूट-पीस-छान लो। फिर इस में "अडूसे के रस" की सात भावनायें दो और सुखा कर रख लो। इस चूर्ण को "नाबराबर घी और शहद तथा मिश्री" के साथ चाटने से

क्षयज खाँसी आराम हो जाती है।

(६) गाय का ताज़ा मकखन ३ माशे, शहद ३ माशे, मिश्री ३ माशे और सोने के वर्क १ रत्ती—इन को मिला कर खाने से क्षय और क्षयज खाँसी निश्चय ही आराम होजाते हैं। यह नुसखा कभी नहीं चूकता। परीक्षित है।

नजले की खाँसी की चिकित्सा ।

(१) गिलोय का सत ६ माशे, छोटी इलायची के बीज ६ माशे, नीला बंसलोचन ६ माशे, बबूल का गोंद ३ माशे, छोटी पीपर ३ माशे, तीखुर ३ माशे, दालचीनी १॥ माशे और रूमी मस्तगी १॥ माशे,—इन सब को पीस-छान कर रख लो। इस चूर्ण की मात्रा २ से ४ माशे तक है।

बनफ़शा ६ माशे, उन्नाव बीज निकले हुए ७ दाने, मुलेठी ४ माशे, और मिश्री ६ माशे—इन सब को पाव-भर पानी में औटाओ ; जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो।

सेवन विधि—ऊपर के चूर्ण की १ मात्रा शहद या शर्बत गुलबन-फ़शा में खाकर, ऊपर से यही काढ़ा पी लो। इस तरह सवेरे-शाम, दोनों समय, चूर्ण खाने और काढ़ा पीने से, १५ दिन में, नजले की खाँसी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२) बीजों समेत पोस्ते नग ३०, लिहसौड़े नग ३०, सौंफ १ तोले, और तुख़म-ख़तमी १ तोले—इन को आध सेर पानी में औटाओ, जब आधा पानी रह जाय, मल कर छान लो। फिर इस काढ़े में पाव भर साफ "चीनी" मिला कर पकाओ। जब गाढ़ा होने पर आवे उतार लो

और छिली मुलेठी नौ माशे, सम्मग अरबी यानी बबूल का गोंद ४॥ माशे और कतीरा २। माशे पीस कर मिला दो। इस में से सवेरे और सोते समय एक-एक तोले चाटो। इस से नजले की खाँसी अवश्य आराम हो जाती है, पर १५ दिन तक दवा चाटनी चाहिये। परीक्षित है।

(३) ख़स के पोस्ते डंटी तोड़े हुए ४ नग और लाहौरी नमक २ माशे—इन को आध पाव जल में औटाओ, जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान कर सोते समय पी लो, इस से भी नजले की खाँसी जाती रहती है।

नोट—बहुत से लोग नजले और जुकाम का भेद नहीं समझते। अगर मल सिर से उतर कर नाक की राह गिरता है, तो उसे "जुकाम या प्रतिश्याय" कहते हैं, लेकिन यदि वही भेजे का मल कण्ठ में गिरता है, तो उसे "नजला" कहते हैं। जुकाम, नजले और खाँसी का बहुत सम्बन्ध है; अतः हम जुकाम और नजले के निदान लक्षण और चिकित्सा खाँसी के बाद ही, आगे, लिखेंगे। हिकमत और वैद्यक में जुकाम का जिक्र नाक के रोगों में किया गया है, वह मत भी ठीक है और हमारा मत भी ठीक है।

(४) "जातीफलादि चूर्ण" शर्बत गुलबनफ़शा या शहद में मिला कर चाटो और ऊपर से मिश्री-मिला गरम दूध पीओ। इस तरह भी जुकाम आराम हो जाता है। अथवा सवेरे के समय "लवंगादि चूर्ण" शहत में चाट कर दूध-मिश्री पीओ और शाम को "जातीफलादि चूर्ण" शहद में चाटकर दूध-मिश्री पीओ। इस तरह जुकाम और खाँसी दोनों आराम हो जायेंगे। परीक्षित है।
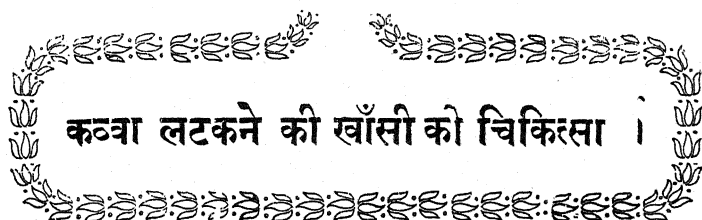
कव्वा लटकने की खाँसी की चिकित्सा।

कव्वे के लटक आने से भी खाँसी हो जाती है। वह खाँसी बिना कव्वा उठाये किसी भी दवा से आराम नहीं होती। हर समय खस-

खस लगी रहती है, रोगी को क्षण-भर भी चैन नहीं पड़ता। उसे ऐसा मालूम होता है, गोया गले म कोई चीज़ लटक रही है। इस हालत में, कव्वा बिना सूजन आये, नीचे की ओर गिर पड़ता है। जब रोगी मुँह खोलता और जीभ को मुख के बाहर निकालता है, तब दूसरे देखनेवाले को कव्वा बढ़ा हुआ सा दीखता है। अनेक बार ऐसा होता है, कि जबतक कव्वा अंगुली से उठाया नहीं जाता, रोगी ग्रास को निगल नहीं सकता।

कव्वे की जड़ उसके ओर-पास के मांस से मिली हुई है। इस का सम्बन्ध खोपड़ी के ऊपर की झिल्ली और सिर की खाल से भी है। इसी से, अनेक बार, हकीम लोग सिर के तालवे पर खिंचावट करने वाली दवाए रखते हैं। तालवे पर रक्खी हुई दवा के खिंचाव करने से ही कव्वा उठ जाता है।

यह रोग खून की गरमी और सरदी से होता है। अगर खून की गरमी से होता है, तो जीभ, तालू और कव्वे में सुर्खी और गरमी होती है। अगर सर्दी से लटकता है, तो जीभ, तालू और कव्वे में गरमी और लाली - नहीं होती, किन्तु मुंह में लुआब ही लुआब भरा रहता है और गले में कोई चीज़ लटकती: हुई: तो दोनों ही हालतों में मालूम होती है।

यह तो हम ने कव्वा लटकने के सम्बन्ध में कहा, पर अनेक बार कव्वे में सूजन भी आजाती है। अगर खून की वजह से सूजन आती है, तो कव्वा सुर्ख़ हो जाता और फूल जाता है तथा उस में जलन और थोड़ा दर्द होता है।

अगर पित्त की वजह से सूजन होती है, तो उस में चुभन सी होती है, जलन बहुत होती है, प्यास बढ़ जाती है, और मुंह सूखा रहता है। इस पित्तज सूजन में, खून की सूजन की अपेक्षा, दर्द बहुत होता है।

अगर सूजन कफ की वजह से होती है, तो सूजन में सुस्ती (पित्त की सूजन में तेज़ी बहुत होती है), सफैदी और नर्मी होती है ; पर दर्द कम होता है।

अगर सूजन बादी की वजह से होती है, तो सूजन में सख्ती होती है, तालू, जीभ और कव्वे की रंगत काली सी होती है और मुंह का ज़ायका खट्टा होता है।

अगर कव्वे में खून की वजह से सूजन आई हो या वह लटक पड़ा हो, तो नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

(१) सिरका गुलाब से कुल्ले करो।

(२) गुलाब के फूल, सफैद चन्दन, अनार के फूल और कपूर को महीन पीस कर कव्वे पर मलो। अथवा सलाई के चौड़े सिरे पर इस दवा को रख कर कव्वे के लगा दो।

अगर पित्त की वजह से कव्वे में सूजन आई हो, तो नीचे लिखे हुए उपाय करो :—

(१) अमलताश के काढ़े में तुरंजबीन मिलाकर पिलाओ।

(२) हरी मकोय और हरी कासनी के स्वरस के कुल्ले कराओ।

अगर कफ की वजह से सूजन आई हो तो ये उपाय करो :—

(१) सवेरे ही शहद का बना हुआ गुलक़न्द खिलाओ।

(२) काँजी, सिकंजबीन और राई मिलाकर कुल्ले कराओ। इस से कफ कट कर निकल जायगा।

(३) नौसादर महीन पीस कर, एक नली में रखो और कव्वे पर फूँको। इस के कव्वे पर लगने से कफ नर्म हो कर पिघल जायगा।

(४) माजूफल, नौसादर, नमक और फिटकरी को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। इस दवा को अगुली पर लगाकर कव्वे को

उसी तरह उठाओ; जैसे दाइयाँ उठाया करती हैं।

अगर सूजन बादी से आई हो तो ये उपाय करो :—

(१) मेथी के लुआब में थोड़ा सा नोन मिला कर कुल्ले करो।

(२) अगर सूजन फैलने का भय हो, तो शीतल चीज़ों के कुल्ले कराओ। जैसे, हरे धनिया का स्वरस और हरे काहू का स्वरस मुंह में रखो और कुल्ले करो।

अगर कफ या सर्दी से कव्वा लटक आया हो, तो नीचे के उपाय करो :—

(१) शहद के पानी और जूफे के काढ़े के कुल्ले करो।

(२) फ़िटकरी, बारहसिंगे का जला हुआ सींग और नौसादर इनको समान-समान लेकर महीन पीस लो। फिर एक नली या काग़ज़ की भोगली में इसे भर कर कव्वे पर फूंको।

(३) आस और फिटकरी महीन पीस कर खट्टे-मीठे अनार के रस में मिला लो और कुल्ले करो।

(४) पहले सिर के बाल मुंडवादो, इस के बाद नीचे लिखी दवा तालुए पर रखोः—मुगास, अकाकिया, धूआँ, खारी मिट्टी और सरेश इन्हें महीन पीस लो। फिर इस चूर्ण में "ईसबगोल" मिला दो। इस के बाद, अधीरा के पत्ते, सूखा धनिया और सिरके को औटा लो। औटने पर छान लो और ऊपर की पिसी हुई दवाएँ उस में मिला दो और तालवे पर लगा दो। यह दवा तालवे पर लगाने से कव्वे को ऊपर खींचती है और बालक बूढ़े जवान सब के लिए अच्छी है। जो तरी दिमाग़ से कव्वे पर आती है, उसे भी यह रोकती है,

(५) माजूफल को सिरके में पीस कर बालक के तालुए पर लेप कर दो, कव्वा ऊपर उठ जायगा।

तालवे पर रख दो। इससे भी कव्वा उठ जाता है।

(७) अगर कव्वा लटकने के बाद कव्वे की जड़ महीन और सिर मोटा तथा गाढ़ा हो जाय एवं किसी दवा से लाभ न हो, तो जुफ़्त को गरम पानी में गला लो और गरम-गरम से ही कुल्ले करो, इस से सूजन नर्म होकर नष्ट हो जायगी।

(८) अगर बीमारके कव्वे में गरमी पैदा हो जाने से सुर्ख़ी और गरमी जान पड़े, तो हरी मकोय और हरे धनियेके स्वरस के कुल्ले कराओ।

नोट—अगर फिटकरी मिली हुई किसी भी दवा से लाभ न हो, कव्वे की जड़ पतली और सिर की तरफ से बहुत बड़ी हो जाय, गोलाई में अंगूर जैसी हो जाय, रंग सफेद हो और गले पर पड़ने से रोगी के दम घुटने का ख़ौफ हो, तो किसी चतुर डाक्टर से कव्वे के बढ़े हुए भाग को कटवा देना चाहिये। काटने में बड़ी होशियारी की जरूरत है। अगर जियादा कट जायगा, तो खून बन्द न होगा। कदाचित बहुत-सा खून गले और फेंफड़े में भर जायगा, तो रोगी मर जायगा। कव्वा जितना कटना चाहिये, उतना ही काटा जाय, कम और ज़ियादा काटना दोनों ही खराब हैं। अगर कम काटा जायगा, तो पीड़ा में कमी न होगी और ज़ियादा काटा जायगा तो खून बन्द न होगा और गले तथा फेंफड़े में भर कर रोगी को तत्काल मार डालेगा। अतः जहाँ तक बने कव्वे को न काटना चाहिये। जिस हालत में रोगी के दम घुटकर मरने का भय हो और दवा से लाभ होता ही न हो, तभी अनुभवी आदमी को इसे काटना चाहिये। इस को नश्तर से काटना ही ठीक है, क्योंकि नश्तर उसे जहाँ से चाहोगे वहाँ से ही काट देगा, पर दवा किसी ख़ास जगह से नहीं काट सकेगी।

अनुभूत योग।

(६) टिंचर स्टील को रूई के फाहे में लगा कर, उस फाहे को कव्वे के लगा दो। कव्वा फौरन उठ जायगा।

(१०) माजूफल, बंसलोचन और छोटी इलायची—इन को समान-समान लेकर महीन पीस लो। फिर उसे नली या काग़ज़ की भोंगली में भर कर, कव्वे पर फूँको, कव्वा उठ जायगा। अथवा इस दवा को सलाई पर लगा कर कव्वे के लगा दो अथवा अंगुली पर

रख कर कव्वे के लगा दो। इस तरह भी कव्वा उठ जाता है और उस से हुई खाँसी मिट जाती है।

(११) कव्वे की बीट इतवार के दिन लाकर और एक थैली में रख कर, बालक के गले में लटका दो, कव्वा उठ जायगा।
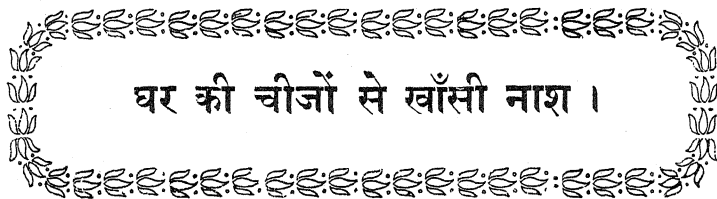
घर की चीजों से खाँसी नाश।

(१) घी और कालीमिर्च मिला कर चाटने से अथवा घी और मिश्री मिला कर चाटने से सूखी खाँसी आराम हो जाती है।

(२) गाय का घी बालक की छाती पर मलने और सुखा देने से दूध के दोष से जमा हुआ कफ निकल जाता है।

(३) गोमूत्र को औटाने से बर्तन की पैंदी में जो नमक लगा मिलता है, उस में से ३ रत्ती नमक नित्य खाने से कफ, खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(४) गुड़ में सोंठ और कालीमिर्च मिला कर खाने से खाँसी और ज़ुकाम नष्ट हो जाते हैं।

(५) ६ माशे गुड़ और ६ माशे सरसों का तेल मिलाकर चाटने से वातज सूखी खाँसी मिट जाती है।

(६) मिश्री के टुकड़े मुख में रखने से प्यास और खाँसी का ज़ोर घट जाता है।

(७) शहद में कालीमिर्च और सोंठ मिला कर चाटने से कफ, खाँसी और ज़ुकाम आराम हो जाते हैं।

(८) तीन माशे शहद और ६ माशे घी मिला कर चाटने से

खाँसी जाती रहती है।

(९) एक तोले गेहूँ और डेढ़ माशे सेंधा नोन पाव-भर जल में औटाकर और छटाँक भर रहने पर उतार छान कर गरमागर्म पीने से खाँसी नाश हो जाती है।

(१०) मक्के के भुट्टे जलाकर, उनकी राख में सेंधानोन मिला कर दो-दो माशे की मात्रा से दिन में ३-४ बार फाँकने से खाँसी, जुकाम और कुकुर खाँसी आराम हो जाती है।

(११) दो तोले तिल पाव-भर पानी में औटाने और छटाँक-भर पानी रहने पर, तोले भर मिश्री मिला कर पीने से सरदी की सूखी खाँसी आराम हो जाती है।

(१२) एक तोले अलसी को पाव भर पानी में औटाकर और छटाँक-भर पानी रहने पर तोले भर मिश्री मिला कर पीने से सूखी खाँसी आराम हो जाती है और छाती पर सूखकर जमा हुआ कफ निकल जाता है।

(१३) तवे पर भूने हुए अलसी के बीज "शहद" में मिला कर चाटने से सूखी खाँसी जाती रहती है।

(१४) आध सेर बिनौले कूट कर एक सेर पानी में औटाओ, जब आधा पानी रह जाय, मल-छान लो। इस में से थोड़ा-थोड़ा काढ़ा घन्टे-घन्टे भर में पीने से सूखी खाँसी आराम हो जाती है। जाड़ा ज्वर चढ़ने से चार घन्टे पहले एक-एक घन्टे में आध-आध पाव यही काढ़ा पीने से जाड़े का ज्वर नहीं आता।

(१५) पिसी हुई काली मिर्च गुड़ में मिला कर खाने से जुकाम, खाँसी और पीनस आराम हो जाते हैं।

(१६) काली मिर्च पीस कर और शहद में मिला कर चाटने से सरदी की खाँसी और जुकाम आराम हो जाते हैं।

(१७) धनिया ३ तोले और सौंफ २ तोले गाय के घी में भून कर पीस लो। फिर २ तोले मिश्री पीस कर मिला दो। इस में से छै-छै माशे दवा सवेरे-शाम खाने से साधारण खाँसी, दमा, भीतरी दाह और पेचिश या मरोड़ी के दस्त आराम हो जाते हैं।

(१८) धनिया को कूट कर उसकी गिरी निकाल लो। इस में से १॥ माशे गिरी पीस कर ३ माशे "शहद" में मिला कर चाटो। इस से खाँसी और दमा नाश हो जाते हैं।

(१९) हल्दी को भून कर और शहद में मिलाकर चाटनेसे खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(२०) लौंग और कत्थे की गोलियाँ मुँह में रखने से खाँसी आराम हो जाती है।

(२१) पिसी हुई सौंठ गुड़ में मिला कर खाने से जुकाम और खाँसी आराम हो जाते हैं तथा भूख बढ़ती है।

(२२) शर्बत अनार में दो रत्ती "जवाखार" मिलाकर चाटनेसे खाँसी आराम हो जाती है।

(२३) पान के रस में तीन माशे शहद मिला कर चाटने से कफ, खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(२४) चूना दो तोले और मिश्री चार तोले आध पाव पानी में घोल दो। इस में से नितार-नितार कर दस-दस बूंद बालक को पिलाने से खाँसी, श्वास और दूध गेरने का रोग आराम हो जाते हैं।

(२५) सोंठ और बताशे पानी में उबाल कर पीने से जुकाम, जुकाम की खाँसी और छाती वगैरः की पोड़ा आराम हो जाती हैं।

(२६) काली मिर्च और बताशे औटाकर गरमागर्म पीने से पसीने आकर जुकाम, जुकाम की हरारत, खाँसी और शरीर की

जकड़न आराम हो जाते है।

(२७) हल्दी को पानी में पीस और आग पर पका कर सिर पर लेप करने से ज़ुकाम और ज़ुकाम की खाँसी नष्ट हो जाती है।

(२८) हल्दी को आग पर डाल-डाल कर नाक में धूआँ लेने से नाक से खूब पानी गिरता और ज़ुकाम आदि आराम हो जाते हैं।

(२९) बालक की खाँसी में छाती पर सरसों का तेल मलने से कफ निकल जाता है।

(३०) सरसों के तेल में सेंधानोन मिला कर छाती पर मलने से कफ की गाँठें बँध कर निकल जाती हैं।

(३१) गाय के गरम दूध में काली मिर्च और मिश्री मिला कर पीने से ज़ुकाम और उसकी खाँसी आराम हो जाती है।

बालकों की खाँसी पर और नुसखे।

(३२) काकड़ासिंगी १ रत्ती, नागरमोथा २ रत्ती और अतीस आधी रत्ती—इन को पीस-छान कर "शहद" में मिला कर दिन में ३।४ बार चटाने से बालकों की साधारण सर्दी, खाँसी, ज्वर और वमन—ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३३) छोटी पीपरों का चूर्ण २ रत्ती, और अतीस आधी रत्ती "शहद" में मिला कर चार-चार घण्टे में चटाने से बालकों की सर्दी, खाँसी और ज्वर में अवश्य लाभ होता है। परीक्षित है।

(३४) साफ नौसादर १ रत्ती और छोटी पीपर का चूर्ण १ रत्ती दोनों को एकत्र पीस कर और तुलसी के पत्तों के रस में मिला कर ज़रा गरम कर लो। यह नुसख़ा तीन-तीन घण्टे में देने से बालक की खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३५) अगर बालक की छाती में सर्दी बैठ गई हो, तो ज़रासा

सफेद प्याज़ का रस और सरसों का तेल मिला कर पका लो और इस तेल को छाती पर मलो। इस उपाय से छाती पर जमा हुआ दूषित कफ पतला होकर निकल जाता है। परीक्षित है।

नोट—अदरख के रस और सरसों के तेल को पका कर लगाने से भी यही लाभ होता है। सरसों के तेल की जगह पुराना घी भी लिया जा सकता है। ऊपर के चारों नुसखे परीक्षित हैं।
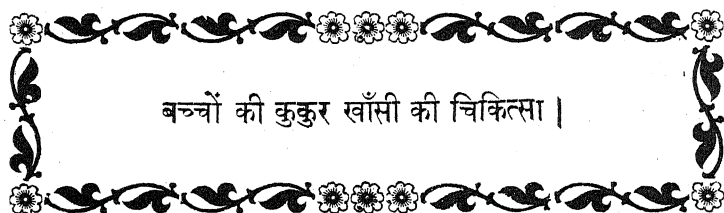
बच्चों की कुकुर खाँसी की चिकित्सा।

नोट—काली खाँसी या कुकुर खाँसी जिसे अंगरेज़ी में हूपिंग काफ़ कहते हैं, एक ख़ास तरह की खाँसी है। मामूली खाँसी से यह अलग गिनी जाती है। यह खाँसी प्रायः दस साल से कम अवस्था के बालकों को ही होती हैं। यह छुतहा रोग है। एक से उड़ कर दूसरे को लगता है। इसके होने से बालक कुत्ते की तरह खाँसता है, इस लिए इसे कुकुर खाँसी कहते हैं। बालक को इस खाँसी के होने से घोर कष्ट होता है, इस लिए इसे काली खाँसी, कड़वी खाँसी या बिषैली खाँसी भी कहते हैं। इस खाँसी के उठते समय बालक जब श्वास लेता है, तब 'हुप, हुप' शब्द करता है, इसलिए अंगरेज़ इसे 'हूपिंग काफ़' कहते हैं।

इस खाँसी का कारण एक विष है। यह विष हवा के साथ फेफड़े में जाकर वहाँ के मज्जातन्तुओं में क्षोभ उत्पन्न करता हैं, जिससे ज्वर और खाँसी आदि विकार होते हैं।

इसकी दो अवस्थायें होती हैं। कोई-कोई तीन अवस्था मानते हैं। पहली अवस्था ८।१० दिन तक रहती है। इस हालत में थोड़ा ज्वर होता और सूखी खाँसी चलती है। खाँसते-खाँसते बालक के चेहरे का रंग बदल जाता है।

दूसरी अवस्था में, पहले की सी खाँसी नहीं रहती। खाँसी उठने पर जब तक कफ नहीं निकल जाता या कय नहीं हो जाती, बालक अत्यन्त बेचैन रहता है। इस समय बालक के नेत्र लाल हो जाते हैं। किसी-किसी बच्चे की नाक से खून गिरता है और किसी-किसी के कय किये हुए कफ में भी खून देखा जाता है। कफ निकल

जाने पर बालक को चैन आता है। यही दूसरी अवस्था है। यह अवस्था कितने दिनों तक रहती है, इसका कुछ नियम नहीं।

जब यह रोग ज़ोर पर होता है, तब २४ घन्टे में २० से ४० बार तक खाँसी के वेग उठते हैं। जब रोग का बल घटने लगता है, तब वेग भी कम होने लगते हैं। इसी को कोई-कोई तीसरी अवस्था कहते हैं। यह रोग बहुत दिनों में आराम होता है। किसी को ४५ दिन में; किसी को ६० दिन में और किसी को इससे भी ज़ियादा दिनों में।

कितने ही बालकों के सिर में खून जमा हो जाने से मूर्च्छा तक हो जाती है। रोग के पुराने होने पर दाह और हृदय में जलन आदि उपद्रव भी होते हैं। बिना उपद्रव की खाँसी सहज में नाश हो जाती है; पर उपद्रव होने से बालक अत्यन्त क्षीण हो जाता है। एक वर्ष से कम उम्र के बालक क्षीण होने के कारण मर भी जाते हैं।

यह बहुत बुरा रोग है। जरा सी ग़फ़लत से बालक की जान जाने का खौफ़ रहता है। इसलिये इस रोग का इलाज करते समय, रोग की अवस्था पर अवश्य ध्यान रखना चाहिये।

अनेक चिकित्सकों की राय है, कि इस रोग में पहले वातनाशक औषधियाँ देनी चाहियें। परन्तु जो लोग इसे साधारण सरदी का विकार समझ कर गरम और तेज़ दवाएँ देते हैं, वे बालक के दुश्मन होते हैं। वैसी दवाओं से लाभ होने के बजाय, कभी-कभी कफ़ सूख जाने से भयंकर परिणाम होता है।

याद रखना चाहिये, यह रोग मियादी है। बिना अपनी मियाद पूरी किये आराम नहीं होता। लेकिन यह समझ कर दवा न करना भारी भूल है। पीड़ा की शान्ति और रोग की बढ़ती रोकने को दवा अवश्य देनी चाहिये।

चिकित्सा।

(१) सौंफ, मुलेठी का सत, दाख और आग में मुनी हुई बड़ी इलायची के बीज बराबर-बराबर लेकर एकत्र पीस-छान लो। इस में से थोड़ा-थोड़ा चूर्ण "शहद" में मिला कर चटाने से कुकुर खाँसी दब जाती है।

(२) काकड़ासिंगी, अतीस, दालचीनी और छोटी इलायची के बीज बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण में से १ रत्ती

चूर्ण, एक माशे शहद में मिला कर चटाने से, कफ निकल कर खाँसी की पीड़ा शान्त हो जाती है ।

(३) बिजौरे के फूल की केशर और कटेरी के फूल की केशर—दोनों को शहद में मिलाकर चटाने से खाँसी, ओकी और वमन आदि नाश हो जाते हैं ।

(४) अदरख के रस के साथ गाय का घी पकाओ। उस में से थोड़ा-थोड़ा घी गरम दूध में मिला कर पिलाने से पुरानी कुकुर खाँसी जाती रहती है।

(५) हल्दी, दालचीनी, बायविडंग और नागकेशर—प्रत्येक दवा तीन-तीन माशे लो ; हींग १ माशे और कस्तूरी १ रत्ती लो। सब को एकत्र पीस कर उड़द-समान गोलियां बना लो। बालक की अवस्थानुसार एक या आधी गोली "शहद में" घिस कर दो। इस से अत्यन्त पीड़ा वाली पुरानी खाँसी भी चली जाती है।

(६) आध पाव गाय के दूध और आध पाव पानी में ज़रा सा गाय का घी डाल कर पकाओ। जब पानी जल कर दूध रह जाय, उस में थोड़ी मिश्री मिला दो। इस में से थोड़ा-थोड़ा दूध, दिन में दो तीन बार, पिलाने से पुरानी कुकुर खाँसी जाती रहती है।

(७) बहेड़े के छिलके और अनार के छिलके का काढ़ा पका लो। फिर उसे छान कर, उस में मिश्री मिला दो और फिर पकाओ। जब अवलेह जैसा हो जाय, उस में छोटी पीपर पीस कर मिला दो। इस में से बालक की अवस्थानुसार चटाने से कुकुर खाँसी की पीड़ा शान्त हो जाती है।

(८) सफेद वैसलीन तीन या चार ग्रेन की मात्रा से बालक को दिन में २।३ बार देने से कुकुर खाँसी २।३ दिन में ही बहुत घट जाती है।

(९) "इयुलोटिन" नामक दवा की टेबलेट या टिकिया खिलाने

से २।३ दिन में ही कुकुर खाँसी कम हो जाती है। यह दवा अंगरेज़ी दूकानों पर मिलती है। ("वैद्य" से)
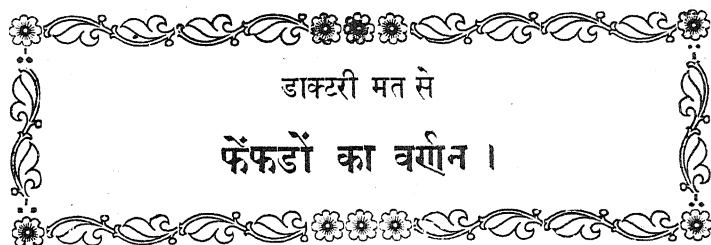
डाक्टरी मत से

फेंफड़ों का वर्णन।

फेंफड़े मनुष्य की छाती में दाहिनी और बाईं ओर होते हैं। दाहिना फुफ्फुस बाएँ की अपेक्षा अधिक चौड़ा और भारी होता है। फुफ्फुस गावदुम होता है; यानी वह एक ओर से पतला और कम चौड़ा होता है ; पर दूसरी ओर से मोटा और अधिक चौड़ा होता है। पतले और नुकीले हिस्से को फुफ्फुस का शिखर या चोटी कहते हैं। यह पतला और नोकीला भाग गर्दन की तरफ और मोटा तथा चौड़ा हिस्सा पेट की तरफ रहता है।

फेंफड़े ऊपर से चिकने और चमकीले होते हैं और उन पर चित्तियाँ सी पड़ी होती हैं। छूने से वे नर्म जान पड़ते हैं और अंगुलियों से दबाने पर वे स्पञ्ज-जैसे मालूम होते हैं। गर्भगत बालक के फेंफड़े का रंग गहरा लाल होता है ; हाल के जन्मे बच्चे के फेंफड़े का रंग गुलाबी होता है; पर प्रौढ़ मनुष्य के फेंफड़े का रंग नीलापन लिये भूरासा होता है। हिन्दुस्तानियों के दोनों फेंफड़े तोल में क़रीब एक सेर के होते हैं और स्त्रियों के एक सेर से कुछ कम होते हैं; पर यूरोपियनों के फेंफड़ों का वज़न सवा सेर के क़रीब होता है।

तन्दुरुस्त आदमी के फेंफड़े हवा भरी रहने की वजह से पानी से हलके होते हैं। अगर वे मुर्दे के शरीर से निकाल कर पानी में डाल

दिये जायें, तो तैरने लगेंगे ; परन्तु न्यूमोनिया—फुफ्फुस-प्रदाह औ क्षय रोग यानी तपेदिक या थाइसिस रोग में, फुफ्फुस के वे भाग जिन में ये रोग होते हैं, किसी क़द्र ठोस हो जाते हैं, इस लिये उन म हवा नहीं रहती। बस, हवा न रहने के कारण वे जल पर नहीं तैरते यानी डूब जाते हैं।

फुफ्फुस पानी में तभी तैर सकता है, जबकि उस में हवा भरी हो। गर्भगत बालक के फेंफड़ों में हवा नहीं भरी होती, क्योंकि उस समय बच्चा श्वास नहीं लेता। बिना श्वास लिये फेंफड़ों में हवा कैसे भर सकती है? जो बालक पेट से मरे हुए निकलते हैं, उन के फुफ्फुस जल में नहीं तैरते। जो बालक माँ के पेट से बाहर आकर एक श्वास भी लेता है, उसका फुफ्फुस पानी पर तैरता है। फुफ्फुस के पानी पर तैरने से साफ़ तौर पर मालूम हो जाता है, कि बच्चा पैदा होने के बाद जिया है या जीता हुआ पैदा हुआ है।

नाक के छेदों से लेकर फेंफड़ों तक हवा के जाने और आने की जो राहें हैं, उसे "श्वास मार्ग" कहते हैं। नाक के छेदों से ही हवा भीतर जाती है ; यानी नाक से हवा कंठ में जाती है। कंठ या गले से स्वरयंत्र में जाती है। स्वरयंत्र से वह टेंटुए में जाती है और टेंटुए से वायु-प्रणालियों में जाती है। इन नालियों में अनेक शाखा-प्रशाखा हैं। उन सब में होकर वायु सारे फुफ्फुस में पहुँचती है।

सामने की तरफ़, गर्दन के बीचों-बीच में, एक सख़्त और लम्बी चीज़ होती है। जब हम कोई चीज़ निगलने लगते हैं, तब वह ऊपर को उठती और फिर नीचे की ओर गिरती दीखती है। इस अंग के ऊपर का मोटा और चौड़ा भाग "स्वरयंत्र" है। नीचे का बाक़ी हिस्सा "टेंटुआ" है।

गर्दन में टेंटुए के पीछे "अन्न-प्रणाली" है। स्वरयंत्र और टेंटुए में होकर हवा फेंफड़ों में जाती है और टेंटुए के पीछे वाली अन्न प्रणाली

या अन्न जाने की नाली में होकर अन्न भीतर जाता है। दाहिनी वायु-प्रणाली दाहिने फेंफड़े से और बाईं बायें फेंफड़े से सम्बन्ध रखती है। फुप्फुस में घुसते ही वायु-प्रणाली की बहुतसी शाखायें हो जाती हैं। इन शाखाओं द्वारा वायु फुप्फुस के सब भागों में पहुचती है।

श्वास-कार्य।

हवा का फेंफड़ों के भीतर जाना और फिर बाहर आना ही "श्वास-कर्म" कहलाता है। एक बार हवा नाक के छेदों में होकर फेंफड़ों के भीतर घुसती है, तब छाती फैल कर पहले से बड़ी हो जाती है। इस को "उच्छ्वास" या भीतर साँस लेना कहते हैं। एक बार हवा जिस तरह नाक के छेदों में होकर भीतर जाती है; उसी तरह फिर नाक के द्वारा ही बाहर निकलती है। जब हवा बाहर आती है, तब छाती अपनी असली हालत में हो जाती है और फेंफड़े भी छोटे हो जाते हैं। इस को "प्रश्वास" या साँस का बाहर निकलना कहते हैं। एक उच्छ्वास और एक प्रश्वास यानी एक बार हवा के भीतर जाने और बाहर आने को एक श्वास कहते हैं। पूरी उम्र का प्रौढ़ मनुष्य एक मिनट में १६ या १७ श्वास लेता है। साधारणतः तन्दुरुस्त आदमी एक मिनट में १६ से २० श्वास तक लेता है। बचपन में श्वास ज़ियादा आते हैं। हाल का पैदा हुआ बालक चँवालीस साँस लेता है, पर पाँच वर्ष का बच्चा २५।२६ साँस लेता है। जितनी देर में मनुष्य १ साँस लेता है, उतनी देर में हृदय चार या पाँच बार फड़कता है।

ऐसा न समझना चाहिये, कि प्रश्वास कर्म में यानी साँस बाहर आते समय फेंफड़े हवा से ख़ाली हो जाते हैं--उन में हवा बिल्कुल नहीं रहती। असल बात यह है कि, हमारे साँस बाहर निकालते समय भी फेंफड़े हवा से भरे रहते हैं। हम लोगों को सदा गहरा श्वास लेना चाहिये, जिस से हवा फेंफड़ों के कोने-कोने में भर जाय।

जो लोग गहरे साँस नहीं लेते, उन के फेंफड़े हवा से अच्छी तरह नहीं भरते।

रोगों में श्वास की संख्या घट-बढ़ जाती है। बुख़ार की हालत में साँस जल्दी-जल्दी आते हैं। ख़ासकर, फैंफड़ों के रोगों में तो ज़ियादा आते ही हैं। जैसे—फुफ्फुस-प्रदाह या न्यूमोनिया में ज़ियादा साँस आते हैं; पर मीठे विष और अफीम के विष से श्वास कम आते हैं।

मनुष्य-शरीर में रासायनिक क्रियाओं के होने से अनेक तरह के पदार्थ बनते रहते हैं। उन में से बहुतेरे बेकाम होते हैं और कितने ही तो ज़हर का काम करने वाले होते हैं। अगर वे शरीर में रहे आवें, तो अनेक भयानक रोग पैदा हो सकते हैं। इसी लिये रचयिता ने शरीर के भीतर से ख़राब चीज़ों के निकालने का इन्तज़ाम भी किया है। कई अंगों का काम है, कि जब उन में ख़ून आवे, तो वे उस में से ज़हरीले पदार्थ निकाल लें और उन्हें श्वास, मूत्र और पसीने द्वारा बाहर पहुँचा दें।

यों तो ख़ून को साफ करने वाले मुख्य अंग फेंफड़े, वृक्क और चमड़ा हैं, पर इन के सिवा यकृत-लिवर, प्लीहा-तिल्ली या स्प्लीन प्रभृति भी ख़ून को साफ करते हैं।

फेंफड़ों द्वारा तीन ख़राब या हानिकारक पदार्थ बाहर निकलते हैं और एक अच्छी चीज़ उन के अन्दर जाती है। कारबोनिक एसिड गैस, उड़नेवाले हानिकर पदार्थ और जल की भाफ—ये तीन चीज़ें ख़राब होती हैं, इन्हीं को फेंफड़े बाहर निकालते और आक्सिजन गैस को अन्दर लेते हैं।

मनुष्य-शरीर में जो कारबोनिक एसिड गैस पैदा होती है, वह ज़हरीली गैस है। जिस ख़ून में यह गैस अधिक होती है, उस का

रंग स्याही माइल होता है। यह कालासा खून शरीर के सारे भागों से इकट्ठा होकर, हृदय के दाहने ग्राहक कोठे में जाता है। फिर हृदय से यह फेंफड़ों में जाता है। वहाँ जाकर इस में से बहुतसा बाहर निकल जाता है और उस की जगह आक्सिजन गैस आ जाती है। मतलब यह, कि हृदय के दाहिने कोठे से जो खून फेंफड़ों में आता है, वह स्याही माइल होता है। उस में आक्सिजन कम और कारबोनिक एसिड गैस अधिक होती है। फिर फुफ्फुसों से हृदय के बायें कोठे में जो खून जाता है, उस की रंगत लाल होती है। उस में आक्सिजन ज़ियादा और कारबोनिक एसिड गैस कम होती है।

फेंफड़े इन दोनों गैसों के ही लेने और निकालने का काम नहीं करते, किन्तु कुछ पानी भी, भाफ के रूप में, हवा द्वारा, शरीर से बाहर करते हैं। प्रश्वास वायु में उच्छ्वास वायु की अपेक्षा भाफ अधिक होती है। भाफ के सिवा कुछ उड़ने वाले ज़हरीले पदार्थ भी वायु द्वारा बाहर निकल जाते हैं।

हिकमत के मत से फेफड़ों का वर्णन।

यूनानी हकीमों ने लिखा है, कि फेंफड़ा दिल का पंखा है और उस के अधीन है। वह शीतल हवा को दिल में पहुँचाता है। इस का रंग गुलाब के फूल जैसा होता है। इस के दो भाग होते हैं:—(१) दाहिना, और (२) बायाँ। फेंफड़े के लिये खाँसी वैसी ही है, जैसी कि दिमाग़ के लिये छींक। दिमाग़ छींकों से अपनी तकलीफ दूर करता है और फेंफड़ा खाँसी से अपनी तकलीफ दूर करता है। हकीमों का कहना है कि, फेंफड़ों और उन से सम्बन्ध रखने वाले श्वास यंत्रों में जब कुछ ख़राबी होती है, तभी प्रायः खाँसी होती है।

इस बात को न भूलना चाहिये कि, हमारे गले में दो नालियाँ हैं:—(१) श्वास-नली, और (२) अन्न-प्रणाली। श्वास

नली से हम श्वास लेते हैं और अन्न प्रणाली से अन्न को पेट में पहुंचाते हैं। यह समझना ग़लती है, कि जिस नली से हम साँस लेते हैं, उसी से खाया-पिया पदार्थ पेट में पहुंचाते हैं। हमारे शरीर में हवा और राह से जाती है; और भोजन-पान के पदार्थ दूसरी राह से। जब कोई आदमी जल्दी-जल्दी खाता है, तब अक्सर खाये-पिये पदार्थ अपनी अन्न की नली में न जाकर, श्वास-नली में चले जाते हैं। श्वास-नली में उनके जाने से खाँसी पैदा हो जाती है। इसी तरह जब श्वास-नली में धूल, गर्द या धूआँ प्रभृति चले जाते हैं, तब भी खाँसी हो जाती है; क्योंकि फेंफड़ा उनके निकालने के लिए खाँसी चलाता है। यह बात वैद्यक और हिकमत दोनों में लिखी है। पीछे हम जो खाँसी होने के कारण लिख आये हैं, उन पर ध्यान देने से यह बात साफ़ तौर से समझ में आ जायगी।

सामान्य निरूपण ।

प्रतिश्याय रोग के निदान दो तरह के होते हैं:—

(१) सद्योजनक—तत्काल पैदा करनेवाले ।

(२) चयादिक्रम जनक—संचयादि के क्रम से पैदा करनेवाले ।

सद्योजनक यानी तत्काल प्रतिश्याय—जुकाम पैदा करने वाले निदान-कारण, प्रवल या ज़ोरावर होने से, क्रम की राह नहीं देखते । वे हतुओं के ज़ोर से, समय आये बिना ही, कुपित होकर रोग कर देते हैं ।

चय आदि क्रमजनक निदान में यह क्रम है:—(१) निदान यानी कारणों से वातादि दोषों का संचय होता है । (२) संचय से दोषों का कोप होता है, (३) कोप से फैलाव होता है, (४) फैलाव से स्थान-संश्रय होता है, यानी दोष उन-उन ठिकानों में आते हैं । (५) स्थान-संश्रय से रोग दीखते हैं । (६) शेष में, दीखने पर भेद होता है ।

सद्योजनक निदानपूर्वक सम्प्राप्ति ।

तत्काल प्रतिश्याय पैदा करनेवाले नीचे लिखे कारण हैं:—

(१) मल मूत्रादि वेग रोकना ।

(२) अजीर्ण या बदहज़मी होना ।

(३) नाक में रज या धूल का जाना ।

(४) बहुत जियादा बोलना।

(५) बहुत ही क्रोध करना।

(६) ऋतुचर्या के विपरीत काम करना।

(७) धूएँ वगैरः से सिर को तकलीफ पहुँचना।

(८) रात में जागना।

(९) बहुत जियादा सोना।

(१०) बहुत जियादा जल में रहना या जल सेवन करना।

(११) सर्दी खाने के काम करना।

(१२) तुषार सेवन करना।

(१३) अत्यन्त मैथुन करना।

(१४) अत्यन्त रोना।

(१५) शोक या रंज करना।

ऊपर लिखे १५ कारणों से मस्तक में एक साथ कफ जम जाता है, तब बढ़ा हुआ वायु प्रतिश्याय—जुकाम पैदा करता है।

शास्त्र में लिखा है:—

वेग संधारणाज्जीर्ण शोक मैथुन जागरैः।
स्वयं मूर्द्धिगदादोषाः प्रतिश्यायकरास्ताः॥

मलमूत्रादि वेगों के रोकने, अजीर्ण, शोक, मैथुन और रात में जागने से वातादि दोष कुपित होते हैं। फिर वे मस्तक में ठहर कर प्रतिश्याय—जुकाम—पैदा करते हैं।

चयादिक्रमजनक निदानपूर्वक सम्प्राप्ति।

वात, पित्त, कफ अलग-अलग, अथवा तीनों मिले हुए या खून मस्तक में संचय होकर—जमा होकर, जब अपने-अपने कुपित करने वाले कारणों से कुपित होते हैं, तब प्रतिश्याय रोग करते हैं

पूर्व्व रूप।

प्रतिश्याय होने से पहले नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) छींक बहुत आती हैं।

(२) सिर में बोझा सा मालूम होता है ।

(३) अंग जकड़ जाते हैं ।

(४) शरीर के अंग टूटने लगते हैं ।

(५) रोंगटे खड़े होते हैं।

(६) नाक से धूएँ के जैसी हवा निकलती है।

(७) तालू फट जाता है।

(८) नाक और मुँह से स्राव होता है ; यानी पतला सा पदार्थ गिरता है ।

मतलब यह है कि, जब प्रतिश्याय होने वाला होता है, तब ऊपर के उपद्रव अथवा ऐसे ही और उपद्रव पहले से होने लगते हैं। इन के नज़र आते ही जान लेना चाहिये कि "जुकाम" होगा ।

प्रतिश्याय के भेद।

प्रतिश्याय कई तरह के होते हैं:—

(१) वातज प्रतिश्याय । (२) पित्तज प्रतिश्याय ।

(३) सन्निपातज प्रतिश्याय । (४) कफज प्रतिश्याय ।

(५) दुष्ट प्रतिश्याय । (६) रक्तज प्रतिश्याय ।

बायु जनित प्रतिश्याय के लक्षण ।

वायु के प्रतिश्याय में नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं:—

(१) नाक रुक जाती है ।

(२) नाक से पतला मवाद गिरता है ।

(३) गला, तालू और होंठ सूखते हैं ।

(४) कनपटियों में पीड़ा होती है।

(५) स्वर नष्ट हो जाता है या गला बैठ जाता है ।

पित्त जनित प्रतिश्याय के लक्षण

पित्त के प्रतिश्याय में नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) नाक से गरम और ज़रा पीला मवाद आता है ।

(२) शरीर दुबला और गरम हो जाता है तथा रंग पीला या मटियासा हो जाता है।

(३) प्यास बहुत लगती है ।

(४) नाक से धूएँ वाली आग सी निकलती जान पड़ती है ।

कफजनितप्रतिश्याय के लक्षण ।

कफ के प्रतिश्याय में नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) नाक से सफेद शीतल कफ ज़ियादा निकलता है ।

(२) शरीर का रंग सफेद हो जाता है ।

(३) नेत्र सुन्न हो जाते हैं ।

(४) सिर भारी हो जाता है ।

(५) तालू, होंठ और माथे में खुजली बहुत होती है ।

त्रिदोषज प्रतिश्याय के लक्षण ।

यह प्रतिश्याय पक कर अथवा बिना पके ही अचानक बन्द हो जाता है और फिर होता है और बन्द हो जाता है । इसके सिवाय वात, पित्त और कफ तीनों के लक्षण भी नज़र आते हैं । यद्यपि शास्त्र में तीनों दोषों के लक्षणों की बात लिखी नहीं हैं, तथापि लक्षण होते ज़रूर हैं ।

दुष्ट प्रतिश्याय के लक्षण ।

जिस प्रतिश्याय में नीचे लिखे हुए लक्षण हों, उसे दुष्ट प्रतिश्याय समझना चाहिये:—

(१) नाक कभी तर हो जाय और कभी सूख जाय

(२) नाक कभी बन्द हो जाय और कभी खुल जाय

(३) नाक से बदबूदार साँस निकले ।

(४) नाक को खुशबू या बदबू न मालूम हो ।

नोट—नाक एक ही समय में गीली, सूखी और बन्द नहीं होती । जब जिस दोष की ज़ियादती होती है, तब उसी के अनुसार लक्षण होते हैं । यह प्रतिश्याय कष्ट-साध्य भी होता है और असाध्य भी ।

रुधिर के प्रतिश्याय के लक्षण ।

खून के कारण से जो प्रतिश्याय होता है, उसमें नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) नाक से खून आता है।

(२) नाक से गरम और पीला मवाद भी आता है।

(३) शरीर दुबला, गरम और पीलासा हो जाता है।

(४) प्यास बहुत लगती है।

(५) नाक से धूएँ की सी आग निकलती जान पड़ती है।

(६) आँखें लाल हो जाती हैं।

(७) छाती में चोट लगने का सा दर्द होता है।

(८) मुँह से बदबूदार साँस निकलता है।

(९) नाक को बदबू-खुशबू का ज्ञान नहीं रहता।

सभी प्रतिश्याय उचित चिकित्सा के अभाव में, कालान्तर में, असाध्य।

जो मनुष्य प्रतिश्याय या जुकाम की परवा नहीं करता, इलाज नहीं करता या कराता, उसका प्रतिश्याय, समय पाकर, असाध्य हो जाता है; अतः इसका इलाज फौरन करना चाहिये। कहा है:—

सर्व एव प्रतिश्याया नरस्याप्रतिकारिणः।
दुष्टतां यान्ति कालेन तदा दुसाध्या भवन्ति च॥

इलाज न कराने वालों के सभी प्रतिश्याय कालान्तर में दुष्ट हो जाते हैं। फिर दुष्ट होने से असाध्य हो जाते हैं—आराम नहीं होते।

प्रतिश्यायों में कीड़े।

प्रतिश्यायों में कफ के कारण से सफेद, चिकने और बारीक-बारीक कीड़े होते हैं। ऐसे प्रतिश्याय वालों का मस्तक भीतर से कफ से लिपा रहता है। माथा भारी, स्तब्ध और शीतल होता है। आँखों के कोयों और मुँह पर सूजन होती है। ये कफज शिरो-रोग के लक्षण हैं।

प्रतिश्याय के बढने से और रोग।

प्रतिश्याय के बहुत ही ज़ियादा बढ़ जाने से नीचे लिखे भयंकर रोग हो जाते हैं:—

(१) आदमी बहरा हो जाता है।

(२) अन्धा हो जाता है।

(३) गन्ध सूँघने की ताक़त जाती रहती है।

(४) नेत्रों में भयंकर रोग हो जाते हैं।

(५) शोष हो जाता है।

(६) अग्नि मन्द हो जाती है।

(७) खाँसी हो जाती है।

नोट (१)—"नेत्रों में भयंकर रोग होना" लिखने से अन्धापन आ जाता है। फिर भी अन्धा होना अलग लिखा है। इसका कारण यह है, कि अन्धापन ज़ियादा होता है।

नोट (२)—जुकाम के इलाज में आलस्य करना बड़ी ग़लती है। हकीम अकबर अली लिखते हैं:—अगर जुकाम जल्दी नहीं पकता और आराम नहीं होता, तो नीचे लिखी बीमारियाँ पैदा हो जाती हैं:—

(१) आँख, कान, नाक के रोग।

(२) खुनाक नाम की सूजन।

(३) हलक़ और आमाशय में दर्द।

(४) आँतें छिलने का रोग।

(५) पसली की सूजन।

(६) पसली के पर्दे की सूजन।

(७) कुलंज रोग।

(८) सकूते का रोग।

(९) अपस्मार या मिर्गी।

(१०) दर्द सिर या आधासीसी।

(११) मालीखोलिया।

(१२) सरसाम।

(१३) गहरी नींद का रोग।

(१४) मानिया—एक तरह का उन्माद रोग।

(१५) सिर घूमना।
(१६) आँखों के सामने अंधेरा होना।

जिस अंग पर नजला गिरता है, उसी में रोग हो जाता है। दिमाग की पोल और छेदों में मल रुकने से सकते का रोग हो सकता है। अगर मवाद गरम होता है, तो मृगी रोग पैदा कर देता है। अगर दिमाग की रगों में मवाद होता है, पर मिकदार में थोड़ा होता है; तो सिर का दर्द या आधाशीशी हो जाती है। इसी तरह और रोग हो जाते हैं, अतः जब तक दिमाग में मवाद हो, उसे बन्द न करना चाहिये और यदि बन्द हो जाय तो खोल देना चाहिये।

कच्चे पीनस के लक्षण

अगर पीनस रोग कच्चा होता है, तो नीचे लिखे लक्षण होते हैं:—

(१) सिर में भारीपन हो।
(२) अरुचि हो।
(३) नाक से पतला मवाद गिरे।
(४) स्वर बिगड़ गया हो। गला बैठ गया हो।
(५) बारम्बार थूक आता हो।

पक्के पीनस के लक्षण !

जब पीनस पक जाता है, तब नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) कफ गाढ़ा हो या नाक के छेदों में रुक जाय।
(२) मुँह से शुद्ध शब्द निकले और स्वर शुद्ध हो।
(३) कफ का रोग स्वाभाविक हो जाय।

पके हुए प्रतिश्याय के लक्षण।

वाग्भट्ट में लिखा है—

पक्वलिंगानि तेस्वंगलाघवं क्षवथोःशमः।
श्लेष्मा सचिक्कणः पीतो ज्ञान च रसगन्धयोः।

जब प्रतिश्याय पक जाता है, तब शरीर हलका हो जाता है, छींक आना बन्द हो जाता है, चिकना-चिकना पीला कफ निकलता है और रस तथा गन्ध का ज्ञान होने लगता है।

प्रतिश्याय में याद रखने योग्य बातें ?

(१) जुकाम होने पर पहले दिन उपवास या लंघन करो।

(२) जल को खूब गरम कर के दिन-रात में थोड़ा २ पीओ। कहा है:—

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे।
आध्माने स्तिमिते कोष्ठे सद्यः शुद्धौ नवज्वरे।
अरुचि ग्रहणी गुल्मश्वास कासेषु विद्रधौ।
हिक्कायां स्नेहपाने च शीताम्बु परिवर्जयेत्॥

पसली के दर्द, प्रतिश्याय-जुकाम, वात-सम्बन्धी रोग, गलग्रह, अफारा, दस्त-कब्ज, जुलाब लेने, नया ज्वर, अरुचि, संग्रहणी, गोला, श्वास, खाँसी, विद्रधि और हिचकी रोग में तथा तेल आदि पीने पर शीतल जल पीना मना है। और भी :—

अरोचके प्रतिश्याये मन्दाग्नौ श्वयथौ क्षये।
मुखप्रसेके जठरे कुष्ठे नेत्रामये ज्वरे।
व्रणे च मधुमेहे च पिबेत्पानीयमल्पकम्॥

अरुचि, प्रतिश्याय-जुकाम, सूजन, क्षय, मुँह से जल बहना, पेट के रोग, आँखों के रोग, ज्वर, व्रण और मधुमेह में थोड़ा जल पीना चाहिये।

(३) स्नान या मुँह हाथ धोने के लिए गरम जल काम में लाओ। यह हकीमी मत है। वाग्भट महाशय भी कहते हैं :—

त्यजेत्स्नानं शुचं क्रोधं भृशं शय्यां हिमं जलम।

प्रतिश्याय-रोगी को स्नान, शोक, क्रोध, अतिशय शय्या-सेवन और शीतल जल को त्याग देना चाहिये।

(४) जब शरीर खूब हल्का हो जाय, ज़ोर से भूख लगे तब भोजन करो।

(५) नया अन्न, भारी और देर में पचनेवाले पदार्थ न खाओ। दूध, दही, माठा, घी और मीठे पदार्थ नये जुकाम में हानिकारक हैं।

(६) पीनस और प्रतिश्याय प्रभृति कफप्रधान नाक के रोगों में कफनाशक पथ्य दो। कफ का उपद्रव थोड़ा सा भी हो, तो भात न दो। रोटी या इस से भी रूखे भोजन की व्यवस्था करो। पित्तप्रधान नाक के रोगों में पित्तनाशक और रक्तपित्त शान्तिकारक पथ्य दो।

(७) सब तरह के प्रतिश्यायों में बिना बाहरी हवा के घर में रहो और सिर पर मोटा कपड़ा बाँधे रहो। बाहरी सरदी से खूब बचो। कहा है:—

पीनसेषु च सर्वेषु निर्वातागारगो भवेत्।

हकीम अकबर अली साहब भी लिखते हैं—जुकाम चाहें गरम हो, तोभी सिर को ढके रक्खो। शीतल और उत्तर की हवा से बचो। प्यास का ज़ोर हो, तोभी बर्फ-मिलाया सुराही का शीतल पानी मत पीओ।

नहाना जुकाम के आरंभ में हानिकारक है। पर अगर मल पतला और थोड़ा निकले तो नहाना लाभदायक है; क्योंकि नहाने से पतला माद्दा निकल जाता और गाढ़ा रह जाता है।

जुकाम के अन्त में नहाना अधिक लाभदायक है। उस समय का नहाना पके हुए मल को पिघला कर निकाल देता है।

जिस आदमी को जुकाम ज़ियादा होता है, उसे आरोग्य रहने की दशा में नहाना और पसीने लेना लाभदायक है, क्योंकि वे रतूबतें और भाफ के परमाणु, जिनसे जुकाम और नजला पैदा होता है, पसीने द्वारा निकल जाते हैं। बिना भोजन किये नहाने के स्थान में जाना चाहिये और धीरे-धीरे शरीर ढक कर बाहर निकल आना चाहिये।

(८) सिर के बाल जल्दी-जल्दी मुंडवा डालने चाहियें तथा सिर में कंघी करनी और उसे खुजाना चाहिये। कंघी करने से रोम-छिद्र खुलते हैं और नजले का माद्दा हटता है।

(९) जुकाम में दस्त कब्ज की शिकायत प्रायः आरंभ से ही रहती है, अतः कब्ज होनेपर या पेट में भारीपन रहने पर, कोई मामूली दस्तावार दवा लेकर पेट साफ कर लेना चाहिये। अथवा ऐसी दवा लेनी चाहिये, जो दस्त को साफ करे और जुकाम को भी मिटावे। नीचे लिखा नुसख़ा दोनों काम करता है :—

सौंफ ४ माशे, मुनक्का ७ दाने, अंजीर २ दाने, गुलबनफ़शा ४ माशे, उन्नाव ५ दाने और सनाय ६ माशे—इन दवाओं को कुचल कर, पाव भर पानी में, मिट्टी की हाँड़ी में, औटाओ। जब एक छटांक पानी रह जाय, मल-छान लो और दो तोला मिश्री डालकर पी लो। इस नुसख़े से एक या दो दस्त होकर कोठा साफ होता और जुकाम भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

अगर गरम जुकाम में दस्त कराने की दरकार हो; तो गुलबनफ़शा, उन्नाव

ल्हिसौड़े, खतमी की जड़, खतमी के बीज और खिश्त—इनका जुलाब दो ।

(१०) अगर जुकाम का मवाद गले में उतरता हो, तो अनार और मसूर का काढ़ा बना कर कुल्ले करो । अगर इस से न रुके तो खशखाश के बीज और खशखाश की छाल को मसूर के काढ़े में औटा कर कुल्ले करो । यह जोरदार दवा है । इस से गले में जुकाम के मवाद का उतरना रुक जाता है ।

(११) जुकामवाले को सिर के नीचे ऊँचा तकिया न रखना चाहिये, बल्कि सिरहाना नीचा रखना चाहिये और तकिये पर मुंह झुका कर सोना चाहिये, जिससे मवाद नाक की तरफ आवे—छाती पर न गिरे ।

(१२) जुकाम के आरंभ में छींक हानि करती है, इसलिये अगर छींक आवें तो रोकने का उपाय करना चाहिये ।

नोट—छींक दिमाग के लिए वैसी है, जैसी खाँसी फेंफड़े के लिए । छींक दिमाग की खराब और तकलीफ देनेवाली चीजों को निकालती है, अतः छींक से दिमाग की रक्षा होती है । परन्तु जियादा छींक आना खराब है । "शरह अस्बाब" "नामक ग्रन्थ में लिखा है—छींकों के बारम्बार आने से नाक का खून उबलता है । बहुधा ज्वरों में और ऐसे ही रोगों में इस से ताकत कम हो जाती है ।

चार तरह के रोगियों को जियादा छींक आना बहुत खराब हैः— (१) जिसको जुकाम शुरु हुआ ही हो, (२) जिस के दिमाग का गरम होना उचित नहीं, (३) जिसकी छाती में मवाद भरा हो, और (४) जिस की नाक से खून बहुत गिरता हो । परन्तु तीन आदमियों को छींक आना मुफीद हैः— (१) जिसके सिर में थोड़े से भाफ के परमाणु या थोड़ा सा मवाद हो, (२) जिसके दिमाग में पका हुआ मवाद हो । जुकाम के अन्त में छींक आना अच्छा है । अगर मवाद गाढ़ा हो, बहुत हो और पका हुआ हो और फिर छींकें आवें, तो समझो कि दिमाग में ताकत है । मरने वाले का दिमाग कमजोर हो जाता है, इस लिये ऐसे आदमी को छींक नहीं आती । (३) औरतों के बच्चा जनने के समय भी छींक आना अच्छा है, क्योंकि छींक की सहायता से बालक और ओलनाल जल्दी निकलते हैं ।

आयुर्वेद में दो तरह की छीकें लिखी हैंः—(१) दोषजन्य, और (२) आगन्तुज । नाक की तरुण हड्डी या शृंगाटक नाम के मर्मस्थान में दूषित हुए कफ सहित वायु अधिक छींक लाता है । इसी रोग को वैद्य लोग दोषजन्य छींक

कहते हैं। जो छींकें राई आदि तेज़ पदार्थ काम में लाने से, मिर्च आदि तेज़ पदार्थों की गन्ध से, सूर्यके सामने देखने से कफ के पिघलने पर अथवा डोरे आदि से नाक के तरुण हड्डी नामक मर्मस्थल को रगड़ने या घिसने से आती है, उसे "आगन्तुज" कहते हैं।

छींक रोग केसम्बन्ध में हम "नाक के रोगों" में लिखेंगे, पर दो एक उपाय यहाँ भी लिख देते हैं:—(१) घी, मोम और गूगल को मिलाकर तमाखू की तरह धूआँ पीने से छींक आना बन्द हो जाता है। (२) सोंठ, कूट, पीपर, दाख और बेल—इनको सिल पर पानी के साथ पीसकर लुगदी कर लो। इस लुगदी के साथ तेल पकालो। इस तेल की नस्य लेने से छींक आना बन्द हो जाता है। (३) सुगन्धित गुल-रोग़न और बेद का तेल नाक में सुड़कने से छींक आना रुक जाता है। (४) मीठे पानी को औटाकर, सुहाता-सुहाता गुन-गुना सिर पर डालने से छींक आना बन्द हो जाता है।

ऊपर की दवाओं के अलावः (१) गुनगुना तेल कानों और कानों की जड़ पर मलने, (२) गरम हरीरा पीने, (३) तकिया गरम करके गुद्दी के नीचे रखने, (४) हाथ, पाँव, आँख, कान और तालू मलने, (५) बिछौने पर लेट कर करवटें बदलने, (६) चिन्ता करने, (७) काम में लग जाने, और (८) सेब सूँघने से भी छींकों का आना बन्द हो जाता है।

(१३) ज़ुकाम का बहना या निकलना ही अच्छा है। उसे गरम दवाएँ देकर बन्द करना मूर्खता से ख़ाली नहीं। बन्द कर देने से अनेक भयंकर रोग हो जाते हैं। अगर रोगी कमज़ोर हो, उसके शरीर में कफ और सर्दी ज़ियादा हो, तो पहले ही ज़ुकाम को पकाने वाली दवाएं देदो और पकने पर शिरोविरेचन नस्य देकर सिर की रुतूबत निकाल दो।

(१४) अगर ज़ुकाम में कफ के साथ पित्त का अंश ज़ियादा मिल रहा हो, सिर और नाक में गरमी ज़ियादा जान पड़ती हो, तो पितनाशक और कफ को पतला करने वाली मीठी दवाओं का काढ़ा दो अथवा मधुर औषधियों के योग से पकाया हुआ दूध दो। पित्तनाशक औषधियों के द्वारा घी पका कर उस की नस्य दो।

(१५) ज़ुकाम की पहली अवस्था में, पसीने लाने वाली दवाएं देकर शरीर के स्रोतों को साफ कर देना—ज़ुकाम का बढ़िया इलाज है। हकीमी दवाओं में "गुलबनफ़शा" पसीना लाने और ज़ुकाम नाश करने के लिए मशहूर है। आयुर्वेदीय दवाओं में "तुलसी" इस काम के लिए गुलबनफ़शा से कम नहीं है। तुलसी के

पत्तों की चाय में नमक डाल कर पीने से जुकाम, सर्दी, और सर्दी से हुआ हृदय का दर्द आराम हो जाता है । तुलसी के पत्तों की चाय में ज़रा सी मिश्री मिला कर मीठी चाय पीने से कफ-पित्त का जुकाम आराम हो जाता है ।

(१६) जुकाम के कारण से अगर शरीर में पानी का अंश ज़ियादा हो गया हो, तो उसे रूखे-सूखे पदार्थों से सोखना चाहिये । भुने चने खाने और तत्काल के भुने चने सूंघने से बहुत जल्दी लाभ होता है । अजवायन का काढ़ा पीने या पान में अजवायन खाने से भी सर्दी, जुकाम और कफ का नाश होता है । यद्यपि अजवायन अफीम की जैसी हानिकार नहीं होती, तोभी पित्त-प्रकृति या गरम मिज़ाज वालों को हानि करती है।

(१७) जुकाम में बाहरी हवा या सरदी लगने से छाती और पसलियों में दर्द, खाँसी, और बुखार आदि अनेक रोग हो जाते हैं ; अतः सरदी से बचना चाहिये । अगर छाती वग़ैरः में दर्द हो जाय, तो नारायण तेल या नमक मिला सरसों का तेल गुनगुना करके दर्द-स्थान पर लगाना चाहिये । छाती पर फलालेन बाँधनी चाहिये ।

(१८) बहुधा जुकाम से खाँसी हो जाती है । अगर ऐसा हो तो खाने की दवा के सिवा, छाती पर आक के पत्ते कड़वे तेल से चुपड़ कर और गरम करके बाँध देने चाहिएँ । मतलब यह है, छाती पर ऊपरी उपाय करने से रोगी को जल्दी सेहत होती है । पसली में दर्द हो जाय, तो "पंचकोल" का काढ़ा शहद डाल कर पिलाना चाहिये और "नारायण" तेल पसलियों पर मल कर, पुरानी रूई से सेक कर देना चाहिये । अगर "नारायण तेल" समय पर न मिले, तो सरसों का गरम-गरम तेल मल देना चाहिये।

(१९) अगर जुकाम में बुखार हो जाय, तो बुखार का मामूली इलाज करना चाहिये । विशेष प्रकार के इलाज से कोई लाभ न होगा, क्योंकि बिना जुकाम गये, ज्वर हरगिज़ न जायगा ।

(२०) अगर प्रतिश्याय में कीड़े पड़ गये हों, तो वैद्य को कृमिनाशक औषधि और नस्य से काम लेना चाहिये ।

(२१) बहुत क्या—वैद्य को पसीने दिला कर, माथे में कफ-नाशक तेल लगवा कर, नस्य देकर, ज़रा-ज़रा गरम भोजन कराकर, वमन कराकर और घी पिला कर एवं कटु और खट्टे पदार्थ देकर प्रतिश्याय का उपचार करना चाहिये । पर रोगी का बला-बल आदि देख कर, जहाँ जो उचित हो वहाँ वही करना चाहिये । जो उचित न जँचे उसे न करना चाहिये ।

प्रतिश्याय नाशक नुसखे ।

(१) बायबिडंग, सैंधानोन, हींग, गूगल, मैनशिल और वच को—समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्ण के सूंघने से प्रतिश्याय-जुकाम नाश हो जाता है।

(२) सत्तू में घी और तेल मिला कर, उसे आग पर डाल-डाल कर रोगी को धूआँ देने से प्रतिश्याय, खाँसी और हिचकी ये सब आराम हो जाते हैं।

(३) काले जीरे का चूर्ण सूँघने से प्रतिश्याय रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(४) दालचीनी, तेजपात, इलायची और नागकेशर—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्ण के सूंघने से प्रतिश्याय जाता रहता है। परीक्षित है।

(५) दालचीनी, तेजपात, इलायची और नागकेशर आदि खुशबूदार चीज़ों का धूआँ पीने से प्रतिश्याय जाता रहता है।

(६) भाँग के पत्तों को पुटपाक-विधि से पका कर, उनको तेल और सेंधेनोन के साथ खाने से या उनके खाने की आदत डालने से सब तरह के जुकाम आराम हो जाते हैं।

नोट—भांग के गीले या सूखे पत्ते लेकर, सिल पर महीन पीस कर, गोला बना लो। गोले पर बड़ के या जामुन के पत्ते लपेट कर डोरा बाँध दो। फिर ऊपर से एक-एक अंगुल ऊंची मिट्टी चढ़ा दो और धूप में सुखा लो। सूखने पर उस गोले को जंगली कण्डों की आग में पकाओ। जब गोला लाल सुर्ख हो जाय

(१६) भोजन के बाद ही, अच्छी तरह उबाले हुए, गरमा-गरम उड़दों में नमक मिला कर खाने से सब तरह के पुराने प्रतिश्याय नाश हो जाते हैं।

(१७) दही वगैरः खट्टे पदार्थों से युक्त चिकने भोजन में, गुड़ और छोटी पीपर मिला कर खाने से नया प्रतिश्याय नाश हो जाता और विशेष कर कफ पक जाता है।

(१८) प्रतिश्याय रोग में पीपर के साथ गुड़ अथवा दही के साथ गुड़ खाना चाहिये। क्षय रोग में मदिरा, घी, पीपर और शहद इन को सेवन करना चाहिये। राजयक्ष्मा में 'शिलाजीत' सेवन करना चाहिये। कहा है:—

प्रतिश्याये तथा कृष्णा सगुडा सगुडं दधि।
मद्यं सर्पिः कणा क्षौद्रं राजरोगे शिलाजतु॥

(१६) कलौंजी कपड़े में बाँध कर सूंघने से प्रतिश्याय नाश हो जाता है।

(२०) गुड़ और काली मिर्च मिला कर दही पीने से महा कठिन पीनस रोग और प्रतिश्याय नाश हो जाते हैं। अगर घी मिला कर गेहूँ का आटा रोज़-रोज़ खाया जाय, तो ये पीनसादि रोग ठहर ही न सकें।

(२१) अगर नाक भीतर से सूख गई हो, तो मिश्री मिला कर दूध पीना चाहिये। साथ ही, बच का चूर्ण पोटली में बाँध कर सूँघना भी चाहिये।

(२२) पान के रस की बूँदें नाक में टपकाने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है। अनार के फूल का रस सूँघने से अथवा दूबका रस सूँघने से या गुलाब जल सूँघने से नाक से खून आना बन्द हो जाता है।

(२२) सोंठ, छोटी पीपर और काली मिर्च—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर जितना चूर्ण हो, उससे चौगुना "गुड़" लेकर उसमें मिला लो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के खाने से सिर का भारीपन, कफ और प्रतिश्याय ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२३) काली मिर्च और देवदाली का फल लेकर महीन पीस लो और सूँघो। इस उपाय से भी सिर का भारीपन, कफ और जुकाम आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२४) गरम दूध में १०।१५ कालीमिर्च और मिश्री पीसकर मिला दो और पीओ। इससे जुकाम अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२५) कलौंजी की नस्य सूंघने, बकरी का मांस खाने, कय करने, जुलाब लेने, घी पीने और चाय पीने से जुकाम आराम हो जाता है। ये सब उपाय परीक्षित हैं।

(२६) अदरख का स्वरस ६ माशे और शहद ६ माशे मिला कर चाटने से जुकाम निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२७) बड़ी हरड़ के बक्कलों को पीस-छान कर चूर्ण बना लो। उस में से ६ माशे चूर्ण बराबर के शहद में मिला कर चाटने से प्रतिश्याय या जुकाम अवश्य आराम हो जाता है। बड़ा उत्तम नुसख़ा है। परीक्षित है।

(२८) खट्टा और चिकने दही का भोजन करने से नया जुकाम पक जाता है अथवा नया जुकाम आराम हो जाता और कफ पक जाता है। नये जुकाम में इमली के पत्तों के साथ पकाया हुआ यूष देना हितकारी है। जब कफ पक जावे, तब धीरे-धीरे रेचन नस्य देकर सिर को साफ़ कर देना चाहिये।

(२९) "चिकित्साचन्द्रोदय" चौथे भाग के पृष्ठ २८६ में लिखा हुआ

"लक्ष्मी विलास रस" शहद और पान के रस के साथ खाने से प्रतिश्याय और पीनस आदि रोग नाश हो जाते हैं। कफ के रोगों में शहद और पान के रस का अनुपान उत्तम है। एक गोली खाकर, ऊपर से ३ माशे शहद और १ माशे पान का रस पी लो या शहद और पान के रस में गोली को पीस कर मिला लो और चाट जाओ। जुकाम की यह सर्वश्रेष्ठ दवा है।

जुकाम और नजले पर यूनानी नुसखे।

(१) शर्बत जूफा और गुलाब पीने से सरदी से हुआ जुकाम या नजला आराम हो जाता है।

नोट—जो मवाद मस्तक से नाक की ओर निकलता है, उसे "जुकाम" कहते हैं; पर यदि वह मवाद कण्ठ की ओर गिरता है, तो उसे "नजला" कहते हैं। अगर उस मवाद के निकलने में छीलन, पिलाई और नेत्रों में जलन मालूम हो, तो जुकाम को गरमी से हुआ समझो। अगर आँखों में जलन, छीलन और पीलापन न हो, तो सरदी से समझो।

(२) पोस्त १ तोले और सोंठ एक तोले—इन का काढ़ा पीने से जुकाम और नजला आराम हो जाते हैं; बशर्त्ते कि सरदी से हुए हों।

(३) गेहूँ की चोकर २ तोले और गुलबनफ़शा एक तोले—इन दोनों का काढ़ा पीने से भी जुकाम जाता रहता है।

(४) शर्बत बनफ़शा दो तोले पिलाने से अथवा शर्बत ख़शख़ाश दो तोले और शर्बत नीलोफर एक तोले मिला कर पिलाने से गरमी का जुकाम और नजला आराम हो जाते हैं।

(५) एक कपड़े में कपूर बाँध कर बारम्बार सूँघने से भी जुकाम नाश हो जाता है।

(६) "दियाकूजा" भी जुकाम में बहुत फायदा करता है। यह जुकाम और नजले के भीतरी कारणों को भी शान्त करता तथा पेट को साफ करके दिमाग़ में ताक़त लाता है।

(७) अगर नाक के भीतर ज़ख्म हो और उस से बदबू आती हो, तो सौ बार के धोये मक्खन में "कपूर" मिला कर दिन में चार छ बार नस्य दो। इस से घाव आराम होगा और दुर्गन्ध जाती रहेगी। परीक्षित है।

(८) गुलरोगन में "कपूर" मिला कर नाक में डालने से भी नाक के घाव मय बदबू के नाश हो जाते हैं।

(९) अगर नाक से कीड़े गिरते हों, तो एक माशे एलुवा पीस कर, उस में तमाखू के पत्तों का रस मिला कर नाक में छोड़ो। इस से कीड़े नाश हो जायगे।

नोट—अगर नाक में घाव होते हैं तो बदबू आती है और अगर घाव पुराने हो जाते हैं, तो उन में कीड़े भी पड़ जाते हैं। देवदाली के स्वरस की आठ दस बूंद एक ही दिन नाक में टपकाने से सारा मवाद और कीड़े निकल जाते हैं।

(१०) झाऊकी पत्तियों के बफारे से जुकाम मिट जाता है।

(११) कूट का बफारा भी जुकाम को नाश करता है।

(१२) कोरे काग़ज़ का धूआँ नाक में चढ़ाने से भी जुकाम आराम हो जाता है।

(१३) शक्कर और चन्दरस का धूआँ गरम जुकाम को फायदा करता है।

(१४) सात काली मिर्च थोड़े से पानी के साथ निगल लेने से जुकाम आराम हो जाता है।

(१५) मुहम्मद ज़करियाने "बरुलसाअत" नामक पुस्तक में लिखा हैं, जुकाम वाले के सिर पर गरम जल के तरड़े देने से भेजे में गरमी पहुँचती है और रोगी को आनन्द आ जाता है।

(१६) जुकाम वाले के सिर पर सेका हुआ कपड़ा रखने से भेजे में गरमी पहुँच कर आनन्द हो जाता है।

(१७) पुरानी रूई की बत्ती नाक में रखने से नजला नाक की तरफ गिरने लगता है और नजले की वजह से हुआ दर्द-सिर आराम हो जाता है।

(१८) समन्दर फल की मींगी औरत के दूध में पीस कर, नाक के छेदों में टपकाने से नजला आराम होता और भेजा मवाद से साफ हो जाता है।

(१६) भुनी हुई कलौंजी २ माशे, नौसादर २ माशे और सोंठ ३ माशे—इन को पीस कर एक कपड़े में रख लो और पोटली सी बना कर सूंघो। इस से जुकाम आराम हो जाता है।

नोट—कोई-कोई इस में 'सिरका' भी मिलाते हैं।

(२०) इस्पन्द को थोड़े से सिरके में भिगो कर भूँज लो और एक कपड़े में ढीला-ढीला बाँध कर सूँघो। इस से जुकाम आराम होगा और सुद्दा खुलेगा।

(२१) कलौंजी को महीन पीस कर और गुल रौग़न में मिला कर सूँघो। इस से भी जुकाम आराम हो जाता है।

(२२) मुरमक्की, एलुआ, बबूल का गोंद, निशास्ता, गेरू, और छालिया तीन-तीन माशे, और अफीम १॥ माशे लेकर कूट पीस और छान लो। फिर दो काग़ज़ के टुकड़ों में सूई से छेद कर लो और उन पर इस पिसी-छनी दवा को मल दो। फिर उन दोनों काग़ज़ों को दोनों कनपटियों पर लगा दो। इस से नजले में बड़ा फायदा होता है।

(२३) अगर नजला बन्द हो गया हो और सिर में दर्द होता हो, तो हरड़ के बीज ६ माशे, सफेद चिरमिटी की मींगी ४ माशे, काली मिर्च २ माशे और नौसादर १ माशे—इन को कूट-पीस और छान कर

रख लो। इस की थोड़ी सी नास लेने से ही पानी बहेगा। यह बहुत तेज़ नस्य है।

(२४) सिरस के बीजों को महीन पीस-छान कर नास लो। इस से नज़ले में अवश्य लाभ होगा। अगर नाक से बदबू आती हो, तो हरे तूम्बे का एक बूँद रस नाक में टपकाओ। अगर हरा तूम्बा न मिले, तो सूखे तूम्बे को पानी में भिगो कर, रात को ओस में रख दो। सवेरे ही उस का रस निकाल कर एक बूँद नाक में टपका दो।

नोट—अगर नाक की बदबू भेजे के दोष से हो, तो ब्रह्माण्ड को साफ करो और यदि नाक के घाव के कारण से हो तो घाव पर मल्हम लगाओ।

(२५) गधे का पेशाब नाक में टपकाने से भी नाक की बदबू नाश हो जाती है।

(२६) लौंग पीस कर तालू पर लगाने से जुकाम और सरदी का नजला नाश हो जाता है।

(२७) अजवाइन ३ माशे ६ रत्ती, काहू के बीज ३ माशे ६ रत्ती, और पोस्ता १ माशे ७ रत्ती, इन सबको पीस कर मूंग-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के मुख में रखने से नजला नाश हो जाता है।

(२८) जदवार ख़ताई १५ माशे, अजवाइन १८ माशे ६ रत्ती, शुद्ध अफीम २२ माशे ४ रत्ती, बबूल का गोंद ७ माशे ४ रत्ती, कतीरा ७ माशे ४ रत्ती, मुलहटी ७ माशे ४ रत्ती, काली मिर्च ७ माशे ४ रत्ती, इलायची के बीज ७ माशे ४ रत्ती, नरकचूर ८ माशे, नागर मोथा ८ माशे, बालछड़ ८ माशे, तेजपात ८ माशे, कबाबा ८ माशे, खोलञ्जान ८ माशे, पीपर ८ माशे, अजवाइन ८ माशे और इस्पन्द ८ माशे, मुरमक्की १५ रत्ती और अकरकरा १५ रत्ती—सब को पीस छान कर चने-समान गोलियाँ बना लो। एक गोली नित्य खाने से नजला और जुकाम नाश हो जाते हैं तथा भूख बढ़ती है।

(२९) ख़शख़ाश के पोस्त २५ नग पानी में भिगो कर पानी

छान लो और आध सेर चीनी की चाशनी उसी पानी के साथ बना लो। जब चाशनी गाढ़ी होने लगे, उस में १८ माशे ६ रत्ती सफेद ख़शख़ाश का दूध और इतना ही ईसबगोल का लुआब डाल दो। जब उतारने लगो, बबूल का गोंद १६ माशे, ख़तमी के बीज़ १६ माशे, निशास्ता १६ माशे और छिली हुई मुलहटी १६ माशे—इन सबको पीस-छान कर मिला दो। इसका नाम "ख़मीरा ख़शख़ाश" है। यह जुकाम के लिए बहुत ही अच्छा है।

(३०) ख़शख़ाश के पोस्ते बीजों समेत ६ तोले ८ माशे लेकर पानी में भिगो दो। सवेरे ही पानी मलकर छान लो। फिर इस पानी में मिश्री १६ तोले ८ माशे मिलाकर चाशनी कर लो। जब गाढ़ी हो जाय, उतार लो। मात्रा ३ तोले ४ माशे की है। एक-एक मात्रा खाकर पानी पीने से नजले का छाती पर गिरना बन्द हो जाता है।

(३१) कालीमिर्च का चूर्ण, हल्दी का चूर्ण और कालेनोन का चूर्ण—ये तीनों दवाएँ बराबर-बराबर ले कर पाव भर पानी में पकाओ। जब आध पाव पानी रह जाय, मल-छान कर गरमागर्म पीलो। इस काढ़े से नया जुकाम, सर्दी और जुकाम से हुआ सिर का दर्द अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३२) भुने हुए चने जुकाम, सरदी, कफ और शरीर के क्लेद को नष्ट करते हैं। तत्काल के भुने हुए गर्मागर्म चने सूंघने से जुकाम और सिर दर्द में विशेष लाभ होता है। इन्हीं गर्म चनों को पोटली में बाँध कर छाती सेकने से कफ जमने से हुआ छाती का दर्द मिट जाता है। परीक्षित है।

(३३) कपूर और फिटकरी, समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसके सूंघने से जुकाम के कारण से हुआ सिर का दर्द,

सिर का भारीपन आदि रोग नाश हो जाते हैं। इस नस्य से गर्दन के ऊपर की श्लेष्मधरा कलाओं में पहले कुछ व्यग्रता होती है और फिर शान्ति आ जाती है। परीक्षित है।

(३४) गुलबनफ़शा ६ माशे, बताशे ५ माशे, अदरख ४ माशे और कालीमिर्च ४ रत्ती—इन सब को पाव भर पानी में पकाओ। जब आधा पानी रहे, मल छान और कुछ शीतल करके पीलो। इस नुसखे से जुकाम में बड़ा लाभ होता है। परीक्षित है।

(३५) सौंफ ४ माशे, मुनक्का बीज़ निकाले हुए ७ दाने, अञ्जीर २ दाने, गुलबनफ़शा ४ माशे, बीजहीन उन्नाव ५ दाने और सनाय की पत्ती ६ माशे—इन सब को पाव-भर पानी में पकाओ। जब छटाँक-भर जल रह जाय, उतार कर २ तोले मिश्री डाल दो और छान कर पीलो। इस से दस्त साफ होकर जुकाम नाश हो जाता है। जिनको जुकाम के साथ दस्तक़ब्ज की शिकायत हो, वे इसी नुसखे को सेवन करें। भरोसा है, उनको खूब तारीफ करनी पड़ेगी।

नोट—अगर किसी का कोठा नर्म हो, तो सनाय को कम कर देना चाहिये। अगर कड़ा हो, तो सनाय, मुनक्के, उन्नाव और अञ्जीर अनुमान से बढ़ा देने चाहियें।

(३६) गुलबनशफ़ा ६ माशे और गावज़ुबाँ ६ माशे–दोनों को आध पाव पानी में पकाओ। जब छटाँक-भर जल रह जाय, उस में १ तोले मिश्री डाल कर मल-छान लो और गरमागर्म पी लो। इस तरह, दिन में दो तीन बार पीने से ४ दिन में जुकाम बह कर निकल जाता है।

नोट—जुकाम का बह जाना ही अच्छा है। उसे गरम दवाओं से बन्द करना मूर्खता है। अगर रोगी के शरीर में कफ और सर्दी अधिक हो और रोगी कमज़ोर हो, तो पहले से ही जुकाम को पकाने वाली दवाएँ दो। मवाद पक जाने पर, शिरोविचन—सिर साफ करने वाली नस्यें देकर मवाद को निकाल दो। जब जुकाम को बहाना हो, ऊपर का नुसखा दो। परीक्षित है।

(३७) गुलबनफ़शा ४ माशे, गावजुबाँ ४ माशे, छिली मुलेठी ४ माशे, लिसौड़े ४ माशे और बिना बीज के मुनक्के ७ दाने—इन सब को आध पाव पानी में पकाओ। जब छटाँक-भर पानी रह जाय, १ तोले मिश्री डाल कर मल-छान लो और पी जाओ। इस काढ़े से सब तरह का जुकाम आराम हो जाता है। इस नुसखे में भी नं० ३६ की तरह जुकाम को बहाने की ताक़त है। परीक्षित है।

(३८) २ तोले अडूसे को पाव भर पानी में औटाओ; जब छटाँक भर पानी रह जाय, मल कर छान लो। शीतल होने पर ४ माशे मिश्री और २ माशे शहद मिला कर पीने से साधारण नया जुकाम जल्दी ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३९) कालीमिर्चों का काढ़ा पीने से कफ की अधिकता वाला नया जुकाम आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४०) काली मिर्च, छोटी, पीपर, पीपरामूल और काकड़ासिंगी सब को २ तोले लेकर, पाव भर पानी में औटाओ; चौथाई पानी रहने पर मल-छान लो और १ तोले मिश्री मिलाकर पी लो। इस नुसखे से भी कफ की अधिकता वाला जुकाम और उसके उपद्रव नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४१) त्रिकुटा और त्रिफला—दोनों को समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस में से ३ से ६ माशे तक चूर्ण "शहत" में मिला कर चाटने से कफ की अधिकतावाला जुकाम नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(४२) काली मिर्च, मुनक्का, मिश्री और मुलेठी इन सब को एकत्र पीस कर, एक-एक माशे की गोलियाँ बना लो। दिन-भर में चार गोली नित्य खाने से कच्चा-पक्का सब तरह का जुकाम और खाँसी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४३) तुलसी के थोड़े से पत्तों को, चाय की तरह, गरम जल में डालकर पका लो और अन्दाज़ का नमक डाल कर पी लो। इस से पसीने आकर जुकाम, सर्दी और सर्दी से हुई हृदय की वेदना—ये सब आराम होते हैं।

नोट—जुकाम की पहली अवस्था में, तुलसी का काढ़ा या गुलबनफ़शादि का पिलाना सब से अच्छा है; क्योंकि ये दोनों तरह के काढ़े पसीने लाकर शरीर के छेदों को साफ कर देते हैं।

(४४) तुलसी के पत्तों का काढ़ा बनाकर और उस में ज़रासी "मिश्री" डाल कर पीने से कफ-पित्त या सर्द-गरमी का जुकाम और सिर दर्द नाश हो जाता है।

नोट—अगर जुकाम सर्दी से ही हो, तो तुलसी के पत्तों के काढ़े में "नमक" डालो। अगर सरदी के साथ गरमी भी हो; यानी सरदी-गरमी से जुकाम हुआ हो, तो नमक न डाल कर "मिश्री" मिला दो।

(४५) शुद्ध बच्छनाभ विष, कालीमिर्च और बायबिडंग—एक-एक माशे लो और पीस-छान लो। फिर इस चूर्ण में ४ रत्ती "रससिन्दूर" मिला दो और खरल कर के रत्ती-रत्ती-भर की गोलियाँ बना लो। दिन-भर में दो या तीन गोली खाने और ऊपर से गरम जल पीने से सर्दी, कफ, खाँसी और ज्वरादि जुकाम के सब उपद्रव निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

नोट—ये गोलियां कफाधिक प्रतिश्याय, कफ, सर्दी और कफ की खाँसी में ही देनी चाहियें; गरमी के जुकाम में नहीं। बच्छनाभ विष जिसे मीठा विष और अंगरेजी में एकोनाइट कहते हैं, पसीना लानेवाली और कफ, सर्दी और दिल की कमज़ोरी को नाश करनेवाली है। जुकाम, खाँसी, कफ और सरदी के रोगों में डाक्टर लोग बच्छनाग विष या एकोनाइट का व्यवहार अधिक करते हैं।

(४६) जिनको अकसर जुकाम होता रहता है, वे "अजवायन" का काढ़ा बना कर पीते हैं अथवा "अजवायन" को पान में रख कर खाते हैं। सर्दी, ज़ुकाम और कफ के नाश करने को अजवायन उत्तम

चीज़ है, पर गरम मिज़ाजवालों को अच्छी नहीं है। जिनका मिज़ाज सर्द हो और जिन्हें सर्दी या कफ का जुकाम हो, उन्हें अजवायन सेवन करना उत्तम है।

(४७) अदरख को दूध में पकाकर और मिश्री मिला कर, गरमा-गरम पीने से जुकाम, सर्दी और इनकी वजह से हुआ सिर का दर्द आराम हो जाता है।

(४८) कटेरी का काढ़ा बना कर और मिश्री मिला कर गरमा-गर्म पीने से पुराना जुकाम अवश्य आराम हो जाता है। नये जुकाम में इसे न देना चाहिये।

नोट—निर्गुण्डी का काढ़ा, मिश्री मिला कर, गरमागरम पीने से भी पुराना जुकाम नाश हो जाता है।

(४९) अदरख के रस को ज़रा गरम करके और शहद मिला कर चाटने से जुकाम नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(५०) अदरख को चाय की तरह, जल में पका कर और दूध-चीनी मिलाकर पीने से सर्दी, खाँसी और जुकाम आदि रोग दूर होते हैं।

नोट—अदरख से बहुत रोग नाश होते हैं। हम चन्द रोगों के नाश करने की तरकीबें नीचे लिखते हैं:—

(१) अदरखका टुकड़ा दाढ़ के नीचे रखने से दाढ़ का रोग चला जाता है।

(२) अदरख का रस गरम करके कान में डालने से कान का दर्द जाता है।

(३) अदरख के रस में पुराना गुड़ मिलाकर खाने से सारे बदन की सूजन नाश होती है।

(४) अदरख के रस की २।३ बूँदें नेत्रों में डालने से वात-कफ-सम्बन्धी नेत्र-पीड़ा नाश होती है।

(५) अदरख के रस में अजवायन को भिगो और मसलकर सुखा लेने और समय पर खाने से तत्काल पेट का दर्द आराम होता है।

(६) अदरख का रस और तिली का तेल एक साथ पकाकर, उस तेल की मालिश करने से सन्धिवात पीड़ा या गठिया मिटती है ।

(७) अदरख को जंभीरी नीबू के रस में डाल कर और नमक मिलाकर खाने से अजीर्ण और अरुचि नाश होती है ।

(८) अदरख को घी में भूनकर और ज़रा सा नमक मिलाकर खाने से अपान-वायु का रुकना और पेट का फूलना नाश होता है ।

(९) अदरख के रस में शहद मिलाकर चाटने से कफज खाँसी, श्वास और सर्दी का जुकाम ये नाश हो जाते हैं ।

(१०) भोजन के पहले अदरख में सेंधानोन लगाकर खाने से भूख बढ़ती और रुचि होती है तथा जीभ और कण्ठ शुद्ध होते हैं ।

जुकाम के उपद्रवों के उपाय ।

प्रतिश्याय या जुकाम के रोग में बाहरी सर्दी लगने अथवा और मिथ्याचरण करने से छाती का दर्द, पसली का दर्द, खाँसी और ज्वर आदि अनेक उपद्रव खड़े हो जाते हैं ।

पसली के दर्द के उपाय !

पसली और छाती में दर्द हो तो नीचे लिखे उपाय करो:—

(१) नारायण तेल धीरे-धीरे मलो ।

(२) सरसों के तेल को गरम करके उसमें थोड़ासा नमक मिला दो और धीरे-धीरे मलो ।

(३) अलसी के तेल को गरम करके और नमक मिलाकर मलो ।

(४) तारपीन का तेल मलो ।

(५) पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—इन पाँचों को "पंचकोल" कहते हैं । इनका काढ़ा पीने से पसली का दर्द जाता रहता है ।

खाँसी के उपाय ।

जुकाम से जो खाँसी होती है, उसमें पहले जुकाम होता है और पीछे खाँसी होती है। उस के ये उपाय हैं:—

(१) आक के पत्तों पर सरसों का तेल चुपड़ कर, उनको गरम करके रोगी की छाती पर बाँधो।

(२) आक की जड़ की छाल को जला कर, उसमें ज़रासा नोन मिला दो। इसमें से चार-चार रत्ती राख खाने से जुकाम की खाँसी जाती रहती है।

(३) अमरूद को आग में भूनकर और थोड़ासा नमक मिला कर खाने से जुकाम की खाँसी जाती रहती है।

(४) पीपर और बड़ी इलायची के बीज पीस कर छान लो। इस में से एक-एक माशे चूर्ण "शहत" में मिला कर दिन में ३।४ बार चाटने से जुकाम की खाँसी जाती रहती है।

(५) त्रिफले को लाकर पीस-छान लो। इसमें से तीन-तीन माशे चूर्ण "शहद" में मिला कर सवेरे-शाम चाटने से जुकाम की खाँसी चली जाती है।

(६) मुनक्का बीज-रहित, मिश्री और शहद बराबर-बराबर लेकर पीस लो और चाटो। इससे पुराना जुकाम और खाँसी जाते रहते हैं।

गले का दर्द और गला बैठने का उपाय।

अगर जुकाम से गला बेठ गया हो या दर्द हो तो ये उपाय करो:—

(१) पानों के रस के साथ सरसों का तेल पकाकर गले पर मलो और ज़रा-ज़रासा नमक मिलाकर गरम पानी पीओ।

सिर दर्द के उपाय।

सरदी, खाँसी, जुकाम और क्षय प्रभृति रोगों में सिर का दर्द अधिकता से होता है। कभी-कभी नये जुकाम में कफ के जियादा गाढ़ा होने या सूख जाने से सिर की पीड़ा असह्य हो उठती है और फिर उससे सिर में तरह तरह रोग हो जाते हैं। खाँसी में, विशेष कर पुरानी खाँसी में, सिर का दर्द बहुधा हो जाता है। इसी तरह क्षय के आरंभ में, नियमित रूप से सिर दर्द होता है और क्षय के पूर्ण रूप धारण कर लेने पर सिर दर्द भी बढ़ जाता है, इसमें प्रायः सिर घूमता और सिर में सूई चुभाने की सी पीड़ा होती है और पसीने बहुत आते हैं। यहाँ हम खाँसी में सिर दर्द आराम करने वाली दवा लिखते हैं:—

(१) अगर सिर में भारीपन और सरदी बहुत हो, तो भुने हुए गरम मूंग या भुने हुए गरम चने सूंघो और एक कपड़े में गरम भुने हुए चने बाँध कर सिर और ललाट पर सेक करो । इस उपाय से सर्दीका दर्द सिर, भारीपन और सरदी का जुकाम ये सब नाश हो जाते हैं। परीक्षित है ।

(२) चूना और नौसादर एकत्र मिला कर एक मिनट तक सूंघने से कफज या सिर का दर्द आराम हो जाता है। परीक्षित है ।

(३) सोंठ, कालीमिर्च , छोटी पीपर और सरसों समान-समान लेकर और एकत्र पीस कर नाक में चढ़ाने से छींक द्वारा कफ निकल जाता और कफ का दर्द सिर नाश हो जाता है।

(४) सोंठ या कायफल अथवा कूट को पानी के साथ पीस और गरम करके लेप करने से कफ और सरदी का दर्द सिर जाता रहता है ।

(५) जुकाम और सरदी वगैरः से जो दर्द सिर होता है, वह अडूसा, सौंफ, मुलेठी और गुलबनफ़शा आदि पसीने लाने वाली दवाओं के काढ़े से आराम हो जाता है। तुलसी के पत्तों की चाय बना कर पीने से भी ऐसा दर्द सिर मिट जाता है ।

(६) पुराने जुकाम से हुए सिर के दर्द में त्रिफले के काढ़े में शहत मिला कर पीने से लाभ होता है।

(७) खाँसी के बहुत चलने से हुए सिर के दर्द में अडूसे के काढ़े में शहत डाल कर पीना चाहिये ।

(८) देवदाली जुकाम या नजले के पुराने से पुराने सिर दर्द की अनमोल दवा है । जुकाम या नजला बिगड़ने से कैसा ही भयंकर और पुराना सिर दर्द क्यों न हो, सिर के किसी भाग में दर्द हो, शूल से चलते हों, नाक से बदबूदार मवाद और कीड़े गिरते हों—आप "देवदाली के स्वरस" की आठ दस बूँदें रोगी की

नाक के दोनों नथुनों में या जिस तरफ दर्द हो उस तरफ के नथने में टपका दीजिये और रोगी को एक मिनट तक सीधा ही लेटा रहने दीजिये। एक दो मिनट में छींक आवेगी और दवा भी निकल पड़ेगी। फिर इस एक बार के दवा टपकाने से तीन दिन तक नाक और मुँह से खराब मवाद निकलेगा। चौथे दिन मवाद गिरना बन्द हो जायगा और रोग भी आराम हो जायगा। अगर कुछ कसर रह जाय, तो फिर एक बार उसी तरह चन्द बूँदें टपका दीजिये। क्या मजाल जो दर्द रह जाय। दवा टपकाते वक्त रोगी को इस तरह लिटाइये कि, उसकी गर्दन खाट की पाटी से कुछ नीचे लटकती रहे। दवा के नाक में जाते ही रोगी को साँस द्वारा उसे ऊपर चढ़ाना चाहिये, ताकि दवा गले में न जाय। अगर गलेमें जाय तो हानि नहीं, पर कुछ खराश या अन्य तकलीफें हो, तो गरम पानी के कुल्ले कराइये और अमलताश का गूदा चूसने को कहिये।

स्वरस की विधि—देवदाली के पाँच फल लेकर, उसके ऊपर के काँटे उतार फैंको। फिर अन्दर से बीज निकाल कर ६ माशे पानी में—मिट्टी के या काँच के प्याले में—आध घण्टे तक भिगो रखो और फिर मसलो। मसलने से जाला से उतरे उसे फेंक दो और नीचे गदला और सफेद पानी रह जाय, उसे शीशी में भर कर और मजबूत काग लगा कर रख दो। यही देवदाली का "स्वरस" है।

दस्तकब्ज के उपाय।

जुकाम में बहुधा दस्तकब्ज हो जाता है। अगर दस्त साफ न होता हो, तो नीचे के उपायों से काम लोः—

(१) मुलेठी २ तोले, सनाय १ तोले, सौंफ ६ माशे, शुद्ध गन्धक ६ माशे और मिश्री ६ तोले—इनको पीस-छान कर रख लो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। अनुपान जल है। इस चूर्ण के खाने से दस्त साफ हो जाता है। बवासीर में भी लाभ होता है।

(२) अमलताश का गूदा, इमली का गूदा, दाख, आलूबुखारा, सूखे झड़बेरी के बेर, सनाय और सोंफ दो-दो तोले लेकर, डेढ़ सेर पानी के साथ, मिट्टी के बासन में पकाओ, जब आध सेर पानी रह जाय, मल कर छान लो। फिर इस काढ़े में पाव भर मिश्री मिला कर पकाओ। जब चाटने लायक चाशनी हो जाय, उतार कर रख लो। इसकी मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है। रात को चाटने से सवेरे दस्त साफ हो जाता है। यह नुसखा बहुत ही उत्तम है।

(३) अमलताश का गूदा पानी में घोल कर छान लो। फिर तिगुनी चीनी डालकर चाशनी बना लो। इसके चाटने से दस्त साफ होता और ज़ुकाम तथा सूखी खाँसी में लाभ होता है। इस चाशनी को पानी में घोल कर पीने से अवश्य ही दस्त साफ होता है।

श्वास रोग किसे कहते हैं ?

जिस तरह भागने से—लगातार और जल्दी-जल्दी साँस आता है; अगर उसी तरह आराम से बैठे रहने पर भी साँस आवे, तो उसे "दमा" या "श्वास रोग" कहते हैं :—

श्वास रोग के कारण ।

नीचे लिखे हुए कारणों से श्वास रोग होता है :—

(१) दाह करने वाले, देरसे पचने वाले, दस्त को रोकनेवाले, रूखे और रसवाहिनी शिराओं को रोक करे भारीपन करने वाले पदार्थों के खाने से ।

(२) शीतल जल पीने और शीतल अन्न खाने से ।

(३) धूल और धूएँ के मुँह और नाक में जाने से ।

(४) अत्यन्त हवा लगने से,

(५) अत्यन्त मिहनत के काम करने से,

(६) भारी बोझ उठाने से,

(७) बहुत राह चलने से,

(८) मल मूत्र आदि के वेग रोकने से, और

(९) उपवास आदि करनेसे हिचकी, श्वास और खाँसी रोग पैदा होते हैं ।

नोट—हिचकी रोग और श्वास रोग के एक ही कारण हैं; अर्थात् जिन कारणों से हिचकी रोग होता है, उन्हीं बहुत से कारणों से श्वास रोग होता है। "भाव प्रकाश" में लिखा है:—

यैरेवकारणैर्हिक्का देहिनां सम्प्रवर्त्तते।
तैरेवबहुभिः श्वासो व्याधि घोरःप्रजायते॥

महर्षि वाग्भट्ट ने श्वास रोगके और भी कारण लिखे हैं। उन्हें हम अपने पाठकों के ज्ञानवर्द्धनार्थ आगे लिखते हैं :—

कासवृद्ध्या भवेच्छ्वासः पूर्वैर्वा दोषकोपनैः।
आमातिसार वमथु विष पाण्डु ज्वरैरपि॥
रजो धूमानिलैर्मर्मघातादति हिमाम्बुना।
क्षुद्रकस्तमकश्छिन्नो महानूर्द्धश्च पञ्चमः॥

खाँसी के बढ़ने से, पहले कहे हुए कड़वे और गरम प्रभृति दोषों को कुपित करने वाले पदार्थों के खाने से, आमातिसार से, छर्दि रोग या क्य होने के रोग से, ज़हर खाने-पीने से, पाण्डु रोग या पीलिये से, बुख़ार से, धूल और धूआँ के नाक और मुह में जाने से, हवा लगने से, मर्मस्थान में चोट लगने से और अत्यन्त शीतल जल पीने से श्वास रोग होता है। यह क्षुद्र, तमक, छिन्न, महान और उर्द्ध—इन नामों से पाँच तरह का होता है।

महर्षि वाग्भट्ट ने श्वास रोग के और कारण तो वे के वे ही लिखे हैं, सिर्फ खाँसी का बढ़ना, आमातिसार, छर्दि, विष रोग, पाण्डु रोग और ज्वर तथा मर्म्मस्थलों * में चोट लगना ये अधिक लिखे हैं।

श्वास रोग के भेद।

एक ही श्वास रोग पाँच प्रकार का होता है :—

(१) महाश्वास, (२) उर्ध्व श्वास,
(३) छिन्न श्वास, (४) तमक श्वास,
(५) क्षुद्र श्वास।

* मनुष्य-देह में आत्मा के आधारभूत १०७ मर्म हैं। मर्मस्थलों में जीव का वास समझा जाता है। उन में चोट लगने से मनुष्य मर जाता है। गुदा, हृदय, पेड़ू और नाभि प्रभृति मर्मों में चोट लगने से मनुष्य के प्राण नाश हो जाते हैं। कुछ मर्म तत्काल प्राण नाश करते हैं और कुछ कालान्तर में। देखो "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ १२१—१२४

सम्प्राप्ति ।

"सुश्रुत" में लिखा है:—प्राणवायु अपनी प्रकृति के विरुद्ध होकर, कफ से मिल कर और उर्द्धगामी होकर श्वास रोग पैदा करता है।

"भावप्रकाश" में लिखा है:—

> यदास्रोतांसि संरुध्य मारुतः कफपूर्व्वकैः ।
> विष्वग्व्रजति संरुद्धस्तदा श्वासं करोति सः ।।

जब वायु कफ से मिल जाता है, तब वह उस कफ से प्राण, अन्न और जल के होने वाले मार्गों को रोक देता है। उस अवस्था में वायु आप भी, कफ की वजह से, चारों ओर घूम नहीं सकता। जब वह अपनी इच्छानुसार चारों तरफ नहीं विचर सकता, तब श्वास रोग पैदा करता है।

खुलासा यह है कि, जब वात और कफ के कुपित होने से श्वासवाही-यंत्र कफ से ढक जाते हैं, तब हवा के घूमने को जगह नहीं मिलती, कफ के कारण वायु आजा नहीं सकता, तब श्वास रोग होता है। असल में हवा के आने-जाने की राहों में कफ के आड़े आजाने से श्वास रोग होता है।

अथवा यों समझिये, कि जब श्वास बहाने वाली नालियों में कफ भर जाता है, जब वे वायु से सूख कर या खुष्क होकर खरदरी हो जाती हैं या सुकड़ जाती हैं अथवा ज़ियादा चौड़ी हो जाती या फैल जाती हैं, तभी श्वास रोग होता है।

नोट—हिचकी और श्वास में क्या भेद है? हिचकी रोग प्राण वायु और उदान वायु दोनों के कुपित होने से होता है; पर श्वास रोग केवल "प्राण वायु" की गड़बड़ी से होता है। हिचकी रोग बिना आमाशय की ख़राबी के नहीं होता; पर श्वास रोग में, आमाशय में कोई ख़राबी नहीं होती। हिचकी रोग में आमाशय में विकार होते हैं; पर श्वास रोग में हृदय यानी छाती, फेंफड़े और श्वास नली में विकार होते हैं। आमाशय और कंठ में उदान वायु रहता है। वही उदान वायु कुपित होकर प्राण वायु से मिलता और हिचकी रोग करता है। पर श्वास रोग में हृदय में विकार होते हैं—आमाशय में नहीं—और प्राण वायु का स्थान हृदय है। अतः श्वास रोग में "प्राणवायु" ही प्रधान है। बस यही हिचकी और श्वास में फ़र्क़ है। खुलासा यह है कि, हिचकी का सम्बन्ध आमाशय से है; पर श्वास रोग का छाती, फेंफड़े और श्वास नली से। हिचकी पैदा करने वाले प्राणवायु और उदानवायु दो हैं; पर श्वास रोग पैदा करने वाला अकेला "प्राणवायु" है।

पूर्वरूप ।

श्वास रोग के पूर्वरूप निम्नलिखित हैं:—

(१) हृदय में पीड़ा।

(२) शूल।

(३) अफारा।

(४) मुख का स्वाद ख़राब होना, और

(५) कनपटियों में तोड़ने की सी पीड़ा होना।

खुलासा यों समझिये कि, जिसे श्वास रोग होने वाला होता है, उसके शरीर में, श्वास रोग होने से पहले, ये ख़राबियाँ नज़र आती हैं ; यानी हृदय और छाती में दर्द होता है, शूल चलते हैं, पेट फूल जाता है, मुँह का ज़ायका ख़राब हो जाता है अथवा किसी चीज़ का स्वाद नहीं आता और कनपटियों में ऐसा दर्द होता है मानो उन्हें कोई तोड़ता हो। जब ये लक्षण नज़र आवें, तभी समझ लेना चाहिये कि अब "श्वास साहब" तशरीफ़ लाने वाले हैं।

महाश्वास के लक्षण।

जिसे महा श्वास होता है, उसकी प्राणवायु आवाज़ करती हुई ऊपर को चढ़ती है। प्राणवायु के ऊपर की ओर चढ़ने से रोगी को घोर दुःख होता है।

जिस तरह भागनेसे रोका हुआ साँड साँस लेता है अथवा कुछ दिनों से मैथुन कर्म न करने वाला साँड साँस लेता है; उसी तरह "महा-श्वास"-रोगी साँस लेता है।

महाश्वास वाले के ज्ञान-विज्ञान सब नष्ट हो जाते हैं। वह अपने पढ़े हुए शास्त्रों को भूल जाता है।

महाश्वास वाले की आँखों में भ्रम हो जाता है। उसके नेत्र चञ्चल या फटे से हो जाते हैं, मल-मूत्र रुक जाते हैं, न पाखाना होता है और न पेशाब। उसकी जीभ तुतला जाती है—बोला नहीं जाता। अगर बोलता है, तो बहुत ही मन्दी आवाज़ निकलती है। श्वास की आवाज़ दूर से ही सुनाई पड़ती है।

जिस रोगी में ये सब लक्षण मिलते हैं, उसे महाश्वास का रोगी कहते हैं। ऐसे लक्षणों वाला रोगी मर जाता है। असल बात

यह है कि, महाश्वास रोग मनुष्य के मारने को ही पैदा होता है ।

"सुश्रुत" में लिखा है:—जब मनुष्य बेहोश हो जाय, पसलियों में दर्द हो, कंठ या गला सूखे, श्वास में खर्राटे की आवाज़ ज़ियादा आवे, नेत्रों में सूजन या सुर्खी हो और साँस लेते समय मनुष्य ढीला हो जावे अथवा फैल या सुकड़ जावे—तब समझो कि "महाश्वास" है ।

वाग्भट्ट महाराज महाश्वास रोग में कान, कनपटी और सिर में दर्द होना ज़ियादा लिखते हैं ।

"वैद्यविनोद" में लिखा है:—

विभ्रान्तनेत्रो विकृताननः स्यात्-
श्वासात्प्रवृद्धान्मरणम्प्रयाति ॥

महाश्वास रोगी के नेत्र विभ्रान्त और मुख विकृत हो जाने से वह मर जाता है ।

उर्ध्वश्वास के लक्षण ।

जिसे ऊर्ध्व श्वास होता है, उसका श्वास बहुत ऊँचा चढ़ता है, कभी नीचे नहीं आता ।

उर्ध्वश्वास वाले के शरीर के सारे छेद और मुँह कफ से घिर जाते हैं । वायु को स्वतंत्र रूप से घूमने को राह नहीं मिलती, इसलिए वह कुपित होकर घोर पीड़ा करता है ।

उर्ध्वश्वास-रोगी की नज़र सदा ऊपर की तरफ रहती है । वह चारों ओर बुरी तरह से देखता है । यह रोगी बेहोश हो जाता है, वेदना से विकल होता है, मुँह सूखता है और बेचैनी से छटपटाता है ।

उर्ध्वश्वास में नीचे को साँस नहीं लिया जाता । जिस उर्ध्व-श्वास वाले को मोह और ग्लानि होती है, वह मर जाता है । सब तरह के श्वासों में यह श्वास बहुत ऊँचा चढ़ता है । यही इसमें विशेषता है ।

"सुश्रुत" में लिखा है, उर्ध्वश्वास वाला जब श्वास लेता है, उसके

मर्मस्थान खिंचने लगते हैं; वह बारम्बार बेहोश और मूर्च्छित होकर श्वास लेता है; ऊपर की तरफ देखता है और श्वास की आवाज़ मन्दी पड़ जाती है।

"वाग्भट्ट" में लिखा है, जो लम्बे-लम्बे साँस ऊपर को लेता है, नीचे की ओर साँस नहीं लेता, ऊपर की तरफ देखता है और इस तरह चिल्लाता और विलाप करता है, गोया मर्मस्थानों में चोट लगती हो, वह "उर्ध्वश्वास रोगी" है। "वैद्यविनोद" में लिखा है:—

श्वासोयदोर्ध्वं कुपितस्तदाधः-
श्वासं निरुंध्य प्रतिहन्ति जीवम्॥

जब उर्ध्वश्वास कुपित होता है, तब वह नीचे के साँस को रोक कर जीव का नाश कर देता है।

खुलासा यह है कि, उर्ध्वश्वास-रोगी ऊपर की ओर लम्बे साँस लेता है, नीचे की ओर साँस नहीं लेता; क्योंकि ले ही नहीं सकता। वजह यह है, कि उसके पेट में वायु नहीं समाता। इस श्वास में वायु का कोप ज़ियादा रहता है, अतः रोगी के नेत्र स्थिर नहीं रहते—चञ्चल रहते हैं। रोगी इधर-उधर देखता है। शरीर में दर्द और बेचैनी की हद नहीं रहती। जब श्वास नीचे की तरफ रुक जाता है, तब रोगी बेहोश हो जाता है। अगर बारंबार श्वास रुकता और बेहोशी होती है, तो रोगी इसी श्वास से मर जाता है।

छिन्न श्वास के लक्षण।

जिसे छिन्न श्वास होता है, वह अपनी तमाम ताक़त से रह-रह कर श्वास लेता है।

छिन्न श्वास वाले के हृदय—छाती और सिर में ऐसा दर्द होता है, मानों कोई छेदे डालता है। वह समय पर—जब श्वास लेना चाहिये तब—साँस ले नहीं सकता। पेट फूलने, पसीने आने, बेहोशी होने और मूत्राशय—पेशाब की थैली में जलन होने से निहायत दुःखी रहता है। नेत्र जल से भरे रहते हैं। शरीर अत्यन्त क्षीण हो जाता है। रोगी के चित्त में उद्वेग होता है। वह वृथा

बकवाद करता और निरन्तर हाँफता रहता है। उस का मुँह सूखता है। शरीर का रंग बिगड़ जाता है अथवा बदल जाता है और 'एक' आँख लाल हो जाती है। ऐसा रोगी तत्काल मर जाता है। सच पूछो तो यह श्वास मनुष्य के मारने को ही आता है।

"सुश्रुत" में लिखा है, जिस रोगी के पेड़ू में जलन होने से पेट फूल जाता है और वेदना भी होती है, सारा प्राण वायु रुक-रुक कर चलता है यानी टूट-टूट कर साँस आता है, उसे "छिन्न-श्वास रोगी" कहते हैं।

"वैद्य विनोद" में लिखा है :—

छिन्न श्वासेन शुष्कास्यो विच्छिन्नो विलपन्नरः।
विचेता विप्लुताक्षो यः स शीघ्रं विजहात्यसून॥

छिन्न श्वास-रोगी थोड़ा-थोड़ा और ठहर-ठहर कर साँस लेता है, उस का मुँह सूखता है, वह विलाप करता और उद्विग्न होता है तथा उस की आँखें डबडबायी सी रहती हैं—ऐसा रोगी मर जाता है।

वाग्भट्ट ने इतना अधिक लिखा है कि, छिन्न श्वास वाले की नज़र नीचेको रहती है और नेत्र एक जगह अनवस्थित रहते हैं।

खुलासा यह कि छिन्न श्वास वाला रह-रह कर साँस लेता है, लगातार साँस नहीं लेता; यानी उस का साँस टूट-टूट कर आता है। जब वह साँस लेता है, तब उस के हृदय आदि मर्मस्थानों में काटने या छेदने की सी पीड़ा होती है। उस पीड़ा की वजह से ही उस से साँस लिया नहीं जाता। नाभि के नीचे पेड़ू में अत्यन्त जलन होती हैं, आँखों में पानी सा भरा रहता है, चेष्टा बदल जाती है और रोगी आनतान बकता है। इस रोगी की एक आँख लाल हो जाती है।

नोट—व्याधि के प्रभाव से एक ही नेत्र लाल होता है। अगर दोषों का प्रभाव होता, तो दोनों नेत्र लाल होते।

तमक श्वास के लक्षण।

जब वायु अपनी राह छोड़ कर कुराहों से नसों में घुसता है, तब वह गर्दन और सिर को जकड़ कर, कफ को बढ़ा कर, बढ़ाये हुए कफ से नाक में पीनस या जुकाम, कण्ठ में घर-घर शब्द और हृदय को पीडित करने वाला तीव्र श्वास रोग पैदा करता है।
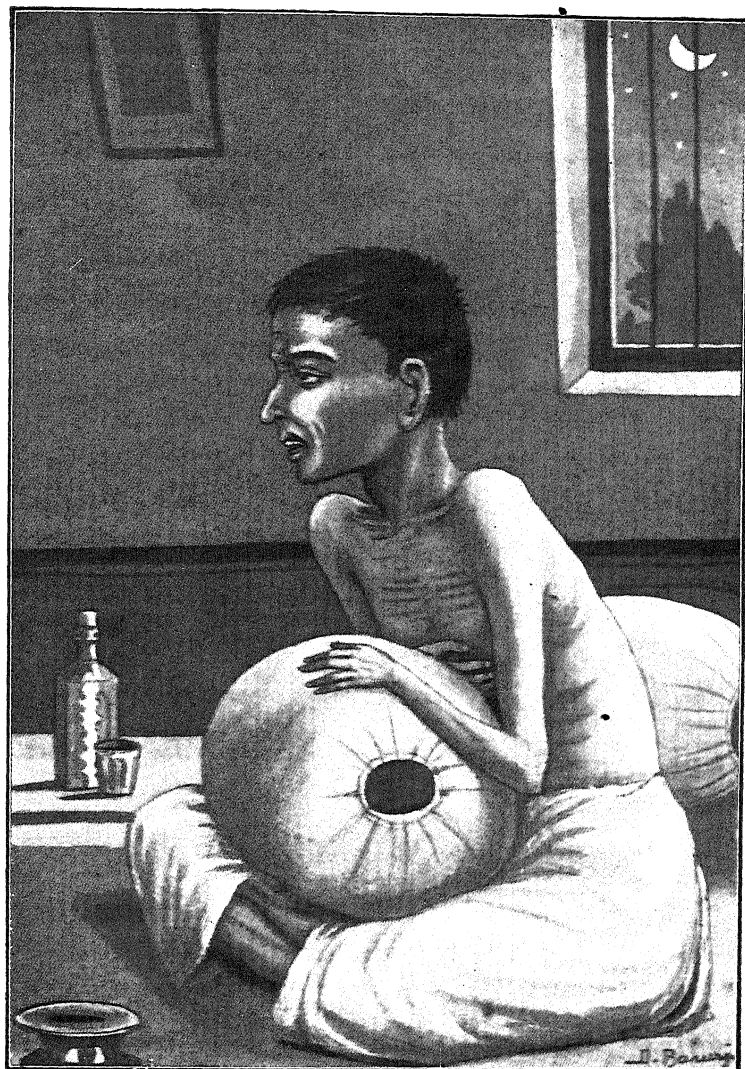
तमक श्वास रोगी। पृष्ठ—१६८-१७१

यह रोगी सो या लेट नहीं सकता। जब यह सोता या लेटता है, तब—वायुकी वजहसे—पसलियोंमें घोर पीड़ा होती है, इस लिये यह उठकर बैठ जाता है। उठकर बैठ जाने और सामने तकिया रखनेसे इसे आराम मिलता है।

जिसे तमक श्वास होता है, वह अपने तईं घोर अन्धकार में पड़ा हुआ देखता है, त्रास पाता है, श्वास के वेग से चेष्टारहित हो जाता है और खाँसी आने से बारम्बार बेहोश होता है। जब उसके गले से कफ निकलने लगता है, तब उसे बड़ी भारी तकलीफ होती है ; लेकिन जब कफ निकल जाता है, तब थोड़ी देर को उसे चैन आ जाता है।

तमक श्वास वाले के गले में दर्द होता है, अतः उसे बोलने में कष्ट होता है। जब वह सोता या लेटता है, तब—वायु की वजह से—पसलियों में घोर पीड़ा होती है, अतः वह फौरन उठ बैठता है। उठ कर बैठ जाने से कुछ आराम मिलता है। यही वजह है कि तमक श्वास रोगी, रातभर, तकिया सामने रखे बैठे रहते हैं।

तमक श्वास रोगी गरम चीज़ों की इच्छा करता है। उसके नेत्र ऊँचे-ऊँचे और सूजे से रहते हैं, सिर में पसीने आते हैं, मुख सूखा करता है, अत्यन्त वेदना होती है और रोगी बारम्बार श्वास ले-लेकर हाथी पर बैठे हुए फीलवान की तरह हिलता है।

तमक श्वास बादल होने से, पानी बरसने से, सर्दी पड़ने से, पुरवाई हवा चलने से और कफकारक पदार्थ खाने-पीने से बढ़ता है।

तमक श्वास याप्य या कष्टसाध्य है। बड़ी-बड़ी दिक़्क़तों से आराम होता है। अगर नया होता है, तो कदाचित साध्य भी होता है ; यानी नया होने से उत्तम चिकित्सा द्वारा आराम हो जाता है।

तमक श्वास वाला श्वास के वेग के मारे चेष्टाहीन हो जाता है, यह चरक मुनि का मत है। किन्तु जय्यट आचार्य कहते हैं, उस मनुष्य का श्वास ही रुक जाता है। तमक श्वास वाला गरम चीज़ें चाहता है, क्योंकि यह श्वास "वात कफ" से पैदा होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है:—अगर प्यास बहुत हो, पसीने आवें, कय हों, गले में कफ घर-घर घर-घर आवाज़ करता हो और विशेष कर, बरसात के दिनों में, सर्दी से श्वासका वेग बढ़ जाय तो उसे "तमक श्वास" समझो।

अगर श्वास के साथ खर्राटे का शब्द हो, खाँसी और कफ का ज़ोर हो, बल घट गया हो, अन्न न भाता हो और सोने से तकलीफ मालूम होती हो—तो दुःखदायी "तमक श्वास" समझो ।

"वैद्यविनोद" में लिखा है :—

आसीन उष्णे लभते च सौख्यं, सुप्तस्य पार्श्वेपरिगृह्यवायुः
आध्मापयेत्तं तमकं वदन्ति, मेघाम्बु शीतैः सहयाति वृद्धिम् ।

तमक श्वास रोगी बैठे रहने से और गरम पदार्थों से सुख पाता है, क्योंकि सोने से वायु उसके पसवाड़ों को पकड़ कर पेट को फुला देता है । तमक श्वास वर्षा और शीत से बढ़ता है ।

तमक श्वास की स्पष्ट पहचान ।

तमक श्वास की साफ पहचान ये हैं :—

(१) तमक श्वास रोगी सो नहीं सकता, सोने से उसे तकलीफ होती है, पर बैठने से उसे आराम मिलता है ।

(२) तमक श्वास वाले का श्वास बादल होने से, वर्षा होने से, परब की हवा चलने से और सरदी पड़ने से बढ़ता है ।

(३) तमक श्वास वाले का श्वास कफकारी पदार्थों से बढ़ता है, अतः उसे सर्द पदार्थों से कष्ट होता है; पर गरम पदार्थों से उसका कष्ट कम होता और सुख मालूम होता है ।

तमक श्वास "वातकफ" से होता है, इसी से गरम पदार्थों से शान्त होता है ।

प्रतमक श्वास के लक्षण ।

जिस तमक श्वास में मूर्च्छा और ज्वर भी होते हैं, उसे "प्रतमक श्वास" कहते हैं । "भावप्रकाश" में लिखा है :—

ज्वरमूर्च्छा परीतञ्च विद्यात्प्रतमकं भिषक् ।

वाग्भट्ट ने कहा है :—

ज्वरमूर्च्छायुतः शीतैः शाम्येत् प्रतमकस्तु सः ॥

जो श्वास—मूर्च्छा और ज्वर समेत हो और शीतल आहार-विहारों से शान्त होता हो, वह "प्रतमक श्वास" है ।

जिस तमक श्वास में मूर्च्छा और ज्वर होते हैं, जो उदावर्त्त रोग

से, धूल की धाँस जाने से, अजीर्ण रोग से, थकान आने से और मल मूत्रादि के वेग रोकने से उठ आता है, वह तमोगुणी—गरम—पदार्थों से अत्यन्त बढ़ता और शीतल आहार-विहारों से शान्त हो जाता है। उस में रोगी अँधेरे में डूबा सा हो जाता है।

किसी-किसीने लिखा है, प्रतमक श्वास आम आदि अजीर्ण, विदग्ध अजीर्ण, योग को निरोध करने, बुढ़ापा होने एवं मल मूत्रादि १७ वेगों के रोकने से पैदा होता है। वह अँधेरे से बढ़ता और शीतल पदार्थों से शान्त होता है।

तमक और प्रतमक में फ़र्क़।

तमक और प्रतमक में गरमी और सरदी का बड़ा भेद है। तमक श्वास सरदी से और प्रतमक गरमी से होता है। अगर तमक श्वास रोगी को सर्द और प्रतमक श्वास वाले को गरम दवा देदी जाय, तो रोग उल्टा बढ़ जायगा, अतः खूब विचार-समझ कर दवा देनी चाहिये।

प्रतमक श्वास गरमी से होता है। उसमें कंठकी नली मामूलसे ज़ियादा चौड़ी हो जाती है, इससे हौंकनीसी लग जाती है; पर तमक श्वास सरदी से होता है ; उस में कंठ की नली उल्टी सुकड़ जाती है, इसलिये रुक-रुक कर और टूट-टूट कर साँस आता है। गरमी के प्रतमक श्वास की दवा सर्द-तर और सरदी के तमक श्वास की दवा गरम-तर होती है।

तमक श्वास कफ-मिली वायु से होता है, पर प्रतमक सूखी और गरम वायु से होता है, इसी से तमक की दवा गरम और कफ नाशक होती है; जबकि प्रतमक की तर और ठण्डी होती है। यह भी याद रखो, बुढ़ापे में श्वास रोग प्रायः सरदी से ही होता है। बूढ़ों ही को नहीं, औरों को भी बहुधा सरदी का "तमक श्वास" ही होता है।

क्षुद्र श्वास के लक्षण।

जो श्वास रूखेपन और बड़ी भारी मिहनत से पैदा होता है, उसे

"क्षुद्र श्वास" कहते हैं । यह श्वास वायु को बढ़ाता है; पर और श्वासों की तरह, रोगी को बहुत दुःखित और पीड़ित नहीं करता, अन्न-पानों की गति को नहीं रोकता—खाने पीने में बाधा नहीं डालता और इन्द्रियों को पीड़ित नहीं करता । यह श्वास रोग साध्य होता है, आसानी से आराम हो जाता है । "भाव प्रकाश" में लिखा है, महाश्वास आदि चारों श्वासों के लक्षण यदि प्रकट न हुए हों, तो वे भी साध्य होते हैं ।

वाग्भट्ट कहते हैं कि, बहुत ही ज़ियादा खा लेने से जब वायु कुपित हो जाता है, तब वह बिना किसी प्रकार के इलाज के—आप ही आराम हो जाने वाले "क्षुद्र श्वास" को करता है ।

"वैद्यविनोद" में लिखा है :—

रुक्षान्नपानैरायासैर्वायुः क्षुद्रमुदीरयेत् ।
क्षुद्रश्वासो मतस्तेन न च दुःखकरो हि सः ॥

रूखे अन्न पान या रूखे भोजन के पदार्थों और अत्यन्त परिश्रम से जो श्वास रोग होता है, वह वायु को तो बढ़ाता है, पर बहुत तकलीफ नहीं देता ।

पाँचों श्वासों के संक्षिप्त लक्षण ।

(१) महाश्वास रोगी भागने से रोके हुए या बहुत दिन से मैथुन न करने वाले साँड की तरह साँस लेता है । उसके श्वास की आवाज़ दूर से सुनी जाती है, आँखें फट जाती हैं, जीभ तुतला जाती है, दोनों नेत्रों पर सूजन और भीतर लाली होती है तथा रोगी को कुछ ज्ञान नहीं रहता ।

(२) उर्ध्वश्वास रोगी का श्वास ऊपर को ही बहुत चढ़ता है, नीचे को साँस लिया नहीं जाता । रोगी की नज़र ऊपर को रहती है, श्वास की आवाज़ मन्दी पड़ जाती है, और वह मर्मस्थलों में चोट खाने वाले की तरह विलाप करता है ।

(३) छिन्न श्वास रोगी का साँस रुक-रुक कर या टूट-टूट कर आता है, पेट फूल जाता है और पेशाब की थैली में जलन बहुत होती है। रोगी निरन्तर हाँफता और बकवाद करता है। उसकी एक आँख सुर्ख़ हो जाती है।

(४) तमक श्वास रोगी के कंठ में घर-घर शब्द होता है। कफ निकलते समय कष्ट होता है, पर निकल जाने पर चैन मिलता है। सोने से कष्ट होता है, पर बैठने से आराम मालूम होता है। वह हाथी पर बैठे फ़ीलवान की तरह हिलता रहता है। वर्षा, बादल, पूरबी हवा और सरदी से श्वास बढ़ता और गरम तथा कफनाशक पदार्थों से आराम होता है। सरदी से "कंठ नली" सुकड़ जाती है, अतः रोगी रुक-रुक कर श्वास लेता है।

प्रतमक श्वास में "कंठ नली" चौड़ी हो जाती है, अतः हौंकनी लग जाती है। यह श्वास गरमी से होता है, अतः सर्द-तर चीज़ों से लाभ होता है।

(५) क्षुद्र श्वास में वायु कुपित होता है, पर और श्वासों की तरह तकलीफ़ नहीं देता। यह श्वास अपने-आप भी आराम हो जाता है।

नोट—महाश्वास, उर्ध्वश्वास और छिन्न श्वास की चिकित्सा कठिन है; पर यत्न करने से रोगी आराम भी हो जाते हैं। तमक श्वास वाले को गरम दवाएँ देने से अवश्य लाभ होता है। जैसे,—अदरख और शहद मिलाकर चटाना, दशमूल के काढ़े में शहद मिला कर पिलाना, अभ्रक भस्म शहद में चटाना अथवा सोंठ, मिर्च, पीपर और बायबिडंग के चूर्ण के साथ शहद में मिलाकर चटाना। अभ्रक एक या दो रत्ती देना उचित है। प्रतमक श्वास में ईसबगोल का लुआब, सेवती का गुलकन्द, ख़मीरा गावज़ुबाँ, द्राक्षावलेह या द्राक्षासव आदि सर्द-तर या शीतवीर्य दवाएँ देनी चाहियें।

साध्यासाध्यत्व।

आयुर्वेद ग्रन्थों में लिखा है:—

बलिना सर्वे चाव्यक्तलक्षणः।

क्षुद्रः साध्यतमस्तेषां तमकः क्षुद्र उच्यते।
त्रयः श्वासा न सिध्यन्ति तमको दुर्बलस्य च ॥

बलवान पुरुष के महाश्वास आदि सभी श्वास, यदि लक्षण पूरे तौर से प्रकट न हुए हों, तो, साध्य हैं। इन श्वासों में क्षुद्र श्वास बहुत ही आसानी से आराम हो जाता है। तमक श्वास को भी क्षुद्र कहते हैं, पर तमक कष्टसाध्य है। महाश्वास, उर्ध्वश्वास और छिन्नश्वास के पूरे लक्षण प्रकट हो गये हों, तो वे साध्य नहीं हैं; यानी असाध्य हैं। कमज़ोर आदमी का तमक श्वास भी साध्य नहीं है; यानी असाध्य है।

यों तो सन्निपात ज्वर और हैज़ा आदि अनेक रोग प्राणनाशक हैं; पर श्वास और हिचकी रोग जैसी जल्दी प्राणनाश करते हैं और नहीं करते। अतः श्वास रोग की चिकित्सा खूब जल्दी और सावधानी से करनी चाहिये।

दौरा रोकने के सरल उपाय

(१) श्वास का दौरा होते ही, वैद्य को चाहिये कि रोगी को जिस तरह आराम और सुभीता मालूम हो, उसी तरह उसे पलँग या बिछौने वगैरः पर अच्छी तरह बिठावे ; पर इस बात पर विशेष ध्यान रहे कि, रोगी के कमरे में हवा का आना जाना बन्द न हो।

(२) रोगी जितना सह सके उतने गरम जल में, एक कपड़ा या फलालैन का टुकड़ा भिगोकर, उससे १०।१५ मिनट तक रोगी की छाती को सेके।

अथवा

थोड़ा सा सेंधानोन गाय के घी में खूब महीन पीस कर, रोगी की छाती के बीच से गले तक मले।

(३) रोगी सह सके उतना गरम जल एक चौड़े और गहरे बर्तन में भर कर, उस में रोगी के दोनों पैर रखवावे। इस उपाय से श्वास का ज़ोर फौरन घट जाता है।

(४) १०।१५ बिना बीज के मुनक्के कुचल कर, आधापाव दूध और आधापाव पानी में औटाओ ; जब पानी जल जाय, मल कर छान लो। फिर ऊपर से ४।५ काली मिर्चों का चूर्ण और एक तोले मिश्री मिला कर, गरमागरम, थोड़ा-थोड़ा, तीन चार बार में, चमचे से पिला दो।

अथवा

पाँच-सात बादामों की सफेद मिंगी पानी में पीस कर, कपड़े में छान लो और आग पर खूब औटा कर थोड़ा-थोड़ा रोगी को पिलाओ।

अथवा

तीन चार तोले अंगूरों का रस निकाल कर कुछ गरम करो और रोगी को पिलाओ।

अथवा

केवल गरम दूध या केवल गरम पानी ही रोगी को पिलाओ। इन सभी उपायों से कफ पतला होगा और श्वास का वेग या ज़ोर घट जायगा।

(५) बंसलोचन २ माशे, छोटी इलायची २ माशे और गिलोय का सत्त २ माशे लेकर एकत्र पीस लो। फिर २ तोले शहत और २ तोले दाख—दोनों का एकत्र अवलेह बनाकर, यानी दोनों को मिला कर, उस में ऊपर की पिसी हुई दवाएँ मिला दो और रोगी को ३।४ बार चटाओ। उस से भी कफ पतला हो जाता है।

अथवा

"चिकित्साचन्द्रोदय पंचम भाग" के अन्त में लिखा हुआ "द्राक्षावलेह" चटाओ ।

अथवा

कफाधिक्य श्वास के दौरे में, ६ माशे अदरख का रस और ६ माशे शहत मिला कर चटाओ ।

अथवा

सैंधानोन, साँभर नोन, छुतिहा नोन, अजवायन और सुहागा—इन को एक-एक छटाँक लेकर, एक हाँडी में भर दो और मुख बन्द करके कपड़मिट्टी करो और सुखा लो । फिर एक आध गज़ गहरा और उतना ही लम्बा-चौड़ा गढ़ा खोद कर, उस में हाँडी को रख दो । नीचे ऊपर हर ओर जंगली कन्डे भर कर आग लगा दो । शीतल होने पर, हाँडी से दवा को निकाल कर महीन पीस लो । इस में से दो-दो रत्ती दवा दिन में कई बार खिलाओ । इस से कफ ढीला होकर निकल जायगा ।

नोट—ये सब—श्वास का दौरा होते ही, उसके दबाने के उपाय हैं ।

मुफीद हिदायतें

(६) श्वास वाले को मौसम गरमी में पीने और नहाने के काम में शीतल जल और जाड़े में गरम जल लेना चाहिये ।

जहाँतक हो सके, रोगी को बाहरी हवा से बचाओ; परन्तु शीत के भय से बिल्कुल बन्द हवा में मत रखो । साफ हवा के आने जाने की राहें खुली रखो । जहाँ साफ हवा और धूप न आती हो, जहाँ सील ज़ियादा रहती हो और जहाँ आदमियों की भीड़ हो, वहाँ श्वास रोगी को न रक्खो । अगर रोगी को माफ़िक़ हो, तो शाम-सवेरे मैदान की साफ हवा खिलाओ । रोगी को अत्यन्त सर्दी और गरमी दोनों से बचाओ ।

(७) रोगी को अधिक मिहनत, स्त्री-प्रसंग, कसरत, भारी भोजन, बासी अन्न, रात को खाना, मादक या नशीले पदार्थ, अत्यन्त दाहकारक और तीक्ष्ण पदार्थ, अचार, चटनी, चाय, काफी, मछली, मांस और अजीर्ण—इन से बचाओ।

श्वास का दौरा शान्त होने पर, एक दो दिन तक, भुने गहूँ का दलिया, पतली मूंगकी धुली दाल और साबूदाना दो। हर दिन ऐसा सादा भोजन दो, जो जल्दी ही पच जाय। पहले भोजन के ६ घन्टे बाद दूसरा भोजन दो। शाम को बहुत ही थोड़ा हल्का खाना दो, क्योंकि रात को खाने और न पचने से श्वास बढ़ता है। गेहूँ, मूँग, जौ, गाय का दूध, अंगूर, केला, शन्तरा, अनार, बादाम, दाख, किशमिश, परवल, बैंगन, तोरई, करेला, बथुआ और पालक आदि पदार्थ पथ्य हैं। इनके सिवाय और भी पदार्थ, जो कफ को सुखाने और बढ़ाने वाले न हों, दे सकते हो।

"सुश्रुत" में लिखा है, आमले, बेल, मुनक्के, किशमिश, अंगूर, पुराना, घी, पीपर, कुलथी का रस, जंगली जानवरों का मांस-रस, हींग, नीबू और शहद श्वास रोग में पथ्य हैं। वाग्भट्ट ने कहा है—

यत्किंचित् कफवातघ्नमुष्णं वातानुलोमनम्।
भेषजं पानमात्र वा हिक्काश्वासेषु तद्धितम्॥

जो दवा और पीने के पदार्थ कफवात नाशक, गरम और वायु को अनुकूल चलाने वाले हैं, वे श्वास और हिचकी में हित हैं।

(८) एक-दम शीतल जल डालने, साहस करने, भयंकर पदार्थ दिखाने, एवं अतिहर्ष, अतिक्रोध और त्रास से हिचकी और श्वास नाश हो जाते हैं। कहा है:—

द्रुतं शीताम्बुसेकैश्च साहसक्रूरदर्शनैः।
हर्षणक्रोधसंत्रासैर्हिक्कांश्वासं निवारयेत्।

वाग्भट्ट कहते हैं:—

शीताम्बुसेकः सहसा त्रासविक्षेपभीशुचः।
हर्षेर्ष्योच्छ्वास संरोधा हितं कीटश्चदंशनम्॥

हिचकी और श्वास रोगीपर शीघ्र ही शीतल जल के छींटे मारो, चित्त को उद्विग्न करने वाले कर्म करो; कँपाना, डराना, सन्ताप देना, खुश करना, श्वास रोकना और कीड़ों से कटाना भी हित है।

(९) श्वास और हिचकी रोग में, विशेष कर, नमक और तेल मिली हुई चिकनी स्वेदन क्रियाओं से उपचार करो—इससे कफ छूटता, श्वास नष्ट होता और वात भी शान्त हो जाता है। जब पसीना निकल चुके, तब रोगी को मांसरस के साथ भात दो और शहद के साथ अदरख का रस पिलाओ। इससे श्वास, खाँसी, जुकाम और कफ नष्ट हो जाते हैं।

(१०) अगर बलवान रोगी को कफ घेर ले, कफ बढ़ जाय और श्वास का ज़ोर हो, तो उसे वमन और विरेचन से शुद्ध करना चाहिये। अगर रोगी कमज़ोर और रूखा हो, तो उसे बनाया हुआ जंगली जीवों का मांसरस, दुम्बे का मांसरस या जल के किनारे के जीवों का मांसरस देकर तृप्त करो। यह बात सुश्रुत ने कही है:—

वलीयसि कफग्रस्ते वमनं सविरेचनम्।
दुर्बलं चैव रूक्षे च तर्पणं हितमुच्यते ॥

और भी —

स्नेहवस्तिं विना केचिदूर्द्ध्वं चाधश्च शोधनम्।
मृदु प्राणवतां श्रेष्ठं श्वासि नामादिशंतिहि ॥

कोई-कोई कहते हैं, अगर श्वास-रोगी बलवान हो, तो उसे हलका वमन और विरेचन कराना अच्छा है; पर "स्नेहवस्ति" कराना उचित नहीं। वाग्भट्ट ने कहा है:—

पिप्पली सैन्धव क्षौद्रयुक्तं वातविरोधियत्।
नि र्हृते सुखमाप्नोति सकफे दुष्ट विग्रहे ॥

विशेष करके खाँसी, छर्दि और स्वरशिथिलता आदि रोगों में पीपर, शहद और सेंधानोन मिलाकर वमन करानी चाहिये, पर वमन की दवाएँ वातविरोधी न होनी चाहियें। वमन कराने से कफ

निकलेगा और श्वास-हिचकी का रोगी सुखी होगा एवं साफ छेदों में वायु बेरोकटोक घूमेगा।

कफ का ज़ोर जियादा हो, तो छोटी पीपर २ माशे, मैनफल छै माशे और सधानोन ६ माशे—इन सब को एक सेर पानी में औटा कर, तीन पाव पानी बाक़ी रख लो और मल-छान कर रोगी को गरमागर्म पिला दो।

अथवा इसी तरह पीपर और सैंधे नमक को औटाकर छान लो और शीतल होने पर "शहद" मिला कर पिला दो।

हिचकी और श्वास-रोगी को पहले तेल से तर करके स्वेदित करना चाहिये। अगर रोगी समर्थ हो, तो उसे वमन-विरेचन कराकर शुद्ध करना चाहिये; पर अगर रोगी कमज़ोर हो तो उसे वमन विरेचनादि न कराकर, रोग की शान्ति के लिये, 'शमन औषधि' दे देनी चाहिये। कहा है:—

उर्द्ध्वाधः शोधनं शक्ते दुर्बले शमनं मतम्।

वाग्भट्ट ने लिखा है, राह रुक जाने से जैसे बहुत सा बहता हुआ जल बढ़ जाता है; उसी तरह राह रुकने से कफ बढ़ जाता है, अतः उसे शोधना चाहिये। अगर शुद्ध किये हुए श्वास-हिचकी वाले का रोग शान्त न हो, तो छेदों में रुके हुए या लगे हुए कफ को धूम-पान करा कर यानी मैनशिल आदि का धूआँ पिलाकर निकालना चाहिये।

बहुत से पाठक स्वेद कराने यानी पसीना निकालने का मतलब जल्दी न समझेंगे। कहेंगे, श्वास रोग में पसीने निकालने की क्या ज़रूरत? शास्त्र में लिखा है:—

सर्व्वेषु श्वासरोगेषु वातश्लेष्मनिर्बहणं।
विदधीत विधिं विद्वानादौ स्वेदं मृदुं ततः

सभी तरह के श्वास रोगों में, पहले शरीर से हलका पसीना निकालना चाहिये। इसके बाद वात और कफ के नाश करने का उपाय करना चाहिये।

श्वास रोग होने से, हृदय में रहने वाला प्राण-वायु, कफ से मिल कर और अपने असली काम को छोड़ कर ऊपर की ओर चढ़ता है। उसके निकालने को ही, रोगी को बारम्बार मुँह खोलना और बन्द करना पड़ता है। उस से एक तरह की हाँफनी आने लगती है। उसी को वैद्यगण "श्वास रोग" कहते हैं।

असल बात यह है, कि भीतरी नाड़ियों और छाती पर "कफ" जम जाता है। उस कफ की वजह से, श्वास-नली में जो वायु के आने जाने की राह है रुक जाती है, इसी से रोगी को बारम्बार श्वास लेना पड़ता है और साँस आता भी बड़े कष्ट से है। स्वेद देने या पसीना निकालने से कफ पतला हो जाता है और वातश्लेष्म या वात-कफ-नाशक दवा देने से वह पतला कफ फौरन, दस्त की राह से, निकल जाता है।

ऊपर के श्लोक में लिखा है, कि शुरू में ही पसीना देकर, शरीर को हलका और कफ को पतला कर ले, तब वैद्य वातकफनाशक दवा दे। यह मत ठीक है, पर इस में एक बात विचारने की है। वह यह, कि अगर श्वास बहुत दिनों तक रहा हो और रोगी की रक्तमांसादि धातुएँ क्षीण हो गई हों, तो पसीने वगैरः को रोगी कैसे बरदाश्त कर सकेगा? इसी से रक्तमांसादि के सूख जाने पर, स्वेद कर्म या पसीना देने की शास्त्र में मनाही है। अगर धातुक्षीण रोगी को स्वेद आदि कराया जायगा, तो वह, गरमी को न सह सकने की वजह से, बेहोश होकर मर सकता है; अतः रोग के शुरू में ही, स्वेद कर्म या पसीना निकालने का काम करना चाहिये। जब रोगी कमज़ोर हो जाय, रक्तमांसादि क्षीण हो जायँ, तब पसीना निकालने की दरकार नहीं। यही बात वमन-विरेचन के सम्बन्ध में है। बलवान् को कय और दस्त कराकर, पीछे रोग नाशक दवा देनी चाहिये; पर कमज़ोर को वमन-विरेचन बिना कराये ही दवा दे देनी चाहिये। हमने यह बात खूब खोल-खोल कर

समझा दी है, और अब इसे मूढ़ आदमी भी समझा सकेगा। चिकित्सा-कर्म में तर्क-वितर्क और विचार करने की पद-पद पर दरकार है।

(११) अनेक नासमझ वैद्य यह समझ कर, कि श्वास रोग वात-कफ से होता है, अतः गरमागर्म रस देने से आराम होगा, अपने रोगियों को गरम रस दे देकर मार डालते हैं। क्योंकि गरम दवाओं और गरम भोजन से कफ सूख कर जम जाता है, जिससे रोगी को खाँसने में कष्ट होता है, छाती पर कफ घरघराता और बड़ी कठिनाई से निकलता है एवं कफ निकलते समय छाती में वेदना होती है। जब तक कफ पतला करके निकाल न दिया जाय, गरम गर्म दवा देना—रोगी को मारना है।

हम लिख आये हैं कि, एक "तमक श्वास" होता है और दूसरा "प्रतमक श्वास"। तमक श्वास बादल छाने, पानी बरसने, शीतल या सील के मकान में रहने और शीतल तथा कफवर्द्धक् पदार्थों से बढ़ता है। तमक श्वास वाले के नेत्र ऊँचे रहते हैं, मुख सूखता है, सिर में पसीने आते हैं और वह श्वास फूलने से हाथी पर बैठे हुए महावत की तरह हिलता रहता है। जब तक कफ नहीं निकलता, यह रोगी बहुत ही घबराता है; कफ निकलने से क्षण-भर को चैन आता है। गले में हर समय खसखस लगी रहती है, बोलने में तकलीफ होती है और नींद नहीं आती। ज़रा लेटता है और फिर उठ बैठता है, क्योंकि लेटने पर "वायु" उसकी पसलियों को पकड़ लेता है। अतः रोगी रात-भर सामने तकिये रख कर बैठा रहता है। बैठने से उसे कुछ चैन मिलता है, यह श्वास सर्दी से होता है।

अगर तमक श्वास के लक्षणों के साथ रोगी में ज्वर और मूर्च्छा के लक्षण भी हों, तो "प्रतमक श्वास" समझना चाहिये। यह प्रतमक श्वास शीतल उपायों से शान्त होता है, क्योंकि इस श्वास-रोगी को

ऐसी गरमी मालूम होती है, मानो उसे किसी ने जलते हुए गरम घर में बैठा दिया है। अगर प्रतमक श्वास वाले को गरम दवाएँ या गरम रस दे दिये जायँ, तो वह वैद्यराज को को आशीर्वाद देता हुआ यमराज के घर चला जायगा। जो वैद्य ठीक तरह से निदान किये बिना, अच्छी तरह से मर्ज़ की तशख़ीश किये बिना, हर तरह के श्वास में गरम ही गरम रस खिलाते हैं, वह इस लेख से सावधान हो जायँ और रोगियों को वृथा न मारें। मनुष्य-जन्म बड़ी कठिन से मिलता है।

हम दोनों तरह के श्वासों का सीधा भेद बतलाये देते हैं। प्रतमक श्वास गरमी से होता है और तमक सरदी से। प्रतमक श्वास में, कण्ठ की नली चौड़ी हो जाती है, अतः श्वास की हौंकनी सी लगी रहती है ; पर तमक श्वास में श्वास नली उल्टी सुकड़ जाती है, अतः श्वास रुक-रुक कर आता है। गरमी सर्दी के श्वासों की यह पहचान सर्व्वोत्तम है। गरमी के श्वास—प्रतम श्वास की दवा सर्दतर और सर्दी के श्वास—तमक श्वास की दवा गरमतर होती है। बहुत करके श्वास सर्दी से ही होता है और बूढ़ों को तो विशेष कर सर्दी से ही होता है। बुद्धि और तर्क से खूब समझ कर, तब श्वास का इलाज करना चाहिये।

(१२) श्वास रोग बड़ा कठिन है। यह जल्दी ही आराम नहीं होता। अगर कोई दवा जल्दी ही फायदा न करे, तो घबराना न चाहिये। जब दवा रोग से बलवान होगी, तब अवश्य आराम होगा। हाँ, अगर कोई दवा देने से हानि हो या दवा गरमी करे, तो फौरन बदल देनी चाहिये। जो दवा गरमी करती है, वह प्रायः फायदा नहीं करती। श्वास रोग के लिए समय और अच्छी चिकित्सा की ज़रूरत है। कोई भी श्वास सुखसाध्य नहीं होता। सिर्फ क्षुद्र श्वास साध्य माना जाता है। तीन श्वास तो असाध्य ही होते हैं और चौथा

तमक कष्ट साध्य होता है। "सुश्रुत" उत्तरतंत्र के ५१ वें अध्याय में लिखा है।

> यथाग्नि रिन्धोः खलुकाष्ठसंघैर्वज्रं यथावा सुरराजमुक्तम्
> रोगास्तथैते खलु दुर्निवारःश्वासश्च कासश्च विलम्बिकाच

जिस तरह काठ के ढेर में पड़ी हुई आग और इन्द्र का छोड़ा हुआ वज्र दुर्निवार होते हैं; उसी तरह श्वास, खाँसी और विलम्बिका रोग दुर्निवार होते हैं। और भी कहा है—

> कामं प्राणहरा रोगा वहवोनतु ते तथा।
> यथा श्वासश्च हिक्काच हरतः प्राणमाशुवै॥

यों तो प्राण नाश करने वाले सन्निपात और हैज़ा आदि बहुतसे रोग हैं; पर श्वास और हिचकी जैसी जल्दी प्राण नाश करते हैं, वैसी जल्दी और नहीं करते।

हमारे लिखने का मतलब यह है कि, श्वास, खाँसी और हिचकी बड़े कठिन रोग हैं। इनकी चिकित्सा में बड़ी होशियारी, सावधानी, चतुराई और धीरज की ज़रूरत है।

(१३) वैद्य को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिये, कि श्वास और हिचकी की चिकित्सा एकसी होती है। "सुश्रुत" में लिखा है—

> पाण्डुरोगेषु शोथेषु ये योगाः संप्रकीर्त्तिता।
> श्वासकासापहास्तेपि कासघ्ना येचकीर्त्तितः॥

जो नुसख़े पाण्डु रोग और शोथ रोग में कहें हैं, वे श्वास और खाँसी में हितकारी हैं और खाँसी के नुसख़े श्वास में हितकारी हैं। ठीक है, श्वास, खाँसी और हिचकी के नुसख़े एक दूसरे को आराम करते हैं।

(१४) वैद्य को रोगी की प्रकृति या मिज़ाज का भी ध्यान रखना चाहिये, क्योंकि शीत प्रकृति या सर्द मिज़ाज वाले को गरम दवा फायदा कर जाती है, पर गरम मिज़ाजवाले को उल्टी हानि करती है। जैसे, "शिंगारभ्रक या कालेश्वर रस," जो हमने नुसख़ों में लिखे हैं, श्वास रोग पर

रामवाण हैं ; पर अगर वे गरम मिज़ाज वाले को दे दिये जायँ तो बड़ी भारी हानि करेंगे और यदि वही सर्द मिज़ाज वाले को दिये जायँ, तो तत्काल चमत्कार दिखायेंगे। इस लिये रोगी की प्रकृति और ऋतु आदि का विचार करके और रोग का ठीक निदान करके दवा देनी चाहिये। ऐसे वैद्यों को ही यश मिलता है।
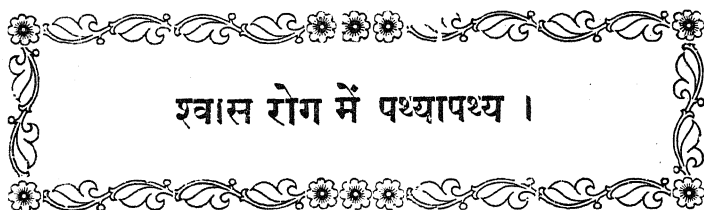
श्वास रोग में पथ्यापथ्य।

पथ्य

जुलाब देना, पसीने निकालना, धूमपान कराना यानी धूआँ पिलाना, वमन या कय कराना, दिन में सुलाना, छाती से लेकर दोनों पसवाड़ों में दागना, दोनों हाथों की बीच की उँगलियों में गरम लोहे से दागना अथवा कंठकूप में दागना,—ये सब श्वास में पथ्य हैं।

पुराने साँठी चाँवल, लाल शालि चाँवल, गेहूँ, जौ, पुराना घी, बकरी का दूध-घी, शराब, शहद, परवल और पका कुम्हड़ा,—ये सब पदार्थ पथ्य हैं।

ख़रगोश, मोर, तीतर, लवा, मुर्ग़ा और अनूप देश के हिरन आदि का मांस पथ्य हैं।

बथुआ, चौलाई, जीवन्ती मूली, पोई का साग, बैंगन, लहसुन, जंभीरी नीबू, कुँदरू, बिजौरा नीबू, दाख, छुहारे और छोटी इलायची—ये सब पथ्य हैं।

कटाई, हरड़, पोहकरमूल, त्रिकुटा, सोंठ, कालीमिर्च, पीपर, गोमूत्र और गरम पानी—ये सब पथ्य हैं।

दिन में—पुराने चाँवलोंका भात, मूंग-मसूर की दाळ, परवल करेले और पके कुम्हड़े का साग, बकरी का दूध, खजूर, अनार, आमले और मिश्री आदि पथ्य हैं ; बशर्ते कि पचाने की ताक़त हो। रात को गेहूँ की रोटी और परवल आदि की तरकारी पथ्य हैं। रात को कम और खूब हलका भोजन हित है।

अपथ्य।

मूत्र, डकार, प्यास और खाँसी के वेग को रोकना ; नस्य सूंघना, गुदा में पिचकारी लगाना, दाँतुन करना, मिहनत करना, राह में बोझ लेकर चलना, धूल का गले में जाना, धूप में रहना, देर में पचने वाले पदार्थ खाना, कलेजे में जलन करने वाली चीज़ें खाना, अनूप देश—बंगाल आदि के पशु-पक्षियों का मांस खाना, तेल की भुनी चीजें खाना, चौला और उड़द कफकारी पदार्थ खाना, खून निकालना, पूरवी हवा खाना, बहुत पानी पीना, भेड़ का घी और दूध, मैला जल, मछली, कन्दों के साग, सरसों ; रूखे, शीतल और भारी खाने-पीने के पदाथ—श्वास रोग में अपथ्य हैं।

बहुत मिहनत, शोक, क्रोध, चिन्ता-फिक्र, रात में जागना, दही, लालमिर्च, अमचूर, ज़ियादा खाना और ख़ासकर रात को ज़ियादा खाना—ये सब श्वास रोग में बहुत ही हानिकारी हैं।

श्वास रोग की सामान्य चिकित्सा

शृंगवेर क्वाथ।

दो तोले सोंठ को बत्तीस तोले पानी में औटाओ; जब आठ तोले जल रह जाय, मल कर छान लो। शीतल होने पर, उस में ६ माशे "शहद" मिलाकर पीलो। कई रोज़ इस काढ़े के पीने से श्वास, सर्दी की खाँसी और सरदी का जुकाम ये आराम हो जाते हैं।

महाकटफलादि चूर्ण।

कायफल, अरण्डी की जड़, काकड़ासिंगी, अजवायन, कलौंजी, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर कूट पीस-छान लो। इस चूर्ण की मात्रा २ से ४ माशे तक है। सवेरे-शाम, एक-एक मात्रा चूर्ण, बकरी के दूध के साथ, फाँकने से घोर खाँसी समेत श्वास नष्ट हो जाता है।

भारंगी गुड़।

भारंगी ४०० तोले, दशमूल ४०० तोले और बड़ी हरड़ ४०० तोले—इन्हें चौगुने यानी ४८०० तोले जल के साथ, मिट्टी के बर्तन या क़लई के बर्तन में पकाओ। जब चौथाई या १२०० तोले पानी रह जाय, उतार कर "कपड़े में काढ़ा छान लो और हरड़ों" को अलग रख लो।

फिर उस छने हुए काढ़े में, ४०० तोले उत्तम "गुड़" और काढ़े से अलग की हुई "हरड़" डाल कर पकाओ। जब पकते-पकते शीरे या अवलेह के समान हो जाय, उस में, शीतल हो जाने पर, २४ तोले "शहद"

मिला दो। सब के बाद,---सोंठ, छोटी पीपर, कालीमिर्च, दालचीनी, तेजपात, इलायची चार-चार तोले और जवाखार दो तोले महीन पीस-छान कर मिला दो और उत्तम बासन में रख दो।

इस अवलेह के सवेरे-शाम खाने से महादारुण श्वास, पाँचों तरह की खाँसी, अरुचि, बवासीर, गोला, अतिसार और क्षय—ये रोग नाश हो जाते हैं तथा स्वर, वर्ण और जठराग्नि—ये उत्तम होते हैं।

हर दिन, दोनों समय, एक-एक हरड़ और दो-दो तोले अवलेह सेवन करना चाहिये।

शृंग्यादि चूर्ण।

काकड़ासिंगी, सोंठ, छोटी पीपर, नागर मोथा, पोहकरमूल, कचूर और कालीमिर्च—इनको समान-समान लेकर, पीस-कूट और छान लो।

इस चूर्ण की मात्रा २ से ४ माशे तक है। सवेरे-शाम, एक-एक मात्रा चूर्ण को चीनी, गिलोय, अड़ूसा एवं पञ्चमूल के काढ़े म मिलाकर पीने से, तीन दिन में, भयङ्कर श्वास भी आराम हो जाता है।

नोट—गिलोय, अड़ूसा और पंचमूल इनको कुल २ तोले लेकर, बत्तीस तोले पानी में औटा लो। आठ तोले जल रहने पर उतार लो और मल-छान लो। फिर इसमें "शृंग्यादि चूर्ण" की १ मात्रा और "चीनी" मिला कर पी लो।

पञ्चमूली शब्द साधारण है। पंचमूली दो होती हैं:—(१) लघु पंचमूली, और (२) बृहत्पंचमूली। पित्ताधिक्य होने से "लघु पञ्चमूल" और वात तथा कफाधिक्य होने से "बृहत्पंचमूल" लेनी चाहिये। लघुपञ्चमूल वातपित्त, पित्त, वायु, कफ, श्वास, दमा, ज्वर, खाँसी, पथरी, त्रिदोष, शूल अरुचि और मन्दाग्नि को नाश करता है और बृहत्पञ्चमूल कफ, वात, श्वास-दमा, ज्वर और दूषित हवा से होने वाले रोग नाश करता है। बृहत्पञ्चमूल और लघुपंचमूल, दोनों की पाँच-पाँच दवाएँ मिला देने से "दशमूल" कहाता है। दशमूल से तन्द्रा, त्रिदोष, श्वास, खाँसी, ज्वर, सूजन, हिचकी, पीनस, पसली का दर्द, सिर का दर्द, अरुचि, पसीना, अपतंत्रकवायु, मन्दाग्नि, रह-रह कर आने वाले ज्वर, छाती के रोग और सिर के रोग नाश हो जाते हैं। सन्निपात ज्वर और सूतिका ज्वर पर यह खूब काम देता है।

पंचमूली क्षीर ।

सरिवन, पिठवन, कटेरी, बड़ी कटाई और गोखरू—यही पाँच "लघुपंचमूल" की दवा हैं। दो तोले लघुपंचमूल लेकर, अधकचरा कर लो; फिर इससे अठगुना—१६ तोले—दूध और दूध से चौगुना—६४ तोले—पानी इन सबको मिलाकर पकाओ। जब पानी जल कर दूध मात्र रह जाय, छान कर रोगी को पिलाओ।

यह क्षीरपाक या दूध जीर्ण ज्वर पर तो उत्तम है ही, पर यह दमा, श्वास, खाँसी, मस्तक शूल, पीठ का दर्द और जुकाम को भी निश्चय ही नाश करता है। परीक्षित है।

नोट—गर्भपात होने पर, लघुपंचमूल के काढ़े में पेया या पतला भात पका कर पिलाने से बहुत लाभ होता है। पेया में "घी" न डालना चाहिये। परीक्षित है।

दशमूल रस ।

दशमूल का रस पीने से श्वास रोग जड़ से नष्ट हो जाता है और श्वास रोग से निश्चय ही मरने वाला भी १०० वर्ष तक जीता है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

दशमूलरस देयं श्वासनिर्मूलशान्तये।
अवश्यं मरणीयो यो जीवेद्वर्ष शतं नरः॥

दशमूल क्वाथ ।

दशमूल दो तोले लेकर, ३२ तोले जल में काढ़ा पकाओ और चौथाई जल रहने पर मल-छान लो। इस काढ़े में "अरण्डी की जड़" अथवा "पोहकर मूल का चूर्ण" डाल कर पीने से श्वास, खाँसी और पसली की पीड़ा शान्त हो जाती है। बक़ौल वृन्द और वाग्भट्ट के, श्वास वाले की प्यास नाश करने को भी यही काढ़ा उत्तम है।

नोट—सन्निपात ज्वर, मोह और तन्द्रा होने पर—दशमूल के काढ़े में "पीपर का चूर्ण" मिलाकर पीना बहुत ही अच्छा है।

धनुस्तंभ रोग में— दशमूल का काढ़ा पिलाना और शरीर में कड़वा तेल मलना हितकारी है।

पक्षाघात रोग में—दशमूल का काढ़ा हींग और सेंधानोन मिलाकर पिलाना हित है।

सूतिका रोग में भी—दशमूल के काढ़े में पीपर का चूर्ण मिला कर पिलाना चाहिये।

हृदयशूल, पीठ के शूल और कमर के शूल में—दशमूल का काढ़ा सवेरे ही पीना चाहिये। छानने पर जो फोक रहे, उसे औटा कर रात को पीना चाहिये।

सूचना—दशमूल के ये सब नुसखे हमारे परीक्षित हैं।

दशमूलादि क्वाथ।

दशमूल के काढ़े में "जवाखार और सेंधानोन" मिला कर पीने से श्वास-रोग, दमा, शूल और हृदय-रोग ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

दूसरा दशमूलादि क्वाथ।

दशमूल की दसों दवाएँ, कचूर, रास्ना, छोटी पीपर, अतीस, अरण्ड की जड़, भुईं-आमला, भारङ्गी, गिलोय, सोंठ और चीते की छाल—इनको दो या तीन तोले लेकर, सोलह गुने जल में काढ़ा बनाओ और चौथाई जल रहने पर मल-छान कर पिला दो। इस काढ़े के पीने या इसकी यवागू बनाकर पीने से श्वास, हृदय की जड़ता, पसली का दर्द, हिचकी और खाँसी रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—यवागू और पेया बनाने की तरकीब, दूसरे भाग के पृष्ठ ७७-७८ में देखिये।

बिल्वादि घृत।

छोटी बेल की गरी एक पाव और हरड़ आध पाव लेकर, अठगुने या तीन सेर पानी में औटाओ; जब चौथाई यानी तीन पाव पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो।

फिर इस काढ़े में गाय का ताज़ा घी एक सेर डाल कर पकाओ,

जब आधा पानी जल जाय, उसमें एक छटाँक "काला नोन" पीस कर मिला दो और पकाते रहो। जब पानी जल कर घी मात्र रह जाय, एक अमृतबान में रख दो।

इसकी मात्रा १ तोले से १ छटाँक तक है। जिसे श्वास और पतले दस्त हों, उसे यह घी अमृत है। परीक्षित है।

हरीतक्यादि घृत।

बड़ी हरड़ के छिलके आध सेर लेकर, चार सेर पानी में औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार कर छान लो।

क़लईदार कड़ाही में, एक साल से ऊपर का घी एक सेर और ऊपर का काढ़ा डालकर पकाओ। जब खूब पकने लगे, उस में पिसा हुआ आध पाव "मनिहारी नमक" और एक तोले "अधभूंजी हींग" डालो और पकाते रहो। जब पानी जल कर घी मात्र रह जाय, उतार लो और छान कर साफ बर्तन में रख दो।

इस की मात्रा १ तोले से ४ तोले तक है। इसके सवेरे-शाम, अपनी ताक़त के माफ़िक़, पीने से श्वास रोग नाश हो जाता है। घी खाकर, पानी भूल कर भी न पीना चाहिये। अगर ऊपर से, लगा हुआ पान या दो चार इलायची खा ली जायँ, तो हर्ज नहीं। अगर खाँसी-श्वास का ज़ोर रहे, तो मुलेठी या मुलेठी का सत्त चूसो अथवा घी चुपड़ कर पकाये हुए बहेड़े का छिलका चूसो अथवा 'कासमर्दन बटी' दिन म ८।१० तक चूसो। इन में से किसी के भी चूसने से श्वास-खाँसी का ज़ोर दब जायगा। घी पीकर पानी पीना तो बड़ी बात है, कुल्ला करना भी मना है। अगर घी पीते ही श्वास उल्टा दुःख देने लगे, तो घबरा कर घी पीना न छोड़ना, ४।५ दिन बाद पक्का आराम होने लगेगा। इस से भूल कर भी, उल्टी हानि होने का ख़याल न करना चाहिये। यह घी हमारा परीक्षित है। पहले ज़रा श्वास को बढ़ा देता है, पीछे एक-दम आराम करता है।

"सुश्रुत" ने लिखा है, श्वास, खाँसी और हिचकी में—पुराना घी, हरड़, बिड़नोन या मनिहारी नोन और हींग के साथ पका कर देना श्रेष्ठ है; और नवीन घी हरड़, बेलगिरी और संचर नोन के साथ पका कर देना उत्तम है। सुश्रुत के ही दोनों घी हमने स्वयं आज़मा कर ऊपर लिखे हैं।

श्वासारि घृत।

बायविडंग, बड़ी हरड़, त्रिफला, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, बालछड़ और चीते की जड़ की छाल—इन आठों को एक-एक छटाँक लेकर जौकुट कर लो। फिर इस कुटे हुए चूर्ण को रात के समय, बारह सेर पानी में भिगो दो और सवेरे ही मन्दाग्नि से पकाओ। जब चौथाई या तीन सेर पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो।

फिर इस काढ़े को क़लईदार कड़ाही में डाल कर, ऊपर से तीन सेर गाय का घी, तीन सेर गाय का दूध और तीन सेर बकरी का दूध डाल दो और मन्दाग्नि से पकाओ। जब दूध और काढ़ा जल कर घी मात्र रह जाय, छान लो।

इस घी की मात्रा ६ माशे से ३ तोले तक है। इस के सवेरे-शाम पीने से श्वास, दमा, खाँसी, अरुचि, बवासीर, गोला, ज़ोर से दस्त होना और कफक्षयी रोग नाश हो जाते हैं। इस पर भी पानी न पीना चाहिये। पान या इलायची खा सकते हैं। अगर यह घी विश्वास के साथ लगातार कुछ दिन पिया जाय, तो श्वासादि रोगों को निश्चय ही नाश कर देता है। खूब परीक्षित हैं।

बासक घृत।

अडूसे का पञ्चांग एक सेर लेकर, सोलह सेर पानी में औटाओ; जब चौथाई या चार सेर पानी रह जाय, मल-छान कर रख लो।

फिर एक सेर गाय का घी और इस काढ़े को मिला कर, क़लईदार बर्तन में पकाओ। पकते समय "अड़से के फूल १ पाव और अडूसे की

जड़ १ पाव" और मिला दो। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस की मात्रा १ तोले से ३ तोले तक है। हर मात्रा में थोड़ा सा "शहद" मिलाकर, सवेरे-शाम पीने से श्वास रोग नाश हो जाता है। यह नुसख़ा भी "सुश्रुत" का है और हमारा परीक्षित है।

नोट—पाँचों नोन के साथ पकाया हुआ घी, अडूसे के साथ पकाया हुआ घी और कायफल के साथ पकाया हुआ घी श्वास को नाश करता है। दश गुने भांगरे के स्वरस के साथ पकाया घी भी श्वासनाशक है।

भृंगराज तैल।

पहले भाँगरा लेकर पीसो और दस सेर स्वरस निकाल कर रख लो। फिर काली तिली का तेल १ सेर क़लईदार कड़ाही में डालो और ऊपर से भाँगरे का रस १ सेर डाल दो। जब पकने लगे, थोड़ी-थोड़ी देर में पाव-पाव-भर रस डालते जाओ और मन्दाग्नि से पकाते रहो। जब सारा रस जल जाय, तेल को उतार कर छान लो और रख दो।

इसकी मात्रा ६ माशे से २ तोले तक है। इसको, दिन में २।३ बार, कुछ दिन लगातार पीने से श्वास और खाँसी निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। यह योग भी "सुश्रुत" का है। परीक्षित है।

नोट—अगर छाती पर कफ बहुत ही सूख गया हो, निकलता न हो, तो इस तेल को "अलसी के तेल" में पकाओ यानी तिली के तेल की जगह अलसी का तेल और भाँगरे का रस लो। इसके पीने से छाती पर जमा हुआ कफ जल्दी छूटता है।

हरिद्रादि अवलेह।

हल्दी, कालीमिर्च, दाख, छोटी पीपर, रास्ना, कचूर और पुराना गुड़—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट छान लो। इस चूर्ण में से ३ माशे चूर्ण "काली तिली के तेल" में मिला कर चाटने से श्वास रोग नाश हो जाता है। यह नुसखा "भावप्रकाश" का है; पर हमारा

परीक्षित है। इससे श्वास में अवश्य लाभ होता है। यदि इससे लाभ न हो, तो "भृङ्गराज तैल" पिलाओ। वह इससे कई गुणा बढ़कर है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

हरिद्रां मरिचं द्राक्षां कणां रास्नां शठीम् गुड़म्।
कटु तैलं लिहन्हन्याच्छ्वासान्प्राणहरानपि॥

हल्दी कालीमिर्च और दाख आदि दवाओं के चूर्ण को कड़वे तेल में मिला कर चाटने से प्राणनाशक श्वास भी आराम हो जाता है।

नोट—हमने इसे कड़वे तेल में नहीं आज़माया, तिली या अलसी के तेल में आज़माया है। उत्तम चीज़ है। अलसी के तेल में चाटने से कफ को अवश्य छुड़ा देता है। पाठक सरसों के तेल में भी आजमा देखें।

बहेड़े का अवलेह।

६४ तोले बहेड़ों की गुठली निकाल फैंको, और छिलकों को तीन सेर बकरे के पेशाब में पकाओ; जब गाढ़ा शीरासा हो जाय, उतार लो। शीतल हो जाने पर, उसमें शीरे के बराबर "शहद" मिला दो और रख दो। इसमें से तोले-तोले-भर चाटने से श्वास-खाँसी आराम हो जाते हैं। अच्छा नुसखा है।

श्वास कुठार रस।

शुद्ध पारा १ तोले, शुद्ध गंधक १ तोले, शुद्ध मीठा तेलिया विष १ तोले, भुना सुहागा १ तोले, शुद्ध मैनसिल १ तोले, कालीमिर्च ८ तोले और त्रिकुटा २ तोले लो। इनमें से पहले पारे और गंधक को १२ घण्टे तक घोट लो। जब कज्जली में चमक न रहे, उसमें बाक़ी चीज़ें डाल कर फिर १२ घण्टे तक खरल करो। यही "श्वास कुठार रस" है। इसमें से दो रत्ती-भर रस पान में धर कर खाने से श्वास रोग नाश हो जाता है। यह रस "भावप्रकाश" और "वैद्यविनोद" प्रभृति ग्रन्थों में लिखा है। रस-वैद्य इससे खूब काम लेते हैं। हम तो जब तेल, घी चूर्ण और अवलेह आदि से लाभ नहीं होता, तब रस देते हैं; क्योंकि

आजकल के प्रमेही और सोज़ाकी रोगी रसों को सहने योग्य नहीं। हाँ, हम यह कह सकते हैं, कि यह रस उत्तम है। कई बार का परीक्षित है ।

सूर्यावर्त्त रस

शुद्ध पारा १ तोले और शुद्ध गंधक ६ माशे—इन दोनों को पहले खरल कर लो ; पीछे इसमें "ग्वारपाठे का रस" दे देकर घोटो। इसके बाद, १॥ तोले ताम्बे के पतले पत्तर लाकर, उन पर इसका लेप कर दो और सुखा लो।

फिर एक हाँडी में इन पत्रों को रख कर, हाँडी का मुख बन्द कर दो और कपड़मिट्टी करके, कण्डों की आग में १२ घण्टे तक पकाओ। जब आग शीतल हो जाय, हाँडी को निकाल लो। हाँडी से रस निकाल कर खरल कर लो, जब चूर्ण हो जाय रख लो। यही "सूर्यावर्त्त रस" है। इसकी मात्रा दो रत्ती की है। इससे श्वास नाश हो जाता है। सुना है, यह रस बहुत ही अच्छा है, पर हमने कभी नहीं आज़माया।

कालेश्वर रस।

दस आँच की बंगेश्वर ६ माशे, कान्तीसार ६ माशे, ताम्बा-भस्म ६ माशे, १०० आँच की अभ्रक-भस्म ६ माशे, चन्द्रोदय रस ६ माशे, शुद्ध आमलासार गंधक ६ माशे, सोनामक्खी की भस्म ६ माशे और शुद्ध सिंगरफ़ ६ माशे—सब को मिला कर खरल कर लो।

फिर लौंग ६ माशे, जायफल ६ माशे, छोटी इलायची ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, शुद्ध सींगिया विष ६ माशे, शुद्ध काले धतूरे के बीज ६ माशे, शुद्ध जमालगोटा ६ माशे, भुना सुहागा ६ माशे और छोटी पीपर आठ तोले—इन सब को पीस-कूट कर छान लो।

फिर ऊपर की भस्मों और उनसे नीचे के लौंग वगैरः के चूर्ण को मिला लो और एक-एक दिन नीचे की चीज़ों में खरल करो :—

(१) एक दिन अड़ूसे के पत्तों के रस में घोटो।

(२) „ निर्गुण्डी के रस में घोटो।

(३) „ चिचरी के रस में घोटो।

(४) „ भाँग के रस में घोटो।

(५) „ भाँगरे के स्वरस में घोटो।

हरेक रस में दिन-भर घोट कर रात को सुखा दो, दूसरे दिन दूसरे रस में घोटो। जब सब रसों में घोट चुको, रख दो। यही "कालेश्वर रस" है।

इस रस की मात्रा एक से दो रत्ती तक है। प्रत्येक मात्रा ३ माशे "शहद" में मिला कर, सवेरे-शाम, चाटनी होती है। खूब याद रखो, इस रस से श्लेस्माधिक्य या कफ प्रधान श्वास अवश्य नाश हो जाता है। सच पूछो तो कफ के श्वास पर यह रस अमृत है, पर वातपित्त के श्वास पर साक्षात् विष है। ऊपर लिखी मात्रा शास्त्रोक्त है। आजकल इसकी इतनी मात्रा सह लेना खेल नहीं है। पहले के बलवानोंके लिए यही मात्रा ठीक थी। आजकल तो १ या २ चाँवल से १ रत्ती तक की मात्रा काफी है। कुछ दिन लगातार सेवन करने से लाभ होता है और होता है। सुपरीक्षित है।

शृंग्यादि चूर्ण

काकड़ासिंगी, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, हरड़ का छिलका, बहेड़े का बक्कल, बिना बीज के आमले, भटकटैया या कंटकारी का पञ्चांग, भारंगी, कूट, जटामासी और पाँचों नोन—सब को समान-समान लेकर, पीस-छान लो। यही "शृंग्यादि चूर्ण" है। वृन्द ने इस की खूब तारीफ की है। परीक्षा में भी उत्तम पाया गया है। इसके सवेरे-शाम, गरम जल के साथ, खाने से श्वास, उर्द्ध वात, खाँसी, अरुचि, और पीनस रोग नाश हो जाते हैं।

इस की मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इस में हमने यह बड़ी खूबी देखी, कि यह कफ को शीघ्र ही छाती से छुड़ाकर श्वास को नाश कर देता है। हिचकी पर भी उत्तम है। परीक्षित है।

त्रिकटु बटी।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर और भुना सुहागा—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर पानों के रस में खरल करके, रत्ती-रत्ती-भर की गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली दिन में ३, ४ बार खाने से श्वास और कफ नाश हो जाता है। परीक्षित है।

फलत्रय बटी।

हरड़-बहेड़े के बकले, बिना बीज के आमले, सोंठ, देवदारू, छोटी पीपर, बच, कालीमिर्च और नागबला—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्ण को १८ घन्टे तक "काले धतूरे के रस" में और १८ घन्टे तक "भाँगरे के रस" में खरल करो और रत्ती-रत्ती-भर की गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम और सोते समय, एक-एक गोली खाने से श्वास और कफ-विकार नाश हो जाते हैं।

शट्यादि चूर्ण।

कचूर, कमलकन्द, गिलोय, दालचीनी, नागरमोथा, पोहकरमूल, तुलसी, भुइँ-आमला, छोटी इलायची, छोटी पीपर, सोंठ, काली अगर और भीमसेनी कपूर—इन को समान-समान लेकर चूर्ण बना लो; फिर छान कर चूर्ण से दूनी "साफ चीनी" मिला कर रख दो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इस से श्वास और हिचकी नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

सितोपलादि चूर्ण।

मिश्री १६ तोले, बंसलोचन ८ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, छोटी

इलायची २ तोले और दालचीनी १ तोले—सब को पीस-छान कर रख दो। मात्रा १ से ३ माशे तक। ६ माशे घी और ३ माशे शहद में, एक-एक मात्रा मिला कर चाटने से श्वास, खाँसी, क्षयी, दाह, हाथ पाँव की जलन, पसली का दर्द, अरुचि, जीर्णज्वर और ऊपर का रक्तपित्त ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

अकरकरादि बटी!

अकरकरा १ तोले, अपामार्ग १ तोले, हींग १ तोले, छोटी पीपर १ तोले, चने की दाल भुनी हुई १ तोले, शुद्ध अफीम ६ माशे और लौंग ६ माशे,—इन सब को ज़रा-ज़रा कूट कर, २४ घन्टे तक, "आक या मदार के दूध" में भिगो दो।

फिर एक सेंहुड़का डण्डा लेकर, भीतर से पोला करलो और उसके भीतर आकके दूधमें भीगी हुई दवा भर दो। फिर उसका मुख बन्द करके कपड़ मिट्टी करदो। इसके बाद, सात सेर कण्डों की आग में उस डण्डे को फूँक दो; पर दवा जलने न पावे। जब आग शीतल हो जाय, डण्डे को निकाल कर, उसमें से दवा को निकाल लो और खरल में डालकर घोटो। घुट-जाने पर चने-समान् गोलियाँ बनालो। इन गोलियोंके सवेरे-शाम खाने से श्वास या दमा नाश हो जाता है। परीक्षित है

पिप्पल्यादि बटी।

छोटी पीपर ६ माशे, हरड़का छिलका १३॥ माशे, बहेड़ेका बकला १८ माशे, अड़ूसे की पत्ती २२॥ माशे और भारंगी २७ माशे—इन सब को कूट-पीस कर छान लो। फिर इस चूर्ण में ४॥ माशे उत्तम "बंगभस्म" मिला दो और "बबूल की छाल के काढ़े" में २४ घन्टों तक घोटो। इसके बाद २४ घन्टों तक "शहद" में घोटो और जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम, एक-एक गोली खाने से श्वास, खाँसी और क्षयी रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

कंटकारी क्वाथ।

कंटकारी, अड़ूसा, छोटी पीपर, सोंठ, धाय के फूल, पोस्त के डोडे और बबूल की छाल—इनको ३।३ माशे लेकर कुचल लो और तीन पाव पानी में काढ़ा बनाओ। जब डेढ़ छटाँक पानी रह जाय, मल-छान लो और शीतल होने पर ३।४ माशे "शहद" मिला कर, सवेरे शाम पीओ। इस के पीने से श्वास, खाँसी और ज्वर का अवश्य नाश हो जाता है; पर लगातार कई दिन तक पीना चाहिये। परीक्षित है।

शुंठ्यादि चूर्ण।

सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर बराबर-बराबर लेकर, २४ घन्टे तक, "बबूल की छाल के काढ़े" में खरल करो; फिर २४ घन्टे तक "भटकटैया के पञ्चांग के काढ़े" में खरल करो और फिर २४ घन्टे तक "धव के काढ़े" में खरल करो और सुखा लो। शेष में, चूर्ण के बराबर "पिसी हुई मिश्री" मिला दो और रख दो। इस को "शहद" में मिला कर चाटने से श्वास, खाँसी और पित्त ज्वर नष्ट हो जाते हैं। मात्रा ३ से ६ माशे तक।

शर्बत पान

बंगला पानों का स्वरस आध सेर, अदरख का स्वरस आध सेर, अनार का रस आध सेर, छोटी पीपर सात तोले और कालीमिर्च ५ तोले,—इन सबको मिला लो और सवा सेर उत्तम "बूरा" डालकर चाशनी कर लो; पर चाशनी बहुत गाढ़ी न होने पावे। सवेरे शाम, एक-एक तोले शर्बत चाटनेसे सब तरह के ज्वर, श्वास, खाँसी नाश होते और भूख बढ़ती है; पर पथ्य की दरकार है। यह शर्बत बालक स्त्री, बूढ़े और जवान सब को उत्तम है। परीक्षित है।

शृंगवेरादि रस।

अदरख का स्वरस १ छटाँक, प्याज़ का रस १ छटाँक, लहसन का रस १ छटाँक, घीग्वार का रस १ छटाँक और शहद १ छटाँक—सब

को एक चीनी के बर्तन में भर कर, मुंह बन्द कर दो और ज़मीन में गढ़ा खोद कर, तीन दिन तक, गाढ़े रहो। चौथे दिन ज़मीन से निकाल कर रख दो। यह नुसख़ा हिकमत का है, पर हमने आज़माया है। इसकी मात्रा १ कौड़ी भर या ३ माशे की है। इसके बराबर १५ दिन, २१ दिन या १ महीने खाने से श्वास रोग समूल नाश हो जाता है। परीक्षित है।

श्वास नाशक लपसी।

गेहूँ का सत्त १ छटाँक, चीनी आध पाव, पोस्ते के दाने १ तोले, मीठे कद्दू या लौकी के बीजों की मींगी १ तोले और पानी आध सेर—इन सब को क़लईदार कड़ाही में डाल कर पकाओ और लपसीसी बना लो। इसके खाने से श्वास, खाँसी, कलेजे का दर्द, जीर्णज्वर और आँतों की गाँठ—ये रोग नष्ट हो जाते हैं तथा शरीर और दिमाग़ में तरी और ताक़त आती है। परीक्षित है।

श्वासान्तक लेह

ख़सख़स के दाने डेढ़ पाव और पोस्त के डोडे एक छटाँक—इन दोनों को, रात के समय, एक मिट्टी के बर्तन में, सेर भर पानी में भिगो दो। सवेरे ही मसाले को सिल पर पीस कर, उसी पानी में घोल दो और कपड़े में छान लो।

इस दूध-जैसे पदार्थ को क़लईदार कड़ाही में डालकर आग पर पकाओ। जब कुछ गाढ़ा होने पर आवे, इसमें तीन पाव "मिश्री" पीस कर मिला दो और पकाओ। जब चाटने योग्य हो जाय, इसमें १ छटाँक "मुलेठी का पिसा-छना चूर्ण" भी मिला दो और उतार लो। कड़ाही से निकाल कर काँच के बर्तन में रख दो और ढक्कन लगा दो।

इसकी मात्रा ४ माशे की है। सवेरे-शाम दोनों समय चाटना चाहिये। इसके खाने से अत्यन्त बढ़ा हुआ श्वास फौरन दब जाता है। तत्काल फल दिखाने वाली चीज़ है। परीक्षित है।

नोट—इस लेह को सवेरे-शाम चटाओ और कुछ सूखे आमलों को एक तरफ से आग पर भून लो। जब श्वास का ज़ोर हो, आमलों को चूसो। इस उपाय से भयंकर श्वास-वेग भी दब जाता है। जब तक खटाई नहीं खाई जाती, श्वास ज़ोर नहीं करता। ये दोनों नुसखे परीक्षित हैं, पर हमारे नहीं एक और विद्वान मित्र के।

अर्कादि बटी

आक के फूल ६ और कालीमिर्च ६—इन दोनों को पीस कर चने-समान गोलियाँ बना लो। दिन-भर में दो तीन गोली खाने से कफ की अधिकतावाला श्वास आराम हो जाता है। परीक्षित है, पर हमारा नहीं, एक और विद्वान् सज्जन का।

श्वासान्तक चूर्ण

सफेद दक्खनी गोल मिर्च एक छटाँक लाकर रख लो। फिर १ मिट्टी के कुल्हड़े को आग में लाल-सुर्ख़ कर लो। जब लाल हो जाय, उस में ऊपर की सफेद मिर्च डाल कर खूब हिलाओ। जब मिर्चें अच्छी तरह भुन जायँ, पीस लो। फिर मिर्चों के चूर्ण में १ छटाँक पिसी हुई "मिश्री" भी मिला दो और कपड़े में छान कर रख दो। इसमें से एक-एक माशे चूर्ण दिन में ४।५ बार खाने से श्वास में बहुत ही लाभ होता है। एक राजवैद्य जी का परीक्षित योग है।

श्वास नाशक शर्बत

गूलर के पके हुए फल ३ सेर और गूलर की छाल ३ सेर—लेकर कुचल लो और बारह सेर पानी में ४८ घन्टे तक भिगो रखो। इसके बाद औटाओ ; जब ३ सेर पानी रह जाय, उसमें बम्बई की लाल दाने-दार खजूर की खाँड ३ सेर डाल कर पकाते रहो। जब शर्बत की सी चाशनी हो जाय, उतार कर छान लो। दिन में ३ बार, दो-दो तोले, चाटने से श्वास दब जाता है।

श्वास नाशक चूर्ण

भटकटैया के पञ्चांग को छाया में सुखा कर पीस-छान लो। इस चूर्ण में से चार या ६ माशे चूर्ण लो। उस में एक रत्ती "रस सिन्दूर" मिला दो और दोनों को ६ माशे शहद में मिला कर चाटो। इस तरह दोनों समय सेवन करने से श्वास और खाँसी में बड़ा लाभ होता है। पराया परीक्षित है।

नोट—इसको शहद के बजाय सरसों के तेल में भी चाटते हैं।

दमे की अकसीर दवा

एक सेर बहेड़े के छिलकों को तीन सेर जल में पकाओ, जब दो सेर पानी बाक़ी रह जाय, उतार कर छान लो। फिर उस काढ़े को एक मिट्टी के बर्तन में भर कर आग पर चढ़ाओ। शुद्ध तूतिया १ माशे, अड़ूसे का खार १॥ तोले, नागकेशर १॥ तोले और चिरचिरे का खार १॥ तोले—इन चारों को एक कपड़े में बाँध कर पोटली बना लो। हाँडी पर एक आड़ी लकड़ी रख कर, उस लकड़ी में पोटली को इस तरह लटका दो, कि पोटली काढ़े के भीतर हाँडी में रहे। नीचे से मन्दी-मन्दी आग लगने दो। जब सारा पानी जल जाय, नाम भी न रहे, पोटली को निकाल कर अलग रख दो। हाँडी के पैंदे में जो दवा जमी हुई मिले, उसे खुरच कर रख लो। इस में से चार-चार रत्ती दवा, सवेरे-शाम, बताशे में धर कर खाओ। यह दवा साँस रोग में अकसीर का काम करती है। हकीम बलदेव प्रसाद जी की परीक्षित है।

श्वास का अपूर्व नुसखा

रविवार के दिन, सवेरे ही, छोटी दुद्धी लाकर, उस में से ६ माशे तोल लो और सफेद ज़ीरा ३ माशे ले लो। दोनों को सिल पर पीस कर और पानी में घोल कर पी लो। उस दिन, सिर्फ एक बार, दही में चूरा भिगो कर इच्छानुसार खाओ।

इसके बाद, सोमवार को दवा मत खाओ। मंगल को फिर इसी तरह दवा सेवन करो और दही चूरा खाओ।

फिर बुद्ध, बृहस्पति, शुक्र और शनि को दवा मत खाओ। फिर रविवार को उसी तरह दवा खाओ और दही चूरे का भोजन करो।

इस तरह ३ दिन मात्र दवा खाने से पुराने से पुराना दमा निश्चय ही चला जाता है। किन्तु इस दवा को खाकर भांग, तमाखू, गांजा, चरस, शराब, और अफीम आदि नशीली चीज़ें जन्म भर को छोड़ दो। अगर इन्हें सेवन करोगे, तो फिर श्वास वैसा का वैसा हो जायगा। पराया परीक्षित है।

नोट—दुद्धी कंकरीली धरती में पैदा होती है। उसके पत्ते बहुत छोटे-छोटे और लाली लिये होते हैं और उसमें से दूध निकलता है।

श्वासारि अवलेह

कटेरी का स्वरस आध सेर, अडूसे का स्वरस आध सेर, मुनक्कों का काढ़ा आध सेर और मिश्री आध सेर—इन सब को मिला कर पकाओ। जब अवलेह के समान हो जाय, उतार कर नीचे रख लो और मुलेठी का चूर्ण १ तोले, असगंध का चूर्ण १ तोले, छोटी पीपरों का चूर्ण १ तोले, भारंगी का चूर्ण १ तोले, बंसलोचन का चूर्ण १ तोले और सूखे आमलों का चूर्ण १ तोले और आध सेर शहद—ये सब मिला दो और साफ बर्तन में रख दो।

इसमें से एक-एक तोले चूर्ण सवेरे, दोपहर और शाम को चाटो। इससे श्वास, खाँसी और क्षयज खाँसी का वेग फौरन ही शान्त होता है। पराया और हमारा दोनों का परीक्षित है।

नोट—धतूरे के फूल लाकर छाया में सुखा लो और पीसकर रख लो। इसमें से थोड़ा-सा चूर्ण कागज में रख कर बीड़ी सी बना लो और दियासलाई दिखाकर सिगरेट-बीड़ी की तरह पीओ। इससे श्वास का जोर तत्काल दब जाता हैं। परीक्षित है।

कनकबीज योग

काले धतूरे के शुद्ध बीज, हर दिन पाँच-पाँच बढ़ाकर १ महीने तक खाने से श्वास रोग नाश हो जाता है। पहले दिन ५, दूसरे दिन १०, तीसरे दिन १५, बस इसी तरह बढ़ावे। यही "कनकबीज योग" है। हमने परीक्षा नहीं की है, पर हमें विश्वास है उत्तम होगा। किन्तु आज-कल के लोग इसे इस तरह सेवन कर न सकेंगे, अतः पहले दिन ५ बीज खाने चाहियें, दूसरे दिन ६ बीज, तीसरे दिन सात—इस तरह तीस दिन तक एक-एक बीज बढ़ा कर खाना चाहिये। तीस दिन बाद एक-एक घटा कर लेना चाहिये ; यानी इकत्तीसवें दिन २६, ३२ वें दिन २८। इस तरह जब रोगी फिर एक बीज पर आजायगा, दमा जाता रहेगा। यह पिछली विधि हमारे कई वैद्य-मित्रों ने परीक्षा कर देखी है।

लोहासव

लोह चूर्ण ४ तोले, त्रिकुटा १२ तोले, त्रिफला १२ तोले, अजवायन ४ तोले, चीता ४ तोले, बायबिडंग ४ तोले, नागरमोथा ४ तोले, शहद ६४ तोले और पुराना गुड़ १०० तोले—इन सब को कूट-पीस कर १ मिट्टी के घड़े में भरो और ऊपर से २० सेर पानी डाल दो। फिर मुँह बन्द करके ४० दिन तक ज़मीन में गाड़े रहो। घड़े के नीचे-ऊपर अगल-बगल घोड़े की लीद भर दो। ४१ वें दिन घड़ा निकाल कर अर्क़ को छान लो। सवेरे ही, इसमें से २ से ४ तोले तक अर्क़ पीने से श्वास, खाँसी, भगन्दर, संग्रहणी, पाण्डु, और सूजन नाश होकर अग्नि तेज़ होती है।

श्वास या दमे पर ग़रीबी नुसख़े।

(१) अदरख का स्वरस ६ माशे और शहद ६ माशे, दोनों को मिलाकर पीने से श्वास, खाँसी और कफ का नाश होता है। श्वास के दौरे के समय, अगर यही नुसख़ा दिया जाय तो बड़ा लाभ हो। परीक्षित है।

(२) पेठे की जड़ का स्वरस १ तोले अथवा पेठे की जड़ का चूर्ण या पेठे के पत्तों का चूर्ण, गरम पानी के साथ, खाने से श्वास और खाँसी शीघ्र ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) वाग्भट्ट और वृन्द ने कहा है, १ तोले गुड़ और १ तोले सरसों के तेल को खूब मथ-मिलाकर २१ या ६० दिन चाटने से श्वास रोग जड़ से चला जाता है। कई बार परीक्षा की है।

(४) "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है, अरीठे की मींगी १ माशे नित्य सवेरे ही १५ दिन तक खाने से श्वास चला जाता है। परीक्षित है।

(५) बेलपत्रों का स्वरस ६ माशे, अड़ूसे के पत्तों का स्वरस ६ माशे और सरसों का तेल ६ माशे—सबको मिलाकर ७ दिन तक पीने से घोर श्वास रोग नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(६) दशमूल के काढ़े में पोहकरमूल का चूर्ण मिला कर पीने से श्वास नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(७) शुद्ध आमलासार गंधक ३ माशे और कालीमिर्च ३ माशे—इनको मिलाकर, एक तोले गाय के घी में एक-दिल कर लो और १५ दिन चाटो। इस से श्वास, खाँसी और यक्ष्मा रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है

(८) कुलथी, काकड़ासिंगी, अडूसा और सोंठ इनको कुल २ तोले लेकर, ३२ तोले जल में काढ़ा बनाओ । जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान कर रख लो । फिर उस में ४ माशे पोहकरमूल का चूर्ण मिला कर पी लो । इसके सवेरे-शाम पीने से श्वास, खाँसी, हिचकी, अरुचि और पीनस रोग शीघ्र ही चले जाते हैं । उत्तम नुसख़ा है ।

(९) बड़ी सीपी को जला कर राख कर लो । फिर उसे अदरख के रस में खरल करके, चने-समान गोलियाँ बना लो । सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से श्वास नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(१०) आक का पत्ता एक और कालीमिर्च २५—इन को पीस कर उड़द-समान गोलियाँ बना लो । सवेरे ही जवान को ६ गोली और बालक को १ गोली देने से श्वास नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(११) आग पर फुलाई हुई फिटकिरी २ तोले और मिश्री २ तोले—दोनों को पीस कर रख लो । १ या २ माशे सवेरे ही रोज़ खाने से श्वास रोग चला जाता है । परीक्षित है ।

(१२) पियाबाँसे की जड़ छाया में सुखा कर महीन पीस लो । इस में से ४ माशे हर दिन सवेरे ही खाने से दमे का रोग चला जाता है ।

(१३) कुलथी, सोंठ, कटेहली, अड़ूसा और पोहकरमूल को कुल २ तोले लेकर काढ़ा बना लो । इसके पीने से श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं ।

(१४) परवल के पत्ते, सहँजना या सूखी मूली—इन तीनों में से किसी एक के काढ़े के योग से बनाया हुआ "यूष" हिचकी और श्वास को नाश करता है ।

(१५) मदार की जड़ ३ तोले, अजवायन २ तोले और गुड़ ५ तोले—सब को पीस कर, जङ्गली बेर के समान गोलियाँ बना लो ।

हर दिन सवेरे ही दो गोलियाँ खाने से दमा या श्वास चला जाता है। परीक्षित है।

(१६) बारहसिंगे का सींग जला कर राख कर लो। इस में से १ माशे राख ३ माशे शहद में मिला कर पहले दिन चाटो। दूसरे दिन २ माशे, तीसरे दिन ३ माशे, इस तरह १२ दिन तक एक-एक माशे बढ़ाते रहो। जब बारहवें दिन १२ माशे या १ तोले हो जावे, फिर न बढ़ाओ। बस, श्वास आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(१७) एक जमालगोटा छील कर, उसकी मींगी को दीपक पर जलाओ। जब राख हो जाय, पीस कर ४ मात्रा कर लो। हर दिन एक "मात्रा" बँगला पान में रख कर खाओ। इससे छाती और गले का कफ छूट कर दमा रोग आराम हो जाता है।

(१८) थूहर का मोटा डण्डा लाकर उसे एक तरफ से पोला कर लो। फिर उसमें एक छटाँक-भर फिटकरी भर दो और मुँह बन्द करके कपरौटी कर दो। फिर कण्डों की आग में डण्डे को रख कर जलाओ। आग शीतल होने पर, डण्डे से फिटकरी निकाल लो। इसमें से दो रत्ती रोज़ पान में धरकर खाने से १५।२० दिन में दमा चला जाता है। परीक्षित है।

(१९) छोटी इलायची के बीज १ माशे और मालकांगनी १ माशे—दोनों को बिना चबाये ही निगल जाने से ११ दिन में दमा जाता रहता है।

(२०) पीपर और पोहकरमूल शहद में चाटने से श्वास रोग चला जाता है।

(२१) कैथ का रस शहद में मिला कर चाटने से दमा जाता रहता है।

(२२) कैथ के रस में आमले, पीपर और सेंधानोन मिला कर चाटने से श्वास रोग जाता रहता है।

(२३) गेरू, रसौत और छोटी पीपर शहद म मिला कर चाटने से श्वास रोग जाता रहता है ।

(२४) कचूर, पोहकरमूल और आमले "शहद" म मिला कर चाटने से श्वास रोग जाता रहता है।

(२५) गाय, हाथी, घोड़ा, सूअर, ऊँट, गधा, मेढ़ा और बकरा इन जानवरों की विष्ठा में से किसी एक की विष्ठा का रस निचोड़ कर और उसमें "शहद" मिला कर चाटने से श्वास रोग चला जाता है। जिसके गले और छाती में कफ बहुत ही अधिक हो, उस को यह नुसख़ा उत्तम है ।

(२६) पीपर, पीपरामूल, हरड़, चीता और बायबिडंग—इन को समान-समान लेकर पानी के साथ सिल पर पीस लो। फिर इसे घी की हाँडी के भीतर लहेस कर सुखा लो। सूखने पर हाँडी में माठा भर दो और १ महीने तक एक जगह रखा रहने दो। यह माठा अग्नि दीपक और श्वास-खाँसी नाशक है ।

(२७) कालीमिर्च और हल्दी समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसकी मात्रा ३ माशे की है। एक-एक मात्रा ३ माशे शहद और ३ माशे मिश्री में मिला कर चाटने से सब तरह के श्वास और पेट का भयंकर अफारा—आराम हो जाते हैं।

(२८) भारंगी को ना-बराबर शहद और घी में चाटने से श्वास जाता रहता है।

(२९) शहद मिलाकर जौ की धानी चबाने से श्वास रोग आराम हो जाता है।

(३०) नीम के बीज और कदम के बीज़ पीस कर और "शहद" में मिला कर चाटने और ऊपर से चाँवलों का भिगोया पानी पीने से श्वास रोग जाता रहता है।

(३१) आक के नर्म नर्म पत्तों का रस निकाल कर, उस रस में

जौ भिगो कर सुखा लो और फिर सत्तू बनाओ। इस सत्तू को शहद के साथ खाने से श्वास जाता रहता है।

(३२) आक का नर्म से नर्म छोटा पत्ता नग १ पान में रख कर खाओ। तीन दिन तक एक-एक पत्ता खाओ। बाद तीन दिन के हर दिन आधा-आधा पत्ता नित्य बढ़ाओ। इस तरह ४० दिन पत्ते खाने से श्वास अवश्य आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३३) आक के पके हुए पीले पत्ते, जो अपने आप ज़मीन में गिर गये हों, एक सेर ले आओ। एक तोले चूना और १ तोले सेंधा-नोन पानी के साथ पीस कर, उन पत्तों के दोनों तरफ लीप दो और छाया में सुखा लो।

फिर उन पत्तों को एक हाँडी में भर कर, हाँडी का मुख बन्द कर दो। फिर कण्डों की आग में हाँडी को रख कर ३ घन्टे तक पकाओ। पीछे शीतल होने पर हाँडी से भस्म को निकाल लो।

इस में से १ रत्ती भस्म पान में रख कर नित्य खाने से श्वास रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(३३) अड़ूसे के बीज, नकछिकनी और बँगला पान—इनको बराबर-बराबर लेकर आग पर भून लो और रख लो। इस में से चार रत्ती दवा बँगला पान में रख कर, रोज़ सवेरे, खाने से भयंकर श्वास रोग भी नष्ट हो जाता है। इस दवा के अजीब फ़ायदे को देख कर रोगी चकित हो उठता है। परीक्षित है।

(३४) "सुश्रुत" में लिखा है, गाय के गोबर का रस या घोड़े की लीद का रस "शहद और पीपर" मिला कर चाटने से श्वास और खाँसी आराम हो जाते हैं।

(३५) आमले और छोटी कटेली समान-समान लेकर पीस लो। फिर उस में आधी हींग मिला दो। इसको शहद के साथ चाटने से श्वास रोगी ३ दिन में ज़बर्दस्ती आराम हो जाता है।

(३६) अलसी ३ माशे और इस्पन्द ३ माशे दोनों को पीस कर और १ तोले शहद में मिला कर, हर दिन चाटने से छाती और गले का कफ नाश होकर दमा आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३७) ३ तोले भुना हुआ सुहागा, चार तोले शहद में मिला कर रख दो। इसमें से ३ माशे दवा रात को सोते समय चाटने से १५ दिन में श्वास जाता रहता है। परीक्षित है।

(३८) एलुआ और कालीमिर्च बराबर-बराबर लेकर, अदरख के स्वरस में घोट कर, उड़द-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही नित्य १ या २ गोली खाने से दमा दूर हो जाता है।

(३६) रेवन्दचीनी, एलुआ और भुना सुहागा—समान-समान लेकर, कसौंदी के रस में घोट कर, चने-समान गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से श्वास चला जाता है। परीक्षित है।

(४०) शुद्ध नीलाथोथा १ माशे और गुड़ १ माशे—दोनों को मिला कर सात गोलियाँ बना लो। सात दिन तक बराबर एक गोली रोज़ खाने से २० बरस का पुराना दमा भी चला जाता है।

नोट—पहले तीन दिन उपद्रव होंगे; यानी दस्त और कय होंगे, जी घबरावेगा, और दाह होगा। जब बहुत ही बेचैनी हो, तब मूंग चाँवल की खिचड़ी में आध पाव घी डाल कर रोगी को खिला दो। ३ दिन के बाद चौथे दिन दस्त, कय और बेचैनी न रहेगी; इसलिए पहले दिन ही घबराकर दवा मत छोड़ देना। ३ दिन दुःखदायी हैं; पर परिणाम में परमसुखदायी हैं।

(४१) कायफल की छाल के रस में राई मिला कर खाने से श्वास आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४२) कौंच के बीजों का चूर्ण सवेरे ही ना-बराबर घी और शहद में चाटने से श्वास आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४३) केले के भीतर का रेशे वाला हिस्सा कुरेद कर, उस में

कुछ काली मिर्च रख दो । सवेरे ही उन्हें केले से निकाल कर मन्दी आग पर भूनो और खा लो । इस उपाय से श्वास चला जाता है ।

(४४) १ माशे जायफल और १ माशे लौंग के चूर्ण में ३ माशे शहद और १ रत्ती बंगभस्म मिला कर खाने से श्वास चला जाता है। परीक्षित है ।

(४५) बायविडंग, सोंठ, काली मिर्च और छोटी पीपर पीस-छान कर रख लो । इस डेढ़ माशे चूर्ण में ४ माशे शहद और १ या २ रत्ती अभ्रक भस्म मिला कर खाने से श्वास, खाँसी, शूल, आम, संग्रहणी, क्षय, कोढ़, प्रमेह, मन्दाग्नि और पेट के रोग नाश होकर वीर्य बढ़ता है । अनेक बार का परीक्षित है ।

(४६) ३ माशे शहत और १॥ माशे पीपर के चूर्ण में एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म मिला कर खाने से श्वास, क्षतक्षय, कफक्षय, वात, पित्त, कफ, प्रमेह, विषरोग, पाण्डु और भ्रम रोग नाश होते हैं । परीक्षित है ।

(४८) केला, कुन्द और सिरस—इन तीनों के फूलों को छोटी पीपरों के साथ पीस कर, चाँवलों के पानी के साथ पीने से श्वास रोग नाश हो जाता है । यह नुसखा "सुश्रुत" और "भावप्रकाश" दोनों ही ग्रन्थों में हैं ।

(४९) तमाखू के पत्तों का स्वरस ६ माशे और गुड़ ६ माशे— इनको एक में मिला कर, ३ दिन तक अलग रखा रहने दो ; चौथे दिन से एक तोले दोनों समय खाओ ; ५ दिन में श्वास रोग अच्छा हो जायगा । परीक्षित है ।

नोट—बुड्ढे और कमज़ोर आदमियों को यह नुसखा न देना चाहिये ; क्योंकि उन्हें इससे दस्त और कय होने लगते हैं ।

(५०) तुलसी के पत्तों का स्वरस ४ माशे, पिसी हुई काली मिर्च एक माशे और घी ४ माशे—इन सब को मिला कर नित्य खाने से वात-कफ के विकार श्वासादि नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

(५१) सेंधानोन थोड़ासा लेकर महीन पीस-छान लो। फिर उसे गाय के घी में मिला कर, बीच छाती से कण्ठ तक मलो। इस से कफ हट जाता और श्वास रोग शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(५२) चूहे का पित्ता गुड़ में लपेट कर निगल जाने से ३ दिन में दमा या श्वास जड़ से चला जाता है।

(५३) गुलाबी सज्जी आध पाव लेकर, छोटे-छोटे टुकड़े कर लो। फिर उन्हें आठ दिन तक "आक के दूध" में भिगो रखो; नवें दिन एक हाँडी में भीगे हुए टुकड़े रखो और इतना आक का दूध भर दो, कि जिसमें सज्जी के टुकड़े डूब जायँ। फिर हाँडी का मुँह बन्द करके कपड़-मिट्टी कर दो और आठ सेर जङ्गली कण्डों के बीच में रख कर फूँक दो। आग शीतल होने पर, हाँडी से सज्जी को निकाल कर पीस लो और रख दो। इसकी मात्रा २ से ४ माशे तक है। सवेरे-शाम एक-एक मात्रा घी के साथ खाने से श्वास या दमा चला जाता है।

(५४) भुनी अलसी ३ तोले और काली मिर्च १ तोले—दोनों को पीस कर रख लो। इसमें से ६ माशे चूर्ण डेढ़ तोले "शहद" में मिला कर हर दिन सवेरे-शाम खाने से श्वास रोग आराम हो जाता है तथा छाती और गले का कफ दूर हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई मिर्चों की जगह "पोदीना" मिलाते हैं।

(५५) थोड़ा सा काला नोन महीन पीस कर रख लो। पहले दिन २ माशे नमक रात को सोते समय फाँक लो। दूसरे दिन २॥ माशे और तीसरे दिन ३ माशे—इस तरह हर दिन आधा-आधा माशा नमक बढ़ाकर, रात को सोते समय खाओ। जब ६ माशे पर पहुंच जाओ, तब हर दिन ६ माशे रोज़ खाओ। अगर प्यास ज़ियादा लगे, तो गरम पानी पीओ। इस नुसख़े से १ महीने में श्वास जड़ से चला जाता है। परीक्षित है।

(५६) बनकेले के पत्ते जलाकर राख कर लो। इस की मात्रा १ माशे की है। एक मात्रा राख, १ तोले शहद में मिला कर चाटने से हिचकी आराम हो जाती है और कभी-कभी श्वास में भी लाभ देखा गया है। परीक्षित है।

(५७) पिठवन, खिरेंटी और अडूसे का स्वरस पिलाने से गर्भिणी स्त्री का रक्तपित, सूजन, खाँसी, श्वास और ज्वर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(५८) कैथ के स्वरस में शहद और छोटी पीपर का चूर्ण मिला कर पीने से श्वास रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(५६) कसौंदी के पत्तों का काढ़ा पीने से श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६०) हरड़ और सोंठ को समान-समान लेकर पानी के साथ सिल पर पीस लो। यही कल्क है। ६ माशे कल्क खाकर, गरम जल पीने से श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं।

(६१) कूट और जवाखार को समान-समान लेकर, सिल पर पानी के साथ पीस कर, कल्क या लुगदी कर लो। इस लुगदी को खाकर, गरम जल पीने से श्वास और हिचकी जाते रहते हैं।

(६२) कालीमिर्च और छोटी पीपरों को समान-समान लेकर, पानी के साथ पीस कर, कल्क बना लो। इस कल्क को खाकर गरम पानी पीने से श्वास और हिचकी जाते रहते हैं।

नोट—नं० ६०, ६१, और ६२ तीनों नुसखे उत्तम हैं। अनेक बार अच्छा काम कर जाते हैं। मात्रा बलाबल अनुसार देनी चाहिये।

(६३) श्वास और हिचकी वाला जब-जब मारे प्यास के बेचैन हो जावे, उसे "दशमूल का काढ़ा" बारम्बार पिलाना चाहिये। वाग्भट्ट, वृन्द और अनेक दूसरे वैद्यों ने इसे अच्छा लिखा है। युक्ति के साथ

वारुणी मदिरा या शराब पिलाने अथवा देवदारु का काढ़ा पिलाने से भी श्वास रोगी की प्यास दब जाती है :--

दशमूलस्य वा क्वाथमथवा देवदारुणः।
पिबेद्वा वारुणी मंडं हिध्मा श्वासी पिपासितः।

(६४) भावमिश्र जी लिखते हैं—देवदारु, खिरेंटी और बालछड़ को समान-समान लेकर, पानी के साथ पीस कर बत्ती बना लो। फिर उस बत्ती को घी में सानकर, उसका धूआँ पीओ। इस तरह का धूआँ पीने से घोर श्वास भी शान्त हो जाता है।

(६५) "सुश्रुत" में लिखा है, शुद्ध मैनसिल, देवदारू, हल्दी, पत्रज, शुद्ध गूगल, लाख और लाल अरण्ड की जड़—समान-समान लेकर पानी के साथ पीस कर बत्ती बना लो। इस बत्ती का धूआँ पीने से श्वास रोग जाता रहता है।

नोट—"सुश्रुत" में लिखा है—वात-कफ का ज़ोर हो तथा विबन्ध हो, तो वैद्य रोगी को धूमपान करावे :— वातश्लेष्म विबन्धोवा भिषक् धूमं प्रयोजयेत्।

(६६) वाग्भट्ट भी कहते हैं, छोटे-छोटे छेदों में रुके हुए या चिपके हुए मलों को धूमपान करा कर या धूआँ पिला कर निकालना चाहिये :—

हल्दी के पत्ते, लाल अरण्ड की जड़, दाख, शुद्ध मैनसिल, देवदारु और बालछड़ को पानी के साथ महीन पीस कर बत्ती बना लो। फिर इस बत्ती को घी में चुपड़ कर, आग पर जलाओ और धूआँ पीओ। इस तरह धूआँ पीने से स्रोतों या छेदों में रुका हुआ कफ, पतला होकर, निकल जायगा और हवा के आने-जाने को राह मिल जायगी, अतः श्वास रोग जाता रहेगा।

(६७) मोम, राल और घी को मिलाकर, आग में डालो और धूआँ पीओ। अथवा चन्दन के बुरादे को आग में डाल कर धूआँ पीओ। अथवा गाय के सींग का चूरा आग में डाल कर धूआँ पीओ। अथवा गूगल को आग में डाल कर धूआँ पीओ। अथवा शुद्ध मैनसिल को आग में डाल कर धूआँ पीओ।

(६८) छोटी पीपर, बिना बीज के आमले और सोंठ—इन को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्ण को "शहद और मिश्री" में मिला कर खाने से श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं।

(६९) सोंठ और भारंगी को समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण को गरम पानी के साथ लेने से श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं।

(७०) सोंठ, मिश्री, भारंगी और काला नोन—इन को समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण को गरम जल के साथ लेने से श्वास और हिचकी नाश हो जाते हैं।

(७१) काकड़ासिंगी, सोंठ, छोटी पीपर, काली मिर्च, कचूर, कमल और पोहकरमूल इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। मात्रा ३ माशे की है। अनुपान गरम जल है। यह नुसख़ा खाँसी और श्वास पर उत्तम है। परीक्षित है।

(७२) भटकटैया की जड़ ६ माशे लेकर, उसके दो टुकड़े कर लो। एक टुकड़े को दो माशे साँभर नमक के साथ चबा लो। इसके बाद दूसरा टुकड़ा भी चबा लो। इस दवा से वमन या कय होकर सारा कफ निकल जायगा और श्वास या दमा आराम हो जायगा। बहुत ही कमज़ोर को जो वमन से घबराता हो, इसे सोच-समझ कर देना चाहिये। परीक्षित है।

(७३) दो माशे थूहर के दूध को थोड़े से आटे में मिलाकर एक रोटी बना लो और उसे आग पर सेक लो।

जवान आदमी को इस में से आधी टिकिया खिला दो। इस के खाने से दस्त होंगे। जब सात दस्त होलें, रोगी को पाव भर उत्तम दही खिला दो। अगर दही से दस्त बन्द न हों, तो गाय का उत्तम मक्खन २१ बार धोकर, छटाँक या आध पाव खिला दो; इसके बाद

आधी रोटी फिर खिला दो और तीन दिन तक खूब नर्म और हलका भोजन दो। इस रोटी के खाने वाले को हवा से—बाहरी हवा से एकदम बचाओ, अन्यथा उल्टी हानि होगी। इस उपाय से ७ दिन में दमा चला जायगा। हमारा आज़माया नुसख़ा नहीं है, पर एक तजुर्बेकार हकीम इसे अपना आज़मूदा कहते हैं।

(७४) कायफल, सोंठ, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, भारङ्गी और छोटी पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस की मात्रा ३ से ६ माशे तक है। हरेक मात्रा ६ माशे से १ तोले तक शहत में मिलाकर चाटने से श्वास और कफज खाँसी आराम होते हैं। कफ नाश करने में यह नुसख़ा लाजवाब है। परीक्षित है।

(७५) कड़वा कूट दूने शहद में मिला कर चाटने से खाँसी और श्वास नाश हो जाते हैं।

(७६) बड़ी कटेरी की जड़ को कुचल कर दो तोले ले लो, फिर १ पाव पानी में औटा लो। जब चौथाई पानी रह जाय, मल-छान कर पीलो। ग़रीबों के श्वास नाशार्थ उत्तम योग है। अगर ६ माशे शहत भी मिला लिया जाय, तो और भी उत्तम हो।

(७७) बावची, हल्दी, छोटी पीपर, आमाहल्दी, काली मिर्च, काला नोन, काला चीता और भुना सुहागा—प्रत्येक बीस-बीस माशे लो और सज्जी दश माशे लो—इन को पीस-छान कर रख लो। मात्रा ३० रत्ती या ४ माशे; अनुपान गरम जल। श्वास नाश करने में रामबाण है।

(७८) हरड़ और बहेड़े के छिलके बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस-छान लो। सवेरे-शाम चार-चार माशे चूर्ण खाने से श्वास रोग जाता रहता है।

(७९) इन्द्रायण की जड़, पीपर और सज्जी बराबर-बराबर लेकर

पीस-छान लो। सवेरे-शाम, एक-एक माशे चूर्ण खाने से श्वास रोग जाता रहता है।

(८०) तमाखू का गुल आग में जला कर सफेद कर लो और पीस लो। उस में से दो रत्ती रोज़ पान में धर कर खाने से श्वास चला जाता है, पर बादी और खट्टे पदार्थों से बचना ज़रूरी है।

(८१) तमाखू का गुल आग में जला कर सफेद कर लो। फिर पानी में महीन घोट कर पानी में ही मिला दो और २४ घण्टे पड़ा रहने दो। दिन में चार छै बार हिला अवश्य दो। दूसरे दिन कपड़े में छान कर पानी निकाल लो। इस पानी को आग पर औटाओ, जब सब पानी सूख कर नमक बन जाय, उसे रख लो। इस में से दो रत्ती नित्य पान में रख कर खाओ। इससे दमा नाश हो जाता है।

(८२) मदार की आधी खिली कलियाँ ले आओ। हर कली में एक-एक काली मिर्च भर दो। फिर सब कलियों को एक कोरी हाँडी में रख दो और ऊपर से खारी नमक की तह बिछा दो। इस के बाद, हाँडी का मुख बन्द कर दो और हाँडी को तन्दूर मे रख दो। जब हाँडी लाल हो जाय, तन्दूर से निकाल लो। ठण्डी होने पर, हाँडी का मुँह खोल कर भीतर से दवा को निकाल लो और पीस कर रख लो। इस में से चार रत्ती राख रोज़ सवेरे ही खाने से श्वास रोग जाता रहता है। ग़रीबों के लिये उत्तम नुसख़ा है।

(८३) विषखपरे की जड़ १ माशे, पान में रख कर २१ दिन खाने से श्वास में लाभ होता है।

(८४) ईसबगोल एक तोले, सवेरे-शाम, चार महीने तक, फाँकने से सब तरह का असाध्य श्वास या दमा जड़ से चला जाता है। परीक्षित है।

(८५) मकड़ी का जाला १ रत्ती लेकर १ माशे गुड़ में मिला कर खाओ। यद्यपि यह दवा गरमी बहुत करती है, पर दमा नाश

करने में रामबाण है। जिस दमे में "कफ" बहुत हो, उसी में देना ठीक होगा। परीक्षित है।

(८६) चिरचिरे का खार दो रत्ती पान में रख कर खाने या एक माशे शहद में मिला कर चाटने से श्वास रोग निस्सन्देह चला जाता है और छाती पर जमा हुआ कफ शीघ्र ही छूट जाता है। परीक्षित है।

(८७) थूहर का खार दो रत्ती अथवा तमाखू का खार २ रत्ती अथवा आक का खार २ रत्ती पान या माशे भर शहद में खाने से श्वास नाश हो जाता है और गले तथा छाती का बलग़म छुट जाता है।

नोट—चिरचिरे के, आक के या तमाखू के पत्ते अथवा उनका सर्व्वांग सुखाकर आग लगा दो। जब राख हो जाय, समेट कर एक बर्तन में रातको भिगो दो। सवेरे ही बर्तन में से साफ जल नितार कर आग पर चढ़ा दो। जब पानी एकदम जल जाय, नाम भी न रहे, उतार लो। आप को उस बर्तन में नमक या खार जमा हुआ मिलेगा। उसे खुरच करे रख लो। इसी तरह आप हरेक चीज़ का खार बना सकोगे।

(८८) समन्दर फल ५० और छोटी पीपर १०० दोनों को किसी हाँडी में रख कर, आग पर भस्म कर लो। फिर शीतल होने पर निकाल कर रख दो। इस में से १ माशे भस्म नित्य पान में रख कर सवेरे-शाम खाने से २१ दिन में श्वास रोग चला जाता है। दो तीन बार परीक्षा की है।

(८६) मोर के नीले चाँद की राख कर लो। इस में से १ रत्ती राख "शहद" में मिला कर, दिन में दो बार खाने से श्वास में जल्दी ही लाभ होता है।

(९०) करंजुवे की गरी और छोटी पीपर—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर उसे "अदरख के रस" में खरल करके कालीमिर्च-समान गोलियाँ बना लो। दो तीन गोली नित्य सवेरे ही खाने से श्वास रोग चला जाता है।

(६१) मदार की बिना खिली कली २ माशे, छोटी पीपर १ माशे और लाहौरी नोन १ माशे—महीन पीस कर जंगली बेर समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही एक गोली नित्य खाने से श्वास रोग निश्चय ही जाता रहता है।

(६२) हल्दी ४ माशे, राई ४ माशे, सज्जी ४ माशे और गुड़ १८ माशे—इनको कूट-पीस कर जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। ४० दिन तक, सवेरे शाम, एक-एक गोली खाने से श्वास रोग आराम हो जाता है।

(६३) एक मदार का पत्ता और २५ कालीमिर्च लेकर पीस लो और गोलमिर्च-समान गोलियाँ बना लो। जवान ७ गोली और बालक १ गोली नित्य खावे तो श्वास रोग जावे।

(६४) छोटी पीपर ४॥ माशे, कालीमिर्च ४॥ माशे, काकड़ासिंगी २। माशे, सफेद सज्जी १ माशे २ रत्ती और अफीम ४ रत्ती–इनको कूट पीस कर अदरख के रस में खरल करो और जंगली बेर-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम, एक-एक गोली खाने से श्वास रोग जाता रहता है।

नोट—कहीं अदरख न मिले, तो २२ माशे सोंठ पीस कर मिला लेना और पानी में खरल करके गोली बना लेना।

(६५) एलुआ, सफेद सज्जी, गोलमिर्च और हल्दी—समान-समान लेकर, जंगली बेर के समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर गरम जल पीने से श्वास रोग जाता है।

(६६) अकरकरा, कालीमिर्च, अनार के छिलके, अजमोद, अड़ूसे के पत्ते, छोटी कटेरी की जड़, बबूल की छाल, सफेद सज्जी, लाहौरी नमक और साँभर नोन—सब को एक-एक माशे लो और शुद्ध अफीम २ माशे लो। सब को पीस-छान कर, अदरख के रस में खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली मुँह में रखकर चूसते रहने से कफ की खाँसी और श्वास में बहुत फायदा होता है।

(९७) एलुआ, भुना सुहागा और मुरमक्की इनको कूट-छान कर, पानी के साथ चने-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम दो-दो गोली खाने से श्वास या दमा जाता रहता है। बड़ी उत्तम दवा है।

(९८) एक कपड़ा पानी म भिगोकर, उस में १ तोले पीपर रख कर, उसे भूभल में दाब दो और एक घन्टे बाद निकाल लो। फिर ऊपर की पीपल ४५ माशे, अकरकरा ४५ माशे, भुना सहाग ३० माशे, कुलींजन ३० माशे और कालीमिर्च ३० माशे—सब को पीस-छान कर, घीग्वार के रस में खरल करो और चने-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से दमा जाता रहता है।

(९९) मुण्डी और कटेरी का रस समान-समान लेकर और उस रस में थोड़ा सा "शहद" मिलाकर पीने से श्वास और खाँसी रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं।

(१००) मुण्डी और अड़ूसे के पत्तों का काढ़ा बनाकर और शहद मिला कर पीने से खाँसी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(१०१) मुण्डी का रस १ पाव, अड़ूसे के पत्तों का रस १ पाव, शुद्ध चीनी आध सेर और जल १ सेर—सब को एकत्र मिला कर पकाओ। जब पकते-पकते एक सेर पानी बाक़ी रह जाय, उतार कर छान लो और बोतल में भर कर रख दो। इस में से दो-दो तोले रस, सवेरे-शाम, सेवन करने से खाँसी, श्वास और फेंफड़े के सब तरह के रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—मुण्डी के पञ्चांग को छाया में सुखाकर पीस-छान लो। फिर इस में बराबर भाग मिश्री और घी मिला कर रख दो। इस में से ६ माशे सवेरे और ६ माशे शाम को गाय के दूध के साथ नित्य-नियम-पूर्वक सेवन करने से और दूध भात का भोजन करने से नेत्रों की दृष्टि खूब तेज़ हो जाती है, दाँत मज़बूत हो जाते हैं और बालों का पकना दूर हो कर बाल काले हो जाते हैं। मुण्डी रसायन के नियमित रूप से शीतल जल, दूध, शहद या घी के साथ सेवन करने से रसायन के गुणों की वृद्धि होती और अनेक रोग नाश होते हैं।

(१०२) आमलासार गंधक शोधी हुई सात माशे और मिश्री १८ माशे इनको पीस कर "शहद" में मिला दो और रख दो। इस में से दो माशे दवा पान पर रख कर खाने से श्वास रोग जाता रहता है।

(१०३) करील की लकड़ी लाकर जला लो और राख को धर दो। इस में से १ माशे राख नित्य खाने से श्वास रोग जाता रहता है।

(१०४) अड़ूसा, कायफल, पोहकरमूल, काकड़ासिंगी, कालीमिर्च, कलौंजी, छोटी पीपर, भारंगी और कटेरी के बीज—बराबर-बराबर ले कर पीस-छान लो और अदरख के रस में घोट कर गोलियाँ बना लो। इसकी मात्रा ४ माशे की है। श्वास और खाँसी पर उत्तम योग है।

(१०५) कसौंधी का हरा फल भून कर खाने से दमा नाश हो जाता है।

(१०६) पुरानी खाँसी में, विशेष कर क्षय की खाँसी में, ८।१० बूँद बड़ का दूध नित्य खाने से बड़ा लाभ होता है। चीनी में मिलाकर खाने से इसका स्वाद ख़राब नहीं होता और दस्त की क़ब्जियत भी नहीं रहती।

बालकों के श्वास की चिकित्सा ।

(१) धनिया और मिश्री लेकर, चाँवलों के धोवन के साथ पीसो और फिर उसी पानी में छान कर बालक को पिला दो। इससे बालकों की खाँसी और दमा जाता रहता है। परीक्षित है।

(२) काला ज़ीरा मुँह में खाकर उसकी पीक निकालो। फिर उस में ज़रा सी "हल्दी" मिलाकर बालक को पिला दो। इस उपाय से बालक का श्वास रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(३) अगर बालक दूध पीने वाला हो और उसको श्वास रोग हो, तो उसकी धाय या माँ को नीचे लिखा नुसख़ा सेवन कराओ, इससे ज़रूर लाभ होगा। सैकड़ों बार का परीक्षित है।

गुलबनफ़शा ६ माशे, छिली मुलेठी ४ माशे, बीज निकाले उन्नाव ६ माशे, अलसी ४ माशे और मिश्री एक तोले---इन सब को कुचल कर एक पाव पानी में, मिट्टी की हाँडी में, पकाओ। जब आधा पानी रह जाय, मल-छान कर माँ को पिला दो। इसी तरह सवेरे-शाम दोनों समय पिलाने से बालक का श्वास आराम हो जायगा।

अगर बालक दूध भी पीता हो और अन्न भी खाता हो, तो इसी काढ़े में से एक चम्मच उसे भी पिला दो।

अगर बालक ख़ाली अन्न खाता हो, माँ का दूध न पीता हो, तो इसी काढ़े की मात्रा घटा कर बालक को पिलाओ। १२ बरस के बालक को सब दवाएँ आधी-आधी लो और पाँच साल से नीचे वाले को चौथाई-चौथाई लो।

अगर बालक को सरदी ज़ियादा हो, तो माँ को १ माशे छोटी पीपर २ माशे शहद में मिला कर चटा दो और ऊपर से यही काढ़ा

पिला दो। बालक को अवस्थानुसार कम "पीपर" चटाओ। याद रखो, यह नुसख़ा कभी फ़ैल नहीं होता। हमने, जैपुर में, इस से सैंकड़ों क्या हज़ारों बालकों का श्वास रोग मिटाया है।

(४) कालीमिर्च, केशर और लौंग-समान-समान लेकर महीन पीस लो। फिर उस पिसे चूर्ण को पान के रस में पीस कर मूंग के समान गोलियाँ बनालो। १ या २ गोली माँ के दूध में घिस कर चटाने से बालक का श्वास, खाँसी और पसली का रोग नाश हो जाता है।

नोट—ज़रा सा कुटकी का चूर्ण शहद में मिलाकर चटाने से बालक की हिचकी और वान्ति—दूध डालना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

श्वास रोग पर हिकमत

श्वास रोग कैसा होता है ?

जिस तरह दौड़ने-भागने से मनुष्य को लगातार और जल्दी-जल्दी श्वास आता है, अगर उसी तरह आराम से बैठे रहने पर लगातार और जल्दी-जल्दी श्वास आवे, तो उसे "श्वास रोग" कहते हैं। यह रोग जवानों के लिए बुरा है, और बूढ़ों के लिए तो बहुत ही बुरा है। बूढ़ों का यह रोग बहुधा आराम नहीं होता।

श्वास कितनी तरह से लिया जाता है ?

श्वास दो तरह से लिया जाता है:— (१) श्वास तो नींद और बे-बेहोशी में लिया जाता है। इस में मनुष्य का कुछ वश नहीं चलता--जैसा श्वास आता है, वैसा ही आता है। इसे "स्वाभाविक श्वास" कहते हैं। (२) श्वास अपनी इच्छानुसार लिया जा सकता है। इस तरह के श्वास लेने में, छाती के अवयवों और गले से मदद मिलती है। इच्छा करने से आदमी लम्बे, छोटे, बड़े, धीरे-धीरे और जल्दी-जल्दी श्वास ले सकता है। इसे "अपनी इच्छानुसार श्वास लेना" कहते हैं।

श्वास किस तरह लिया जाता है ?

जब बाहर की हवा कंठनली में जाती है, तब फेंफड़ा अपने प्रमाण के अनुसार बढ़ता है, जिस से कि हवा फेंफड़े में ठहर सके। छाती फेंफड़े की मदद करती है; यानी श्वास लेते समय वह चौड़ी हो जाती है। श्वास लेने का पूरा काम फेंफड़े का है, छाती का नहीं; छाती तो उसकी मददगार है।

श्वास लेने का काम भीतर की ओर पर्दे से और बाहर की तरफ नरखरे से शुरू होता है। जिस समय श्वास लिया जाता है, फेंफड़ा चौड़ा हो जाता है और जब श्वास बाहर निकल जाता है, वह अपने प्रमाण अनुसार तंग हो जाता है। क्योंकि फेंफड़ा छेददार और पोला है; अतः जब उसमें हवा भरती है तब वह मशक की तरह चौड़ा हो जाता है और जब निकलती है, तब तंग हो जाता है। यह यूनानी

हकीमों का मत है। डाक्टरी में भी क़रीब क़रीब यही बात लिखी है।

ख़ूब समझ लेना चाहिये कि, श्वास लेने के यंत्र ये हैं:—

(१) श्वास-नली। (२) फेंफड़ों के मुख।
(३) पर्दा और छाती, (४) वह अवयव जो इन अङ्गों में हैं।

श्वास और नाड़ी की चाल स्वाभाविक है। श्वास की गति पर मनुष्यों का अधिकार है, पर नाड़ी पर अधिकार नहीं है। नाड़ी की चाल को तेज़ या मन्दी करना, मनुष्य के हाथ की बात नहीं ; पर श्वास को मनुष्य, इच्छा करने से, कम और ज़ियादा तथा धीरे या जल्दी ले सकता है।

अगर श्वास अपनी असली हालत से बदल जाय, तो समझो कि फेंफड़ों या छाती में कोई ख़राबी हो गई है। फेंफड़ों और छाती में जो ख़राबी होती है, वह चार तरह की होती है :—

(१) दोषयुक्त, (२) सूजन।
(३) गाँठ। (४) तफ़र्रुक इतिसाल।

दोषयुक्त प्रकृति होने से फेंफड़ों में ज़रूरत से ज़ियादा गरमी, सरदी या खुश्की अथवा तरी बढ़ जाती है।

अगर मवाद पड़ता है, तोभी सर्द या गरम दोष इकट्ठे होते हैं; यानी बिना सरदी या गरमी बढ़ने के मवाद नहीं होता। सूजन भी गरमी या सरदी से ही होती है।

फेंफड़ों और छाती में गाँठ तभी होती है, जब दोष—पीप, ख़ून या कफ— फेफड़ों के मुँह और छाती की चौड़ाई या छेदों में इकट्ठे हो जाते हैं।

जब छाती या फेंफड़ों में घाव हो जाते हैं अथवा कोई रग टूट जाती है या फट जाती है अथवा बाहर से भारी चोट लगती है तब घाव हो जाते हैं। जो ख़राबी मुँह, छाती और फेंफड़ों में होती है, वह बिना खाँसी के नहीं होती।

छाती और फेंफड़ों में दूसरे अंगो के संयोग से भी ख़राबी होती है। दूसरे अंगों के संयोसे से जो ख़राबी होती है, वह या तो दिमाग़ के सम्बन्ध से या हराम मगज के सम्बन्ध से या दिल के संयोग से अथवा आमाशय, जिगर यकृत—लिवर या गर्भाशय के सम्बन्ध से होती है। इन के सिवा वह ख़राबी अजीर्ण से, मवाद भर जाने से और सारे शरीर के संयोग से भी होती है।

जो ख़राबी छाती और फेंफड़ों में दिमाग़ के संयोग से होती है, वह मृगी और सकते के जैसी होती है।

जो ख़राबी दिल के संयोग से होती है, वह दिल में किसी तरह की ख़राबी होने या सरदी गरमी के ज़रूरत से ज़ियादा होने से होती है।

जो ख़राबी आमाशय या जिगर आदि दूसरे अंगों के संयोग से होती है, वह दुष्ट प्रकृति यानी यथेष्ठ से अधिक सर्दी गरमी बढ़ जाने, इन अंगों में सूजन आजाने, अपने स्थान से हट जाने, टूट जाने या उन में घाव हो जाने से होती है।

जो ख़राबी छाती और फेफड़ों में सारे शरीर के संयोग से होती है, वह बुख़ार की हालत में होती है।

कभी-कभी छाती के अवयवों के सुस्त हो जाने से भी श्वास में फ़र्क़ पड़ जाता है। यह रोग उनको होता है, जो लम्बी बीमारी भोग कर अच्छे हो गये हैं, पर शरीर में पहला सा बल नहीं आया है।

दमे या श्वास रोग के भेद।

हिकमत वालों ने दमा या श्वास रोग तीन तरह का माना है:—

(१) रब्बू, (२) जीकुल नफस। (३) बौहर।

रब्बू का अर्थ दमा है। हकीम शेख़ रब्बू का अर्थ "साँस का कठिन से आना" करते हैं। ऐसा साँस मिहनत करने वाले के साँस के जैसा होता है। साँस जल्दी-जल्दी और लगातार आता है। उस में तंगी होती है और नहीं भी होती है। जीकुल नफस साँस के तंगी से आने को कहते हैं। बौहर साँस के चढ़ने और फूलने को कहते हैं।

"शरह अस्बाब" के लिखने वाले ने इन तीनों तरह के श्वास रोगों को एक ही तरह का माना है, पर और हकीम इन में फ़र्क़ समझते हैं। हिकमत में साँस के कठिन से आने के चौदह भेद लिखे हैं:—

पहला भेद।

यह श्वास रोग जन्म-काल से होता है। वजह यह है कि, छाती जन्म से छोटी होती है, इसलिए साँस लेने के अंग चौड़े नहीं हो सकते। इस का इलाज वैद्य-हकीम नहीं कर सकते।

दूसरा भेद।

यह श्वास रोग फेंफड़ों में गाढ़ा-गाढ़ा कफ आ जाने, फेंफड़ों का मुँह कफ से भर जाने और उन में भारीपन हो जाने से होता है।

फेंफड़ों में कफ तीन तरह से आता है:—

(१) फेंफड़े कफ को भीतरी अङ्गों से खींच लेते हैं।

(२) सिर की ओर से कफ फेंफड़ों पर उतर आता है।

(३) फेंफड़ों में कफ पैदा हो जाता है।

अगर फेंफड़ों में कफ पैदा हो जाता है, तो रोगी की छाती में खरखराहट होती है, खाँसी आती है, उस में से तरी और कफ निकलता है, श्वास तंगी से आता है और रोगी कुत्ते की तरह जीभ को बाहर निकाल देता है। ख़ासकर चलने के समय साँस खिंचता है और रोगी जीभ को बाहर निकाल देता है।

अगर इस रोग का गाढ़ा कफ नहीं निकल जाता और इसका जल्दी ही इलाज नहीं किया जाता, तो रोगी का दम घुट जाता है या उसे जलन्धर हो जाता है।

इस हालत में मवाद को नर्म करके निकालने वाली दवा देनी चाहिए; लेकिन ऐसी दवा न देनी चाहिये, जो गरम होने के साथ खुश्की लावे, क्योंकि जो दवा ज़ियादा गरम होती है, वह मवाद को गाढ़ा और खुश्क कर देती है। जब मवाद बहुत गाढ़ा हो जाता है, तब वह खखार या खाँसी में नहीं निकलता। जब दवा से मवाद नर्म और पतला हो जाय, उसे कय और दस्तों से निकाल देना चाहिये।

रबू-दमा उन रोगों में से है, जो मिर्गी, खिंचावट—बाइँटे और गठिया की तरह एकदम से बढ़ जाता है। अतः आरोग्यता के दिनों में उससे ग़ाफ़िल न रहना चाहिये। इस हालत में पथ्य पर ध्यान देना चाहिये। कभी वमन और कभी दस्त कराते रहना चाहिये। कफ

काटने वाली गरम माजून सदा खानी चाहिये। ऐसे मौके पर "जराबन्द माजून" अच्छा काम देती है।

अगर दमे का मवाद सिर से उतरता हो, तो नजला रोकने का उपाय करना चाहिये। इसके बाद धीरे-धीरे फेंफड़ों का मवाद साफ करना चाहिये। इस हालत में दस्तों का आना अच्छा है।

अगर दूसरे अंगों से फेंफड़ों पर मवाद गिरता होगा, तो धीरे-धीरे प्रकट होगा। अगर फेंफड़ों में मवाद पैदा होता होगा, तो सर्द-तर होने के चिह्न प्रकट होंगे। इन दोनों हालतों में दस्तों के बाद, वमन कराना अच्छा है। वमन कई बार करानी चाहिये, ताकि मवाद जड़ से निकल जाय। इस मौक़े पर मवाद को कड़ा करके ठहराने वाली चीज़ जैसे,—अफीम, जंगली सेब की जड़, भाँग के बीज और इसबगोल आदि देना बुरा हैं। पर अगर मवाद, नजले की तरह, सिर से गिरता हो ; तो अफीम, ईसबगोल, भाँग के बीज आदि का देना अच्छा है, क्योंकि नजले में, नजला रोकने वाली चीज़ें देना ही अच्छा है।

दमावाले के लिए लाभदायक बातें।

(१) दमेवाले को खाना खाने के एक घन्टे बाद पानी पीना चाहिये। घण्टे-भर से पहले हरगिज़ पानी न पीना चाहिये। पानी जितनी ही देर से पिया जाय और जितना ही कम पिया जाय अच्छा है। पानी थोड़ा-थोड़ा पीना चाहिये। एकदम से लोटे के लोटे न झुकाने चाहिएँ। अगर पानी की जगह "शहद का पानी" पिया जाय तो बहुत ही अच्छा हो।

(२) दमेवाले को खाना खाकर बहुत न सोना चाहिये। दिन में सोना तो बहुत ही बुरा है, क्योंकि "कफ" बढ़ता है।

(३) अगर शराब पीने की आदत हो और परहेज़ न हो, तो थोड़ी-थोड़ी पतली रिहानी शराब पीना अच्छा है।

(४) छाती और छाती की पसलियों को हाथों से, खरदरे कपड़े से—बिना तेल के—समानता से मलना हितकर है। समन्दर झाग और पपरिया नोन मिला कर मलना बहुत अच्छा है। पहले-पहल छाती को बहुत नर्मी से और धीरे-धीरे मलना चाहिये ; हाँ, कुछ देर बाद ज़ोर से मल सकते हैं।

(५) दमेवाले को मिहनत करना भी लाभदायक है, पर आरम्भ में थोड़ी-थोड़ी मिहनत करनी चाहिये। खाना सदा कुछ मिहनत करके खाना चाहिये।

(६) प्रकृति को नर्म रखना चाहिये। बहुत करके सलोनी मछली भोजन करने से पहले खानी चाहिये अथवा और सलोनी चीज़ों से प्रकृति को नर्म करना चाहिये। जो पथ्य और दवाएँ पेशाब लाने वाली हों, उन से बचना चाहिये।

मवाद की जगह जानने की तरकीबें।

(१) अगर छाती में बोझ मालूम हो, तो मवाद को फेंफड़ों में समझो।

(२) अगर छाती में जलन और चुभन सी हो, तो मवाद को अजलों और झिल्लियों में समझो।

(३) अगर मवाद आसानी से निकलता हो, तो समझो कि मवाद फेंफड़ों के मुंह में है अथवा पास ही है।

(४) अगर मवाद या रतूबत कठिनता से निकलती हो या बहुत खाँसी आकर निकलती हो, तो समझो कि मवाद फेंफड़ों की गहराई और उसके रोमाञ्चों में है।

(५) अगर गालों पर लाली हो; तो समझो कि मवाद फेंफड़ों में है।

(६) अगर आदमी के करवट लेने से मवाद इधर से उधर गिरता जान पड़े, तो मवाद को छाती के छेदों में उतरा समझो। इस दशा में खाँसी बहुत कम आती है, परन्तु देर में जाती है।

(७) अगर छाती चौड़ी हो, आवाज़ ज़ोरदार हो श्वास बड़ा हो और शीतल हवा से आराम मालूम हो, तो समझो कि प्रकृति गरम है।

(८) अगर छाती छोटी हो, आवाज़ धीमी हो, श्वास छोटा हो और सर्द-तर हवा से हानि हो तो समझो कि प्रकृति ठण्डी है। ऐसे मनुष्य की छाती में कफ बहुत होता है। उसे खाँसी और दमा बहुत होता है।

(९) अगर आवाज़ धीमी और बैठी हो, श्वास लेने में खरखरापन हो, बड़ी आवाज़ न निकल सके यद्यपि शरीरमें बल हो, उसकी प्रकृति तर समझो। ऐसे आदमी की छाती में तरी भरी रहती है, पलकें और आँखें सूजी रहती हैं तथा गालों का माँस नर्म और ढीला रहता है।

(१०) जिस की आवाज़ कुलंग की आवाज़ की तरह झरझरी होती है, उसकी प्रकृति खुश्क है। उसकी छाती में ज़रा भी तरी नहीं होती। खुश्की बढ़ जाने से श्वास तंगी से आता है।

चिकित्सा।

सब से पहले दोषों को नर्म करना ज़रूरी हैं, अतः हम नीचे दोषों को नर्म करने वाले नुसखे लिखते हैं:—

शर्बत जूफा ।

सौंफ १७॥ माशे, अजमोद १७॥ माशे, सूखा जूफा २४॥ माशे, अंजीर २० दाने, मुनक्के बीज रहित ३० दाने, उन्नाव २० दाने, लिहसौड़े २० दाने, मेथी १४ माशे, खतमी के बीज ५। माशे, सौसन के बीज ५। माशे और हंसराज २४॥ माशे,—इन को दो सेर पानी में, मिट्टी की हाँडी में, औटाओ ; जब एक सेर पानी बाकी रह जाय, उतार कर मल-छान लो। फिर इस काढ़े में "एक सेर बूरा और आध सेर गुलकन्द" मिला दो और पकाओ। जब गाढ़ा हो जाय उतार लो और समय पर काम में लाओ ।

गरम चटनी ।

मुनक्के, पीले अंजीर, छिली मुलहटी, बाकला के बीज, खशखाश के बीज, मीठे कद्दू के बीजों की मींगी, हंसराज, सोंफ, सूखा जूफा, बादाम की मींगी, मेथी, खतमी के बीज और इरसा—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो और शहद में मिला लो। यही गरम चटनी है ।

लऊक या चटनी ।

अंजीर, मेथी, सौंफ, सौसन की जड़ और सूखा जूफा—इनको कुल दो तोले लेकर, ३२ तोले पानी में औटाओ; जब २० तोले पानी रह जाय, मल कर छान लो और २ तोले "शहद" मिलाकर फिर पकाओ; जब गाढ़ी चाशनी हो जाय, उस में थोड़ी सी "जंगली प्याज़" भूनकर मिला दो और ज़रा सी "केशर" भी पीसकर मिला दो। यह चटनी चाटी जाती है ।

काढ़ा ।

अंजीर, बनफ़शा, उन्नाव, लिहसौड़े और गावजुबाँ की पत्ती—कुल तीन तोले लेकर ३२ तोले जल में काढ़ा पका लो। चौथाई पानी रहने पर मल-छान लो। फिर एक तोले मिश्री मिला कर पीओ।

नोट—जब इन दवाओं से मवाद नर्म हो जाय, वमन और दस्त कराने की चेष्टा करो।

वमनकारक दवाएँ ।

(१) मूली के काढ़े में "शहद" मिला कर पिलाओ।

(२) सफेद कुटकी के काढ़े से छाती के रोगों में वमन कराना बहुत ही अच्छा है। अगर काढे में "मूली का पानी" भी मिला दिया जाय, तब तो कहना ही क्या ?

मुँह में रखने को गरम गोलियाँ।

गारीकन की गोली।

गारीकून ५। माशे, मुगरबेल ५। माशे, मुलहटी ३॥ माशे, तुर्बुद ३५ माशे, यारजफयकरा ७ माशे, इन्द्रायन का गूदा ७ माशे और अंजरुत गोंद ७ माशे—इन सब को कूट-पीस कर छान लो। फिर "अलसी के काढ़े" से खरल करके गोलियाँ बना लो। जवान को मात्रा ४॥ से ७ माशे तक।

कफ निकालने वाली गोलियाँ।

मुलहठी, काली मिर्च और बूरा—बराबर-बराबर लेकर पानी के साथ पीस लो और बेर-समान गोलियाँ बना लो। इनके सेवन से जमा हुआ कफ निकल जाता है।

सीने की गरमी और ज्वर का उपाय।

गुलबनफ़शा ३॥ माशे, मुलहठी ३॥ माशे, गारीकून ६ रत्ती और कतीरा ३ रत्ती—इन को कूट-पीस-छान कर, पानी के साथ गोलियाँ बना लो।

नोट—श्वास रोग में गारीकून और अफतीयून (आकाश बेल) बड़ी लाभदायक हैं।

बन्द श्वास खोलने की दवा।

पपड़ी नोन १४ माशे और हालून के बीज ७ माशे, इन दोनों को महीन पीस कर १३ तोले १॥ माशे शहद के पानी में रोगी को पिला दो। इस से उसी समय गला खुल कर श्वास आने लगेगा। गला घुटने में यह उपाय अच्छा है।

धूनी कफ के दमे की।

शुद्ध गन्धक और शुद्ध हरताल बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो और बकरे के गुर्दे की चरबी में मिला कर टिकिया बना लो। इस टिकिया को आग पर डाल कर धूआँ पीओ; अथवा चिलम में धर कर तमाखू की तरह पीओ। इस धूनी से कफ के दमे में अवश्य लाभ होगा।

तीसरा भेद।

दिल की भाफ के परमाणुओं से जब छाती और फेंफड़े भर जाते हैं और वे भाफ के परमाणु इन भागों में बन्द हो जाते हैं, तब इनकी बहुतायत से हवा की राहें तंग हो जाती हैं; उस हालत में श्वास में तंगी आ जाती है, नाड़ी बड़ी और लगातार चलती है, प्यास बहुत लगती है और शीतल जल से सन्तोष नहीं होता।

इस दशा में श्वास लगातार आता है, पागलपन, छाती में जलन, हलक़ और जीभ में खुश्की, मुँह का स्वाद नमकीन और कड़वा ये लक्षण होते हैं। सिर्र बहुत होती है। रोगी को शीतल हवा से लाभ और गरम से हानि होती है।

चिकित्सा।

(१) बायें हाथ की वासलीक की फस्द खोलो।

(२) दिल की गरमी कम करो।

(३) हाथ-पाँव मलना और शीतल जल में रखना अच्छा है।

(४) फस्द खोलने के बाद अगर हानि न हो, तो सेब का शर्बत अथवा चन्दन या खुरफ़े के बीजों का शीरा दो अथवा कद्दू का पानी, बिहोदाने का लुआब या मीठे अनार का शर्बत पिलाओ। कपूर, चन्दन और गुलाब के फूल पीस कर छाती पर लेप करो अथवा कपूर, चन्दन और गुलाब-जल को मिला कर सूँघो।

(५) ईसबगोल का लुआब, शर्बत गुलबनफ़शा और शर्बत नीलोफर मिलाकर पिलाओ। सेब का शर्बत, चन्दन का शर्बत या जौ का पानी आदि शीतल और सन्तोषदायक पदार्थ सेवन कराओ।

चौथा भेद।

फेंफड़ों की गरमी भी दमे का कारण होती है। इस दशा में भी शीतल दवाएँ खिलाओ और छाती पर शीतल लेप करो।

पाँचवाँ भेद।

जब छाती के अवयव ढीले हो जाते हैं और खुल नहीं सकते, तब प्राकृतिक या स्वाभाविक गरमी से कमज़ोरी आ जाती है। ऐसा होने से श्वास फूलता और रुक-रुक कर आता है तथा नाड़ी में नर्मी आ जाती है।

चिकित्सा।

(१) मेथी १०॥ माशे, बनफ़शा ७ माशे, सौंफ़ ३॥ माशे और मुनक्का ३० दाने,—इन को औटाकर छान लो। फिर उस में सफेद कन्द या मिश्री डाल कर

पीओ । मात्रा १५ तोले तक । यह "मेथी का काढ़ा" है । पर, इस पाँचवें भेद के श्वास में, मेथी के काढ़े में कन्द की जगह "शहद" मिलाकर पीना चाहिये ।

(२) सौसन का तेल, नरगिस का तेल या बकायन का तेल छाती पर मलो ।

(३) कलौंजी को महीन पीस कर, "शहद और सोये के तेल" में मिलाकर छाती पर लेप करो ।

छठा भेद ।

जब फेंफड़ों में खुश्की पैदा हो जाती है, प्रधान तरी नष्ट हो जाने से फेंफड़े सुकड़ जाते हैं, तब श्वास रोग होता है । यह रोग बहुधा तपेदिक़ या क्षय रोग के अन्त में होता है ।

इस रोग में प्यास लगती है, आवाज़ मन्दी हो जाती है, थूक में कुछ भी नहीं निकलता और तर चीज़ों से दमे का ज़ोर कम हो जाता है ।

चिकित्सा ।

(१) फेंफड़े में तरी पहुँचाने के लिए जौका पानी, बकरी का ताजा दूध, औरत का दूध, लुआब, निचोड़े हुए पानी और तरी पहुँचाने वाली चटनी खिलाओ । छाती पर तरी पहुँचाने वाली मरहम या लेप लगाओ ।

(२) गुलबनफ़शा, खतमी, ककड़ी के बीज और नीलोफर पानी में औटाकर, बफारे की विधि से उस में रोगी को बैठाओ ।

सातवाँ भेद ।

शीतल हवा नाक में जाने से, शीतल चीज़ें खाने से और शीतल जल पीने से अथवा सर्दी पहुँचाने वाले और पदार्थों से फेंफड़ों में सरदी बढ़ जाती है, तब दम का रोग हो जाता है । यह रोग अक्सर बूढ़ों को होता है । आरंभ में तो कम होता है, पर अन्त में बढ़ जाता है ।

चिकित्सा ।

(१) गरमी पहुँचाने के लिए पृष्ठ २३१ के अन्त में लिखा हुआ "मेथी का काढ़ा" पिलाओ ।

(२) छाती पर गरम तेल मलो ।

(३) कबूतर और चकोर का मांस तथा अधभुने अण्डे की ज़र्दी खिलाओ ।

आठवाँ भेद ।

श्वास आने की राह में गाढ़ी हवा भर जाती है और हवा नाक में रुकती है, तब श्वास रोग होता है।

नरखरा हवा की जगह है। अगर उस में कुछ भी रह जाता या भर जाता है, तो श्वास भिंच कर आता है। अगर ऐसा होता है, तो छाती में भारीपन नहीं होता और खाँसी में कफ नहीं आता। यह दमा बादी पदार्थों से होता है।

चिकित्सा ।

(१) बादी तोड़ने और गाँठ खोलने के लिए दूसरे भेद में लिखे उपाय करो ।
(२) छाती पर तुलसी का तेल या हुब्बुलगार का तेल मलो ।
(३) छाती और पसलियों पर "सोया, बाबूना और दौना मरुवा" का लेप करो ।
(४) नोशदारु या संजीरनियाँ अथवा माजून अमरासिया सेवन कराओ ।
(५) जाबशीर की गोलियाँ भी अच्छी हैं, पर पठ्ठों के लिए हानिकारक हैं ।

माजून अमरासिया ।

जंगली गाजर के बीज ३।। माशे, अज़ख़र ३।। माशे, पहाड़ीकिरबिया ३।। माशे, सेब ३।। माशे, अजमोद के बीज ३।। माशे, कालीमिर्च १।।। माशे, सफेद मिर्च १।।। माशे, कड़वी कुटकी १।।। माशे, मुर्र ५। माशे, साफी ५। माशे, हब्बुलगार २ दाने और तुरकी केशर ७ माशे—सब को महीन पीस-छान कर, झागदार शहद में मिला कर रख दो। दो महीने मत छेड़ो ; इसके बाद खाओ। मात्रा ७ माशे रोज़।

जाबशीर की गोली ।

जाबशीर १।।। माशे लेकर अर्क़ सोंफ में डाल दो। फिर १।।। माशे इन्द्रायन का गूदा उसमें डाल दो। इसे शहद के पानी के साथ खिलाओ। इस रोग में जावशीर बहुत मुफीद है, पर पट्ठों को नुक़सानमन्द है, इसलिए गरम और खुशबूदार तेल शरीर पर मलो। इस उपाय से जबाशीर की भाफ पट्ठों में न जा सकेगी।

नवाँ भेद ।

जब बहुतसा मवाद छाती के छेदों में गिरता है, तब रोगी को करवट लेने से मवाद इधर-उधर गिरता मालूम होता है। खाँसी बहुत कम उठती है, पर जाती देर में है। कभी-कभी यह दमा फेंफड़ों की

सूजन में बदल जाती है ; क्योंकि फेंफड़ों का मांस बहुत नर्म होता है। बहुधा फेंफड़ों की प्रकृति ज़रूरत से ज़ियादा गरम, शीतल, बहुत तर या बहुत खुष्क हो जाती है।

अगर रोगी की आवाज़ बलवान हो, श्वास बड़ा हो, शीतल हवा से आराम मालूम होता हो; तो समझो कि, प्रकृति गरम हो गई है—गरमी बढ़ गई है।

अगर छाती छोटी हो, आवाज़ धीमी हो, श्वास तंग हो और सर्द-तर हवा से हानि होती हो, तो समझो कि प्रकृति शीतल हो गई है—सर्दी बढ़ गई है। इस हालत में, छाती में कफ बहुत होता है और खाँसी तथा दम का ज़ोर होता है।

नोट—इस श्वास का इलाज जलन्धर की तरह करना चाहिये।

ग्यारहवाँ भेद।

जब फेंफड़ों में या उन के पास के अंग—पसली, तिल्ली और जिगर यकृत वगेरः में सूजन आ जाती है, तब दमा होता है।

चिकित्सा।

(१) अगर दमा जिगर या यकृत की सूजन से हो, तो पहले वासलीक की फस्द खोलो। फिर हरी वारतरंगका पानी, काकनज का नितरा हुआ पानी, लौकी का पानी, खीरे का पानी, सिकंजबीन में मिला कर दो। अगर जिगर बलवान हो, तो उस दवा में "रेवन्दचीनी" मिला दो।

(२) अगर दमा तिल्ली की सूजन से हो, तो बायें हाथ की अनामिका और कनिष्ठका अंगुलियों के बीच की फस्द खोलो। गावजुबाँ के अर्क़ में जंगली प्याज़ की सिकंजबीन मिला कर पिलाओ।

तेरहवाँ भेद।

अगर आमाशय में मवाद भर जाता है, तो दिल की गति का खुलना रुक जाता है और उससे दमा हो जाता है।

चिकित्सा।

(१) अयारज की गोली खिलाओ। आमाशय को साफ करो

(२) पाचन शक्ति को ठीक करो।

चौदहवाँ भेद।

गले की सूजन से भी दमे का रोग हो जाता है। इसमें गले की सूजन का इलाज करो।

चौथा अध्याय

निदान-कारण ।

दाहकारक—छाती और कंठ में जलन करने वाले, भारी, अफारा करने वाले, रूखे और अभिष्यन्दी पदार्थ खाने से, शीतल जल पीने से, शीतल अन्न खाने से, शीतल जल में नहाने से, धूल और धूआँ के मुँह और नाक में जाने से, गरमी और हवा में डोलने से, कसरत-कुश्ती करने से, बोझ उठाने से, बहुत राह चलने से, मलमूत्रादि के वेग रोकने से और उपवास-व्रत करने से मनुष्यों को हिचकी, श्वास और खाँसी रोग होते हैं।

नोट—सुश्रुत में आम दोष से, छाती वगेरः में चोट लगने से, अति स्त्री-प्रसंग करने से, क्षय रोग की पीड़ा से, विषम भोजन करने से, भोजन-पर-भोजन करने वगैरः से भी हिचकी, श्वास और खाँसी की उत्पत्ति लिखी है।

सामान्य लक्षण ।

"प्राण और उदान वायु" कुपित होकर, बारम्बार ऊपर की तरफ जाते हैं, इस से हिक-हिक शब्द के साथ वायु निकलता रहता है।

हिचकी के भेद ।

"वायु" कफ से मिलकर पाँच तरह की हिचकियाँ पैदा करता है:—

(१) अन्नजा, (२) यमला,

(३) क्षुद्रा, (४) गंभीरा,

(५) महती।

पूर्वरूप

हिचकी रोग होने से पहले—कण्ठ और हृदय भारी रहते हैं, बादी से मुँह का स्वाद कसैला रहता है, कूख में अफारा रहता या पेट में गुड़गुड़ शब्द होता है।

अन्नजा हिचकी के लक्षण।

अनाप-शनाप खाने-पीने से, "वायु" अकस्मात् कुपित होकर, ऊपर की तरफ जाकर, अन्नजा नाम की हिचकी पैदा करता है।

नोट—जल्दी-जल्दी बहुत ही ज़ियादा खाने-पीने से, आमाशय का वायु हठात् कुपित हो जाता है और ऊपर की राह से निकलता है। उसके निकलने से हिग् हिग् आवाज़ होती है, उसे ही "हिचकी" कहते हैं। क्योंकि यह हिचकी अन्न के ज़ियादा खाने से होती है, अतः इसे अन्नजा यानी अन्न से पैदा हुई हिचकी कहते हैं। इस हिचकी की दवा-दारु नहीं करनी पड़ती। यह चन्द मिनट में आप ही शान्त हो जाती है।

यमला हिचकी के लक्षण।

जो हिचकी सिर और गर्दन को कँपाती हुई दो-दो बार निकलती है अथवा रुक-रुक कर दो-दो हिचकियाँ आती हैं और उनके आने से सिर और गर्दन काँपते हैं, उन्हें "यमला" कहते हैं।

नोट—यमल शब्द का अर्थ दो है, इसी से इसे "यमला" कहते हैं, क्योंकि एक बार में दो हिचकियाँ आती हैं। यमला हिचकी कष्टसाध्य होती है, पर कभी-कभी असाध्य भी हो जाती है। इसके साथ प्रदाह, दाह, प्यास और मूर्च्छा का होना घातक है।

क्षुद्रा हिचकी के लक्षण।

जो हिचकी कंठ और हृदय के सन्धिस्थान से पैदा होती तथा मन्द वेग और देर से निकलती है, उसे "क्षुद्रा" कहते हैं।

नोट—क्षुद्रा हिचकी देर-दर में और धीरे-धीरे उठती है। यह सुखसाध्य होती है। कहते हैं, यह जत्रु-मूल अर्थात् काँख और हृदय की सन्धि से उठती है।

गंभीरा हिचकी के लक्षण।

जो हिचकी नाभि के पास से उठती है, घोर गंभीर शब्द करती है और जिस के साथ प्यास, श्वास, पसली का दर्द और ज्वर आदि नाना उपद्रव होते हैं, उसे "गंभीरा" कहते हैं।

नोट—यह हिचकी रोगों के अन्त में प्रायः उपद्रव रूप से होती है। बहुत करके अन्तिम काल में पैदा होती और मनुष्य को मार डालती है। यह असाध्य समझी जाती है।

महती हिचकी के लक्षण।

जो हिचकी बस्ति—पेड़, हृदय और मस्तक आदि प्रधान मर्मस्थानों में पीड़ा करती हुई, शरीर के सब अंगों को कँपाती हुई, लगातार चलती रहती है, उसे "महती" या "महाहिक्का" कहते हैं।

नोट—इस हिचकी में पेड़ू, हृदय और मस्तक आदि मर्म फटते से जान पड़ते हैं और इस हिचकी का तार नहीं टूटता। यह हिचकी भी प्रायः रोग के उपद्रव के तौर पर, अन्तकाल में पैदा होती और मनुष्य को मार डालती है।

असाध्य लक्षण।

गंभीरा और महाहिक्का पैदा होने से रोगी की मृत्यु में सन्देह करना वृथा है, यानी अवश्य मृत्यु होती है।

इनके सिवा और हिचकियों में भी रोगी का शरीर फैल जाय, तन जाय, नज़र ऊपर की तरफ ज़ियादा रहे, नेत्र खड्डों में धुस जायँ, देह क्षीण हो जाय और खाँसी चलती हो—तो रोगी के बचने की उम्मीद नहीं।

जिस हिचकी रोगी की देह तन जाय, दृष्टि ऊँची हो जाय, मोह या बेहोशी हो, रोगी क्षीण हो जाय, भोजन से अरुचि हो और छींक ज़ियादा आवे—उस हिचकी वाला रोगी आरोग्य लाभ नहीं करे।

जिस रोगी के वातादि दोष अत्यन्त सञ्चित हों, जिसका अन्न छूट गया हो, जो दुबला होगया हो, जिसकी देह नाना प्रकार की व्याधियों से क्षीण हो रही हो,

जो बूढ़ा हो और जो बहुत ही ज़ियादा मैथुन करनेवाला हो—ऐसे आदमी के कोई एक हिचकी पैदा होकर प्राण नाश करती है।

अगर यमला हिचकी के साथ प्रलाप, दाह, प्यास और बेहोशी हो, तो यह भी प्राणनाश करती है।

जिस रोगी का बल क्षीण न होकर मन प्रसन्न हो, जिसकी धातुएँ स्थिर हों और इन्द्रियों में भरपूर ताक़त हो—वह यमला हिचकी वाला आराम हो सकता है। इन लक्षणों से विपरीत लक्षणों वाला आराम हो नहीं सकता।

हिचकी की भयंकरता।

यों तो हैज़ा और सन्निपात ज्वर आदि अनेक रोग प्राणनाशक हैं, पर श्वास और हिचकी रोग जैसी जल्दी मनुष्य के प्राण नाश करते हैं, वैसी जल्दी और रोग प्राण संहार नहीं करते। अतः हिचकी और श्वास रोग में ग़फ़लत हरगिज़ न करनी चाहिये।

हिचकी-चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।

(१) जो औषधि या अन्नपान "कफ और वायु" को हरने वाले, गरम और वायु को अनुलोमन करने वाले हों—वे सब श्वास और हिचकी में हित हैं।

(२) हिचकी और श्वास-रोगी के शरीर में पहले तेल की मालिश करनी चाहिये। इसके बाद स्वेदन क्रिया यानी पसीने निकालने के उपाय करने चाहियें तथा वमन और विरेचन कराना चाहिये। लेकिन अगर हिचकी और श्वास रोगी कमज़ोर हों, तो वमन विरचन न कराकर रोगनाशक औषधि दे देनी चाहिये। "सुश्रुत" में लिखा है :—

विरेचनं पथ्यतमं ससैंधवं,
घृतं सुखोष्णं च सितोपलायुतम्।

हिचकी रोग में सैंधा नोन मिला हुआ विरेचन या जुलाब अत्यन्त पथ्य है। निवाया घी मिश्री मिलाकर पीना भी हितकारी है।

और भी कहा है :—

सर्पिः कोष्णं क्षीरमिक्षो रसो वा,
नातिक्षीणे स्रंसनं छर्दनं च॥

हिचकी रोग में निवाया घी या ईख का रस हितकारक है। अगर हिचकी रोगी

अति क्षीण या कमज़ोर न हो, तो उसे दस्त और कय कराने चाहियें ; यानी बलवान रोगी को वमन विरेचन कराने चाहियें, कमज़ोर को नहीं ।
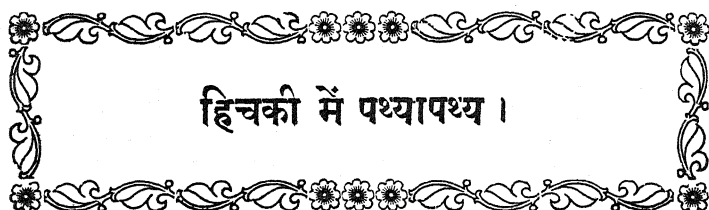
हिचकी में पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

पसीना देना, कय कराना, नस्य देना, धूआँ पिलाना, जुलाब देना, दिन में सुलाना, शीतल पानी के छींटे मारना, यकायक डराना-धमकाना, भुलाना, गुस्सा दिलाना और खुश करने वाली बात कहना, प्राणायाम कराना, जली हुई गरम मिट्टी सुंघाना, कुशा की कूंची या धारा से जल छोड़ना, नाभि के ऊपर दबाना, चिराग़ पर जलाई हुई हल्दी की गाँठ से दागना, पैरों से ऊपर दो अंगुल पर अथवा नाभि से ऊपर दो अंगुल पर दाग देना---ये सब काम हिचकी रोगी को पथ्य या हितकर हैं ।

पुरानी कुलथी, पुराने गेहूं, पुराने साँठी चाँवल, जौ, पका कैथा, लहसन, परवल, नरम मूली, पोहकरमूल, :काली तुलसी, शराब, खस का जल, गरम जल, बिजौरा नीबू, शहद, गोमूत्र तथा और सब वात-कफ नाशक अन्न पान हिचकी वाले को पथ्य हैं ।

बहुत करके जिन आहार विहारों से वायु का अनुलोम हो, वायु का नाश हो वे अथवा उष्णवीर्य क्रियाएँ हिचकी और श्वास में पथ्य हैं । हिचकी रोग में पेट पर और श्वास रोग में छाती पर तेल मल कर पसीना निकालना और कय कराना पथ्य है, परन्तु कमज़ोर रोगी को वमन कराना नुक़सानमन्द है । अगर वायु का उपद्रव ज़ियादा हो, तो इमली का भिगोया पानी पीना, नीबू निचोड़ कर मिश्री का शर्बत

पीना और नदी या ताल में स्नान करना पथ्य है ; पर अगर कफ बढ़ा हुआ हो, तो ये सब हानिकारक हैं, इस लिये दोष का विचार करके ये पदार्थ देने चाहियें।

आगे "रक्तपित्त" रोग में रात और दिन के समय जो खाने के पदार्थ पथ्य लिखे हैं, वही सब इस रोग में भी पथ्य हैं। हिचकी और श्वास वाले को रात को बहुत ही हल्का भोजन देना चाहिये।

हिचकी वाले को गरम घी मिला हुआ पुराने चावलों का गरमागर्म भात बहुत ही उपकारी है। अनेक बार ऐसे भात से ही हिचकी नाश हो जाते देखी है।

अपथ्य।

अधोवायु, मल-मूत्र, डकार और खाँसी आदि के वेग रोकना, धूल में रहना, धूप में बैठना या घूमना, मिहनत करना, हवा में रहना, विलम्ब या देर में हज़म होने वाले पदार्थ खाना, दाहकारी या जलन करनेवाली चीज़ें खाना, चौला, उड़द, पिट्ठी के पदार्थ, तिल के पदार्थ खाना, भेड़का दूध पीना, अनूप देश या बहुत पानीवाले देशों के पशुपक्षियोंका मांस खाना, दाँतुन करना, गुदा में पिचाकरि लगाना, मछली, सरसों, खटाई, तूम्बी का फल, कन्दों के साग, तेल में छौंकी हुई चौलाई का साग, भारी और शीतल खाने-पीने के पदार्थ हिचकी रोग में अपथ्य या हानि-कारक हैं।

भारी और देरमें पचने वाले पदार्थ खाना, ज़ियादा खाना, रात म जागना, चिन्ता फिक्र या क्रोध करना, रंज करना, लाल मिर्च, अमचूर और दही आदि भी अपथ्य हैं।

हिचकी नाशक नुसखे।

(१) बिजौरे नीबू के दो तोले रस में ६ माशे शहद और ३ माशे काला नोन मिला कर पीने से हिचकी आराम हो जाती है।

(२) मूंगा भस्म, शंख भस्म, हरड़, बहेड़ा, आमला, पीपर और गेरू—इन दवाओं का चूर्ण ना-बराबर घी और शहद में मिला कर चाटने से हिचकी आराम हो जाती है।

(३) रेणुका और पीपर के काढ़े में "हींग" डाल कर पीने से हिचकी निस्सन्देह शान्त हो जाती है। यह धन्वन्तरि का बचन है।

(४) एक पाव बकरी के दूध में दो तोले सोंठ और एक सेर पानी डाल कर औटाने और दूध मात्र रहने पर छान कर पीने से हिचकी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—"सुश्रुत" में लिखा है, यह दूध "मिश्री" मिलाकर खूब पेट भर कर पीना चाहिये।

(५) सेंधा नोन और खीलों का सत्तू मिला कर खाने और ऊपर से खट्टा रस पीने से हिचकी नाश हो जाती है।

(६) सोंठ, पीपर और आमले का चूर्ण शहद में मिला कर चाटने से हिचकी आराम हो जाती है।

(७) काँस की जड़ का चूर्ण शहद में मिला कर चाटने से भयंकर हिचकी नाश हो जाती है।

(८) मोर के पंख की दो रत्ती राख ६ माशे शहद में मिला कर चाटने से हिचकी आराम हो जाती है।

(६) बिजौरे नीबू के दो तोले रस में ३ माशे सेंधा नोन मिलाकर चाटने से हिचकी आराम हो जाती है।

(१०) ग्वारपाठे के रस में सोंठ का चूर्ण मिला कर पीने से तत्काल हिचकी बन्द हो जाती है।

(११) पोहकरमूल, जवाखार और काली मिर्च का चूर्ण गरम पानी के साथ खाने से अत्यन्त बढ़ी हुई हिचकी भी आराम हो जाती है।

(१२) बड़ी इलायची का चूर्ण और चीनी एक में मिला कर सेवन करने से हिचकी आराम हो जाती है।

(१३) केले की जड़ के रस में चीनी मिला कर पीने और नास लेने से हिचकी आराम हो जाती है।

(१४) राई महीन पीस कर पानी में मिला दो। जब राई नीचे बैठ जाय, ऊपर का पानी बारम्बार रोगी को पिलाओ। इससे भी हिचकी आराम हो जाती है।

(१५) गोलमिर्च का चूर्ण और चीनी शहद के साथ चाटने से हिचकी आराम हो जाती है।

(१६) मोर के पंख के चँदोवे की दो रत्ती भस्म ना-बराबर घी और शहद में चाटने से हिचकी बन्द हो जाती है।

(१७) सज्जीखार और नीबू का रस शहद में मिला कर चाटने से शीघ्र ही हिचकी बन्द हो जाती है।

(१८) हरड़ का चूर्ण गरम जल के साथ पीने से हिचकी नाश हो जाती है।

(१६) घी में जवाखार और शहद मिला कर पीने से हिचकी आराम हो जाती है।

(२०) कैथ के १ तोले स्वरस में शहद और पीपर का चूर्ण मिला कर पीने से हिचकी आराम हो जाती है।

(२१) बेर की गुठली की मींगी, रसौत और धान की खील—इन को पीसकर और शहद में मिलाकर चाटने से हिचकी बन्द हो जाती है।

(२२) पाटला के फल और फूल "शहद" में मिला कर चाटने से हिचकी आराम हो जाती है।

(२३) गेरू और कुटकी पीस कर और शहद में मिला कर चाटने से हिचकी नाश हो जाती है।

(२४) खजूर की मींगी और पीपर "शहद" में मिला कर चाटने से हिचकी आराम हो जाती है।

(२५) कचूर, मूसली, भारंगी, शिवलिंगी, नेत्र वाला और पोहकर-मूल का चूर्ण बना कर, चूर्ण के वज़न से अठगुनी चीनी मिला दो। इस चूर्ण से हिचकी और श्वास अवश्य नाश हो जाते हैं।

(२६) पीपर, देवदारु और सोंठ—इन का चूर्ण गरम पानी के साथ फाँकने से हिचकी और श्वास आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२७) पीपर, आमले और सोंठ—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण को चूर्ण के बराबर "शहद और मिश्री" मिलाकर बारम्बार चाटने से हिचकी नाश हो जाती है। यह चूर्ण श्वास पर भी अच्छा है। परीक्षित है।

नोट—वैद्य जीवन में लिखा है :—

विश्वाशिवाकणाचूर्णः ससितः समधुः स्मृतः।
नस्यवद्विश्वगुड़योर्हिक्काधिक्कारकारकः॥

सोंठ, पीपर और आमले का चूर्ण शहद और मिश्री मिला हुआ इस तरह हिचकी का तिरस्कार करता है, जिस तरह सोंठ और गुड़ मिली हुई नस्य हिचकी को तुच्छ समझती है। मतलब यह है, अगर सोंठ, पीपर और आमले के चूर्ण में शहद और मिश्री मिलाकर चटावें और पिसी हुई सोंठ में गुड़ मिलाकर सुंघावें तो हिचकी रोग खड़ा न रहे। वास्तव में, ये दोनों नुसखे रामबाण हैं। हिचकी में इन दोनों का चमत्कार देखना चाहिये।

(२८) मोर-पंख की दो रत्ती राख में एक माशे पीपर का चूर्ण और ६ माशे शहद मिला कर चाटने से सब तरह की हिचकी, घोर श्वास और अत्युग्र वमन आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(२९) सुगन्ध तृण, आमले और सोंठ का चूर्ण "मिश्री और शहद" मिला कर बारम्बार चाटने से हिचकी आराम हो जाती है।

(३०) बिजौरे नीबू का रस २ तोले, सेंधा नोन ३ माशे और मुलेठी का चूर्ण २ माशे—इन सब को मिला कर पीने से सब तरह की हिचकी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३१) साँभर नोन, सेंधा नोन और काला नोन,—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस में से ६ माशे चूर्ण फाँकने से हिचकी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३२) बहेड़े का पिसा-छना चार माशे चूर्ण एक तोले शहद में मिला कर चाटने से असाध्य श्वास और हिचकी भी आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३३) मुलेठी का चार माशे चूर्ण ६ माशे शहद में मिला कर चाटने से हिचकी नाश हो जाती है।

(३४) छोटी पीपरों का ५ माशे चूर्ण ६ माशे शहद में मिला कर चाटने से हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३५) बकरी के आध सेर खूब औटे हुए दूध में ६ माशे सोंठ का चूर्ण मिला कर पीने से हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(३६) काले धतूरे की जड़, पत्ते, फल और फूल—इन को खूब कुचल कर और चिलम में तमाखू की तरह रखकर, ऊपर से बिना धूएँ की आग रखकर, धूआँ पीने से हिचकी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(३७) सेंधे नोन को पानी में पीस कर सूंघने से पाँचों तरह की हिचकी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(३८) पीपल की लाख का काढ़ा बना कर, ४।५ बूँद नाक में टपकाने से सब तरह की हिचकियाँ आराम हो जाती हैं।

(३६) पुराने चाँवलों के गरम भात में "आध पाव गरमागर्म घी मिला कर खाने से हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४०) आध पाव गरम घी पी लेने से हिचकी आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४१) गर्मागर्म गाय का दूध पीने से हिचकी आराम हो जाती है।

(४२) दो माशे हरे पोदीने में दो माशे चीनी मिला कर चबाने से हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४३) गाय का लूनी घी ३ तोले और मिश्री १ तोले मिला कर खाने से हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(४४) कय करने या छींक लेने से हिचकी आराम हो जाती हैं। अगर भोजन करने के बाद हिचकी उठे, तब तो कय कर देना बहुत ही मुफीद है।

(४५) सौंफ नौ माशे, कासनी नौ माशे और इक्कीस कालीमिर्च— इन को पीस कूट कर खाने से हिचकी आराम हो जाती है।

(४६) नारियल की गरी २ रत्ती और मिश्री २ रत्ती मिलाकर खिलाने से बच्चों की हिचकी आराम हो जाती है।

(४७) अरीठों की माला पिरोकर बालक के गले में लटका देने से बालकों की हिचकी आराम हो जाती है।

(४८) तीन माशे कलौंजी चार माशे मक्खन में मिला कर खाने से हिचकी आराम हो जाती है। एक हकीम साहब इसे अपना आज़मूदा नुसखा कहते हैं।

(४६) झाड़ू का ज़ीरा औटाकर पीने से हिचकी नाश हो जाती है।

(५०) बबूल के सूखे या हरे काँटे दो तोले लेकर आध सेर पानी

में औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, मल-छान कर और "शहद" मिला कर पीओ। इस काढ़े से हिचकी रुक जाती है।

(५१) सिकंजबीन पानी में घोल कर पीने से बुख़ार की हिचकी आराम हो जाती हैं। इस नुसख़े से कय का मल या तो निकल जाता या पच जाता है।

(५२) कमल के बीज पीस कर पीने से हिंचकी आराम हो जाती है।

(५३) दूध पिलानेवाली माँ या धायके कपड़ेसे एक टुकड़ा कपड़ेका फाड़कर और पानीमें भिगोकर बालकके माथेपर रखनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(५४) सफेद ज़ीरा सिरकेमें औटाकर पीने से प्यास और हिचकी आराम हो जाती हैं।

(५५) जमालगोटा चिलममें रखकर धूआँ पीनेसे हिचकी बन्द हो जाती है।

(५६) चनेकी या अरहरकी भूसी चिलममें रखकर पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(५७) श्वास रोकने या प्राणायाम करनेसे, एकदम डरानेसे, धमकानेसे, हँसीकी बात करनेसे, भयंकर बात सुनानेसे, अनेक तरह के वात-कफनाशक उपाय करनेसे, हाथपाँव बाँधनेसे, अकस्मात् क्रोध, भय और हर्ष पैदा करनेसे, अनजानमें मुंहपर पानीके छींटे मारनेसे, छींक लाने और हिलानेसे हिचकी बन्द हो जाती है।

हिचकी नाशक नस्य वगैरः।

(१) मुलेठी और शहद अथवा पीपर और मिश्री अथवा सोंठ और गुड़—इनमेंसे किसी एकके सूंघनेसे हिचकी नाश हो जाती है।

(२) मैनशिल और गायके सींगका धूआँ पीनेसे हिचकी नष्ट हो जाती है।

(३) कूट अथवा राल अथवा कुशा इनमेंसे किसी एकका धूआँ पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है ।

(४) हींग और उड़द पीसकर, बिना धूएँके अंगारेपर डालकर धूआँ पीनेसे पाँचों तरहकी हिचकियाँ निश्चय ही आराम हो जाती हैं ।

(५) बिना धूएँकी आगपर हल्दी और उड़दका चूर्ण डालकर धूआँ पीनेसे महा भयंकर हिचकी भी आराम हो जाती है ।

(६) पीपलका चूर्ण और चीनी मिलाकर नास लेनेसे हिचकी आराम हो जाती हैं ।

(७) मक्खीका गू स्त्रीके दूधमें घिसकर सूंघनेसे हिचकी आराम हो जाती है ।

(८) लाल चन्दन स्त्रीके दूधमें घिसकर सूंघनेसे हिचकी आराम हो जाती है ।

(९) हींग, उड़द और गोलमिर्चका चूर्ण बिना धूएँकी आगपर रखकर नाकसे धूआँ पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है ।

(१०) गरम घीमें सेंधा नोन मिलाकर सूंघने अथवा गरम जलमें सेंधा नोन घोलकर सूंघनेसे हिचकी आराम हो जाती है ।

(११) हिचकी उठनेकी जगह—पेट और कोख आदिको घी या तेल लगाकर सेकनेसे हिचकी नाश हो जाती है ।

(१२) भेड़ या बकरीका मूत्र सूंघनेसे हिचकी बन्द हो जाती है ।

(१३) लहसनकी जड़ और प्याजकी जड़ इनको स्त्रीके दूधमें पीसकर नास लेनेसे हिचकी आराम हो जाती है ।

(१४) गाजरकी जड़ औरतके दूधमें पीसकर सूँघनेसे हिचकी आराम हो जाती है ।

(१५) मक्खीका गू आल या महावरके रसमें पीसकर सूँघनेसे हिचकी आराम हो जाती है ।

(१६) कालीमिर्च आगपर डाल-डालकर नाकमें धूआँ चढ़ानेसे

हिचकी आराम हो जाती है। अगर इससे लाभ न हो, तो कालीमिर्च और अजवायन दोनोंको आगपर डालो और धूआँ नाकमें चढ़ाओ। अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(१७) अनारकी कली, तुलसीके पत्ते और दूवको बराबर-बराबर लेकर पीस लो और कपड़ेमें रखकर ३।४ बूंद नाकमें टपकाओ। अवश्य हिचकी बन्द हो जायगी। परीक्षित है।

(१८) काले उड़द चिलममें रखकर, तमाखूकी तरह धूआँ पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

(१६) मूंज हाथसे मलकर चिलममें रखकर धूआँ पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

(२०) नारियलकी दाढ़ीकी राख पानीमें घोल दो। जब राख नीचे बैठ जाय, उस पानीको पीओ। हिचकीमें लाभ होगा।

(२१) आमके सूखे पत्ते चिलममें रखकर तमाखूकी तरह पीनेसे हिचकी आराम हो जाती है।

हिचकी पर बढ़िया नुसखे।

चन्द्रसूर रस।

कुछ हालों के बीज अठगुने पानी में डाल कर पकाओ। जब वे पकते-पकते गाढ़े और नरम हो जायँ, तब एक कपड़े में छान लो। इस पानी में से चार-चार तोले पानी बारम्बार पीने से अत्यन्त ज़ोर से उठी हुई हिचकी भी शान्त हो जाती है। इस को "चन्द्रसूर रस" कहते हैं।

पिप्पल्यादि लौह।

छोटी पीपर, आमले, मुनक्के, बेर की गुठली की गिरी, मुलेठी, चीनी, बायबिडंग और कूट—इन आठों को एक-एक तोले लेकर कूट-पीस कर

छान लो। फिर इस चूर्ण में आठ तोले "लोह भस्म" मिला कर, पानी के साथ खरल करो और पाँच-पाँच रत्ती की गोलियाँ बना लो।

यह हिचकी की महौषधि है ; पर दोष विचार कर, उचित अनुपान के साथ देने से वमन और घोर खाँसी को भी आराम करती है। परीक्षित है।

हिंस्राद्य घृत ।

चव्य, हरड़, पीपर, कुटकी, गंधतृण, पलाश, चीते की छाल, कचूर, काला नोन, भुइँ आमला, सेंधा नोन, बेलगिरी, तालीशपत्र, जीवन्ती और बच—हरेक दो-दो तोले और हींग ६ माशे लेकर, सिल पर पानीके साथ पीस कर लुगदी बना लो।

अब गाय का घी ४ सेर, गाय का दूध ८ सेर, पानी १६ सेर और ऊपर की लुगदी मिलाकर घी पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस घी की मात्रा ६ माशे से २ तोले तक है। इस घी के पीने से हिचकी, श्वास, सूजन, बादी बवासीर, गृहणी, हृदय की पीड़ा और पसलियों का दर्द आराम हो जाता है।

गर कोई वैद्य ऊपर के नियम पर ध्यान रख कर, कमज़ोर रोगी के ून को भी बन्द न करेगा तो परिणाम भयंकर होगा। वाग्भट्ट ने हा है :—

> अश्नतो बलिनोऽशुद्धं न धार्य्यं तद्धि रोगकृत्।
> धारयेदन्यथा शीघ्रमग्निवच्छीघ्रकारि तत्॥

भोजन करने वाले बलवान रक्तपित्त-रोगी के दूषित रक्त को रोका अच्छा नहीं है, क्योंकि इस दशा में खून बन्द करने से रोग हो जाते हैं; परन्तु कमज़ोर और खाना न खाने वाले रोगी का दूषित रक्त रोकना उचित है। अगर ऐसे रोगी का खून बन्द नहीं किया जाता, तो वह रोगी तत्काल मर जाता है।

कहिये पाठक! चिकित्सा-कर्म कैसा कठिन और कैसी बुद्धिमानी का काम है!

(२) रक्तपित्त रोग में भी वैद्य को वमन-विरेचन यानी कय और दस्त कराने होते हैं, पर यह काम भी अन्धाधुन्ध नहीं करना चाहिये। केवल बलवान और जवान रोगी को कय या दस्त कराने की शास्त्र में आज्ञा है; बूढ़े, बालक और कमज़ोर को नहीं। बूढ़े, बालक, कमज़ोर और शोष रोगी को तो रोग शान्त करने वाली दवा दे देनी चाहिये। रक्तपित्त में चाहे जिसे वमन और चाहे जिसे विरेचन करा देना भी हानिकर है। लिंग, गुदा और योनि से खून गिरने वाले नीचे के रक्तपित्त में "वमन" और मुख, नाक आदि ऊपरके अंगों से खून गिरने वाले— ऊपर के रक्तपित्त में जुलाब देना चाहिये। "सुश्रुत" में लिखा है :—

> अधः प्रवृत्तं वमनैरूर्द्ध्वमार्गं विरेचनैः।
> जयेदन्यतरं चापि क्षीणस्य शमनैरसृक्॥

नीचे के अंगों से खून गिरने वाले बलवान रोगी का रक्तपित्त वमन या कय करा कर शान्त करना चाहिये और ऊपर के मुखादि अंगों से खुन गिरने वाले बलबान रोगी का रक्तपित्त विरेचन या जुलाब देकर शान्त करना चाहिये अथवा और उपायों से आराम करना चाहिये।

लेकिन अगर रक्तपित्त रोगी कमज़ोर या दुर्बल हो, तो उसे वमन-विरेचन—कय और दस्त कराने वाली दवा न देनी चाहिये। ऐसे रोगी का रक्तपित्त चाहे ऊपर का हो चाहे नीचे का, उसे रोग शमन करनेवाली दवा दे देनी चाहिये। वाग्भट्ट जी कहते हैं :—

सन्तर्पणोत्थं बलिनो बहुदोषस्य साधयेत्।
उर्ध्वभागं विरेकेण वमनेन त्वधोगतम्॥

सन्तर्पण से पैदा हुआ, बलवान और बहुत दोष वाले मनुष्य का ऊपर का रक्तपित्त जुलाब देकर आराम करना चाहिये और नीचे का रक्तपित्त कय कराकर आराम करना चाहिये। खुलासा यह है :—

(१) बलवान भोजन करने वाले को वमन विरेचन कराओ
(२) ऊपर के रक्तपित्त में विरेचन या जुलाब दो।
(३) नीचे के रक्तपित्त में वमनकारक दवा दो।
(४) बलमांस-क्षीण कमज़ोर रोगी को वमन विरेचन मना है।
(५) बालक, बूढ़े और शोष रोग से पीड़ित रक्तपित्त रोगी को भी वमन-विरेचन मना है।
(६) कमज़ोर रोगी को वमन विरेचन न कराकर, रोग शमनकारी दवाएँ दे देनी चाहियें।

(३) लिख आये हैं कि, ऊपर के रक्तपित्त में बलवान रोगी को जुलाब देना चाहिये और नीचे के रक्तपित्त में वमन करानी चाहियें। इस में इस बात का ध्यान रखना चाहिये, कि पहले तर्पण कराकर तब जुलाब दिया जाय और दोषानुसार पेया पिला कर वमन कराई जायँ। नीचे के नुसख़े इन कामों के लिए उत्तम हैं :—

(१) दस्त कराने हों; तो अमलतास और आमलों का काढ़ा "मिश्री और शहद" मिलाकर पिलाना चाहिये। अथवा हरड़ का काढ़ा "मिश्री और शहद" मिला कर पिलाना चाहिये।

(२) वमन कराने के लिए—नागरमोथा, इन्द्रजौ, मुलेठी और मैनफल का काढ़ा, शीतल होने पर, "शहद और मिश्री" मिला कर पिलाना चाहिये।

(३) सरिवन, पिठवन, वृहती, कंटकारी और गोखरू—इन के काढ़े के साथ पकायी हुई पेया नीचे के रक्तपित्त वाले को परम हितकारी है। इससे रक्तपित्त में विशेष लाभ होता है।

रक्तपित्त के सामान्य लक्षण ।

रक्तपित्त रोग होने से मुँह, आँख, नाक, कान, गुदा, लिंग, योनि और शरीर के रोमों से खून बहा करता है ।

निदान-कारण ।

अधिक धूप में फिरने, मिहनत करने, शोक या रंज करने, बहुत राह चलने, अत्यन्त स्त्री-प्रसंग करने; तीक्ष्ण, नमकीन, खारी, खट्टे, गरम और कटु पदार्थ ज़ियादा खाने वगैरः वगैरः कारणों से जला हुआ पित्त खून को जलाता है, तब वह खून नीचे की या ऊपर की अथवा दोनों राहों से निकलने लगता है । नाक, कान, नेत्र और मुख ऊपर के और गुदा, लिंग, योनि नीचे के मार्ग हैं । जब खून बहुत ही कुपित होता है, तब समस्त रोम-कूपों से निकलता है ।

"सुश्रुत" में लिखा है, अधिक धूपमें फिरने आदि कारणों से रस बिगड़ कर पित्त को कुपित करता है । कुपित हुआ पित्त खून को दूषित करता है । दूषित खून ऊपर के या नीचे के रास्तों से गिरने लगता है । अगर खून आमाशय में जाता है, तो ऊपर की राहों से बहता है और अगर पक्वाशय में जाता है तो नीचे की राहों से बहता है । अगर दोनों स्थानों में दूषित होता है, तो दोनों राहों से निकलता है । कोई-कोई कहते हैं, कि यकृत और प्लीहा से रुधिर बहता है ।

खुलासा यह है, कि धूप में फिरने, लाल मिर्च आदि गरम पदार्थ खाने, जवाखार आदि क्षार ज़ियादा सेवन करने और आगके सामने बैठने वगेरः कारणों से "रस" दूषित होकर "पित्त" को दूषित करता है। दूषित पित्त रुधिर या खून को दूषित करता है, तब दूषित खून, खून-बहाने वाली नसों में आकर, विपरीत राह से चलकर, यकृत से आमाशय या पक्वाशय की तरफ जाता है। इस दूषित खून में मिलकर पित्त भी लाल हो जाता है। अगर खून आमाशय में जाता है, तो ऊपर का रक्तपित्त होता है; यानी मुँह, नाक, कान और नेत्रों से खून बहता है। अगर वह पक्वाशय में जाता है, तो गुदा, लिंग या योनि—नीचे के रास्तों से खून बहता है।

कोई कहते हैं, कफ से संसृष्ट रक्तपित्त आमाशय में जाकर उर्द्ध्वगामी होता है और वायु से अनुगत हुआ पक्वाशय में जाकर अधोगामी होता है। कफ और वायु दोनों से संसृष्ट दोनों राहों से बहता है। आमाशय में जाने वालेका मददगार "कफ" होता है, इसलिये उसे "कफज रक्तपित्त" कहते हैं। पक्वाशय में जाने वालेका मददगार "वायु" होता है, इसलिये उसे "वातज रक्तपित्त" कहते हैं। कफज रक्तपित्त मुँह, नाक, कान और नेत्रों से बहता है और यह साध्य होता है। वातज रक्तपित्त गुदा, लिंग या योनि से बहता है और यह कष्टसाध्य होता है। कफ और वात दोनों के संसर्ग से होने वाला रक्तपित्त ऊपर के और नीचे के दोनों रास्तों से बहता है

पूर्व्वरूप ।

शरीर में शिथिलता, शीतल पदार्थों की इच्छा, कंठ में धूआँ सा घुटना, वमन होना और साँस में लोहे की सी गन्ध आना—ये सब रक्तपित्त के पूर्व्वरूप हैं।

नोट—रोग पैदा होने पर, वातादि दोषों के आधिक्य-अनुसार अलग-अलग लक्षण प्रकट होते हैं।
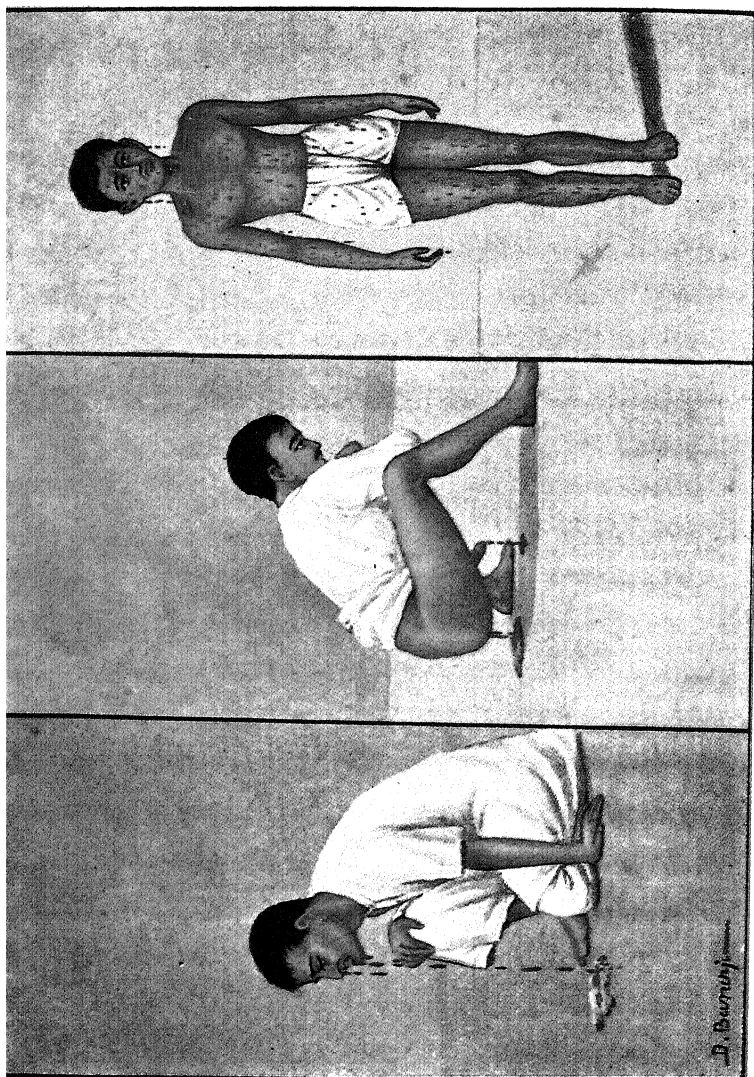
ऊर्ध्वग रक्तपित्त रोगी । अधोग रक्तपित्त रोगी । अत्यन्त कुपित रक्तपित्त रोगी ।

नोट—किसी भी रोगीके सभी अंगोंसे एक साथ खून नहीं गिरता। अगर ऐसा हो रोगी फौरन मर जावे। हमने कई चित्र बनानेके खर्चसे बचनेके लिए, विद्यार्थीके समझने भरको, चित्रमें कई अंगोंसे एक साथ खून गिरना दिखा दिया है।

वातज रक्तपित्त के लक्षण ।

अगर रक्तपित्त में वायु की ज़ियादती होती है, तो खून काला या लाल, झागदार, पतला और रूखा निकलता है। इस अवस्था में गुदा, योनि या लिंग से खून बहता है।

कफज रक्तपित्त के लक्षण ।

अगर रक्तपित्त में कफ की अधिकता होती है, तो खून गाढ़ा, पाण्डु वर्ण, कुछ चिकना और पिच्छल होता है। इस अवस्था में खून मुँह, आँख, नाक और कानों से बहता है।

पित्तज रक्तपित्त के लक्षण ।

अगर रक्तपित्त में पित्त ज़ियादा होता है, तो खून काढ़े की तरह काला, गोमूत्र, मोर की पूँछ, चन्द्रमा या अंगारे के जैसा अथवा धूआँ और अञ्जन के समान नीला या काला होता है।

संसर्ग से मार्ग भेद ।

कफ के संसर्ग से रक्तपित्त—मुख, नाक, कान और नेत्र—ऊपर के मार्गों से बहता है। वात के संसर्ग से—गुदा, लिंग या योनि—नीचे के रास्तों से बहता है। कफ और वात दोनों के संसर्ग से ऊपर की और नीचे की दोनों राहों से बहता है। तीनों दोषों के संसर्ग से होने वाले तीनों दोषों के लक्षण पाये जाते हैं।

रक्तपित्त के उपद्रव ।

कमज़ोरी, श्वास, खाँसी, ज्वर, वमन, मद या नशा सा रहना, शरीर का पीला पड़ना, दाह, मूर्च्छा, भोजन के बाद जलन होना, बेचैनी, हृदय में दर्द, प्यास, गला बैठना, सिर में गरमी; थूक में पीपसी आना या बदबूदार पानी सा आना, भोजन से वैर, अन्न न पचना और विश्राम न होना—ये रक्तपित्त के उपसर्ग या उपद्रव हैं।

असाध्य लक्षण।

अगर रक्तपित्त का खून मांस के धोवन जैसा हो, काढ़े के समान, हो, कीच के जल के समान हो अथवा उस में मेद, राध और खून मिले हों, कलेजे के समान हो, जामुन के पके हुए फल के समान हो, नीला हो, मुर्दे की सी दुर्गन्ध वाला हो, इन्द्रधनुष के रंगों के समान हो और साथ ही ऊपर लिखे उपद्रव भी हों तो वह असाध्य है।

जो रक्तपित्त रोगी आकाश आदि देखने योग्य और घट पट आदि अदृश्य पदार्थों को लाल देखता है, वह मर जाता है।

जो रक्तपित्त रोगी बारम्बार खून की कय करता है, जिसकी आँखें लाल हो जाती हैं, जिसकी डकारों के साथ खून आता है, वह मर जाता है।

रक्तपित्त-चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर रक्तपत्त-रोगी अन्न खाता हो और बलवान हो, तो शुरू में ही, उसके वेग से गिरते हुए दूषित खून को बन्द करना उचित नहीं है। क्योंकि रोका हुआ खून विसर्प, विद्रधि, प्लीहा, हृदय-रोग, पाण्डु रोग, संग्रहणी, गोला, क्षय, गलग्रह, पूतिनस्य, मूर्च्छा, अरुचि, कोढ़, बवासीर, विवर्णता और भगन्दर, आदि अनेक रोग पैदा करता है। *

अगर रक्तपित्त-रोगी दुर्बल हो और भोजन न करता हो तथा खून बहुत गिरता हो, तो उसके दूषित रक्त को बन्द कर देना ही उचित है।

---

* अगर रोका हुआ खून छोटी-छोटी शिराओं द्वारा चमड़े की तरफ जाता है, तो पाण्डु रोग करता है; अगर ग्रहणी की तरफ जाता है तो ग्रहणी रोग करता है। अगर पेट में कहीं रुका रहता है, तो रक्तगुल्म करता है। मर्दों को रक्तगुल्म नहीं होता, पर इस तरह हो जाता है।

रक्तपित्त रोगी का चित्र।

इस रोगको अँगरेज़ी में स्करवी (Scurvy) कहते हैं। इस में पित्त के कारण से रक्त दूषित होता है। विकृत रक्त शरीरके नौ द्वारों से गिर सकता है। जब रक्तवमन होती हैं, तब इसे हिमेंटेमिसिस (Hæmatemesis) कहते हैं। अगर खाँसी में खून गिरता है तो हिमोपटेसिस (Hæmoptesis) कहते हैं। जब नाक से खून गिरता है ऐपिस टैक्सिस (Epistaxis) कहते हैं। इसमें आँखों और कानों से भी खून गिर सकता है। जब होठों और मसूढ़ों से खून गिरता है तब इसे स्पन्जीगम (Spongygum) कहते हैं। जब गुदा से खून गिरता है, तब मैलिना (Malina) कहते हैं। इसी तरह

(४) जिसको ऊपर का रक्तपित्त हो तथा बल, मांस और अग्नि ये क्षीण न हुए हों, उसे पहले लंघन कराने चाहियें। अगर बल, मांस और अग्नि क्षीण हो गये हों, रोगी कमज़ोर हो और खाता-पीता न हो, तो लंघन न कराकर तृप्तिकारक आहारादि देने चाहियें। अगर भोजन देना हो ; तो घी, शहद और धान की खीलों का मन्थ बना कर देना चाहिये। अथवा खजूर, दाख, मुलेठी, और फालसे का काढ़ा चीनी मिलाकर और शीतल करके पिलाना चाहिये।

"सुश्रुत" में लिखा है—अगर रोगी क्षीण न हुआ हो— बलवान, पुष्ट और दीप्त अग्नि वाला हो और रक्तपित्त ज़ोर से हो, तो उसे पहले लंघन कराने चाहियें। उचित लंघनों के बाद, थोड़े चाँवलों की पेया पिलानी चाहिये ; तर्पण कराना चाहिये ; पाचन वस्तु या अवलेह अथवा दवाओं से पकाये घी देने चाहिएँ।

वाग्भट्ट जी कहते हैं,—यथास्वंमन्थपेयादिः प्रयोज्यो रक्षिताबलम् ; अर्थात् वमन-विरेचन से शुद्ध हुए मनुष्य को, बल की रक्षा के लिए, ऊपर के रक्तपित्त में मन्थादि और नीचे के रक्तपित्त में पेया आदि देने चाहियें।

ऊपर के रक्तपित्त में सोंठ रहित "षडंग पानी" पीने वाले को कड़वे, कसैले रस और उपवास—ये हित हैं। अगर लंघन न कराने हों, तो तर्पण पदार्थ —जैसे घी, शहद और खीलों का मन्थ आदि देने चाहियें। नीचे के रक्तपित्त में पहले पेया देनी हित है। ऊपर के रक्तपित्त में जिस तरह कड़वे, कसैले रस हित हैं, उसी तरह नीचे वाले में बृंहण और मीठे रस हित हैं।

(५) अगर रक्तपित्त रोग के साथ ज्वर भी हो, तो रक्तपित्त और ज्वर दोनों को नाश करने वाली दवा देनी चाहिये। अगर श्वास, खाँसी और स्वरभेद आदि उपद्रव हों, तो राजयक्ष्मा की तरह इलाज करना चाहिये। हम नीचे चन्द परीक्षित नुसखे लिखते हैं :—

(१) निशोथ, श्यामा-कालीसर, त्रिफला और पीपर—इन को बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। फिर चूर्ण से दूनी चीनी और शहद मिला कर मोदक बना लो। इन मोदकों के खाने से त्रिदोषज ऊपर का रक्तपित्त और ज्वर दोनों आराम हो जाते हैं।

(२) सुगन्धवाला, कमल, धनिया, लाल चन्दन, मुलेठी, गिलोय, अड़ूसा और खस—इन के काढ़े में मिश्री और शहद मिला कर पीने से ज्वर, दाह और प्यास सहित रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(३) चन्दन, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, धमासा, गिलोय, अड़ूसा, लोध और पीपर इन के काढ़े में शहद मिला कर पीने से कफ-मिला खून गिरना, प्यास, खाँसी और ज्वर नाश हो जाते हैं।

(४) अड़ूसे के स्वरस में तालीसपत्र का चूर्ण और शहद मिला कर पीने से कफपित्त, तमक श्वास, खाँसी, स्वरभंग और रक्तपित्त—ये नाश हो जाते हैं।

(५) शतावर, त्रिफला, रास्ना, कुंभेर और फालसे—इन का काढ़ा पीने से रक्तपित्त और शूल नष्ट हो जाते हैं।

(६) हरड़ का चूर्ण शहद के साथ चाटने से रक्तपित्त, शूल और अतिसार नष्ट हो जाते हैं।

(७) कहते हैं, घी के साथ दही खाने से रक्तपित्त आदि रोग शान्त हो जाते हैं।

नोट—घी और दही मिल कर रक्तपित्त को शान्त करते हैं, अकेला दही तो रक्तपित्त, वातरक्त, रुधिर की ख़राबी और कोढ़ आदि रोगों में हानिकारक है। हाँ, दही में अगर आमलों का रस या आमलों का चूर्ण मिला दिया जावे, तो रक्त और रक्तपित्त कुपित नहीं होते। आमवात, कफवात और शीतवात में भी दही नुक़सान करता है। कफ और पित्त की अधिकता में दही सदा ही हानिकर है।

(६) अगर रक्तपित्त रोगी के साँस में तत्ते लोहे की सी और डकारों में धूएँ की सी गन्ध आती हो, तो चार माशे इलायची का चूर्ण और आठ माशे बूरा मिलाकर खाना चाहिये।

(७) अगर कफ रहित और दीप्त अग्नि वाले मनुष्य का रक्तपित्त अनेक तरह के काढ़े पिलाने से भी आराम न होता हो, और रोग में "वायु" की अधिकता के लक्षण पाये जाते हों, नीचे का रक्तपित्त हो, तो उसे बकरी या गायका दूध पँचगुने पानी में औटा कर, मिश्री और शहद डालकर पीना चाहिये।

गोखरू और शतावर डालकर पकाया हुआ दूध—पीड़ा समेत पेशाब की राह से जाने वाले खून को बन्द करता है। सरिवन, पिठवन, मुगवन और माषपर्णी के साथ पकाया हुआ दूध मूत्रमार्ग से जाने वाले रक्तपित्त में लाभदायक है। मोचरस के साथ पकाया हुआ दूध गुदा से जाने वाले रक्त को बन्द करता है। बड़के अंकुरों के साथ पकाया हुआ दूध भी गुदा-माग के रक्तपित्त को नाश करता है। सोंठ, कमल और नेत्र वाला के साथ पकाया हुआ दूध भी गुदा-मार्ग के रक्तपित्त में हितकर है।

नोट—एक या दो तोले दवा, १६ तोले बकरी का दूध और सेर भर पानी—इन को मिला कर दूध पकाना चाहिये। जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाय, छान कर पीना चाहिये।

(८) रक्तपित्त रोग में "पित्त" के अधिक निकल जाने से प्रायः अग्नि नाश हो जाती है, उस समय मुख में विरसता और अन्न में अरुचि होती है। अगर अग्नि नष्ट हो गई हो और अरुचि हो, तो सोंठ और इन्द्रजौका चूर्ण "चाँवलों के धोवन" के साथ पीना चाहिये। जब यह पच जाय, तब नोनिया, माठा और अनार के द्वारा पकाई हुई पेया पीनी चाहिये। इस उपाय से अग्नि जग उठती है।

(९) अगर कफ के रक्तपित्त में खून की गाँठें पड़ गई हों, तो जवाखार को नाबराबर घी और शहद में मिला कर चाटना चाहिये।

(१०) रक्तपित्त रोगी को रक्तपित्त पैदा करने वाले आहार-विहार त्याग देने चाहियें, क्योंकि उनके बिना त्यागे रोग के आराम होने की आशा करना फिजूल है। इसी से वाग्भट्ट जी कहते हैं:—

यत्किञ्चिद्रक्तपित्तस्य निदानं तच्च वर्ज्जयेत्।

(११) नीचे के या बादी के रक्तपित्त रोग में "रक्तातिसार, रक्तार्श और रक्तप्रदर नाशक नुसख़े" भी काम देते हैं, पर ज़रा विचार और बुद्धि की ज़रूरत है।

(१२) "अडूसा" रक्तपित्तकी परमौषधि है, वैद्य को यह बात सदा याद रखनी चाहिये। अडूसे का काढ़ा या स्वरस अथवा वासावृत निश्चय ही रक्तपित्त वालों को आराम करते है।

(१३) नारंगी के फूलों का भभके-द्वारा खींचा हुआ अर्क या काढ़ा रक्तपित्त और हृदय रोग में हितकारी हैं।

नोट—नारंगी परमोपकारी फल है। इसके फल का रस कपड़े में निचोड़ कर पीने से गरम, तेज़ और उत्तेजक दवाओं के खाने से ख़राब हुई अग्नि, पित्त बिगड़ना और दाह आदि रोग नाश होते और मन में शान्ति आती है।

नारंगी के रस में मिश्री और ज़रासी छोटी इलायची पीस कर मिला लो और पी लो। इस से प्यास, जी मिचलाना, कय होना, अन्न की इच्छा न होना, पेट में जलन होना और पित्त का कोप आदि सारी शिकायतें तत्काल आराम हो जाती हैं। भोजन करके इस के पीने से अपूर्व आनन्द आता है और भोजन हज़म होकर भूख लगती है। अमीरों के सेवन करने योग्य चीज़ है; पर याद रखो, नारंगी का रस ही ज़ियादा मुफीद होता है। उस की फांकों में आस-पास जो सफेद से तांतु रहते हैं, वह बड़े ख़राब होते हैं। वे बड़ी कठिन से पचते और बहुधा आम मरोड़ी के दस्त और खून-आम के दस्त आदि पैदा करते हैं, क्योंकि वे दाँतों की तरह आँतों में भी इलझ जाते हैं। इन तांतुओं समेत फांकें गटक जाने से पेट में अनेक रोग हो जाते हैं। इसलिये ही हमने रस निकाल कर पीने की राय दी है। प्लेग के मौसम में, नारंगी का रस पीने वाले को प्लेग नहीं होता। नारंगी के रस में थोड़ासा सेंधानोन और गोल मिर्च मिला कर पीने से अजीर्ण आदि कई रोग नाश हो जाते हैं।

रक्तपित्त रोग में पथ्यापथ्य।

पथ्य।

नीचे के यानी लिङ्ग, योनि और गुदा द्वारा जाने वाले रक्तपित्त में रोगी को वमन करानी चाहिये; जबकि ऊपर के नाक आदि से जाने वाले रक्तपित्त में ज़ुलाब देकर दस्त कराने चाहियें। दोनों तरह के रक्तपित्तों में लंघन कराने चाहिएँ।

पुराने चाँवल, साँठी चाँवल, कोदों, सामाँ, जौ, मूंग, मसूर, चना, अरहर, मौंठ और खीलों का सत्तू—ये सब अन्न पथ्य हैं।

गाय और बकरी का घी-दूध, भैंस का घी, कटहर, चिरौंजी, केले की गहर, जल-चौलाई, परवल, बेंत की कोंपल, अदरख, पुराना पेठा, ताड़फल, ताड़फल के बीज, ताड़ी-रस, अड़ूसा, कुंदरू, अनार, खजूर, आमले, नारियल की गिरी, कसेरू, सिंघाड़े, कैथ, कमलकन्द, फालसे, सफेद तूम्बी, तरबूज़, दाख, मिश्री, शहत और ईख—ये सब पदार्थ पथ्य हैं।

चिंगट या वर्मि मछली, ख़रगोश, पिंडुकिया, हिरन, काला हिरन, लवा, सेह, कबूतर, बतख़, बटेर, बगुला, मेंढ़ा, दुम्बा और सफेद तीतर—इन सब जीवों के मांस पथ्य हैं।

शीतल जल, झरने का पानी, जल छिड़कना, जल में ग़ोता लगाना, सौ बार का धोया घी, तेल की मालिश, शीतल चीज़ों का उबटन, शीतल हवा, चन्दन लगाना, चाँदनी रात, विचित्र-विचित्र कहानी-क़िस्से, मनोहर बातचीतें, फव्वारे वाला मकान, केले के भीतर के कोमल पत्तों या कमल के पत्तों की शय्या, रेशमी कपड़े, सुखदायक फुलवाड़ी या बाग़, प्रियंगू और चन्दनादि का लेप किये हुए स्त्रियों से आलिंगन करना, कमल खिल रहे हों ऐसा तालाब, बरफ़ की फ़ुहार, सुन्दर शीतल पहाड़ी झरने, सुन्दर गाना, शीतल रेत, वैडूर्यमणि, हीरे, पन्ने और मोतियों का पहनना—ये सब रक्तपित्त रोग में पथ्य हैं।

ऊपर के रक्तपित्त में घी, शहद और चाँवलों की खीलों का भोजन बनाकर देना पथ्य है। सरिवन, पिठवन, दोनों कटेरी और गोखरू—"लघु पंचमूल" की इन दवाओं के काढ़े के साथ पकाई हुई पेया रक्तपित्त में पथ्य है।

जब बहुत खून गिरना बन्द हो जाय, अन्न पचाने की ताक़त हो जाय, तब दिन में पुराने चाँवलों का भात, मूंग की दाल, मसूर की

दाल, चने की दाल, परवल, करेले और पके कुम्हड़े का साग, बकरी का दूध, खजूर, अनार, सिंघाड़े, किशमिश, आमले, मिश्री, नारियल की गिरी, मीठे तेल या घी में पकाई हुई साग तरकारी या अन्य पदार्थ,—ये सब पथ्य हैं।

रात के समय—जौ, गेहूं की रोटी, परवल, करेले और पके कुम्हड़े का साग, बेसन के पदार्थ, घी और कम मीठे से बने हुए पदार्थ—देना पथ्य है।

जल।

पानी को औटाकर शीतल कर लेना चाहिये और वही रोगी को देना चाहिये। पानी औटाने की तरकीबें "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग में देखनी चाहियें।

अपथ्य।

कसरत-कुश्ती-मिहनत, पैदल राह चलना, धूप में घूमना, आग के सामने बैठना, क्रूर कर्म करना, मलमूत्र आदि वेगों को रोकना, हाथी घोड़े पर चढ़ना, पसीने निकालना, फस्द खोलना, धूआँ पीना या हुक्का चिलम अथवा सिगरेट पीना, मैथुन करना और क्रोध करना—ये सब अपथ्य हैं।

कुल्थी, गुड़, बैंगन, तिल, उड़द, सरसों, दही, दूध, कुएँ का पानी, पान, शराब, लहसन, सेम, विरुद्ध भोजन एवं चरपरे, खट्टे, नमकीन और जलन करने वाले पदार्थ—ये सब अपथ्य हैं।

देर में हज़म होने वाले और रूखे पदार्थ, दही, मछली, अधिक दस्तावर चीजें, सरसों का तेल, लाल मिर्च, ज़ियादा नमक, आलू, सेम, उड़द की दाल और पान प्रभृति से बहुत बचना चाहिये। ये हानि-कारक हैं।

दाँतुन करना, धूप में बैठना, ओस में बैठना या सोना, रात को जागना, गाना, ज़ोर से बोलना और नहाना भी हानिकारक है।

नोट—ऊपर जल में गोता लगाना अच्छा लिख आये हैं और यहाँ नहाना मना किया है, इसमें विचार बुद्धि की ज़रूरत है। बहुत कमज़ोर और बिगड़े हुए रोगी नहाने से मरेंगे—परन्तु बलवान और उपद्रव-रहित, जिनको नहाने से लाभ होगा, आराम होंगे। जैसे, जिसकी नाक से खून आता हो, पर और कोई तकलीफ न हो, वह नहाने या सिर पर पानी डालने से आराम होगा। कमज़ोर रोगी नहाना ही चाहे, नहाये बिना कल न पड़े, तो गरम जल को ठण्डा कर लो और उसी से स्नान करा दो; पर बुखार आदि हों तो स्नान मत कराना।

नोट—एक जगह शास्त्र में लिखा है—गवामजायाश्च पयो घृतं च घृतं महिष्याः पनसं प्रियालम् ; अर्थात् गाय और बकरी का दूध घी और भैंस का घी, कटहल और चिरौंजी प्रभृति पथ्य हैं। दूसरी जगह अपथ्य पदार्थों में लिखा है—सर्षपदधि क्षीराणि कौपं पयः ये अपथ्य हैं; अर्थात्, सरसों, दही, दूध और कूएँ का जल ये अपथ्य हैं। हम नहीं समझ सके यह क्यों लिखा है, क्योंकि गाय और बकरी दोनों ही के दूध रक्तपित्त को नाश करते हैं। गाय के दूध के सम्बन्ध में लिखा है— जीर्णज्वरंमूत्रकृच्छ्रं रक्तपित्तं च नाशयेत अर्थात् गाय का दूध जीर्णज्वर, मूत्रकृच्छ्र—पेशाब के कष्ट से होने और रक्तपित्त को नाश करता है। बकरी के दूधके सम्बन्ध में वैद्यक शास्त्र में लिखा है—बकरी का दूध कसैला, मीठा, शीतल, ग्राही और हल्का होता है। वह रक्तपित्त, अतिसार, क्षय, खाँसी और ज्वर को नाश करता है। हिकमत में लिखा है, बकरी का दूध गरमी के रोगों में बहुत मुफीद है; गरम मिज़ाज वालों को ताक़त बख्शता है; मुँह से खून आने, खाँसी, सिल—उरःक्षत और फेंफड़े के ज़ख्मों में लाभदायक है।

हमारी राय में गाय और बकरी दोनों के ही दूध रक्तपित्त में पथ्य हैं। इन दोनों में भी बकरी का दूध सब प्रकृतिवालों के लिए उत्तम है। गाय और बकरी के दूध के सिवाय और जीवों के दूध अपथ्य हो सकते हैं।

रक्तपित नाशक ग़रीबी नुसखे ।

(१) दूब का रस, अनार के फूलों का रस, गोबर या घोड़े की लीद का रस—चीनी मिलाकर पीने से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(२) अड़ूसे के पत्तों का रस, गूलर के फलों का रस और लाख का भिगोया पानी—इनको मिलाकर पीने से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(३) एक माशे या सवा माशे फिटकरी का महीन चूर्ण दूध में मिलाकर पीने से खून गिरना तत्काल बन्द हो जाता है

(४) लालचन्दन, बेलगिरी, अतीस, कुड़े की छाल और बबूलका गोंद,—ये सब मिलाकर दो तोले लो । बकरी का दूध १६ तोले और पानी एक सेर ले लो; फिर सबको मिलाकर औटाओ, जब दूध मात्र रह जाय, छान कर रोगी को पिलाओ । इस दवा से गुदा, योनि और लिङ्ग से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(५) शतावर और गोखरू की जड़ कुल दो तोले, बकरी का दूध १६ तोले और पानी एक सेर मिला कर औटाओ । दूध मात्र रहने पर छान कर रोगी को पिला दो । इससे योनि से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

नोट—योनि से खून गिरने में "प्रदर रोग की दवा" देने से खून बन्द हो जाता है ।

(६) पिठवन, मुगवन और माषानि कुल २ तोले, बकरी का दूध १६ तोले और जल एक सेर लेकर औटाओ और दूध मात्र रहने पर छान कर पिलाओ । इससे भी योनि से खून गिरना बन्द हो जाता है ।

(७) आमले घी में भूँजकर और काँजी में पीस कर मस्तक पर लगाने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर काँजी न हो, तो बिना काँजी में पीसे ही लगा दीजिये।

(८) चीनी-मिले दूध की नास लेने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(९) अनार के फूलों का रस नाक में चढ़ाने या नास लेने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१०) प्याज़ का स्वरस सूँघने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(११) गोबर का रस सूँघने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१२) महावार का पानी सूँघने से या नास लेने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है

(१३) आम की गुठली के रस की नास लेने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१४) हरड़-भिगोये पानी की नास लेने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है।

नोट—अगर कानों से खून गिरता हो, तो इनमें से ही कोई दवा कान में डालनी चाहिये।

(१५) जल में मिश्री मिला कर नाक से पीने से नाक से बहुत खून का गिरना भी बन्द हो जाता है।

(१६) दूध और घी में मिश्री मिला कर पीने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१७) ईख के रस में मिश्री मिला कर पीने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(१८) अगर खून की गाँठें गिरती हों, तो बहुत थोड़ी कबूतर की बीट "शहद" में मिलाकर चटाओ।

(१९) १०८ बार के धोये हुए मक्खन में अन्दाज का "कपूर" मिलाकर, सिर पर लगाने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) छै माशे गोभी के पत्ते पानी में पीस कर खाने से खून की कय होना या थूक में खून आना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२१) दो रत्ती शुद्ध अफीम खाने से थूक में खून आना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२२) कचनार के पत्तों का ६ माशे स्वरस पीने से मुँह से खून आना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२३) गाय का ताज़ा लूनी घी नाक में टपकाने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(२४) शीतल जल सिर पर डालने और शीतल ही जल के गरगरे-कुल्ले करने से नकसीर बन्द हो जाती है।

(२५) ईसबगोल सिरके में भिगोकर माथे पर लगाने से नकसीर आराम हो जाती है।

(२५) माजूफल का कपड़छन किया हुआ चूर्ण नाक में फूँकने से नकसीर आराम हो जाती है।

(२७) चक्की की गर्द नाक में फूँकने से नकसीर आराम हो जाती है।

(२८) उड़द का आटा नरम गूँद कर, तालू पर रखने से नकसीर बन्द हो जाती है।

(२९) बेर की पत्तियाँ पानी में पीस कर सिर पर मलने से नकसीर बन्द हो जाती है।

(३०) छोटी कटेरी पानी में पीस कर तालू पर लगाने और उसकी जड़का पानी नाक में निचोड़ने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

(३१) केले के पेड़ का रस सुड़कने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

(३२) आमले भिगोकर और टिकिया बना कर तालू पर बाँधने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

(३३) गाय का सूखा गोबर नाक में फूँकने और ताज़ा गोबर सिर पर रखने से नकसीर बन्द हो जाती है।

(३४) रसौत की राख नाक में फूँकने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

(३५) घोंघा, गाय का सींग और बकरी का सींग जला कर और छान कर नाक में फूँकने से नकसीर आराम हो जाती है ।

(३६) गधे की लीद्का रस नाक में टपकाने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

(३७) नीम के पत्ते और अजवायन पीस कर सिर पर लगाने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

(३८) कलमी शोरा "सिरके" में पीस कर माथे पर मलने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

(३९) गधे की लीद जला कर, उस की राख नाक म फूँकने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

(४०) जंगली कंडे की राख नाक में फूकने से नकसीर आराम हो जाती है ।

(४१) गूलर की छाल पानी में पीस कर तालू पर बाँधने से नकसीर बन्द हो जाती हैं ।

(४२) जौका आटा, मुलतानी मिट्टी, धनिया, ईसबगोल, आमले और गेरू—बराबर-बराबर पानी के साथ पीस कर माथे पर लगाने से नकसीर बन्द हो जाती है ।

(४३) ढाक के फूलों का अष्टमांश काढ़ा बनाकर और शहद मिलाकर पीने से नाक से और योनि से खून आना बन्द हो जाता है।

(४४) कहरुवे को पीसकर नाक में सूँघने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है। कहरुवे को पानी में पका कर सिर के ऊपर लेप करने से भी नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है और दिमाग़ से फेंफड़े में आने वाले दोष रुक जाते हैं।

नोट—कहरुवे को शीतल जल या शीतल शर्बत के साथ सेवन करने से खून की कय, खून के दस्त, मस्सों से खून गिरना, रक्त प्रदर, यकृत या मूत्र-मार्ग से निकलने वाला खून, कामला, मूत्रकृच्छ्र, मूत्र की जलन, आमाशय और मूत्रपिण्ड की कमज़ोरी ये सब रोग नाश हो जाते हैं।

कहरुवे को दूसरी उचित औषधि के साथ सेवन करने से मुँह से खून गिरना, जो फेंफड़े या छाती की किसी रग के फट जाने से गिरता है, बन्द हो जाता है। इस की मात्रा २ से ४ माशे तक है।

(४५) किशमिश, लाल चन्दन, लोध, और प्रियंगू इन सब का चूर्ण—अडूसे के पत्तों के रस और शहद के साथ पीने से नाक, मुँह, गुदा, योनि या लिंग से खून गिरना बन्द हो जाता है।

नोट—गुदा से गिरता हुआ खून बन्द करने को "रक्तातिसार या रक्तार्श" की दवा देनी चाहिये। इसी तरह लिंग से गिरते हुए खून को बन्द करने के लिए "पित्तज प्रमेह नाशक" दवा देनी चाहिये और योनि से गिरते हुए खून में "प्रदर नाशक औषधि" देनी चाहिये।

(४६) मिट्टी, दूब और आमले—इन को महीन पीस कर सिर पर लेप करने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(४७) नारियल का पानी पीने से रक्तपित्त या खून गिरना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(४८) मिश्री डाल कर बकरी का दूध पीने रक्तपित्त या खून गिरना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४६) अडूसे के पत्तों का रस ६ माशे, शहद ६ माशे और मिश्री

६ माशे पीने से रक्तपित्त या ख़ून गिरना आराम हो जाता है। परीक्षित है। लाख रुपये का नुसखा है। खाँसी और यक्ष्मा पर भी अकसीर है। कहा है :—

मध्वाटरुषकरसौर्यदि तुल्यभागौ कृत्वानरः पिबति पुरायतरः प्रभाते।
तद्रक्तपित्तमतिदारुणमप्यवश्यमाशुप्रशाम्यति जलैरिवबह्निपुञ्जः॥

जो कोई शहद और अड़से के पत्तों के रस को बराबर-बराबर मिलाकर सवेरे ही चाटता है, उसका दारुण रक्तपित्त भी निश्चय ही शीघ्रता से उसी तरह शान्त हो जाता है; जिस तरह कि जल से आग शान्त हो जाती है।

(५०) अड़ूसे के पत्तों को कूट कर रस निचोड़ लो। फिर उसमें "शहद और मिश्री" मिलाकर सवेरे ही पीओ। इससे दारुण रक्तपित्त या ख़ून गिरना भी आराम हो जाता है। ख़ूब परीक्षित है।

(५१) अड़ूसे के काढ़े में शहत और मिश्री मिला कर पीने से रक्तपित्त फौरन ही आराम हो जाता है।

(५२) अड़ूसे के निर्यूह में फूलप्रियंगू, मिट्टी, अञ्जन, लोध और शहद मिलाकर पीने से रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(५३) अड़ूसे के काढ़े में—कमल, मिट्टी, फूलप्रियंगू, लोध, अञ्जन और कमल-केशर का चूर्ण तथा मिश्री और शहद मिला कर पीने से ज़बर्दस्त रक्तपित्त भी नाश हो जाता है।

(५४) अड़ूसे के पत्तों के स्वरस में "तालीसपत्र का चूर्ण और शहद" मिलाकर पीने से तमक श्वास और रक्तपित्त रोग नष्ट हो जाते हैं।

(५५) अड़ूसे के पत्ते, दाख और हरड़ के काढ़े में "मिश्री और शहद" डाल कर पीने से खाँसी, श्वास और रक्तपित्त रोग नाश हो जाते हैं।

(५६) शतावर, त्रिफला, रास्ना, कुम्भेर और फालसे—इन का काढ़ा पीने से रक्तपित्त और शूल तत्काल नाश हो जाते हैं।

(५७) चन्दन, इन्द्रजौ, पाढ़, कुटकी, धमासा, गिलोय, अड़ूसे के पत्ते, लोध्र और पीपर इनके काढ़े में "शहद" मिला कर पीने से कफ-मिले खून का गिरना, प्यास लगना, खाँसी चलना और ज्वर ये सब नाश हो जाते हैं।

(५८) निशोथ, त्रिफला, कालीसर, पीपर, मिश्री और शहद—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस लो और मिला कर लड्डू बना लो। ये लड्डू त्रिदोषज उर्द्धगत रक्तपित्त और ज्वर को नष्ट करते हैं।

(५६) अड़ूसे के स्वरस में फूलप्रियंगू, सोरठ की मिट्टी, लोध्र, निशोथ का चूर्ण और शहद मिला कर पीने से मुँह, गुदा, लिंग और योनि से खून निकलना बन्द हो जाता है। जो खून किसी दवा से बन्द न हो, वह इस योगराज से बन्द हो जाता है।

(६०) ६ माशे हरड़ के बकलों का चूर्ण ६ माशे शहद के साथ सेवन करने से रक्तपित्त, शूल और अतिसार नष्ट हो जाता है। यह चूर्ण दीपन, पाचन और कफ नाशक है। खूब परीक्षित है।

(६१) ईख के गन्ने की गाँठ, नीलकमल का कन्द, सफेद कमल की केशर, मोचरस, मुलेठी, पद्माख, बड़ के अंकुर, दाख और खजूर बराबर-बराबर कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनाओ। इस में "शहद और मिश्री" डाल कर पीओ। इस से प्रमेह और रक्तपित्त नाश हो जाते हैं।

(६२) खैर, फूलप्रियंगू, कचनार और सेमल इन के फूलों को पीस कर और शहद में मिला कर खाने से रक्तपित्त नष्ट हो जाता है।

(६३) हरड़ को अड़ूसे के पत्तों के रस में सात दिन तक खरल करके "शहद" के साथ खाने से रक्तपित्त नष्ट हो जाता है।

नोट—हरड़ों को हर दिन अड़ूसे के रस में खरल करो और रात को सुखा दो। सवेरे ही, फिर ताज़ा रस में खरल करो और सुखा दो। इस तरह सात दिन करो।

(६४) ऊपर की तरकीब से पीपरों को सात दिन तक अड़ूसे के

रस में खरल करके, "शहद" के साथ खाने से रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(६५) दूध में लाख का चूर्ण और शहद मिला कर पीवे। ज्यों ही वह पचे कि, दूध के साथ भोजन करे और शराब पीवे। इस उपाय से घाव से निकलने वाला खून फौरन बन्द हो जाता है।

(६६) फूलप्रियंगू और अर्जुन की छाल पानी के साथ सिलपर पीस कर लुगदी बना लो। इस कल्क के सेवन करने से खून का गिरना तत्काल बन्द हो जाता है।

(६७) मुलेठी, त्रिफला और अर्जुन वृक्ष की छाल पानी के साथ सिल पर पीस कर रात को लोहे के बर्तन में रख दो। फिर सवेरे ही इस में "घी" मिला कर पीओ। इस के ऊपर शीतल अनुपान पीने और भूख लगने पर मिश्री-मिला बकरी का दूध पीने से रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(६८) ज़ियादा खून निकलने पर शहद के साथ "खून" पीना चाहिए। अथवा मांस और पित्त सहित बकरे का यकृत या कलेजा खाना चाहिए। अथवा कबूतर का मांस घी में भून कर, मिश्री मिला कर, शीतल करके, शहद के साथ खाना चाहिए—इन में से किसी भी उपाय से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

नोट—अगर खून बहुत ही गिरे और बन्द न हो, तो बकरे का खून १ तोले और शहद १ तोले मिला कर पीओ। परीक्षित है।

(६९) अनार के फूलों का रस, दूब का रस, आलू का रस और हरड़ का रस—इन सब को समान-समान मिलाकर नास देने से त्रिदोषज और अत्यन्त दारुण नाक से खून गिरना भी बन्द होजाता है।

(७०) दूब, हरड़, अनार के फूल, लाख और आमले,—इन सब के स्वरस निकालकर और मिलाकर, तीन दिन तक, नास देने से नाक से खून गिरना बन्द हो जाता है।

(७१) अगर कफ रहित दीप्त अग्निवाले मनुष्य का रक्तपित्त अनेक तरह के काढ़े पिलाने से भी आराम न हो, और उसमें "वायु की अधिकता" हो, तो रोगी को "दूध" बनाकर पिलाना चाहिये। बकरी या गाय का दूध १६ तोले लेकर, उसे एक सेर पानी में मिलाकर औटाना चाहिये; दूध मात्र रहने पर उतार लेना चाहिये और शीतल होने पर उस में "शहद और मिश्री" मिलाकर पिला देना चाहिये । इससे अवश्य लाभ होगा।

(७२) दाख और फूल प्रियंगू कुल मिलाकर २ तोले, बकरी का दूध १६ तोले और पानी एक सेर—इन को मिलाकर औटाओ। दूध मात्र रह जाने पर, छानकर रोगी को पिला दो। इस दूध से रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(७३) गोखरू और शतावर कुल २ तोले, दूध १६ तोले और पानी एक सेर लेकर ऊपर की तरकीब से दूध औटा कर पीने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(७४) खिरेंटी और मुलेठी कुल २ तोले, दूध १६ तोले और पानी १ सेर लेकर, ऊपर की तरकीब से दूध बना कर पीने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(७५) अड़ूसे के पत्तों का हिम बना कर और उसमें "शहद" मिला कर पीने से रक्तपित्त, खाँसी, ज्वर और क्षय रोग नष्ट हो जाता हैं।

(७६) अड़ूसे के पत्ते पीस कर, पुटपाक-विधि से पकाकर और रसमें "शहद" मिला कर पीने से रक्तपित्त, खाँसी, ज्वर और क्षय रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—रक्तपित्त और खाँसी आराम करने में "अड़ूसा" रामबाण है । कहा हैः—

वासायां विद्यमानायामाशायां जीवितस्य च ।
रक्तपित्ती क्षयी कासी किमर्थमवसीदति ? ॥

अड़ूसे के मौजूद रहने पर, जीवन की आशा करने वाले रक्तपित, क्षय और खाँसी के रोगी क्यों दुखी होते हैं ?

"वैद्यजीवन" में इस अड़ूसे पर एक बहुत ही मनोरञ्जक श्लोक लिखा है, उसे भी हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थ नीचे देते हैं :—

भिन्दन्ति के कुञ्जरकर्णपालिं किमव्ययं वक्ति रति नवोढ़ा।
संबोधनं नुः किमु रक्तपित्तं निहन्ति वामोरु वद त्वमेव॥

हाथियों के गंडस्थलों को कौन चीरते हैं? नयी ब्याही हुई दुलहन रतिकाल में कौनसा अव्यय कहती है? नृ शब्द का सम्बोधन-विभक्ति में कौनसा रूप बनता है? रक्तपित्त को कौनसी औषधि नष्ट करती है। हे सुन्दर जाँघों वाली स्त्री! इन चारों सवालों का जवाब तूही दे? स्त्री जवाब में कहती है—सिंहाननः। इस में चारों प्रश्नों का उत्तर हो गया। कैसे?

हाथियों के गण्डस्थलों को विदारण करते हैं—सिंहाः अर्थात् सिंह। नयी दुलहन मैथुन के समय पहले "न" कहती है। "नृ" का सम्बोधन-विभक्ति में "नः" रूप होता है। रक्तपित्त को सिंहानन यानी अड़ूसे का काढ़ा नाश करता है। एक सिंहाननः से चारों प्रश्नों का उत्तर हो गया। पाठक! कवि की चतुराई देखिये।

नोट—अड़ूसे के पत्तों का स्वरस ६ माशे, शहद ६ माशे और छोटी पीपर १ माशे—तीनों को मिलाकर चाटने से ३ दिन में खाँसी आराम हो जाती है। पहली ही मात्रा में आधी खाँसी चली जाती है। जब किसी दवा से खाँसी, श्वास और मुँह से खून आना बन्द न हो, आप हमारे कहने से ३ दिन मात्र इस नुसखे को देकर अपूर्व चमत्कार देखिये। परीक्षित है।

(७७) मुनक्का और हरड़ के काढ़े में "मिश्री और शहद" मिलाकर पीने से श्वास, खाँसी और रक्तपित्त तीनों नाश हो जाते हैं। अचूक नुसख़ा है। परीक्षित है।

(७८) अड़ूसे के पत्ते, दाख और हरड़—इनके काढ़े में "शहद और मिश्री" मिलाकर पीने से रक्तपित्त, श्वास और खाँसी आदि कठिन रोग आराम हो जाते हैं। अचूक नुसख़ा है। परीक्षित है।

(७९) इलायची के बीज ६ माशे, तेजपात ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, छोटी पीपर २ तोले, मिश्री ४ तोले, मुलहठी ४ तोले, पिंडखजूर ४ तोले और मुनक्का ४ तोले—इन सब को कूट-पीस कर बेर-बराबर गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के सेवन करने से रक्तपित्त और

उरःक्षत रोग नाश होते और बल बढ़ता तथा रुचि होती है । ये "एलादि बटी" रामबाण हैं । अनेक बार की परीक्षित हैं ।

(८०) ६ माशे कोह के फल का रस, ६ माशे शहदमें मिला कर चाटने से रक्तपित्त नाश होता और अग्नि दीप्त होती है ।

(८१) चार माशे पीपरों का चूर्ण, ६ माशे शहद में मिला कर चाटने से रक्तपित्त नाश हो जाता है ।

(८२) गूलर के फल अथवा खजूर अथवा दाख अथवा फालसे—इन चारों में से किसी एक को चार माशे लेकर और ६ माशे "शहद" में मिला कर खाने से रक्तपित्त नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(८३) पीपर के पेड़ की लाख ३ माशे, शहद ६ माशे और घी ३ माशे—इन तीनों को मिला कर चाटने से वमन, रक्तपित्त और छाती का दर्द ये तीनों पहली मात्रा में ही आराम हो जाते हैं । परीक्षित है ।

(८४) तोरईं, लौकी, पालक, कुलफा और मसूर की तरकारी खाने से रक्तपित्त अराम हो जाता है ।

(८५) सरफोंके का काढ़ा बनाकर, उसमें से १ या २ माशे बालक को पिलाने से बालक का रक्तपित्त आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(८६) एक चने-भर रसौत खिलाने से बालकों का रक्तपित्त और खून के उपद्रव नाश हो जाते हैं । परीक्षित है ।

(८७) शुद्ध सीपी धनिया, शुद्ध मूँगा मुलेठी, सोना-गेरू और मिश्री—बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस-छान लो । इसमें से तीन-तीन माशे चूर्ण, सवेरे-शाम या ज़रूरत के समय, खाकर ऊपर से अड़ूसेका स्वरस ५ तोले या कच्चा दूध पीने से मुँह या लिंग से खून गिरना, मुँह से लोहे की सी गन्ध आना वगैरः आराम होते हैं । यह भी रक्तपित्त की उत्तम और परीक्षित दवा है ।

(८८) धाय के फूल, अड़ूसा और मिश्री मिलाकर खाने से रक्तपित्त या ख़ून का गिरना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

(८९) लाल चन्दन, जटामासी, लोध, खस, कमल के फूल की केशर, नागकेशर, बेलगिरी, नागरमोथा, मिश्री, ह्रीबेर, सोनापाठा, कुड़ेकी छाल, कमल, सौंठ, अतीस, धाय के फूल ,रसौत, आमकी गुठली की गरी, जामुन की गुठली की गरी, मोचरस, नील कमल, मंजीठ, छोटी इलायची और अनार का छिलका—इन चौबीस दवाओं को एक-एक तोले लेकर पीस-छान लो ।

इस चूर्ण की मात्रा ३ या ४ माशे की है । एक-एक मात्रा "शहद" में मिलाकर चाटने और ऊपर से "चाँवलों का पानी" पीने से रक्तपित्त, ख़ूनी बवासीर, ज्वर, मूर्च्छा, मद, प्यास, अतिसार, वमन, स्त्रियों का रजोधर्म न होना आदि रोग नाश हो जाते हैं और गिरता हुआ गर्भ ठहर जाता है । परीक्षित है ।

(९०) जवासे की जड़, धनिया, कासनी, मुनक्के, अड़ूसे के पत्ते और टेसू के फूल—प्रत्येक तीन-तीन माशे लेकर एक सेर पानी में औटाओ ; जब चौथाई पानी रह जाय, मलकर छान लो ।

फिर इस काढ़े में पावभर "मिश्री" मिला कर चाशनी कर लो । इस चाशनी में सेबका गूदा आध पाव और सफेद कुम्हड़े का गूदा आध पाव मिला दो और पकाओ । जब चाटने लायक़ हो जाय, उस में बंसलोचन १ तोले, गुलाबके फूल २ तोले, छोटी एलायची के बीज १ तोले और कबाबचीनी ३ माशे पीसकर मिला दो और रख दो ।

इस में से १ या २ तोले अवलेह सवेरे ही चाटने और ऊपर से धारोष्ण दूध या ताज़ा पानी पीने से रक्तपित्त, खाँसी के साथ ख़ून आना, श्वास, खाँसी, तपेदिक, पसली का दर्द—ये सब आराम हो जाते हैं । रक्तपित्त पर बड़ा ही उत्तम नुसख़ा है । परीक्षित है ।

(६१) एक या दो रत्ती अभ्रक भस्म, छोटी इलायची और मिश्री अथवा छोटी हरड़ और गुड़ के साथ सेवन करने से रक्तपित्त आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६२) हल्दी के चूर्ण के साथ एक या दो रत्ती "बंगभस्म" खाने से रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(६३) बकरी के दूध में केशर उबाल कर खाने और ऊपर से दूध-भातका भोजन करने से रक्तपित्त आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६४) धनिया, किशमिश और बेदाने का काढ़ा रक्तपित्त को नाश करता है। परीक्षित है।

(६५) सत्यानाशी के पत्तों का रस गाय के दूध में मिलाकर पीने से ६ महीने में रक्तपित्त रोग जड़ से चला जाता है। परीक्षित है।

(६६) गुलकन्द-सेवती अथवा सेवती के फूल खाने से रक्तपित्त और रक्त-विकार नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(६७) कपूर भींडी की जड़ १ तोले शीतल जल में घिसकर, नित्य दोनों समय, ६ महीने तक, पीने से रक्तपित्त नाश हो जाता है।

(६८) कड़वे नीम के पत्तों का रस अथवा नीम के पत्तों का गाय के दूध में पीसा हुआ रस, ३ महीने तक पीने से रक्तपित्त और भयंकर कोढ़ नाश हो जाते हैं। रोगी को पथ्य पालन करना चाहिये। नित्य नीम के पत्तों के उबाले हुए पानी से स्नान करना चाहिये और नीम के वृक्ष के नीचे सोना चाहिये। परीक्षित है।

(६६) शतावर १ तोले, दशमूल ६ माशे, छोटी पीपर २ दाने और मुनक्के ५ दाने—इन को जौकुट करके, आध सेर दूध और आध सेर पानी में औटाओ ; जब दूध मात्र रह जाय, छान कर दो तीन दफे में पिला दो। इस दूध से खाँसी या कफ में खून आना, सिर-दर्द, कमज़ोरी, ज्वर बना रहना, श्वास, पसली का दर्द—ये सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१००) दूध और बड़की कोंपलों में शहद मिलाकर चाटने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(१०१) सफेद कमल के अंकुरों में शहद मिला कर चाटने से रक्तपित्त शान्त हो जाता है।

(१०२) गन्ने का रस निकाल कर एक मिट्टी की हाँडी में डाल दो और फिर बराबर का जल मिला दो। कुछ कमल भी उसमें डाल दो और रात को छत पर रख दो। सवेरे ही छान कर और "शहद" मिलाकर पीने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(१०३) ककड़ी की जड़ सिल पर पीस कर और उसमें "शहद" मिलाकर, चाँवलों के धोवन के साथ खाने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(२०४) मुलेठी को सिल पर पानी के साथ पीस कर और "शहद" मिला कर पीने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(१०५) करंजुए के बीज पानी के साथ सिल पर पीस कर, लुगदी बना लो। फिर उस लुगदी में "मिश्री और शहद" मिला कर खाने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(१०६) दूध में बराबर का पानी मिला कर और लस्सी बनाकर पीने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(१०७) बथुए के बीजों का चूर्ण "शहद" मिलाकर चाटने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(१०८) मुनक्का, खस, पद्माख और मिश्री—इन को रात के समय पानी में भिगो दो। सवेरे ही मल-छान कर और "शहद" मिलाकर पीलो। इस हिम से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(१०९) बंसलोचन और मिश्री "शहद" में मिलाकर चाटने से रक्तपित्त आराम हो जाता है।

(११०) कमल की राख "शहद" मिलाकर चाटने से रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

(१११) बिजौरे नीबू की जड़ और उस के फूल पीस कर चाँवलों के पानी के साथ पीने से रक्तपित्त आराम हो जाता है । अगर नाक से खून गिरता हो, तो इसी पानी को नाक में टपकाना चाहिये ।

(११२) अधोगत या नीचे के रक्तपित्त में बड़ के दूध की ४।५ बूंदें, दिन में तीन चार बार, छटाँक-भर पानी या चीनी में मिलाकर खाने से अवश्य आराम होता है ।
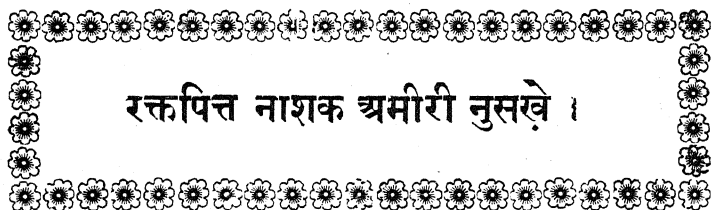
रक्तपित्त नाशक अमीरी नुसखे ।

ह्रीवेरादि क्वाथ ।

सुगन्धवाला, नील कमल, खस की जड़, अड़ूसा, गिलोय, मुलहठी, नागरमोथा, लाल चन्दन और पुराना धनिया—इन सब को कुल दो तोले लेकर और काढ़ा बनाकर, शीतल होने पर "शहद और मिश्री" मिलाकर पीने से ऊपर का और नीचे का, दोनों तरह का रक्तपित्त मय प्यास, दाह और ज्वर के नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

प्रियंग्वादि क्वाथ ।

अड़ूसे के काढ़े में—प्रियंगू-फूल, लोध, रसौत और कमीले का चूर्ण मिलाकर सेवन करने से प्रबल रक्तपित्त भी नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—केवल अड़ूसे के पत्तों के रस में "मिश्री और शहद" मिलाकर पीने से भयंकर रक्तपित्त भी नाश हो जाता है ।

अटरूषकादि क्वाथ।

अड़ूसे की जड़ की छाल, किशमिश और हरड़—इन के काढ़े में "शहद और मिश्री" मिलाकर पीने से श्वास, खाँसी और रक्तपित्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

धान्यकादि हिम।

पुराना धनिया, आमले, अड़ूसा, किशमिश और पित्तपापड़ा—इन को कुल दो तोले लेकर और कुचल कर, रात को, पानी में भिगो दो और सवेरे ही मल-छान कर पीलो। यही हिम है। इससे रक्तपित्त, ज्वर, और सूजन ये नाश हो जाते हैं।

एलादि गुटिका।

छोटी इलायची १ तोले, तेजपात १ तोले, दालचीनी १ तोले, छोटी पीपर ४ तोले, मुलेठी ४ तोले, चीनी ४ तोले, पिंडखजूर ४ तोले और दाख ४ तोले—इन सब को पीस-छान कर और "शहद" में मिला कर तीन-तीन माशे की गोलियाँ बना लो। बलाबल अनुसार एक या दो गोली की मात्रा देने से उरःक्षत, खाँसी, वमन, ज्वर, हिचकी, कय में खून आना और प्यास आदि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

शतावरी घृत।

शतावर की सिल पर पिसी लुगदी ८ तोले, दूध ३२ तोले, गायका घी ३२ तोले और मिश्री ८ तोले—सब को कड़ाही में डालकर मन्दाग्नि से पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस की मात्रा ६ माशे दो तोले तक है। बलाबल अनुसार इस घी के सेवन करने से रक्तपित्त, अम्लपित्त, क्षय और श्वास रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—हमने अड़ूसे के पत्तों का स्वरस ६ माशे, मिश्री ६ माशे और शहद

६ माशे—सवेरे-शाम चटा कर और भोजन के समय यह शतावरी घृत खिलाकर तथा मुख में "एलादि बटी" रखाकर कितने ही रक्तपित्त रोगी आराम किये हैं। १०० में ६० को लाभ हुआ है।

खण्डकाद्य लौह ।

शतावर, गिलोय, अड़ूसे की जड़ की छाल, गोरख-मुण्डी, खिरेंटी, मूसली, खैरकाष्ठ, त्रिफला, भारंगी और पोहकरमूल—प्रत्येक दवा बीस-बीस तोले लेकर जौकूट कर लो और ६४ सेर पानी में डालकर पकाओ ; जब आठ सेर पानी रह जाय, उसे छान लो।

इस काढ़े में मैनसिल से फूंका हुआ कान्त लौह ४८ तोले, चीनी ६४ तोले और घी ६४ तोले मिला कर ताँबे के बर्तन में फिर पकाओ, जब गाढ़ा हो जाय, नीचे उतार लो और शीतल होने पर ३२ तोले "शहद" मिला दो।

फिर बंसलोचन, शुद्ध शिलाज़ीत, काकड़ी-सिंगी, छोटी पीपर, बायबिडंग, सोंठ, सफेद ज़ीरा, त्रिफला, धनिया, तेजपात, काला ज़ीरा, काली मिर्च और नागकेशर—इन को चार-चार तोले लेकर पीस-कूट कर छान लो और ऊपर के शहद मिले शीरे में मिला दो और हाथों से खूब मथो। एक दिल हो जाने पर घी के चिकने या काँच के साफ बासन में रख दो। इसी का नाम "खंडकाद्य अवलेह" है।

इस की मात्रा १॥ माशे से ३ माशे तक है। इस को चाटकर ऊपर से गाय का दूध पीना चाहिये। इस लौह पर मांस रस—शोरबा, दूध, भारी और पुष्टिकर अन्नपान एवं चिकने पदार्थ खाने चाहियें।

इसके सेवन करने से रक्तपित्त, क्षय, खाँसी, पसली का दर्द, वात-रक्त, प्रमेह, शीतपित्त, वमन, ग्लानि, सूजन, पाण्डुरोग, कोढ़, तिल्ली, उदर रोग, अफारा, मूत्र बहना और अम्ल—ये सब रोग नाश होते हैं। "यह खंडकाद्य लौह" नेत्रों को हितकारी, पुष्टिकारक, मैथुनशक्ति

बढ़ानेवाला, मंगलरूप, आरोग्यदायक, पुत्र पैदा करनेवाला, कामाग्नि बढ़ानेवाला और शरीरमें हल्कापन करनेवाला है।

इसके खानेवाला नारियलका पानी, चौपतियाका साग, बथुआ, सूखी मूली, जीवन्तीका साग, परवल, कटेरीके फल, बैंगन, पके आम, खजूर और मीठे अनार, अनूपदेशी जीवोंका माँस और जिनके नामका पहला अक्षर "क" हो, उन सबको त्याग दे यानी इनसे परहेज़ रखे। इसके खानेवालेको बकरेका मांस, कबूतरका मांस, तीतरका मांस, ख़रगोश और कृष्णसार हिरन आदि जीवोंका मांस हितकर है। परीक्षित है।

खण्डकूष्माण्डक।

उत्तम पेठेका स्वरस पाँच सेर, गायका दूध ५ सेर और आमलों का महीन चूर्ण ३२ तोले,—इन सबको मिलाकर, धीरे-धीरे मन्दाग्निसे पकाओ। जबतक पिंड न बँधे पकाते रहो। ज्योंही पिंड बंधने लगे, इसमें ३२ तोले साफ सफेद बूरा डाल दो और उतार लो। यहाँ "खण्डकूष्माण्डक" है।

इसके दो तोले नित्य खानेसे रक्तपित्त, अम्लपित्त, दाह, प्यास और कामलारोग नष्ट हो जाते हैं।

खण्डकूष्माण्ड अवलेह।

उत्तम पुराना, बड़ा और मोटा पेठा लाकर छील और काट लो। फिर उसके भीतरसे उसके बीज और बीजोंकी जगह निकालकर फेंक दो। अब इसमेंसे पाँच सेर पेठेका गूदा लेकर, दस सेर पानीमें पकाओ, जब आधा पानी रह जाय, उतार कर ठण्डा करो।

फिर इस पानीमेंसे पेठेके टुकड़े निकालकर एक रेज़ीके मोटे कपड़ेमें रख-रखकर दबाओ और उसी बर्तनमें पानी निचोड़ लो।

इस पानीको रख दो, क्योंकि यही पानी आगे काम आवेगा। निचोड़े हुए पेठेके टुकड़ोंको थोड़ी देरतक धूपमें सुखा लो।

अब एक ताम्बेके बासनमें ६४ तोले घी डालकर, चूल्हेपर रखो और आग दो ; जब घी कलमलाने लगे, उसमें धूपमें सुखाये हुए पेठे के टुकड़े डालकर भूनो। जब वे लाल-सुर्ख़ हो जायँ, उसी आगपर रखे हुए बासनमें पेठेका निचोड़ा हुआ पानी और ५ सेर मिश्री डाल दो और धीरे-धीरे पकाओ। जब अवलेहकी सी चाशनी हो जाय, नीचे उतार लो। फिर कुछ गरम रहते-रहते उसमें—आठ तोले पीपर, आठ तोले सोंठ, आठ तोले सफेद ज़ीरा, दो तोले धनिया, दो तोले तेजपात, दो तोले छोटी इलायची, दो तोले कालीमिर्च और दो तोले दालचीनी—इन सबका पिसा-छना चूर्ण मिला दो और एकदम शीतल हो जानेपर ३२ तोले शहद मिला दो और किसी साफ बर्तनमें रख दो। यही "खण्डकूष्माण्ड अवलेह" है।

इसकी मात्रा एकसे दो तोले तक है ; तो भी बल और अग्निका बिचार करके मात्रा स्थिर करनी चाहिये। अनुपान—बकरीका दूध है।

इसके सेवन करनेसे रक्तपित्त, पित्तज्वर, प्यास, दाह, प्रदर, दुबलापन, वमन, खाँसी, श्वास, हृदयरोग, स्वरभेद, क्षत, क्षय और अन्त्रवृद्धि रोग नष्ट होते हैं। यह बलवर्द्धक और पुष्टिकारक है। परीक्षित है।

वासाकूष्माण्ड खण्ड।

अड़ूसेकी जड़की छाल २५६ तोले लेकर जौकुट कर लो और ६४ सेर पानीमें औटाओ ; जब १६ सेर पानी रह जाय, उतार कर काढ़ा छान लो।

उत्तम पेठा लाकर छील-काट लो। उसके बीज और बीजोंकी जगहको निकाल फैंको। अब ५ सेर पेठेके टुकड़ोंको दस सेर पानी

में डालकर औटाओ ; जब आधा पानी रह जाय, उतार लो और पेठे के टुकड़ोंको रेज़ीके कपड़ेमें रखकर पानी निचोड़ लो। इन निचोड़े हुए पेठेके टुकड़ोंको कुछ देर धूपमें सुखा लो।

अब अढ़ाई सेर पेठेके टुकड़े लेकर ६४ तोले घीमें भूनकर लाल कर लो। फिर ऊपरका १६ सेर काढ़ा, पेठेके घीमें भूने हुए टुकड़े २॥ सेर, पेठेका स्वरस २५६ तोले और चीनी पाँच सेर इन सबको मिलाकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब मसाला पकते-पकते अवलेहके समान गाढ़ा हो जाय, नीचे उतार लो और गरम रहते-रहते उसमें बंसलोचन, आमले, नागरमोथा, भारंगी, तेजपात, छोटी इलायची और दालचीनी प्रत्येक एक-एक तोले ; भूरिछरीला, सोंठ, धनिया और कालीमिर्च प्रत्येक चार-चार तोले और छोटी पीपर १६ तोले इन सबका चूर्ण मिला दो। जब शीतल हो जाय, उसमें ३२ तोले शहद भी मिला दो। इसीका नाम "वासाकूष्माण्ड" है।

इसको मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। इसके सेवन करनेसे खाँसी, श्वास, क्षय, हिचकी, रक्तपित्त, हलीमक, हृदयरोग, अम्लपित्त और पीनस रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

वासाघृत।

अड़ूसेकी जड़की छाल, पत्ते और शाखा कुल ८ सेर लेकर ६४ सेर जलमें पकाओ। जब १६ सेर पामी रह जाय, काढ़ा छानकर धरलो। अड़ूसेके फूल १६ तोले लेकर सिलपर पीसकर लगदी बना लो।

अब गायका घी चार सेर, काढ़ा १६ सेर और लुगदी—इन तीनों को लोहेकी कड़ाहीमें मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ और लकड़ीकी कलछीसे खूब घोटो। घी मात्र रहनेपर उतार कर छान लो।

इस घीमें घीसे चौथाई शहद मिलाकर पीनेसे रक्तपित्त रोग आराम हो जाता है। घीकी मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक है।

बलाबल देखकर मात्रा नियत करनी चाहिये । यह रक्तपित्तकी सर्वोत्तम औषधि है । परीक्षित है ।

नोट—बङ्गसेनने चौगुने जलमें काढ़ा बनानेकी राय दी है । पर हम अठगुने जलमें ही पकाते हैं ।

सप्तप्रस्थ घृत ।

शतावर, बाला, दाख, भुईं कुम्हड़ा, ऊख और आमले—प्रत्येकका स्वरस या काढ़ा चार-चार सेर तैयार करलो ।

फिर चार सेर घी और ऊपरके काढ़ोंको मिलाकर पकाओ । जब घी मात्र रह जाय छान लो । फिर जितना घी हो, उसकी चौथाई "चीनी" उसमें मिला दो ।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है । इसके सेवन करने से रक्तपित्त, उरःक्षत, क्षय और पित्तशूल आदि रोग नष्ट होते हैं । यह घी बल, वीर्य और ओजवर्द्धक है । परीक्षित है ।

वृहद्वासा घृत ।

गायका घी ४ सेर ; अड़ूसेकी जड़, पत्तों और शाखोंका स्वरस १६ सेर ; गायका दूध ४ सेर तैयार रखो । अगर अड़ूसेका स्वरस न निकले तो चौगुने या अठगुने जलमें काढ़ा बनालो ।

अड़ूसेके पत्ते, चिरायता, कुड़ेकी छाल, नागरमोथा, मुलेठी, चन्दन, खसकी जड़, महुआ, अनन्तमूल, सारिवा, कमल, पद्माख, त्रायमाण, कुमुदिनी, मूर्वा और मोतियेके पत्ते—इनको एक-एक छटाँक लेकर, सिलपर पानीके साथ पीसकर, कल्क या लुगदी बनालो ।

अब घी, काढ़ा, दूध और लुगदीको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ । जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो ।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है । इसमें मिश्री और

शहद घीसे चौथाई मिलाकर पीनेसे दारुण रक्तपित्त, पैत्तिक गोला, वातगुल्म, स्वरभेद, हलीमक और रक्तपित्तसे होनेवाले अन्य रोग शीघ्र ही नाश हो जाते हैं।

दूर्वाद्य घृत ।

दूब, कमल, कमलकी केशर, मंजीठ, एलुआ, आमले, लोध, खस, नागरमोथा, चन्दन और पद्माख—एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीस लो ।

दाख, मुलेठी, कुम्भेर और सफेद चन्दन एक-एक तोले लेकर सिलपर पानीके साथ पीस लो ।

पुराने चाँवलोंका भिगोया हुआ पानी ६४ तोले, बकरीका दूध २५६ तोले, घी ६४ तोले और ऊपरकी दोनों लुगदी—इन सबको मिलाकर औटाओ ; जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और रख दो ।

इस घीकी मात्रा ६ माशेसे दो तोले तक है। इसके पीनेसे वमनके साथ ख़ून आना बन्द हो जाता है। नास लेनेसे नाकसे ख़ून गिरना बन्द हो जाता है। कानोंमें डालनेसे कानोंसे ख़ून गिरना बन्द हो जाता है। आँखोंमें डालनेसे आँखोंसे ख़ून गिरना बन्द हो जाता है। गुदामें इसकी पिचकारी देनेसे लिङ्ग और गुदासे ख़ून गिरना बन्द हो जाता है और शरीरमें इसकी मालिश करनेसे रोमकूपों या रोमोंके छेदोंसे ख़ून आना बन्द हो जाता है। गिरते हुए ख़ूनको बन्द करनेकी यह सबसे अच्छी दवा है। वैद्योंको यह घी घरमें रखना चाहिये। बड़ा काम देता है। परीक्षित है।

महादूर्वाद्य घृत ।

दूब, नीलकमल, कमल, मंजीठ, एलुआ, रास्ना, नागरमोथा, खस, चन्दन, मुलेठी, पद्माख, लोध, कूट, लाल चन्दन, हल्दी, दारुहल्दी,

काकोली, क्षीरकाकोली, सारिवा और अनन्तमूल—इन बीस दवा-ओंको एक-एक तोले लेकर सिल पर पानीके साथ पीसकर लुगदी बनालो ।

फिर गायका घी ६४ तोले, बकरीका दूध २५६ तोले, चाँवलोंका धोवन २५६ तोले, दूबका स्वरस २५६ तोले और ऊपरकी लुगदी—सबको मिलाकर घी पकाओ ; जब घी मात्र रह ज़ाय, उतार कर छान लो ।

इस घीके पीनेसे ख़ूनकी कय होना आराम होता है। इस घीको नाक, कान, आँख वगैरःमें दूर्वाद्य घृतकी तरह इस्तेमाल करनेसे सब जगहोंसे ख़ून गिरना बन्द हो जाता है। यह घी समस्त पित्तविकार, स्फोटक, त्रिदोष, कृमिदोष और विसर्प रोगमें काम देता है ।

शृंगाद्य घृत ।

बड, गूलर और पीपलके पेड़के अङ्कुर एक सेर लेकर सोलह सेर जलमें पकाओ ; जब चार सेर पानी रह जाय, इसमें एक सेर घी डाल कर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय छान लो। यही "शृंगाद्य घृत" है। यह अग्निवेश मुनिका कहा हुआ है ।

इस घीमें आधा भाग मिश्री और चौथाई शहत मिलाकर सेवन करनेसे ऊपरका और नीचेका—दोनों तरहका रक्तपित्त आराम हो जाता है ।

महाशतावरी घृत ।

शतावरका रस १२८ तोले, गायका दूध १२८ तोले और घी ६४ तोले तैयार रखो ।

ज़ीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, दाख, मुलेठी, मुगबन, मषवन, विदारीकन्द और लालचन्दन—इनको एक-एक तोले लेकर, सिलपर पानीके साथ पीस लो ।

अब शतावरका रस, दूध, घी और लुगदीको मिलाकर घी पका लो। जब घी पक जाय, छान लो। फिर उसमें घीसे चौथाई मिश्री और शहद मिला दो।

इस घीके खानेसे पित्तरोग, वातरक्त, शुक्रकी क्षीणता, अङ्गोंकी जलन, सिरकी जलन, पित्तज्वर, योनिशूल, दाह और पित्तका मूत्र-कृच्छ्—ये सब आराम होते हैं।

दूर्वाद्य तैल।

दूब, मुलेठी, मँजीठ, दाख, ईखका रस, चन्दन, दोनों तरहकी शारिवा और हल्दी इनमेंसे प्रत्येकको दो-दो तोले लेकर पानीके साथ सिलपर पीस लो।

अब इस लुगदी, ६४ तोले तेल और २५६ तोले पानीको मिलाकर तेल पकालो। इस तेलकी मालिश करनेसे रक्तपित्त और वातका नाश होता, बल बढ़ता और शरीर चन्द्रमाके समान हो जाता है।

कामदेव घृत।

असगन्ध ४०० तोले, गोखरु २०० तोले, शतावर, विदारीकन्द, शालपर्णि, खिरटी, गिलोय, पीपरके वृक्षके अङ्कुर, कमलगट्टा, पुनर्नवा कुंभेरके फल और उड़द—प्रत्येक चालीस-चालीस तोले—इन सबको जौकुट करके ६४ सेर जलमें औटाओ; जब सोलह सेर पानी रह जाय, मलकर छान लो।

दाख, पद्माख, कूट, पीपर, लालचन्दन, तेजपात, नागकेशर, कौंचके बीज, नील कमल, दोनों शारिवा, जीवक, ऋषभक, ऋद्धि, वृद्धि, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, मुगवन और मषवन,—प्रत्येक एक-एक तोले और मिश्री ८ तोले—सबको पीस कर लुगदी बनालो।

ईखका रस २५६ तोले, दूध २५६ तोले, घी ६४ तोले, १६ सेर

काढ़ा और ऊपरकी लुगदी—सबको मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही "कामदेव घृत" है।

यह घी राजाओंके सेवन करने योग्य है। इसके पीने-खानेसे रक्त-पित्त, क्षत, क्षीण, कामला, वातरक्त, हलीमक, पाण्डुरोग, विवर्णता, स्वरभंग, मूत्रकृच्छ्र और पसलियोंका दर्द आदि रोग नाश हो जाते हैं। यह घी बलवर्द्धक, वीर्यकारक, रसायन—बुढ़ापा नाश करनेवाला, ओज और तेज बढ़ानेवाला, स्वरको सुन्दर करनेवाला, आयु बढ़ानेवाला, प्राणोंकी रक्षा करनेवाला, सूखे और दुर्बल इन्द्रियवालोंको पुष्ट करनेवाला और सारे रोगोंसे पीछा छुड़ानेवाला है।
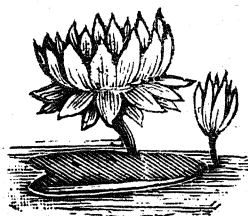
अम्लपित्तके निदान-कारण ।

दूध-मछली प्रभृति संयोग-विरुद्ध भोजन, दूषित अन्न, खट्टे रस, दाहकारक पदार्थ तथा पित्तको कुपित करनेवाले खाने-पीनेके और-और पदार्थोंसे—वर्षादि ऋतुओंके अम्लपाकी जलों और वैसी ही औषधियोंसे पहलेका सञ्चित हुआ पित्त, विदग्ध होकर, अम्लपित्त रोग पैदा करता है ।

नोट—इस रोगमें पित्त विशेष रूपसे कुपित होता है ; इसीलिये पित्त कोपकारक पदार्थ लिखकर भी, खट्टे रस और दाहकारक पदार्थ अलग-अलग फिर लिखे हैं। शराब और माठा आदि पीनेके तथा उड़द प्रभृति खानेके पदार्थ पित्तको कुपित करते हैं।

अम्लपित्तके लक्षण ।

अम्लपित्त रोग होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण देखनेमें आते हैं —

(१) कड़वी और खट्टी डकारें आती हैं ।

(२) हृदय (छाती) और गलेमें जलन होती है ।

(३) अन्न नहीं पचता ।

(४) उबकाइयाँ आती हैं यानी जी मिचलाता है ।

(५) देहमें भारीपन, अत्यन्त अरुचि और ग्लानि ये लक्षण भी होते हैं ।

अम्लपित्तके दो भेद ।

अम्लपित्त दो तरहका होता है :—

(१) ऊर्द्धग=ऊर्द्धगामी=ऊँची गतिवाला ।

(२) अधोग=अधोगामी=नीची गतिवाला ।

नोट—ऊर्द्धग अम्लपित्त होनेसे मुँहकी राहसे वमन होकर दूषित मल निकलते हैं और अधोग अम्लपित्त होनेसे गुदाकी राहसे दूषित मल निकलते हैं। मतलब यह है, कि ऊपरवालेमें वमन होती हैं और नीचेवालेमें अतिसार—दस्त होते हैं । जो वैद्य ठीक निदान नहीं करते, धोखा खाते हैं—ऊपरके अम्लपित्तको वमन रोग और नीचेवालेको अतिसार समझ लेते हैं ।

उर्द्धग अम्लपित्तके लक्षण ।

ऊपरका अम्लपित्त होनेसे हरे, नीले, पीले, काले, ज़रा लाल, लाल, अत्यन्त निर्मल, मछलीके धोवनके समान, अत्यन्त चिकने, लिबलिबे, कफ-मिले, खारे, तीखे और कड़वे रसवाले पित्त वमनमें गिरते हैं ।

अधोग अम्लपित्तके लक्षण ।

नीचेका अम्लपित्त गुदामार्गसे बहता है। इसमें प्यास, दाह—जलन, मूर्च्छा, भ्रम, मोह, उबकाई, मन्दाग्नि, कोठ—चकत्ते, रोमाञ्च, पसीने और शरीरमें पीलापन प्रभृति विकार होते हैं ।

नोट—नीचेके अम्लपित्त वालेको चारों ओर सब्ज़ी ही सब्ज़ी मालूम होती है ; यानी विपरीत ज्ञान होता है ।

अम्लपित्तकी विशेष अवस्था

(अम्लपित्तके उपद्रव)

भोजन किये हुए पदार्थोंके विदग्ध होनेके पीछे अथवा बिना भोजन किये ही कभी-कभी खट्टी और कड़वी वमन होती हैं ; कड़वी

ओर खट्टी डकारें आती हैं ; कंठ, हृदय और कोखमें जलन होती है ; सिरमें दर्द होता है ; हाथ पाँवमें दाह होता है ; सन्ताप होता है—देह गरम रहती है ; भयंकर अरुचि होती है ; कफ-पित्त जनित ज्वर होता है ; शरीरमें खुजली, चकत्ते और फुन्सियाँ होती हैं तथा अन्नका विदग्ध पाक एवं ग्लानि आदि रोग-समूह होते हैं। ये सब अम्लपित्तके उपद्रव या विशेष अवस्थाके लक्षण हैं।

खुलासा—हाथ-पाँवमें जलन, शरीरका गरम रहना, अत्यन्त अरुचि, ज्वर, चकत्ते, खाज और कोठ ये मुख्य उपद्रव होते हैं।

अम्लपित्तमें दोषोंका संसर्ग।

दोष-भेदसे अम्लपित्त तीन तरहका होता है :—

(१) वातसंयुक्त, (२) वातकफसंयुक्त। (३) कफसंयुक्त।

वैद्यको दोषोंके चिह्नोंसे जानना चाहिये, कि अम्लपित्त वात-सम्बन्धी है या वातकफ-सम्बन्धी अथवा कफ-सम्बन्धी ; क्योंकि-उर्द्ध्वमार्गी अम्लपित्त होनेसे वमन होती हैं और वैद्य भ्रमसे "वमन रोग" समझ लेता है। अगर अम्लपित्त अधोगामी होता है, तो वैद्य उसे "अतिसार" समझ लेता है। इसलिए खूब विचार कर निदान करना चाहिये, ताकि सन्देह न रहे।

दोष-भेदोंसे लक्षण भेद।

वातज अम्लपित्त होनेसे—कम्प, प्रलाप—बकवाद, मूर्च्छा, मद, शरीरमें झनझनाहट, ग्लानि, अन्धकार देखना, विभ्रम, मोह और रोमाञ्च होना—ये लक्षण होते हैं।

कफज अम्लपित्त होनेसे—कफ थूकना, शरीरमें भारीपन, जड़ता, अरुचि, शीत, ग्लानि, वमन, मुख और छातीमें कफका लिहसा रहना, जठराग्निके बलका नाश, खुजली और अधिक नींद आना—ये लक्षण होते हैं।

वातकफज अम्लपित्त होनेसे—कड़वे और चरपरे रसकी डकारें ; छाती, कोख और गलेमें जलन ; भ्रम, मूर्च्छा, अरुचि, वमि—कय, आलस्य, शिरमें दर्द, मुखसे जल गिरना और मुँहका मीठा स्वाद—ये लक्षण होते हैं ।

साध्यासाध्य विचार ।

जिस अम्लपित्तको पैदा हुए थोड़े दिन हुए हों, वह दवा करनेसे साध्य होता है । बहुत दिनोंका अम्लपित्त याप्य होता है । अयोग्य आहार विहार करनेवालोंका तो थोड़े दिनोंका भी अम्लपित्त कष्ट-साध्य होता है ।

कफपित्तके लक्षण ।

अँधेरी आना, मूर्च्छा, अरुचि, वमन, आलस्य, सिरमें दर्द, लार गिरना और मुँहका मीठापन—ये कफपित्तके लक्षण हैं ।

अम्लपित्त-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें

(१) अम्लपित्तकी पहली अवस्थामें इलाज न करनेसे अम्लपित्त असाध्य हो जाता है, इसलिये रोग उठते ही इलाज करना चाहिये ।

(२) जो मनुष्य नित्य आमलोंके रसके साथ भोजन करता है, उसके अम्लपित्त, वमन, दाह, अरुचि, मोह, खालित्य, प्रमेह और सब तरहके वीर्य-विकार नाश हो जाते हैं तथा मैथुन-शक्ति बेतहाशा बढ़ जाती है ।

(३) अम्लपित्त रोगमें कय और दस्त होते हैं । ऊपर वालेमें वमन और नीचे वालेमें दस्त होते हैं । वैद्य भ्रमसे वमन होते देखकर "वमन रोग" और दस्त होते देखकर "अतिसार" समझ लेता

है। इसलिये दोषोंके लक्षण मिलाकर ठीक निदान कर लेना चाहिये, तब इलाज करना चाहिये।

(४) अत्यन्त जलन होने या कोष्ठबद्ध रहने अथवा कफकी अधिकता होनेसे वमन-विरेचन आदि उपयुक्त शुद्ध क्रिया नितान्त उपयोगी है।

जिस रोगीको ऐसा मालूम हो मानो मेरा शरीर जला जाता है, उसे संशोधन अवश्य देना चाहिये; क्योंकि बिना संशोधनके लाभ हो नहीं सकता।

ऊर्द्ध गामी अम्लपित्तको वमन कराकर और अधोगामीको विरेचन देकर नाश करना चाहिये।

कफज अम्लपित्त हो, तो परवलके पत्ते, नीमके पत्ते और मैन फल समान-समान आठ-आठ माशे लेकर, डेढ़ पाव जलमें काढ़ा-बनाओ और चौथाई पानी रहने पर काढ़ेको छानकर शीतल कर लो। फिर उसमें १॥ माशे सेंधानोन और ३ माशे शहद मिलाकर पिला दो। इससे कय होकर अम्लपित्त शान्त हो जायगा। अगर दस्त कराने हों, तो शहद और आमलोंके रसमें ३ माशे निशोथका चूर्ण मिलाकर पिला दो।

(५) रोगीको "तिक्त रस प्रधान" भोजन देना चाहिये। जौ और गेंहूँके पदार्थ तथा मिश्री मिलाकर सत्तू खिलाना चाहिये। अगर इनके खानेसे भी खट्टी डकारें आवें, तो गरम जल पिलाकर वमन करा देनी चाहिये।

अथवा।

जौ और गेंहूँके यूषादि, जिनमें मिर्च आदि तीक्ष्ण चीज़ न पड़ी हों, रोगीको खिलाने-पिलाने चाहियें; अथवा खीलोंका सत्तू, मिश्री और शहद मिलाकर, देना चाहिये; लेकिन दोषोंका विचार करके। अगर अम्लपित्त वमन और विरेचन या कय और दस्त करानेसे शान्त

न हो, तो शीतल-उपचार करके यानी शीतल लेप आदि लगाकर युक्तिपूर्वक रक्तमोक्षण कराना चाहिये अर्थात् फस्द खोलनी चाहिये।

बहुत दिनोंके अम्लपित्तमें, दोष और अग्निके बलाबलका विचार करके, पहले अच्छी तरहसे वमन और विरेचनसे रोगीको शुद्ध करना चाहिये और अच्छी तरहसे स्निग्ध करके अनुवासन और आस्थापन बस्ति देनी चाहिये।

वैद्यको चाहिये कि दुर्गन्ध करंजके अंकुर घीमें भूनकर भोजन में खानेको दे और गरम जल पिलाकर वमन करावे।

अम्लपित्त रोगमें कम्प, प्रलाप, मूर्च्छा, दाह, प्यास, रक्तपित्त, वातका प्रकोप और प्यास हो, तो शोधन कर्म कराना चाहिये।

अम्लपित्त रोग चाहे नया हो चाहे पुराना, वमन सबमें करानी चाहिये। कहा है :—

अचिरोत्थे चिरोत्थे वा वमनं तत्र कारयेत्।

(६) अम्लपित्तमें वातकफका संसर्ग भी होता है, अतः औषधि और पथ्य खूब विचार कर देने चाहियें।

(७) सोंठ और परवलका काढ़ा अम्लपित्त रोगमें पाचक और दीपन होता है। वह कफपित्त, वमन, खुजली, दाह, ज्वर और विष्फोटकको नाश करता है।

(८) अधोगत या नीचेके अम्लपित्तमें "पित्तज ग्रहणी"के समान इलाज करना चाहिये। रोगीका बलाबल विचार कर पाचन और दीपन औषधि देनी चाहिये।

(९) रक्तपित्त रोगमें और पैत्तिक शूलमें जो चिकित्सा लिखी है, वह अम्लपित्तमें भी विशेष कर करनी चाहिये।

(१०) अम्लपित्त रोगमें दूध, गुड़, घी और अवलेह ये प्रयोग करने चाहियें और कफपित्त नाशक विधि करनी चाहिये।

(११) कूष्माण्ड गुड़, आमलकी खण्ड एवं गुड़, दूध और

पीपरोंके द्वारा पकाया हुआ घी भी अम्लपित्त रोगमें देना चाहिये। पीपरके कल्क और पीपरके काढ़ेके साथ पकाया हुआ "घी" शहद मिलाकर खानेसे अम्लपित्त नष्ट हो जाता है।
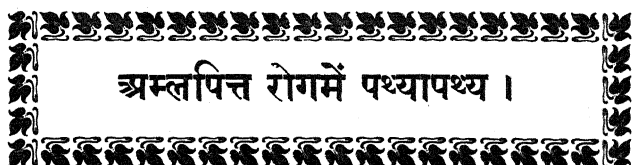
अम्लपित्त रोगमें पथ्यापथ्य।

पथ्य।

ऊपरके अम्लपित्तमें पहले वमन और नीचेकेमें दस्त कराने चाहियें। नये और पुराने दोनों ही अम्लपित्तोंमें वमन कराना ज़रूरी है।

अम्लपित्त रोगमें पुराने शालि चाँवल, पुराने जौ, पुराने गेंहूँ और पुराने मूंग हितकारी हैं। जंगली जानवरोंका मांसरस या शोरवा, चीनी, शहद, सत्तू, ककोड़ा, करेला, परवल, पुराना पेठा, केलेका फूल, बथुआ, कैथ, अनार, आमले, कसेरू, दाख, छोटी मछलियोंका रस, नारियलका पानी, सैंधानोन, जौकी लपसी, दूध-साबू, दूध-बारली, धानको खील, पेठेका मुरब्बा, आमलेका मुरब्बा, नारियलकी गरीकी बरफी, पका पपीता, शहद-मिली जौकी लपसी और बेलफल आदि साधारण तौरसे पथ्य हैं।

इस रोगमें समस्त कड़वे रस, कफपित्त नाशक खाने-पीनेके पदार्थ और गरम करके शीतल किया हुआ पानी ये सब पथ्य हैं।

वातज अम्लपित्तमें चीनी और शहदके साथ "धानकी खीलोंका चूर्ण" विशेष हितकर है।

रोगका ज़ोर होनेकी हालतमें।

ज़ब रोगका ज़ोर हो, दिनमें रोगीको दूध-साबू या दूध-बारली दें;

रातको धानकी खीलें दें । अगर जो मिचलाता हो, दाह या जलन ज़ोरसे हो तथा प्यास बहुत हो, तो शहद मिलाकर जौकी लपसी देनी चाहिये ।

रोग घटने या आराम होनेकी दशामें ।

दिनके समय, पुराने चाँवलका भाँत, मागुर या सिंगी मछलीका रस, सूरण, परवल, बैंगन, पुराना कुम्हड़ा, करेला और केलेके फूल आदिकी तरकारी तथा फलोंमें आमले, कसेरू तथा पका पपीता, नारियल या बेलके फल वग़ैरः दे सकते हो । गरम दूध और कच्चे नारियलका पानी भी पथ्य हैं । तरकारी जितनी कम खाई जाय उतना अच्छा । तरकारियोंमें सैंधानोन डालना चाहिये, पर नमक का कम खाना ही अच्छा है । अगर केवल पुराने चाँवलोंका भात खाया जाय तो सबसे अच्छा ।

रातके समय, जौकी लपसी, दूध-बारली, दूध-साबू, दूध और धानकी खील खाना अच्छा है ।

जलपानके लिए पेठेका मुरब्बा, आमलोंका मुरब्बा और नारियलकी गरीकी बरफी—इनमेंसे कोई दे सकते हैं ।

अम्लपित्त और शूल :रोगमें, भोजनके साथ पानी न पीकर दो घन्टे बाद पीना हितकारी है ।

अपथ्य ।

नया अनाज, पित्तकोपकारक खाने-पीनेके पदार्थ, स्वभावसे विरुद्ध पदार्थ, सब तरहकी दाल—ख़ास कर उड़द और कुल्थीकी दाल, तिल, तेल, बकरी या भेड़का दूध, खटाई, नमक (ज़ियादा नोन) दही, लाल मिर्च, बड़ी मछली ; मीठा, खट्टा और चरपरा रस ; भारी अन्न और तेज़ शराब ये सब अनिष्टकारक हैं ।

मलमूत्र और वमन आदिके वेग रोकना, बहुत खाना, धूपमें

फिरना, मिहनत करना, मैथुन करना, शोक या क्रोध करना, रातमें जागना, दिनमें सोना और बहुत दाल साग खाना ये सब हानि-कारक हैं।

अम्लपित्त नाशक नुसखे।
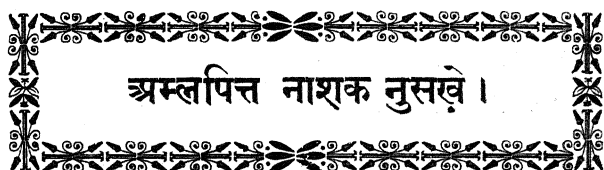
(१) छोटी या बड़ी हरड़के ६ माशे चूर्णमें ६ माशे शहद या गुड़ अथवा दाख मिलाकर खानेसे ३ दिनमें अम्लपित्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) सन्ध्या समय, बिजौरे नीबूका दो तोले रस पीनेसे अम्ल-पित्त चला जाता है। परीक्षित है।

(३) बिना तुषोंके जौ, अड़ूसा, और आमला इनका काढ़ा बनाकर, उसमें दालचोनी, तेजपात, इलायची और शहद मिलाकर पीनेसे अम्लपित्तके कारणसे होने वाली वमन तत्काल नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(४) गिलोय, नीमके पत्ते और कड़वे परवलके पत्ते—इनको एकत्र पोसकर और "शहद" मिलाकर पीनेसे अनेक रूपवाला महा-दारुण अम्लपित्त उसी तरह नाश हो जाता है, जिस तरह वज्रसे वृक्ष नाश हो जाते हैं।

(५) आमलोंके रसके साथ नित्य भोजन करनेसे अम्लपित्त, वमन, अरुचि, दाह, मोह, प्रमेह और वीर्य-विकार नष्ट हो जाते हैं।

(६) जौ, परवलके पत्ते और पीपरके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त नाश हो जाता है।

(७) गिलोय, खैरकी लकड़ी, मुलेठी और दारुहल्दीके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त आराम हो जाता है।

(८) गिलोय, नीमकी छाल, परवलके पत्ते और त्रिफला—इनके काढ़ेमें "शहद" मिलकर पीनेसे घोर दाहयुक्त अम्लपित्त और अनेक तरहके रक्तपित्त नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(९) अडूसा, गिलोय और कण्टकारीके काढ़ेमें शहद मिलाकर पीनेसे अम्लपित्तकी वमन नाश हो जाती है। यह काढ़ा श्वास, खाँसी और ज्वरको भी नाश करता है।

नोट—ऊपरके नुसख़ोंसे अम्लपित्तकी वमन और अम्लपित्त रोग शान्त हो जाता है।

(१०) त्रिफला, नागरमोथा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर, अजवायन, त्रिकुटा, धनिया, सौंफ, सोवा और लौंग प्रत्येकका चूर्ण दो-दो तोले; निशोथका चूर्ण आठ तोले; सनायका चूर्ण ८ तोले; बड़ी हरड़का चूर्ण बत्तीस तोले और चीनी १२८ तोले—यथाविधि पका लो। मात्रा ६ माशे। अनुपान-गरम दूध। इसके सेवनसे भी अम्लपित्त रोगीकी दस्तक़ब्जकी शिकायत रफा होती है। इसका नाम "हरीतकी खण्ड" है। शूल रोगमें भी यह दी जाती है।

नोट—अगर अम्लपित्तवालेको पतले दस्त लगते हों—अतिसार हो, तो "चिकित्साचन्द्रोदय तीसरे भाग"से कोई अतिसार नाशक दवा दीजिये।

(११) अडूसा, गिलोय, पित्तपापड़ा, नीमकी छाल, चिरायता, भाँगरा, हरड़, बहेड़ा, आमले और कड़वे परवल—इनका काढ़ा "शहद" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त रोग नाश हो जाता है।

(१२) पाढ़, पटोलपत्र, इन्द्रजौ, धनिया, आमले, अडूसा, दालचीनी, तेजपात, नागकेशर, पीपर, हरड़, खाँड, कमल और शहद—इनका अवलेह बनालो। इसको "शिवपालपिण्डी" कहते हैं। इससे अम्लपित्त, अरुचि, ज्वर, दाह और शोष रोग नाश होते हैं।

(१३) धानकी राख ६ माशे, दोनों समय, जलके साथ सेवन करनेसे अम्लपित्त आराम हो जाता है।

(१४) धनिया और सोंठका कल्क, रातके समय, पाचनके लिए, अम्लपित्तवालेको देना चाहिये। इन दोनोंका काढ़ा पीनेसे भी अम्लपित्त शान्त हो जाता है।

(१५) नीमके पत्ते और आमलोंका काढ़ा पीनेसे भी अम्लपित्त रोग नाश हो जाता है।

(१६) नारियलकी गरीकी राख ६ माशे, नित्य सवेरे, सेवन करनेसे अम्लपित्त आराम होता और पाचन-शक्ति बढ़ती है। परीक्षित है।

(१७) परवल, सोंठ, गिलोय, कुटकी, नीम और अडूसा—इन सबके पत्तोंका काढ़ा पीनेसे विसर्प रोगसे हुआ अम्लपित्त, मण्डल, चकत्ते और दाद नाश हो जाते हैं।

(१८) नित्य १ तोले चूनेका नितरा हुआ पानी पीनेसे अम्लपित्त और बदहज़मी नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(१९) परवल, कुटकी और त्रिफला—इनके काढ़ेमें "मिश्री" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त नाश होता है। परीक्षित है।

(२०) गिलोय, चीता, परवल और नीमके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे अम्लपित्त आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२१) दाख, हरड़, पीपर, धनिया, जवासा और मिश्री—इनके चूर्णको "शहद"में मिलाकर चाटनेसे अम्लपित्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

श्लेष्मपित्त नाशक नुसख़े।

(१) काकड़ासिंगी ६ माशे और परवल ६ माशे—दोनोंको पाव-भर पानीमें औटाओ; जब एक छटाँक पानी रह जाय, उतार

कर छान लो। इसके पीनेसे श्लेष्मपित्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) छोटी पीपर ३ माशे, हरड़ ३ माशे और चीनी ३ माशे—इनको मिलाकर नित्य खानेसे ५।६ दिनमें श्लेष्मपित्त नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) हरड़, पीपर, दाख, चीनी, धनिया और जवासा—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे तीन या चार माशे चूर्ण "शहद"में मिलाकर चाटनेसे श्लेष्मपित्त नाश हो जाता है।

(४) कड़वे परवलके पत्ते, इन्द्रजौ, धनिया, पीपर और आमले—इनको कुल २ तोले लेकर काढ़ा पका लो; शीतल होने पर "शहद" मिलाकर पीओ। इससे कफपित्त नाश हो जाता है।

(५) अदरख और परवलके पत्तोंका काढ़ा पीनेसे अग्निदीपन होती, पाचन होता तथा वमन, खुजली, चकत्ते, फोड़े और दाह ये सब नाश हो जाते हैं।
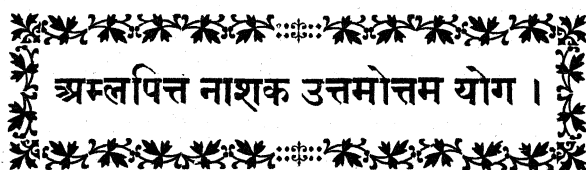
अम्लपित्त नाशक उत्तमोत्तम योग।

रसायन योग।

त्रिफला, त्रिकुटा, बायबिड़ङ्ग, चीता और नागरमोथा—ये सब चार-चार तोले लो; शुद्ध गन्धक दो तोले और शुद्ध पारा एक तोले लो। पहले गन्धक और पारेको खरल करो; जब निश्चन्द्र कज्जली हो जाय, उसमें त्रिफला वगैरः सब दवाओंके पिसे-छने चूर्ण मिला दो। इसकी मात्रा ३ माशेसे आधे तोले तक है। बलाबलका विचार करके मात्रा देनी चाहिये। एक-एक मात्रा "नाबराबर घी

और शहद"के साथ सेवन करने या चाटने और ऊपरसे शीतल जल या गायका धारोष्ण दूध पीनेसे मन्दाग्नि, अम्लपित्त, परिणाम शूल, कामला और पाण्डु रोग आराम हो जाते हैं। यह "रसायन योग" बहुत उत्तम है।

नारिकेल खण्ड।

अच्छी तरह पिसी हुई नारियलकी गरी ८ तोले, और मिश्री १६ तोले लेकर, पहले गरीको चार तोले घीमें भून लो। फिर सबको नारियलके पानीमें खूब मथो और मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ; जब शीतल हो जाय, इसमें मोथा, धनिया, पीपर, तज, तेजपात और इलायची चार-चार माशे पीस-छान कर मिला दो और खूब शीतल हो जाने पर, उसमें १६ तोले शहद भी मिला दो और उत्तम चिकने बर्तनमें रख दो। इससे श्वास, खाँसी, परिणामशूल और अति दारुण अम्लपित्त रोग नाश हो जाते हैं तथा पुंस्त्व, शुक्रवीर्य और बलकी वृद्धि होती है एवं कंठकी जलन मिटती है।

जीरकादि घृत।

चार तोले सफेद ज़ीरा और चार तोले धनिया—इनको पानीके साथ सिल पर पीस कर और बत्तीस तोले घीमें मिलाकर पकाओ। इसमेंसे ६ माशेसे दो तोले तक घी सेवन करनेसे भयङ्कर अम्लपित्त भी आराम हो जाता है।

खण्डकूष्माण्डकावलेह।

उत्तम पेठेका रस ४०० तोले, गायका दूध ४०० तोले, आमलोंका चूर्ण ३२ तोले, खाँड ३२ तोले और गायका घी ८ तोले—इन सबको मिलाकर तब तक पकाओ, जब तक कि गोली न बँधे। फिर उतार कर अच्छे बर्तनमें रख दो। इस "खण्डकूष्माण्डकावलेह"के दो तोले या चार तोले नित्य सेवन करनेसे अम्लपित्त रोग नाश हो जाता है।

दूसरा नारिकेल खण्ड।

नारियलकी गरी १६ तोले और मिश्री ३२ तोले, इनको नारियलके पानी या गायके दूधमें पकाओ। जब पकते-पकते गाढ़ी हो जाय, उसमें धनिया, पीपर, नागरमोथा, दालचीनी, तेजपात, इलायची और नागकेशर प्रत्येक चीज़का चूर्ण पिसा-छना तीन-तीन माशे मिला दो। बस यही "नारिकेलखण्ड" है। इसमेंसे हर दिन दो-दो या चार-चार तोले खानेसे पुरुषत्व, निद्रा और बलकी प्राप्ति होती है तथा अम्लपित्त, परिणामशूल, क्षय और रक्तपित्त रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—नारियलको गरीको पहले चार तोले गायके घीमें भून लेना ज़रूरी है। इसके बाद उसे नारियलके पानी या दूधमें मिलाकर पका लेना चाहिये। नारियलका पानी न मिले तो गायका दूध काममें ले सकते हो।

वृहन्नारिकेल खण्ड।

नारियलकी गरी ६४ तोले सिल पर पिसी हुई तथा छिलके और बीजोंसे रहित पेठेके टुकड़े १२८ तोले—इनको १६ तोले गायके घीमें भूनो। फिर इसमें २५६ तोले गायका दूध और १२८ तोले साफ सफेद चीनी मिला दो और मन्दी-मन्दी आगसे धीरे-धीरे पकाओ। जब अच्छी तरहसे पक जाय, चूल्हेसे उतार कर शीतल कर लो। फिर उसमें छोटी इलायची, धनिया, आमले, पित्तपापड़ा, नागरमोथा, सुगन्धवाला, खस, चन्दन, दाख, सिंघाड़े, कसेरू, तज, तेजपात और भीमसेनी कपूर—इन सबका पिसा-छना चूर्ण दो-दो तोले मिला दो। यही "वृहन्नारिकेल खण्ड" है। इसको नये मिट्टीके बासनमें रख दो। इसमेंसे चार-चार तोले या अग्नि-बल-अनुसार कम-ज़ियादा सवेरे ही खानेसे अम्लपित्त, ज्वर, रक्त-पित्त, प्यास, दाह, पाण्डुरोग, कामला, क्षय और परिणाम शूल—इन सबका तत्काल नाश हो जाता है। इससे शरीरका रंग साफ़

होता और धातु पुष्ट होती है। यह पुंसत्व, नींद और बल बढ़ाता है तथा कामी लोगोंके लिए परम हितकारी है।

पिप्पली घृत ।

गायका घी ४ सेर, पीपरोंका काढ़ा ८ सेर और पीपरोंका कल्क (सिल पर पिसी लुगदी) एक सेर—सबको मिलाकर औटाओ ; जब घी मात्र रह जाय, छान कर रख लो। इसमेंसे छै-छै माशे घी खानेसे अम्लपित्त नाश हो जाता है।

वृहत् पिप्पली खण्ड ।

पीपरोंका चूर्ण पाव भर, घी आध सेर, चीनी एक सेर, शतावरका रस आध सेर, आमलोंका रस एक सेर और गायका दूध चार सेर इनको मिलाकर मन्दी-मन्दी आगसे पकाओ। जब गाढ़ा होने पर आवे, इसमें दालचीनी, तेजपात, इलायची, हरड़, कालाजीरा, धनिया, नागरमोथा, बंसलोचन और आमले प्रत्येक दवाका चूर्ण एक-एक तोले ; ज़ीरा, मीठा कूट, सोंठ और नागकेशरका चूर्ण छै-छै माशे मिला दो और खूब चलाकर चूल्हेसे उतार लो। शीतल होने पर, इसमें जायफलका चूर्ण ६ तोले, कालीमिर्चका चूर्ण ६ तोले और शहद ६ तोले मिला दो। बस "वृहत् पिप्पली खण्ड" तैयार हो गया। इसमेंसे ६ माशे दवा गरम दूधके साथ खानेसे अम्लपित्त, वमन वेग, वमि, अरुचि, मन्दाग्नि और क्षय रोग आराम होते हैं।

शुण्ठी खण्ड ।

सोंठका चूर्ण पाव भर, चीनी एक सेर, घी आध सेर और दूध ४ सेर—इनको मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ ; जब गाढ़ा होने पर आवे, इसमें आमले, धनिया नागरमोथा, सफेद ज़ीरा, पीपर, बंस-

लोचन, दालचीनी, तेजपात, इलायची, कालाज़ीरा और हरड़ प्रत्येकका चूर्ण पिसा-छना नौ-नौ माशे; कालीमिर्चोंका चूर्ण ४॥ माशे और नागकेशरका चूर्ण ४॥ माशे मिला दो और नीचे उतार लो। जब शीतल हो जाय, इसमें ८ तोले "शहद" मिला दो। इसकी भी मात्रा ६ माशेकी है। अनुपान—गरम दूध है। इसके सेवन करनेसे अम्लपित्त, शूल और वमन रोग नाश हो जाते हैं।

अम्लपित्तान्तक लौह।

रससिन्दूर, ताम्बा भस्म और लोहाभस्म हरेक छै-छै माशे तथा हरड़का चूर्ण १॥ तोले मिलाकर रख लो। इसकी मात्रा १ माशेकी है। अनुपान—शहद है। इससे अम्लपित्त नाश हो जाता है।

सिता मण्डूर।

शुद्ध मण्डूरका चूर्ण ४ तोले, मिश्री २० तोले, पुराना घी ३२ तोले और गायका दूध ६४ तोले—इन सबको मिलाकर पकाओ; जब गोली बँधने लगे, इसमें त्रिकुटा, मुलेठी, इलायची, जवासा, बायबिडंग, त्रिफला, मीठा कूट और लौंगका पिसा-छना चूर्ण दो-दो तोले मिला दो और खूब चला कर उतार लो। शीतल होने पर, आठ तोले "शहद" मिला दो। इसमें से ६ माशे दवा, भोजनसे पहले, दूधके साथ, खानेसे अम्लपित्त, शूल, वमि, आनाह और प्रमेह रोग आराम हो जाते हैं।

श्रीबिल्व तैल।

बेलगिरी तीन सेर आधा पाव लेकर सोलह सेर पानीमें औटाओ; जब चार सेर पानी रह जाय, छान कर रख लो।

आमले, लाख, हरड़, नागरमोथा, लाल चन्दन, सुगन्धवाला, सरलकाष्ठ, देवदारु, मँजीठ, सफेद चन्दन, कूट, इलायची, तगर-

पादुका, जटामासी, शैलज, तेजपात, प्रियंगूफूल, अनन्तमूल, बच, शतावर, असगन्ध, सोवा और पुनर्नवा—इन सबको एक-एक तोले लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो और लुगदी बना लो।

अब तिलीका तेल १ सेर, आमलोंका रस १ सेर, दूध २ सेर तथा बेलके पकाये हुए काढ़े और लुगदीको एक कड़ाहीमें डालकर पका लो; जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। इस तेलकी मालिश करनेसे अम्लपित्त, शूल, हाथ पैरोंकी जलन और सूतिका रोग नाश हो जाते हैं।

पानीय भक्त बटी।

त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, निशोथ, और चीतेकी जड़ एक-एक तोले और बायबिडंग दो तोले लेकर पीस-छान लो।

शुद्ध पारा और शुद्ध गंधक तीन-तीन माशे लेकर और खूब खरल करके निश्चन्द्र कज्जली बना लो।

अब लोहभस्म दो तोले, अभ्रक भस्म दो तोले, पारे गन्धककी कज्जली तथा त्रिकुटा वगैरःका पिसा-छना चूर्ण सबको खरलमें डालकर, ऊपरसे "त्रिफलेका काढ़ा" डाल-डाल कर खूब खरल करो। खरल हो चुकने पर, दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इन गोलि-योंको सवेरे-शाम, काँजीके साथ, खानेसे शूल, श्वास, खाँसी और ग्रहणी रोग नाश हो जाते हैं।

लीलाविलास रस।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, अभ्रक भस्म, ताम्बा भस्म और लोहा भस्म,—प्रत्येक—छै-छै माशे ले लो। पहले पारे और गन्धकको खूब खरल करके, बाक़ी चीज़ें उनकी कज्जलीमें मिला दो। फिर इसे तीन दिन तक "आमलोंके रस"के साथ खरल करो और तीन दिन तक "बहेड़ोंके काढ़े"के साथ खरल करो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ

बना लो। अनुपान—आमलोंका रस या दूध। इससे शूल, वमन, अम्लपित्त और छातीकी जलन नाश हो जाती है।

अविपत्तिकर चूर्ण।

त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ंगके बीज, इलायची और तेजपातका चूर्ण एक-एक तोले ; लौंगका चूर्ण ६ तोले, निशोथका चूर्ण २४ तोले और पिसी हुई मिश्री ३६ तोले—सबको मिलाकर एक बासनमें रख दो। यही "अविपत्तिकर चूर्ण" है।

इसकी मात्रा ३ से ८ माशे तक है। भोजनसे पहले एक-एक मात्रा खाकर, ऊपरसे शीतल जल या नारियलका पानी पीना चाहिये। इस पर यथेष्ट आहार करना चाहिये या दूधके साथ भात खाना चाहिये। इससे अम्लपित्त, शूल, बवासीर, बीस तरहके प्रमेह, मूत्राघात और पथरी रोग नाश हो जाते हैं। इसे अगस्त्य मुनिने कहा था।

नोट—इसके बनानेका यह नियम है कि त्रिकुटासे तेजपात तककी छै चीज़ें समान-समान भाग, लौंग इन छैहोंके बराबर, निशोथ इन सबसे दूनी और मिश्री सारे चूर्णके बराबर ली जाती है।

रसामृत चूर्ण।

त्रिकुटा, त्रिफला, नागरमोथा, बायबिड़ंग और चीता—प्रत्येक दवा चार-चार तोले लो ; शुद्ध गन्धक दो तोले और शुद्ध पारा एक तोले लो। पहले पारे और गन्धकको खरल करके कज्जली कर लो। फिर त्रिकुटा आदिको पीस छान कर कज्जलीमें मिला दो और घोटकर रख दो। इसकी मात्रा १॥ माशेसे ४ माशे तक है। इसको नाबराबर "घी और शहद"में मिलाकर चाटना चाहिये और ऊपरसे गायका दूध या शीतल जल पीना चाहिये। इससे अम्ल-पित्त, परिणाम शूल, मन्दाग्नि, कामला और पाण्डुरोग नाश हो जाते हैं।

शतावरी घृत।

शतावरकी जड़का स्वरस १२८ तोले, दूध १२८ तोले और गायका घी ३२ तोले—इनको मिलाकर पकाओ और घी मात्र रहने पर छान कर रख लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इस घीसे वातपित्त जनित अम्लपित्त, रक्तपित्त, प्यास, मूर्च्छा, श्वास और सन्ताप ये सब नष्ट हो जाते हैं।

नोट—अम्लपित्त रोगमें तिक्तक घृत, षट्पल घृत और पंचतिक्त घृत सेवन करनेसे भी लाभ होता है।

द्राक्षाद्य घृत।

दाख, गिलोय, कुड़ेकी छाल, परवलके पत्ते, खसकी जड़, आमले नागरमोथा, लालचन्दन, त्रायमाण, पद्मकाष्ठ, चिरायता और धनिया—इन सबको पाँच-पाँच तोले लेकर, पानीके साथ सिल पर पीस लो। अगर यह लुगदी १ सेर हो जाय, तो गायका घी ४ सेर पानी १६ सेर और लुगदी सबको मिलाकर पकाओ। घी मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इसकी मात्रा ६ माशेसे १ तोले तक है। इसके सेवन करनेसे अम्लपित्त, मन्दाग्नि, ग्रहणी और खाँसी वग़ैरः रोग नाश हो जाते हैं।

द्राक्षादि गुटिका।

दाख बीज निकाले हुए ५ तोले, हरड़ ५ तोले और मिश्री १० तोले—इनको पीस-कूट कर दो-दो तोलेकी गोलियाँ बना लो। हर दिन एक-एक गोली खानेसे अम्लपित्त रोग, हृदय और कंठकी जलन, प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, मन्दाग्नि और आमवात रोग नष्ट हो जाते हैं।

पिप्पल्यादि अवलेह।

पीपरका चूर्ण ८ तोले, घी १६ तोले, चीनी ६४ तोले, शतावर

३२ तोले, हरड़का काढ़ा ६४ तोले और दूध ६४ तोले—इन सबको मिलाकर पकाओ ; जब पकते-पकते अवलेहके समान हो जाय, तब इसमें दालचीनी, इलायची, तेजपात, हरड़, ज़ीरा, धनिया, नागर-मोथा,—आमले और बँसलोचन इनमेंसे हरेकका चूर्ण एक-एक तोले, कालेज़ीरेका चूर्ण ६ माशे, सोंठका चूर्ण ६ माशे, नागकेशरका चूर्ण ६ माशे, जायफलका चूर्ण ६ माशे, कालीमिर्चोका चूर्ण ६ माशे और शुद्ध कपूरका चूर्ण ६ माशे मिला दो और उतार कर शीतल करो। जब शीतल हो जाय, इसमें १२ तोले "शहद" भी मिला दो और साफ चिकने बासनमें रख दो। इसे हर दिन सवेरे ३ से ६ माशे तक अथवा अग्निबलानुसार चाटनेसे अम्लपित्त, उबकाई, वमन, प्यास, अरुचि और जलन ये सब नाश हो जाते हैं।

स्वरभेदके निदान कारण।

स्वरभेद रोग या आवाज़ पड़जानेका रोग नीचे लिखे हुए कारणोंसे होता है :—

(१) बहुत ज़ोरसे बोलने या चिल्लाकर बोलनेसे।

(२) स्वर पाठ करने या ऊँची आवाज़से पढ़नेसे।

(३) गलेमें लकड़ी वग़ैरःकी चोट लगनेसे।

(४) विष आदि पदार्थ खानेसे।

स्वरभेदकी सम्प्राप्ति।

उपरोक्त कारणोंसे वात, पित्त और कफ कुपित होते हैं, फिर वे स्वरवाही—स्वर बहानेवाले स्रोतोंमें ठहर कर, स्वरका नाश कर देते हैं।

स्वरभेदकी क़िस्में।

स्वरभेद रोग छै तरहका होता है :—

(१) वातज, (२) पित्तज,

(३) कफज, (४) सन्निपातज,
(५) क्षयज, (६) मेदज ।

वातज स्वरभेदके लक्षण ।

अगर वायुसे स्वरभंग रोग होता है—आवाज़ बिगड़ जाती है, तो रोगीके नेत्र, मुँह, मूत्र और मल—पाखाना—ये काले हो जाते हैं ; रोगी टूटा हुआ शब्द बोलता है अथवा गधेकी तरह कठोर आवाज़ निकालता है ।

पित्तज स्वरभेदके लक्षण ।

पित्तज स्वरभेद होनेसे रोगीके नेत्र, मुख, मल और मूत्र पीले हो जाते हैं । बोलनेके समय उसके गलेमें दाह या जलन होती है ।

कफज स्वरभेदके लक्षण ।

कफज स्वरभेद होनेसे कंठ कफसे रुका रहता है, रोगी मन्दा-मन्दा और थोड़ा-थोड़ा बोलता है । रातकी अपेक्षा दिनमें अधिक बोलता है ।

सन्निपातज स्वरभेदके लक्षण ।

सन्निपातज या तीनों दोषोंका स्वरभेद होनेसे तीनों दोषोंके लक्षण पाये जाते हैं । यह स्वरभेद असाध्य है, बशर्त्ते कि रोगीकी बात समझ में न आवे ।

क्षयज स्वरभेदके लक्षण ।

क्षयज स्वरभेद होनेसे रोगीके मुँहसे धूआँ सा निकलता है, वाणी क्षय हो जाती है—यथार्थ स्वर नहीं निकलता—जैसी आवाज़ निकलनी चाहिये वैसी आवाज़ नहीं निकलती । जब "ओज"के क्षय होनेसे, बोलनेकी सामर्थ्य नहीं रहती, तब यह—क्षयज स्वरभेद—असाध्य हो जाता है । अगर ओजका क्षय या नाश नहीं होता, तो

साध्य रहता है। मतलब यह है, कि बिल्कुल आवाज़ न निकलनेसे रोग असाध्य हो जाता है।

मेदज स्वरभेदके लक्षण।

मेदज़ स्वरभेद होनेसे, मेद या कफसे गला लिपा रहता है। मेदसे स्वर-मार्ग रुक जानेकी वजहसे प्यास बहुत लगती है। रोगी गलेके भीतर बोलता और बहुत ही धीरे-धीरे बोलता है। रोगीको आवाज़ मालूम नहीं होती और बड़ी देरमें निकलती है।

नोट—"सुश्रुत"में होठ, गले और तालूका लिपा रहना या चिकना रहना लिखा है।

असाध्य लक्षण।

क्षीण पुरुषका, बूढ़ेका, दुर्बलका, बहुत दिनका, जन्मके साथ पैदा हुआ, मेदवाले या मोटे आदमीका और सन्निपातज स्वरभेद-असाध्य होता है।

चिकित्सकके याद रखने योग्य बातें।

(१) "सुश्रुत उत्तर तन्त्र"—अध्याय ५३ में लिखा है :—स्वरभेद रोगीको स्नेहन क्रिया करके, वमन, विरेचन और बस्ति कर्मसे दुरुस्त करना चाहिये ; यानी इन क्रियाओंसे दोष दूर करने चाहिएँ।

(२) इसके बाद नस्य, अवपीड़न, मुखधावन, धूमपान और अनेक तरहके कवल और अवलेह आदिसे रोगीकी चिकित्सा करनी चाहिये।

(३) जो चिकित्सा-विधि श्वास और खाँसीमें लिखी है, वह इस रोगमें भी चल सकती है, यह "सुश्रुत"का मत है। मतलब यह है, कि श्वास और खाँसीके अनेक नुसख़े इस रोगको भी नाश करते हैं। लिखा है :—

कासे श्वासे च हिक्कायां क्षये प्रोक्तानियानि तु।
घृतानि तानि योज्यानि भिषग्भिः स्वरसंक्षये॥

खाँसी, श्वास, हिचकी और क्षय रोगमें जो "घी" लिखे हैं, उन्हें वैद्योंको स्वरभेद रोगमें भी काममें लाना चाहिये।

वातज स्वरभेदकी चिकित्सा।

(१) नमक मिलाकर तेल पीना चाहिये।

(२) पुराने चाँवल गुड़के शीरेके साथ पकाकर और "घी" डाल कर खाने चाहियें और कुछ देर बाद गरम जल पीना चाहिये।

नोट—गन्नेके रस या गुड़के छाने हुए शीरेके साथ चाँवल पकाकर, रातको, सोनेसे पहले खाने चाहियें और घराटेभर बाद गरम जल पीना चाहिये। गुड़के मीठे चाँवल पका कर खाने और गरम जल पीनेसे ३।४ दिनमें स्वरभेद रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(३) भोजनके ऊपर कसौंधी, बड़ी कटेरी और भाँगरेके रसके साथ पकाया हुआ घी पीना चाहिये।

(४) नीले फूलके कुरण्टके रसके साथ पकाया हुआ घी पीना चाहिये।

(५) देवदारु, अजमोद, चीतेकी छाल और आमलोंके साथ पकाया हुआ घी पीना चाहिये।

(६) देवदारु और चीतेकी छालके साथ पकाया हुआ बकरीका घी "शहद" मिला कर पीना चाहिये।

पित्तज स्वरभेदकी चिकित्सा।

(१) घी पीकर, ऊपरसे दूध पीना चाहिये।

(२) मुलेठीकी खीर "घी" मिलाकर खानी चाहिये।

(३) काकोली आदिका चूर्ण ना-बराबर "घी और शहद" मिलाकर चाटना चाहिये।

(४) शतावरका चूर्ण ना-बराबर "घी और शहद" मिलाकर चाटना चाहिये।

(५) खरेंटीका चूर्ण ना-बराबर "घी और शहद" मिलाकर चाटना चाहिये।

(६) केवल ना-बराबर घी और शहद मिलाकर पीना चाहिये।

नोट—इस रोगमें जुलाब देना और मधुर पदार्थोंके साथ पकाया हुआ घी पिलाना सर्व्वश्रेष्ठ है।

कफज स्वरभेदकी चिकित्सा।

(१) सोंठ, मिर्च, छोटी पीपर और पीपरामूलको महीन पीस-छान लो। मात्रा १ से ३ माशे तक। चूर्ण फाँककर "गोमूत्र" पीना चाहिये। इस नुसखे से कफ़ज़ और मेदज दोनों स्वरभेद आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२) खार और शहदका कवल मुखमें रखना चाहिये। इस कवलके मुँहमें रखने और फिरानेसे तालू, जीभ और मसूड़ोंमें लगा हुआ कफ निकल जाता और स्वर ठीक हो जाता है।

(३) सोंठ, मिर्च और छोटी पीपरोंका महीन चूर्ण "शहद और तेल"में मिलाकर चाटना चाहिये। अगर इसमें "त्रिफला" भी मिला दिया जाय, तब तो कहना ही क्या? परीक्षित है।

(४) भोजन करनेके पीछे कालीमिर्च और पीपर प्रभृति खाने चाहियें।

मेदज स्वरभेदकी चिकित्सा ।

इस रोगमें "कफज स्वरभेद"में लिखे हुए नुसखे काममें लाने चाहियें ।

सन्निपातज और क्षयज स्वरभेदकी चिकित्सा ।

जब ऐसे रोगीका इलाज हाथमें लो, तब कह दो, कि हम दवा करते हैं ; रोग आराम हो भी जाय और न भी हो, क्योंकि ऐसे रोगी बहुत कम आराम होते हैं ।

समस्त स्वरभेद नाशक नुसखे ।

(१) अजवायन, हल्दी, चीतेकी छाल, जवाखार और आमले—इनको समान-समान लेकर पीस लो । मात्रा १ से ३ माशेतक । इस चूर्णकी १ मात्रा "नाबराबर घी और शहद"में मिलाकर चाटनेसे भयङ्कर स्वरभङ्ग रोग आराम हो जाता है । परीक्षित है ।

(२) चव्य, अम्लवेत, सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, इमली, तालीसपत्र, सफेद ज़ीरा, बंसलोचन और चीतेकी छाल—इनको समान-समान लेकर महीन पीस-छान लो । इसके बाद इस चूर्णको पुराने "गुड़"में मिला लो । शेषमें "दालचीनी, इलायचीके बीज और तेजपात" भी पीस-छान कर मिला दो । इस चूर्णके सेवन करनेसे स्वरभेद, पीनस, कफ और अरुचि वग़ैरः रोग नाश हो जाते हैं । यह नुसखा चक्रदत्तका है ।

नोट—चव्यादि अगर तोले-तोले भर लो, तो दालचीनी और इलायचीके बीजादि भी तोले-तोले भर लो । यह बड़ा अच्छा चूर्ण है । नाम है "चव्यादि चूर्ण ।"

(३) एक माशे कत्था "सरसोंके तेलमें भिगोकर" मुँहमें रखनेसे स्वरभेद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(४) छोटी पीपर और छोटी हरड़—पीस-छानकर मुखमें रखनेसे स्वरभेद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) सोंठ और हरड़ बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ज़रा-ज़रासा चूर्ण, थोड़ी-थोडी देरमें, मुँहमें रखनेसे स्वरभेद रोग आराम हो जाता है।

(६) बहेड़ेका छिलका, सेंधानोन और छोटी पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ६ माशे चूर्ण, छटाँक-भर माठेमें घोलकर, १५।२० दिन सेवन करनेसे स्वर-भेद रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(७) सूखे आमलोंके छिलके लेकर महीन पीस-छान लो। इसमें से ६ माशे चूर्ण गायके दूधके साथ फाँकनेसे आठ दिनमें स्वरभेद रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(८) बड़बेरीके दो तोले पत्तोंको सिलपर पीस लो। फिर उस लुगदीको घीमें भूँजकर अन्दाज़का "सेंधा नमक" मिला लो और नित्य खाओ। इससे खाँसी और स्वरभेद रोग चले जाते हैं। परीक्षित है।

(९) ६ माशे छोटी हरड़ोंका चूर्ण, गायके दूधके साथ, खानेसे ८ दिनमें स्वरभेद रोग आराम हो जाता है।

(१०) ब्राह्मी, दूधिया बच, छोटी हरड़, अड़ूसेके पत्ते और छोटी पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। मात्रा २ से ४ माशे तक। एक-एक मात्रा "शहद"में मिलाकर चाटनेसे स्वरभंग रोग जाता रहता है। इसका नाम "सारस्वत चूर्ण" है। खूब परीक्षित है।

(११) सफ़ेद काकमाचीके पत्ते, सफेद चिरमिठीके सूखे पत्ते,

दूधिया बच और कूट—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इसमें कुल चूर्णके बराबर "पीपरोंका चूर्ण" पिसा-छना हुआ मिला दो और "शहद"में सानकर चिकनी-सुपारीके बराबर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको मुँहमें रखने और रस चूसनेसे स्वरभंग रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

नोट—गलेमें सूजन हो तो कड़वी तोरई चिलममें रखकर तमाखूकी तरह पीनेसे लार टपकती और गला खुल जाता है।

(१२) मिश्री और सोंठ बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्णको "शहद"में मिलाकर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके चूसनेसे बैठा हुआ गला खुलकर कोयलका सा हो जाता है। परीक्षित है।

(१३) कालीमिर्च, कुलींजन, बड़ी इलायचीके बीज और मुलेठी—इनको समान-समान लेकर पीस-छान लो। फिर "बँगला पानोंके रस"में घोट कर बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके, सवेरे-शाम, "शहद"के साथ खानेसे स्वरभेद रोग, गला बैठना, हकलाना और साफ न बोलना आदि रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१४) मूलीके बीज चार माशे महीन पीस-छान कर, गरम पानीके साथ फाँकनेसे स्वरभेद आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१५) कवाबचीनी या शीतल मिर्च मुँहमें रखनेसे स्वरभेद आराम हो जाता है।

(१६) कुलींजन मुँहमें रखने और उसका रस पीनेसे स्वरभेद नाश होकर गला खुल जाता है। परीक्षित है।

(१७) गुड़के शर्बतमें चाँवल पकाकर, रातको, सोनेसे पहले, धापकर खाने और घन्टे भर बाद दो चम्मच "गरम पानी" पीनेसे स्वर-भेद रोग ४।५ दिनमें आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—यह नुसख़ा "मुजर्ब्बात अकबरी"का है। हमारे यहाँ पके हुए चाँवलोंमें "घी" मिलाना अधिक लिखा है।

(१८) बायबिडंग, सैंधानोन, हींग, शुद्ध गूगल, शुद्ध मैनसिल और दूधिया बच—इनको समान-समान लेकर पोस-छान लो। इसकी मात्रा २ से ४ माशे तक है। इसके सेवन करनेसे पीनस या जुकामसे हुआ स्वरभेद रोग आराम हो जाता है।

(१९) त्रिफला, त्रिकुटा और जवाखार बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इसमेंसे ३ से ६ माशे तक चूर्ण खानेसे श्वास और खाँसी आदिके कारणसे बिगड़ा हुआ गला ठीक हो जाता है।

(२०) ज़रासा चिराग़का गुल १ पानमें रखकर खानेसे या सिन्दूर खानेसे बिगड़ा हुआ स्वर या बिगड़ी हुई आवाज़ ठीक हो जाती है। यह नुसख़ा "मुजर्ब्बात अकबरी"का है।

(२१) गन्ना भून कर और छीलकर चूसनेसे स्वरभेद रोग जाता रहता है।

(२२) कुलींजन, अकरकरा, बच, ब्राह्मी, मीठा कूट और कालीमिर्च—बराबर-बराबर लेकर पीस-छानलो। मात्रा १से ३ माशे तक। हरेक मात्रा "शहद"में मिलाकर, सवेरे-शाम, चाटनेसे स्वरभेद रोग यानी गल बैठना—और तरहकी आवाज़ निकलना आदि आराम होकर याद रखनेकी ताक़त बढ़ती है। परीक्षित है।

(२३) काली अगर, देवदारु और हल्दी—इनको आठ-आठ माशे लेकर, ३५ तोले जलमें काढ़ा बनालो। आठ तोले पानी रहने पर मल-छानकर पीलो। इस काढ़ेसे स्वरभेद रोग जाता रहता है। इसे "अगर्वादि क्वाथ" कहते हैं। परीक्षित है।

(२४) अगर नजला कंठकी तरफ गिरनेसे आवाज़ बैठी हो, तो थोड़ीसी "अफीम" खानी चाहिये। साथ ही "ख़शख़ाशके पोस्ते और

अजवायन" बराबर-बराबर लेकर काढ़ा बनाना चाहिये। इस काढ़ेके गरगरे करनेसे औरभी जल्दी आराम होता है। परीक्षित है।

(२५) अगर कफकी ज़ियादतीसे गला बैठा हो, तो ३ बरसकी पुरानी "गोंदीकी जड़" ज़मीनमेंसे खोदकर मुँहमें रखो और "इस्पन्दके काढ़े"के गरगरे—कुल्ले—करो। इससे आवाज़ खुल जाती है।

(२६) अदरखकी गाँठमें सूराख करके, उसके भीतर "थोड़ासा नमक और ज़रासी हींग" महीन पीसकर रख दो। फिर अदरखका मुँह अदरखके टुकड़ेसे ही बन्द करके, उस पर आटे या मिट्टीको लपेट दो और उसे भूभलमें पकाओ। जब अदरख पक जाय और पकनेकी गन्ध आने लगे, उसे निकाल लो और छील-छील कर खाओ। इससे गला खुल जायगा।

(२७) थोड़ीसी हींग गरम जलके साथ कंठके नीचे उतारनेसे गला खुल जाता है।

(२८) हरड़के बीजोंकी मींगी, पीपल और लाहौरी नोन—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और "शहद"में मिलाकर गोलियाँ बना लो। मात्रा १ तोलेकी है। १५ दिन खानेसे गला साफ हो जाता है।

(२९) माल काँगनी, बच, खुरासानी अजवायन, कुलींजन और छोटी पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और "शहदमें" मिला लो। इसमेंसे बीस-बीस माशे, सवेरे-शाम, खानेसे, कफज स्वरभेद या कफके कारणसे बैठा हुआ गला ठीक हो जाता है।

(३०) मुण्डीकी जड़के चबाने अथवा मुण्डीके पत्तोंको पानमें रख कर खानेसे स्वरभंग रोगमें शीघ्र ही लाभ होता है।

नोट—तोता मैना आदि पक्षियोंको उनके खानेके साथ "मुण्डीके पत्तोंका चूर्ण" खिलानेसे उनका स्वर अति उच्च हो जाता है। "मुण्डीकी जड़"को पीस-छान कर छाछके साथ खानेसे और "मुण्डीके पत्तों"को पानीके साथ पीसकर अर्शके अंकुरों या बवासीरके मस्सों पर लगानेसे मस्से जड़से नाश हो जाते हैं।

स्वरभङ्गरोगपर उत्तमोत्तम योग।

स्वरभंगादि बटी।

शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, शुद्ध मीठा विष, भुना हुआ सुहागा, कालीमिर्च, चव्य और चीतेकी छाल—सबको बराबर-बराबर ले लो। पहले पारे और गन्धकको ५।६ घन्टे तक खरल करो; जब चमक न रहे, उसमें विष आदिको पीस-छान कर डाल दो और अदरखका रस दे-देकर खूब घोटो और दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो। इनमेंसे बलाबल अनुसार एक-एक या कम-बेश गोली सवेरे-शाम खाने और ऊपरसे पानी पीनेसे स्वरभेद, श्वास और खाँसी आदि रोग अवश्य नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

कंटकारी घृत।

रास्ना, खिरेंटी, गोखरू, सोंठ, कालीमिर्च और छोटी पीपर—समान-समान लेकर पानीके साथ सिल पर पीस लो। जितना यह कल्क या लुगदी हो, उससे चौगुना "घी" ले लो और घीसे चौगुना "कटेरीका स्वरस" ले लो। सबको क़लईदार कड़ाहीमें डाल, मन्दाग्निसे पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। यही "कंटकारी घृत" है। इस घीकी मात्रा ६ माशेसे ४ तोले तक है। इसके पीनेसे स्वरभेद रोग और पाँचों प्रकारकी खाँसी जाती रहती है।

नोट—अगर गीली कटेरी न मिले तो सूखी कटेरी लाकर, अठगुने पानीमें पका लो। जब चौथाई जल रह जाय, मलकर छान लो। यही स्वरस काममें

लाओ। जैसे,—१ सेर कटेरीको ८ सेर पानीमें पकाओ, जब चौथाई यानी दो सेर पानी रह जाय, उतारकर छान लो। अगर १ सेर स्वरस दरकार हो, तो आध सेर कटेरी लो और काढ़ा पकाओ। कहा है :—

शुष्कद्रव्यमुपादाय स्वरसानामसंभवे।
वारिण्यष्टगुणे साध्यं ग्राह्यं पादावशेषितम्॥

भृङ्गराजादि घृत।

भाँगरा, गिलोय, अजमोद, अड़ूसा, दशमूल और कसौंधी—इनको बराबर-बराबर लेकर काढ़ा बना लो। इस काढ़ेके साथ "घी" पका लो। इस घीकी मात्रा ६ माशेसे २ तोले तक है। हर मात्रामें "पीपरोंका चूर्ण" मिलाकर, शहदके साथ चाटनेसे स्वरभेद और खाँसी रोग जाते रहते हैं।

नोट— गायका घी चार सेर ले लो। दवाएँ चार सेर लेकर, ६४ सेर पानीमें पकाओ ; जब चौथाई यानी १६ सेर पानी रह जाय उतारकर छान लो। पीछे घी और काढ़ेको आगपर चढ़ाकर पकालो। जब घी मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर रख दो। अगर काढ़े और घीमें पकते समय ही "पीपरोंका चार सेर कल्क" भी मिला दो तो और भी अच्छा। जब घी पक जाय, छानकर शीतल कर लो और फिर चार सेर "शहद" भी मिला दो। इस तरह करनेसे आपको रोज़-रोज़ "पीपरोंका चूर्ण" और "शहद" मिलानेकी खटखट न रहेगी। हम इसी तरह करते हैं। साफ यों समझिये कि घी ४ सेर, दवाओंका काढ़ा १६ सेर, पीपरको पिसी लुगदी ४ सेर और शहद ४ सेर—इन चारोंके तैयार करनेसे यह घी बनता है और "शहद" घीके पक कर चूल्हेसे नीचे उतारने और शीतल होने पर मिलाया जाता है।

त्र्यम्बकाभ्रक।

अभ्रक भस्म १०० आँचकी ८ तोले लेकर खरलमें डालो। फिर उसमें "कंटकारीका स्वरस या काढ़ा" आठ तोले डालो और घोटो। जब सूख जाय, "गोखरूका ८ तोले काढ़ा वा स्वरस" डालकर घोटो। जब सूख जाय, उसमें "घीग्वारका ८ तौले स्वरस" डालो और घोटो।

जब वह भी सूख जाय, तब आठ तोले "पीपरामूलका रस या काढ़ा" डालकर घोटो। ठीक इसी तरह "भांगरे, अडूसे, बेरके पत्ते, आमले, हल्दी और गिलोयके आठ-आठ तोले स्वरस या काढ़े" डाल-डालकर घोटो। शेषमें एक-एक रत्तीकी गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाओ।

इस अभ्रकसे स्वरभंग, गला बैठना, बोला न जाना, श्वास, खाँसी और हिचकी आदि रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

त्रिबंग भस्म।

५ तोले शुद्ध चाँदी, ५ तोले शुद्ध राँगा और ५ तोले शुद्ध शीशा—इनको गलाकर, इनमें १५ तोले "हिंगलूसे निकाला हुआ पारा" मिला दो और "नीबूका रस" डाल-डालकर खरल करो। शेषमें, पिट्ठीको धो डालो। फिर इस पिट्ठीमें १५ तोले "शुद्ध गंधक" डालकर कज्जली कर लो; यानी सबको खूब घोटो। फिर इस कज्जलीको नलिका डमरु यंत्रमें रखकर, पहले मन्दी, फिर मध्यम और फिर तेज़ आग दो दिन तक लगातार दो। जब नालीसे धूआँ निकलना बन्द हो जाय, आग बन्द कर दो।

जब यंत्र शीतल हो जायगा, आपको नालीके चारों तरफ "तालसिन्दूर" और पैंदेमें "त्रिबंग भस्म" मिलेगी।

"त्रिबंग भस्म" और "तालसिन्दूरको" मिलाकर घोट लो और सेवन करो अथवा खाली त्रिबंग भस्म ही सेवन करो। मात्रा १ से ४ रत्ती तक।

अडूसेका काढ़ा बना कर शीतल कर लो। फिर उसमें ६ माशे "शहद" मिला दो। त्रिबंगकी १ मात्रा खाकर, ऊपरसे इस काढ़ेको पीलो। इस तरह दोनों समय "त्रिबंग" सेवन करनेसे श्वास, खाँसी,

स्वरभेद, क्षय, रक्तपित्त, प्रमेह और कोढ़ आदि रोग नाश हो जाते हैं।

हमने इस "त्रिबंग भस्म" को श्वास, खाँसी और इनके साथ हुए स्वरभेद पर आज़माया है। श्वास रोग पर तो यह रामवाणही है।

नोट—त्रिबंग सेवन करानेसे पहले, अगर रोगी बलवान हो, तो, मुलेठी और मैनफलके काढ़ेसे वमन करा देनी चाहिये। वमन करा देनेसे, दूषित कफ निकल जायगा और श्वासादिमें जल्दी लाभ होगा।

मुलेठी २ तोले और मैनफल ५ तोलेको सेर भर पानीमें औटाओ; जब आधा काढ़ा रह जाय, मल-छान कर पिला दो। इससे कय हो जायँगी, पर कय करानेका काम अनुभवी वैद्यका है। यह सब हमने "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भागमें लिखा है।

निदिग्धिकावलेह।

कटेरी ५ सेर, पीपरामूल २॥ सेर, चीतेकी छाल १। सेर और दशमूलकी दशों दवाएँ १। सेर लेकर, पच्चीस सेर अढ़ाई पाव पानीमें औटाओ; जब तीन सेर तीन छटाँक पानी रह जाय, मल-छानकर रखलो।

फिर इस काढ़ेमें १॥≈ पुराना गुड़ डालकर औटाओ, जब शीरेका जैसा हो जाय, इसमें पीपरोंका चूर्ण १२८ तोले और त्रिजातक (दालचीनी, तेजपात और इलायची) का पिसा-छना चूर्ण ३२ तोले और कालीमिर्चोंका चूर्ण ४ तोले मिला दो और उतार लो। जब शीतल हो जाय, १६ तोले "शहद" भी मिला दो।

इस अवलेहको जठराग्निके बलानुसार सेवन करनेसे स्वरभेद, प्रतिश्याय, ज़ुकाम, खाँसी, श्वास, मन्दाग्नि, गलेके रोग, मल रुकनेसे पेटका अफारा, गांठ, अर्बुद (फोड़ा या रसौली) और मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाते हैं।

मृगनाभ्यादि अवलेह।

कस्तूरी, छोटी इलायची, लौंग और बंसलोचन—इनको समान-

समान लेकर पीस-छान लो। इसको नाबराबर घी और शहतमें चाटनेसे स्वरभेद और जीभकी जड़ता नाश हो जाती है। मात्रा १ से २ रत्ती तक। २ माशे घी और १ माशे शहदमें १ रत्ती दवा मिलाकर चाटनी चाहिये। परीक्षित है।

सारस्वत या ब्राह्मी घृत।

ब्राह्मीकी जड़ और पत्तोंका रस चार सेर और गायका ताज़ा घी १ सेर रख लो।

हल्दी, मालतीके फूल, कूट, तेवड़ीकी जड़ और बड़ी हरड़के छिलके दो-दो तोले लेकर, पानीके साथ सिलपर पीसकर लुगदी कर लो।

फिर ब्राह्मीका रस, घी और लुगदीको क़लईदार बासनमें डालकर, मन्दाग्निसे पका लो। जब रस जलकर घी मात्र रह जाय, उतारकर छानलो।

इस घी की मात्रा ६ माशेसे २॥ तोले तक है। सवेरे-शाम इसके पीनेसे स्वरभेद, कोढ़, गोला और प्रमेह आदि रोग नाश हो जाते हैं। स्वरभेद रोगपर यह घी सबसे अच्छा है। परीक्षित है।

ब्राह्म्यादि अवलेह।

ब्राह्मी, दूधिया बच, हरड़, अड़ूसा और पीपर—इन्हें बराबर-बराबर लेकर पीस लो। इसकी मात्रा १ से ४ माशे तक है। इसको "नाबराबर घी और शहद"में मिलाकर चाटनेसे सात दिनमें आदमी किन्नरकी तरह गाने लगता है।

अरुचिकी व्याख्या ।

साधारण लोग खाने पर मन न चलने या खानेकी रुचि न होनेको "अरुचि" कहते हैं । वृद्ध भोजने लिखा है :—

भूख हो, पर मुँहमें दिया हुआ ग्रास अच्छा न लगे, उसे "अरुचि" कहते हैं ।

भोजनकी याद करने, भोजनको बात सुनने, भोजनको देखने और उसकी गन्ध आनेसे मनुष्यको द्वेष होता है, तब "भक्तद्वेष" कहते हैं ।

क्रोधसे, भयसे, पीड़ासे और प्रेमके अनुरोधसे जब अन्न पर श्रद्धा नहीं रहती, तब "भक्ताच्छन्द" कहते हैं ।

नोट—वृद्ध भोजने भक्तद्वेष और भक्ताच्छन्दको अरुचिसे अलग लिखा है, पर चरक और सुश्रुतने इन दोनोंको "अरुचि"के अन्तर्गत ही माना है । इनकी समझमें ये अरुचिके ही भेद हैं ।

अरोचकके निदान-कारण ।

अरोचक क्यों होता है और अरोचक किसे कहते है ? वातादिक

दोषोंके कोपसे, शोकसे, भयसे, पीड़ासे, लोभसे, क्रोधसे, मन बिगाड़ने वाले भोजन और रूपसे, मनमें सन्ताप उत्पन्न करनेवाली गन्धसे और अति मोहसे अन्नादि पर जो अरुचि होती है, उसे "अरोचक" कहते हैं।

अरोचककी क़िस्में।

अरोचक रोग पाँच तरहका होता है :—

(१) वातज। (२) पित्तज।
(३) कफज। (४) सन्निपातज।
(५) आगन्तुक।

वातज अरुचिके लक्षण।

अगर मुँहका ज़ायका कसैला हो, दाँत आम गये हों—खट्टे हो गये हों तथा हृदयमें शूलकीसी वेदना होती हो, तो "वातज अरुचि" समझो।

पित्तज अरुचिके लक्षण।

अगर मुँहका स्वाद चरचरा, खट्टा, विरस और बदबूदार हो, मुँहमें नमकसा घुला जान पड़े, प्यास बहुत लगती हो, जलन बहुत होती हो और अग्नि सेवनके समान सन्ताप होता हो, तो "पित्तज अरुचि" समझो।

कफज अरुचिके लक्षण।

अगर मुँहका स्वाद मीठा, चिकना, लिबलिबा रहता हो, उसमें भारीपन, शीतलता और बदबू हो तथा कफ-मिला थूक गिरता हो, तो कफकी अरुचि समझो।

त्रिदोषज अरुचिके लक्षण।

अगर मुँहमें मीठे, खट्टे, खारी और कषैले प्रभृति कितने ही

प्रकारके रसोंके स्वाद आते हों तथा हृदयमें शूल, प्यास, जलन, और कफ गिरना ये लक्षण भी हों, तो "त्रिदोषज अरुचि" समझो।

आगन्तुक अरुचिके लक्षण ।

शोकसे, भयसे, अत्यन्त लोभसे, क्रोधसे, अप्रिय भोजनसे, अप्रिय रूप देखनेसे और अप्रिय गन्ध सूँघनेसे जो अरुचि होती है, उसमें मुँहका ज़ायका स्वाभाविक रहता है—कुछ विकृति या फेरफार नहीं होता। हाँ, मनकी व्याकुलता, मोह, बेहोशी अथवा रसज्ञान-विषयक मोह और जड़ता ये लक्षण होते हैं।

नोट—वाग्भट्टजी कहते हैं :—"शोकक्रोधादिषु यथामलम्" अर्थात् शोक क्रोध वग़ैरःसे हुई अरुचिमें दोषोंके अनुसार मुखका स्वाद हो जाता है ।
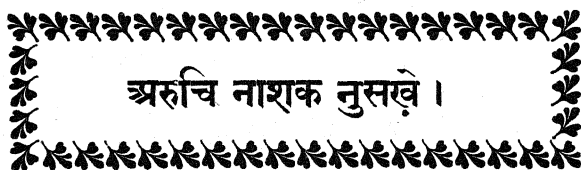
अरुचि नाशक नुसखे ।

नोट—वातज अरोचकमें बस्तिकर्म श्रेष्ठ है ; पित्तजमें विरेचन या जुलाब देना श्रेष्ठ है ; कफजमें वमन या कय कराना हितकारी है और मन बिगड़नेसे हुए अरोचकमें मनको प्रसन्न करना या आनन्ददायी पदार्थोंका प्रयोग करना उत्तम है ।

लवणार्द्रक योग ।

(१) भोजनसे पहले, सदैव, सैंधानोन लगाकर अदरख खाना पथ्य है। इससे भोजन पर रुचि होती, अग्नि तेज़ होती और जीभ तथा कंठ शुद्ध होते हैं। इसके खाने वालेके पास अरुचि भूलकर भी नहीं आती।

शृंगवेर रस योग ।

प्रतिश्याय—ज़ुकाम और कफका नाश होता है। ६ माशे शहद और ६ माशे अदरखको मिलाकर पीना साधारण मात्रा है।

इमलीका पना।

पकी हुई मीठी इमलीके बीज वग़ैरः निकाल कर साफ करलो। फिर अन्दाज़से सफेद चीनी और इमलीको शीतल पानीमें घोल लो। जब ख़ूब घुल जायँ, साफ कपड़ेमें छान लो। फिर इसमें अन्दाज़से इलायची, लौंग, कपूर और कालीमिर्च पीसकर मिला दो। यही "अम्लीका पानक" या इमलीका पना है। इस पनेको मुँहमें भर-भर कर गरगरे या कुल्ले करनेसे सब तरहकी अरुचि नाश होती और पित्त शान्त होता है।

नोट—(१) छोटी इलायची, लौंग और कालीमिर्च अन्दाज़से इतनी लेनी चाहिएँ जो ज़ियादा भी न हों और एकदम कम भी न हों। कपूर बहुत ही थोड़ा लेना चाहिये, नहीं तो सारा पना कड़वा और बदज़ायके हो जायगा।

नोट—(२)—कोई-कोई इमली और गुड़को पानीमें घोलकर छान लेते हैं, फिर उसमें तज, इलायची और कालीमिर्च मिला देते हैं। यह पना भी अच्छा बनता है। याद रखकर इमलीका पना लकड़ी, काठ, मिट्टी या काँचके बर्तनमें बनाना चाहिये; पीतल, ताम्बे आदिके बर्तनमें नहीं।

अरुचि नाशक माठा।

गायके उत्तम दहीमें भुनी हुई राई, भुना हुआ ज़ीरा, भुनी हुई सोंठ और सैंधानमक मिलाकर कपडेमें छान लो। फिर इसमें उतना ही पानी मिला दो, जितनेमें यह ठीक बन जाय। इस माठेके खानेसे तत्काल अरुचि नाश होकर रुचि होती और जठराग्नि तेज़ होती है।

भीमसेनी शिखरिणी।

अच्छी तरहसे, दूधको औटा'लो और भैंसके दहीको कपड़ेमें बाँध-

कर पानी-रहित करलो। फिर इनको मिलाकर मथो और मोटे कपड़ेमें छान लो। शेषमें इसमें इलायची, लौंग, भीमसेनी कपूर और कालीमिर्च चतुराईसे डाल दो। बस, शिखरन तैयार हो जायगी। इसके खानेसे अवश्य रुचि होती है।

नोट—कपूर १ गोल मिर्च भर या २।३ चाँवल भरसे अधिक मत डालना।

दाडिमादि चूर्ण।

खट्टे अनारके दाने ८ तोले, चीनी १२ तोले, दालचीनी ४ माशे, तेजपात ४ माशे और छोटी इलायचीके बीज ४ माशे—सबको पीस-कूट कर चूर्ण बनालो। इसके थोड़ा-थोड़ा खानेसे अरुचि नष्ट होती, अग्नि तेज़ होती एवं पीनस, ज्वर और खाँसी ये रोग नष्ट हो जाते हैं। बोलचालमें इसे "अनार दानेका चूर्ण" कहते हैं।

अनार दानेका चूर्ण।

अनार दानेका चूर्ण ८ तोले, पिसी मिश्री ३२ तोले, सोंठका पिसा-छना चूर्ण ४ तोले, कालीमिर्चोंका चूर्ण ४ तोले, छोटी पीपरोंका चूर्ण ४ तोले, दालचीनीका चूर्ण ४ तोले, तेजपातका चूर्ण ४ तोले और छोटी इलायचीका चूर्ण ४ तोले—इन सबको एकत्र मिलाकर फिर छान लो। इसके सेवन करनेसे अरोचक और पीनस नाश होकर जठराग्नि बढ़ती है। यह चूर्ण हृदयको हितकारी है। परीक्षित है।

लवंगादि चूर्ण।

लौंग, कंकोल, कालीमिर्च, खस, सफेद चन्दन, तगर, नीले कमलके बीज, कालाज़ीरा, सुगन्धवाला, अगर, तज, नागकेशर, पीपर, सोंठ, छोटी इलायची, भीमसेनी कपूर, जायफल और नीला बंसलोचन—इन अठारह दवाओंको बराबर-बराबर लेकर पीस कूट

लो। फिर इस चूर्णके वज़नसे आधी "मिश्री" पीसकर मिला दो और कपड़ेमें छानकर रखदो।

इस चूर्णकी मात्रा १ से ३ माशे तक है। इसके सेवन करनेसे अरुचि नाश होकर रुचि होती है, तृप्ति होती है, अग्नि तेज़ होती है, बलकी वृद्धि होती है, मैथुन-शक्ति बढ़ती है एवं तीनों दोष शान्त होते हैं। इनके सिवाय छातोकी जकड़न, तमक श्वास, गलग्रह, खाँसी, हिचकी, अरुचि, क्षय रोग, पीनस, संग्रहणी, अतिसार, उरः-क्षत और सब तरहके प्रमेह नाश होते हैं।

खाण्डव चूर्ण

तालीसपत्र, चव्य, काली मिर्च, सोंठ और सेंधानोन एक-एक तोले; छोटी पीपर, चीतेकी छाल, सफेद ज़ीरा, तज, इमली, पीपरा-मूल और धनिया दो-दो तोले; बेरका गूदा, अम्लवेत, इलायची, नागरमोथा और अजवायन तीन-तीन तोले और अनारकी छाल ४ तोले,—इन सब दवाओंको पीसकर कपड़ेमें छान लो। फिर यह चूर्ण जितना हो, उससे आधी "मिश्री" पीसकर मिला दो। इसकी मात्रा १ से ३ माशे तक है।

इस चूर्णके सेवन करनेसे मन्दाग्नि, खाँसी, अरुचि, शूल, गोला, बवासीर, कंठरोग, पेटके रोग, छातीका दर्द, तिल्ली, पाण्डुरोग, ज्वर, वमन, शोष, अतिसार, अफारा, जीभके रोग, ग्रहणी और मलबन्ध रोग नाश होते हैं।

हमारा अनुभूत कलहंस।

सहँजनेके बीज नग १८ कालीमिर्च नग १०, पीपर नग २०, अदरख ८ तोले, गुड़ ८ तोले, काँजी ८ सेर और मनिहारीनोन या कालानोन ८ तोले—इनको मिलाकर रईसे मथ लो। फिर इसमें दालचीनी, छोटी इलायची, तेजपात और नागकेशर दो-दो तोले

पीस कर मिला दो। बस, "कलहंस" तैयार हो गया। इसके सेवन करनेसे अरुचि तो नष्ट होती ही है, पर स्वरभंग रोग भी आराम हो जाता है। यह योग "चक्रदत्त"में लिखा है।

यवानीषांडव ।

अजवायन, इमली, सोंठ, अम्लवेत, अनार, खट्टे बेरोंका गूदा, दो-दो तोले; धनिया, कालानोन, कालाज़ीरा, तेजपात और दालचीनी एक-एक तोले; पीपर नग २००, कालीमिर्च नग ४०० और चीनी ३२ तोले—इन सबको पीस-छान कर चूर्ण बनालो। मात्रा ३ से ६ माशे तक। इसके सेवन करनेसे अरोचक, हृदयकी पीड़ा, पसलीका दर्द, अफारा, खाँसी, श्वास और बवासीर आदि रोग नाश हो जाते हैं। इस नुसख़ेकी चक्रदत्त और वृन्दने खूब तारीफकी है।

हिंग्वष्टक चूर्ण ।

सोंठ, अजमोद, कालीमिर्च, सेंधानोन, छोटी पीपर, काला-ज़ीरा और सफेद ज़ीरा—ये सब एक-एक तोले लेकर पीस-कूट कर कपड़ेमें छान लो। फिर २ माशे हींग घीमें भूँजकर मिला दो और शीशोमें रख दो। मात्रा १ से ३ माशे तक।

यह चूर्ण खूब मशहूर है। इसको दाल या सागमें मिलाकर खानेसे भूख बढ़ती और भोजन पर रुचि होती है, पेटकी हवा खुलती और बदहज़मी होने नहीं पाती।

अगर इसकी १ मात्रा थालीमें परोसी हुई दालमें मिलाकर और ज़रासा "घी" डाल कर खाई जाती है, तो पेटके वात रोगोंको नाश करती, अग्निको तेज़ करती और खूब भूख लगाती है। परीक्षित है।

जम्बीरद्राव ।

पहले सफेद ज़ीरा भुना हुआ ६ तोले, स्याह ज़ीरा २ तोले,

अजवायन १ तोले, कालीमिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, धनिया ४ तोले, तज ६ माशे, तेजपात १ तोले, बड़ी इलायचीके बीज २ तोले, जवाखार २ तोले, सोंठ २ तोले, सैंधानोन १० तोले और हीरा हींग घीमें भुनी हुई १ तोले—इन सबको पीस-कूट कर कपड़ेमें छान लो और रख लो।

काग़ज़ी नीबुओंका रस एक सेर लेकर छान लो और क़लईदार कड़ाहीमें चढ़ा दो; नीचेसे मन्दी-मन्दी आग लगने दो। जब एक भाग यानी पाव-भर रस जल जाय, उसमें ऊपरका छना हुआ चूर्ण मिला दो। जब गाढ़ा होने पर आवे, उतार कर साफ बोतलमें भर दो। इसकी मात्रा १ से ६ माशे तक है। एक मात्रा दवा भोजनके बाद नित्य खानेसे खूब भूख लगती, अरुचि नाश होती और पेटका दर्द आराम होता है। बड़ी ही उत्तम चीज़ है। हर गृहस्थको घरमें रखनी चाहिये। यह पीनेमें भी अत्यन्त रोचक और सुस्वाद है। इसके सेवन करनेसे शूल,अम्ल शूल,बस्तिशूल—पेड़ूका दर्द, तिल्ली, रक्तगुल्म, अजीर्ण, हैज़ा, पेटके रोग और मन्दाग्नि ये सब रोग नाश होते हैं। एक मात्रा खाते ही दर्द हवा हो जाता है, शुद्ध डकारें आतीं और कच्चा भोजन शीघ्र ही पच जाता है।

अरुचि गजकेशरी अवलेह।

सोंठ, कालीमिर्च, छोटी पीपर, अजवायन, अजमोद, दालचीनी, लौंग और अकरकरा—इन सबको पीस कूट कर कपड़ेमें छान लो।

सेंधानोन ११ तोले, कालानोन ११ तोले और मिश्री ११ तोले —इनको पीसकर छान लो।

सफेद ज़ीरा भुना हुआ १ तोले, कालाज़ीरा भुना हुआ १ तोले और घीमें भूँजी हुई हीरा हींग १ तोले पीस कर तैयार रखो।

अदरखके पतले-पतले टुकड़े ११ तोले, किशमिश साफकी हुई ११ तोले और छुहारे गुठली निकाले हुए ११ तोले तैयार रखो।

इन सब चीज़ोंको एक चौड़े मुँहकी काँचकी शीशी या अमृत-बानमें भर दो। ऊपरसे कपड़ेमें छना हुआ नीबुओंका रस इतना भर दो, कि सब चीजें डूब जायँ। फिर शीशीका मुँह बन्द करके रख दो और ११ दिन तक मत छेड़ो।

बारह दिन बाद, इसमेंसे थोड़ी-थोड़ी चटनी भोजनके समय और भोजनके बाद खाया करो। ग़ज़बकी उमदा चटनी है। हम इसे स्वयं खाते हैं। यह अरुचि नाश करने और भूख लगानेमें एक नम्बरकी चीज़ है। परीक्षित है।

चन्द परीक्षित साधारण नुसखे।

(१) पकी हुई मीठी इमली आधी छटाँक लेकर छटाँक-भर पानीमें मसल कर छान लो। फिर उसमें २ माशे कालानोन, ४ माशे पोदीना और १॥ माशे कालीमिर्च मिलाकर पीजाओ। इस नुसख़ेसे अरुचि फौरन जाती रहती है। परीक्षित है।

(२) शहद ६ माशे, पके अनारका रस ६ माशे और काला नमक १ माशे—इनको मिलाकर पीनेसे अरुचि शीघ्र ही जाती है। परीक्षित है। कहा है :—

विट् चूर्ण मधुसंयुक्तो रसो दाड़िमसम्भवः।
असाध्यामपि संहन्यादरुचिं वक्त्रधारितः॥

मनिहारी नमकके चूर्णमें शहद और अनारदानेका रस मिलाकर खानेसे असाध्य अरुचि भी नाश हो जाती है।

(३) खट्टा अनारदाना ८ तोले, मिश्री १२ तोले, दालचीनी

४ तोले, छोटी इलायची ४ तोले और तेजपात ४ तोले—इनका चूर्ण खानेसे अरुचि नष्ट हो जाती है। परीक्षित है।

(४) कलौंजी, ज़ीरा, कालीमिर्च, मुनक्का, खट्टा अनारदाना, संचरनोन, गुड़ और शहद—इनको पीसकर गोलियाँ बना लो। बेर-समान गोली मुखमें रखनेसे अरुचि नाश हो जाती है।

अरुचिमें पथ्यापथ्य ।
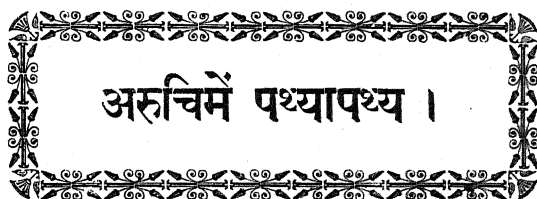
पथ्य ।

बस्तिकर्म—गुदामें पिचकारी लगाना, बलाबल अनुसार विरेचन लेना वमन करना, धूम्रपान करना, मुँहमें दवाओंका कवल रखना और नीम आदिकी दाँतुन करना—ये सब पथ्य हैं।

नोट—वातज अरुचिमें बस्तिकर्म, पित्तजमें जुलाब, कफजमें वमन और आगन्तुकमें मनको प्रसन्न रखनेवाली मामूली चिकित्सा करनी चाहिये।

जो पदार्थ रोगीको अच्छे लगें, जिन पर उसका मनचले वेही अरुचि वालेको देने चाहियें, पर वे पचनेमें हल्के और वातादि दोष-त्रयमें उपकारी होने चाहियें।

भोजन करते-करते बीच-बीचमें पुरानी इमली और गुड़ पानीमें घोलकर, उसमें दालचीनी, बड़ी इलायची और गोलमिर्चका चूर्ण मिलाकर पना बनाना चाहिये। फिर उसे मुँहमें भरकर कुल्ले करने चाहियें। अथवा अनारके रसमें शहद और कालानोन मिलाकर कुल्ले करने चाहियें। ये सब अरुचि नाशक और पथ्य हैं।

दिनके भोजनके समय, सबसे पहले सेंधानोन-लगी अदरख खानी चाहिये।

अरुचि रोगमें स्नान द्वारा शरीरको साफ रखना भी हितकारी है। अगर ज्वर आदि उपद्रव न हों, तो रोगी बहती हुई नदी या सुन्दर तालाबमें भी स्नान कर सकता है।

बाग़ बग़ीचों या सुन्दर स्थानोंमें घूमना, गाना-बजाना सुनना और जिन कामोंसे मन प्रसन्न हो, वे सब काम करना अरुचि रोगमें हित हैं। कपड़े लत्ते साफ रखना भी लाभदायक है।

गेहूँ, मूँग, अरहर, शाली चाँवल, साँठी चाँवल, लाल घीया, बेंतकी कोंपल, नयी नमें मूली, बैंगन, सहँजना, केला, अनार, परवल, सेंधानमक, दूध, घी, ताड़के नमें और कच्चे फल, लहसन, ज़मीकन्द, दाख, आम, खसका जल, काँजी, शराब, शिखरन, दही, छाछ, अदरख, खजूर, चिरौंजी, पका कैथा, बेर, मिश्री, हरड़, अजवायन, कालीमिर्च, हींग और स्वादिष्ट खट्टे-चरपरे रस,—ये सब पथ्य हैं।

मांस खानेवालोंके लिए सूअर, बकरा, खरगोश, हिरन, चेंग और रोहू मछली आदिका मांस पथ्य है।

अपथ्य ।

खाँसी, डकार, भूख और आँसू रोकना, हृदय-विरुद्ध भोजन-पान, खून निकलवाना, क्रोध, लोभ, भय और शोच-फिक्र करना, बदबूदार पदार्थोंकी गन्ध और कुरूप पदार्थोंका देखना—ये सब अपथ्य हैं। बहुत करके जिन पदार्थोंके देखने, खाने या और तरह सेवन करनेसे मन बिगड़े, वे सब अरुचि रोगीको अपथ्य हैं।

छर्दि रोगके सामान्य लक्षण।

जिस रोगमें शरीर टूटता, पीड़ा होती और खाये-पीये पदार्थ मुँहमें होकर बाहर निकल पड़ते हैं, उसे "छर्दि रोग" कहते हैं। खुलासा यों समझिये कि, जब खाई-पीयी चीज़ मुँहसे निकलती है, तब छर्दि, वमन, कय, वान्ति, उल्टी या रद्द होना कहते हैं।

वमन रोगके निदान-कारण।

नीचे लिखे हुए कारणोंसे वमन या कय होनेकी बीमारी होती है :—

(१) अत्यन्त पतले और चिकने भोजन करनेसे,

(२) अच्छे न लगनेवाले और खारी भोजनसे,

(३) बहुत ज़ियादा खा लेनेसे,

(४) नुक़सानमन्द या प्रकृति-विरुद्ध भोजन करनेसे,

(५) आमसे यानी अच्छी तरह न पके हुए अन्नरससे,

(६) भय या डरसे,

(७) उद्वेगसे,

(८) अजीर्णसे यानी खाये हुए पदार्थोंके पेटमें जैसेके तैसे रक्खे रहने और न पकनेसे,

(९) कृमि-दोषसे यानी पेटमें कीड़े पड़नेसे,

(१०) गर्भ रहनेसे,

(११) बहुत ही जल्दी-जल्दी खाने-पीनेसे,

(१२) ग्लानि पैदा करनेवाले पदार्थोंके देखने, छूने, खाने अथवा वैसे पदार्थोंकी बात सुननेसे,

(१३) पेटमें जगह न रहने पर भी, ज़बर्दस्ती खानेसे,

(१४) अत्यन्त भयंकर कारणोंसे, छर्दि रोग या वमन रोग होता है। कहा है :—

> अतिद्रवैःस्निग्धतररहृद्यै रसात्म्यजातैरपि भोजनैश्च ।
> कृमिश्रमोद्वेगभयादजीर्णादत्यामदोषाच्चवमेत्तृषार्त्तः ॥

अत्यन्त पतले, अत्यन्त चिकने, हृदयको अहितकारी और प्रकृति-विरुद्ध भोजनसे तथा कृमि रोग, मिहनत, उद्वेग, भय, अजीर्ण और पेटमें बहुत ज़ियादा आम—कच्चे अन्नरसके जमा हो जानेसे "वमन रोग" होता है। वमन या कय करनेवालेको "प्यास" बहुत लगती है।

वमनकी सम्प्राप्ति।

अत्यन्त पतले और अत्यन्त चिकने पदार्थ खाने वगैरः कारणोंसे वात, पित्त, कफ अलग-अलग और तीनों दोष एक साथ कुपित हो जाते हैं। कुपित होकर ये दोष खाईपीयी हुई चीज़को उछाल कर मुँहके बाहर निकालते हैं। इसीको "छर्दि" या "वमन" कहते हैं। इस रोगमें ये सब काम "उदान वायु" कराती है और यह रोग "आमाशयका रोग" है।

वमनकी क़िस्में।

वमन रोग पाँच तरहका होता है :—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) त्रिदोषज,
(५) आगन्तुक।

वातज छर्दिके लक्षण।

वातज छर्दि में नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं :—

(१) छाती और पसलियोंमें पीड़ा।

(२) मुँह सूखना।

(३) सिर और नाभिमें दर्द।

(४) खाँसी उठना।

(५) स्वरभङ्ग या गला बैठ जाना।

(६) पेटमें सूई चुभनेकी सी वेदना होना।

(७) ज़ोरकी आवाज़ोंके साथ डकार आना।

(८) झागदार, टूटीसी, काली, पतली, कसैली और थोड़ी कय बड़े कष्ट और बड़े वेगसे होना।

खुलासा यह है, कि वातज वमनमें रोगीके हृदय और पसवाड़ोंमें शूल चलते हैं, आवाज़ बैठ जाती है, खाँसी आती है और रोगी जल्दी-जल्दी कय करता है, पर उसे कय करनेमें बड़ी तकलीफ होती है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, आमाशयमें बादी पैदा होनेसे खट्टी-खट्टी कय होती हैं, प्यास नहीं लगती, आमाशयमें गुड़गुड़ाहट और पेटपर अफारा होता है। कयसे ज़मीन फद-फदा उठती है और उसपर मक्खियाँ नहीं बैठतीं।

पित्तज छर्दिके लक्षण।

पित्तकी वमनमें नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं :—

(१) मूर्च्छा या बेहोशी।

(२) प्यास।

(३) मुँह सूखना।

(४) सिर, तालू और आँखोंमें सन्ताप या गरमी।

(५) आँखोंके सामने अँधेरी आना।

(६) भ्रम होना, भौंर या चक्कर आना।

(७) पीली, बहुत गरम, हरी, कड़वी, धूएँ और जलनके साथ वमन या कय होना।

खुलासा यह है, कि पित्तज वमन होनेसे प्यास, भ्रम, मोह और गला सूखना ये लक्षण होते हैं। पीले रंगकी कय होती है और कय करते समय गलेमें अत्यन्त दाह या जलन होती है।

नोट—हिकमतमें लिखा है, अगर आमाशयमें पित्तके पैदा होनेसे वमन होती है, तो पित्तकी अधिकता, प्यास, आमाशयमें विशेष गरमी और कफमें कड़वापन आदि लक्षण होते हैं।

कफज छर्दिके लक्षण।

कफकी वमन होनेसे नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं :—

(१) तन्द्रा।

(२) मुँहमें मीठापन।

(३) कफ गिरना।

(४) तृप्ति होना।

(५) नींद आना।

(६) अरुचि।

(७) भारीपन।

(८) रोमाञ्च खड़े होना।

(९) चिकनी, गाढ़ी, मीठी, सफेद वमन होती है और रोगीको वमन करनेमें कम तकलीफ होती है।

खुलासा यह है कि कफज वमनमें लार टपकती है, अरुचि और

भारीपन होता है तथा रोगी चिकनी, गाढ़ी और मीठी वमन करता है ।

नोट—हिकमतमें लिखा है, आमाशयमें कफके पैदा होनेसे अगर वमन होती है, तो अफारा और गुड़गुड़ाहट आदि होते हैं, प्यास लगती है, पर पित्तज वमनकीसी प्यास नहीं लगती । अगर कफ खारी होता है तो वमन खारी होती है ; अगर कफ मीठा होता है तो वमन मीठी होती है; परन्तु इन दोनों ही हालतोंमें प्यास नहीं लगती । कफमें खट्टापन पचावकी कमीसे होता है ।

त्रिदोषज छर्दिके लक्षण ।

अगर वात, पित्त और कफ इन तीनों दोषोंके कारणसे वमन होती है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण होते हैं :—

(१) शूल चलना ।

(२) अन्नका अच्छी तरह परिपाक न होना ।

(३) अरुचि ।

(४) दाह या जलन ।

(५) प्यास ।

(६) श्वास ।

(७) अत्यन्त मोह या बेहोशी ।

(८) खारी, खट्टी, नीले रंगकी, गाढ़ी, गरम और खून-मिली या खूनकी कय होना ।

खुलासा यह है कि, त्रिदोषज वमन होनेसे श्वास, मोह, अरुचि, दाह और प्यास ये लक्षण होते हैं तथा रोगी गाढ़ी, गरम और लाल रंगकी वमन करता है ।

आगन्तुक वमनके लक्षण ।

(१) अहित भोजन करनेसे, (२) कृमि रोगसे, (३) आम या

कच्चे रससे, (४) ग्लानिकारक पदार्थ देखनेसे, और (५) गर्भ रहनेसे पाँच तरहकी आगन्तुज वमन होती हैं। आगन्तुज वमन पहले कहे हुए लक्षणोंसे यथा दोषानुसार जाननी चाहिये।

मल, राध, खून, रहँट, खखार आदि ग्लानिकारक चीज़ों के देखनेसे, बुरी गन्धसे, ख़राब चीज़के स्वादसे, स्त्रीके गर्भ रहनेसे, आमसे, कम-ज़ियादा खानेसे अथवा कृमि रोगसे जो वमन होती है, वह "आगन्तुज" पाँचवीं छर्दि होती है। उसमें पहले कहे हुए लक्षणोंमेंसे जिस दोषके लक्षण ज़ियादा मिलें, उसी दोषको प्रबल समझो।

नोट—कृमिकी छर्दि में शूल चलते और सूखी उबकियाँ अधिक आती हैं।

वमनके पूर्व्वरूप ।

हुल्लास या उबकी आना, वायुका रुकना और मुँहसे खारी लार टपकना—ये वमनके "पूर्व्वरूप" हैं, अर्थात् वमन रोग होनेसे पहले ये लक्षण होते हैं। खुलासा यह, कि सूखी उबकियाँ आती हैं, लार गिरती है, मुँह खारी हो जाता है तथा अन्नपानीमें अरुचि हो जाती है।

वमनके उपद्रव ।

वमन रोगमें नीचे लिखे हुए उपद्रव होते हैं :—

(१) खाँसी। (२) ज्वर।
(३) प्यास। (४) हिचकी।
(५) घबराहट। (६) छातीमें दर्द, और
(७) अन्धकारसा दिखाई देना।

कहा है :—

तृष्णा श्वासो ज्वरो हिक्काकासो वैस्वर्यमेवच।
तमको हृद्रवश्चैति ज्ञेयाच्छर्दे रुपद्रवाः ॥

प्यास, श्वास, हिचकी, खाँसी, स्वरभंग, तमक श्वास और हृद्रोग ये वमनके उपद्रव हैं।

असाध्य वमनके लक्षण।

जिस समय "वायु"—पुरीष, पसीना, पेशाब और जल बहानेवाली नालियोंकी राह रोक कर ऊपर आता है, तब मल मूत्रादिको कोठेसे बाहर निकाल कर वमन कराता है। उस वमनमें मल मूत्रकीसी बदबू आती है और रंग भी मल मूत्रके जैसा हो जाता है; प्यास, श्वास, खाँसी और शूल—ये होते हैं। यह वमन बारम्बार होती है और बड़े ज़ोरसे होती है। इस वमन वाला थोड़ी देरमें ही मर जाता है। कोई कहते हैं, यह सन्निपातको वमन होती है और कोई कहते हैं, कि यह प्रबल छर्दि होती है। कुछ भी हो, ऐसी वमन असाध्य होती है।

साध्यासाध्य लक्षण।

अति दुर्बल मनुष्यको बारम्बार होनेवाली, खाँसी, श्वास, ज्वर, हिचकी आदि उपद्रव-सहित, खून और राध मिली हुई तथा मोरके चँदोवेकी जैसी वमन "असाध्य" होती है।

जिस वमनमें खाँसी और श्वास आदि उपद्रव न हों, उसे "साध्य" समझ कर इलाज करना चाहिये।

वमनकी चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) सब तरहकी वमन आमाशयके उत्क्लेश या आमाशयके बिगड़नेसे होती हैं, अतः वातज वमनको छोड़कर, और वमनोंमें लंघन

कराना सबसे अच्छा है। कफज और पित्तज वमनमें पहले लंघन कराने चाहिएँ अथवा जुलाब देना चाहिये।

"तिब्बे अकबरी"में लिखा है,अगर पित्तज वमन होती हों,तो मवाद् निकालनेके लिए, प्रकृतिका विचार करके, लङ्घन कराओ या नरम झुकनेका प्रयोग करो। अगर मवाद् आमाशयकी गहराईकी तरफ झुका हो, तो दस्त कराना और झुकनेका प्रयोग करना अच्छा है। पर यदि मवाद् आमाशयमें ही हो, तो उसके निकालनेमें वमन सबसे अच्छा काम करती है। अगर मवाद् आमाशयके मुँहकी ओर झुका हो, तब तो वमन कराना सर्व्वोत्तम उपाय है।

वमनके लिए सिकंजबीन और गरम जल पिलाना चाहिये। अगर दस्त कराने हों तो हरड़के काढ़े और सकमूनियाँके साथ यारज फयकरा खिलानी चाहिये। अगर कुछ मवाद् बाक़ी रह जाय और उसे निकालना उचित न हो, तो शर्बत सेब, शर्बत बिही अथवा शर्बत अनार अर्क़ पोदीनेके साथ देना चाहिए अथवा कच्चे अंगूरोंका शर्बत और रीवासका शर्बत गुलाब जलमें मिलाकर देना चाहिये। सेबके रस, चन्दन और कपूरका लेप करना चाहिये।

आयुर्वेदमें लिखा है, पित्तकी वमनमें दाख, विदारी कन्द और ईखके रसमें निशोथ देनी चाहिये, जिससे विरेचन-द्वारा पित्त शान्त हो जाय। खयाल रखकर, कफाशयसे पैदा हुए और अत्यन्त बढ़े हुए पित्तको, दाख और जीवक प्रभृति स्वाद पदार्थोंके द्वारा, ऊपरकी राहसे दूर करना चाहिये। वमन आदिसे शुद्ध होनेपर रोगीको मधु, मिश्री और खीलोंके साथ मन्थ पिलाना चाहिये; अथवा मूँगोंके रसमें चाँवलोंका भात देना चाहिये।

अगर कफाशयमें कफके बढ़नेसे कय होती हों और मवाद् आमाशयके मुखकी ओर झुका हो, तो सोयेका काढ़ा और शहदकी

सिकंजबीन पीकर वमन करनी चाहियें। अगर इस दवासे लाभ न हो और मवाद पर्त्तोंमें घुस रहा हो, तो उसमें मूलीके बीज, राई, नमक और शहद ये चारों मिला देने चाहिएँ ।

अगर मवाद आमाशयकी गहराईमें हो, तो विरेचक—दस्तावर दवा देनी चाहिये। इसके लिए एलुवेकी गोली, मस्तगीकी गोली अथवा यारज फयकरा देनी चाहिये। दस्त हो जानेके बाद, "शर्बत अनार" पोदीना मिलाकर तथा लौंग, अगर और गुलाबके फूलोंसे सुगन्धित करके पिलाना चाहिये। इससे आमाशयमें ताक़त आयेगी।

आयुर्वेदमें लिखा है, कफकी वमनमें, कफ़ाशय और आमाशयके शोधनके लिए "गरम जलमें सेंधानोन" घोलकर पिला देना चाहिये अथवा सेंधेनोन और मैनफलके द्वारा वमन करानी चाहिये।

हिकमतमें लिखा है, बादीकी वमनमें कफनाशक दवा देनी चाहिये और मवादको थोड़े तेज़ झुकनेसे नीचे उतारना चाहिये।

अगर आमाशयकी ताक़तसे ज़ियादा खाने ; विशेष खारी, खट्टे, नमकीन और चरपरे भोजन करने अथवा भारी भोजनके ऊपर हल्के और नर्म भोजन करनेसे वमन रोग हुआ हो, तो वमन आदिसे जिस तरह बने उसे आमाशयसे निकाल देना चाहिये। पीछे आमाशयको बलवान करनेवाली चीज़ देनी चाहिये।

हकीम गीलानी साहब कहते हैं, इस निकम्मे भोजनको बारम्बार गरम पानी पीकर वमनके द्वारा निकाल देना चाहिए, सिरपर तेल टपकाना चाहिये, पेट और पसलीपर गरम कपड़ेसे सेक करना चाहिये, हाथ-पाँवोंपर जैतूनका तेल मलना चाहिये और उनपर गरम पानीके तरड़े देने चाहिएँ। रोगीको खूब नींद लेकर सो जानेका हुक्म दे देना चाहिये। अगर वमन बहुत ज़ियादा होती हों, तो दिनभर खानेको न देना चाहिये।

अगर आमाशयमें दोषोंके बढ़ने और उसके कमज़ोर होनेसे, भोजन उसमें जाते ही उल्टा आवे, वहाँ न रुके, जो मिचलावे या कय हो, तो नीबूके शर्बतके साथ मस्तगी चबाने चाहिएँ।

अगर मवाद सारे शरीरसे निचुड कर आमाशय पर गिरता होगा, तो ज्वरके साथ वमन होंगी। इस तरहकी वमन ज्वरके साथ पैदा होतीं और उसके साथ ही चली जाती हैं। इस दशामें ज्वरका विशेष ध्यान रख कर, सारे शरीरका मवाद निकालना चाहिये।

अगर आमाशयमें कीड़े होनेसे वमन रोग हुआ हो, तो कृमि रोगकी तरह इलाज करना चाहिये।

आयुर्वेदमें लिखा है, वीभत्स पदार्थोंके देखने वग़ैरः या घृणा होनेसे अगर कय होती हो, तो अति रोचक और अभीष्ट फलोंसे उसकी शान्ति करनी चाहिये। असात्म्यतासे पैदा हुई वमनको लंघन और वमन आदिसे शान्त करना चाहिये। इसी तरह कृमि, हृद्रोग और मलसे पैदा हुई वमनकी विधि-पूर्व्वक चिकित्सा करनी चाहिये। "भावप्रकाश"में लिखा है, वीभत्स पदार्थोंके देखनेसे हुई वमनको प्रिय पदार्थोंसे, गर्भसे हुई वमनको प्रिय फलोंसे, आम-दोषसे हुई वमनको लंघनोंसे और अहित पदार्थोंसे पैदा हुई वमनको हित पदार्थोंसे जीतना चाहिए।

बहुत समयसे पैदा हुई छर्दिकी बीमारीमें वायु नाशक प्रयोग करने चाहियें; क्योंकि छर्दिके कारणसे धातु क्षय होता है और वायु उत्कट रूपसे बढ़ता है; अतएव इस तरहके रोगमें बृंहण और स्तम्भक दवाएँ देनी चाहियें, जो वायुको जीतकर अनुकूल स्थानमें पहुचावें।
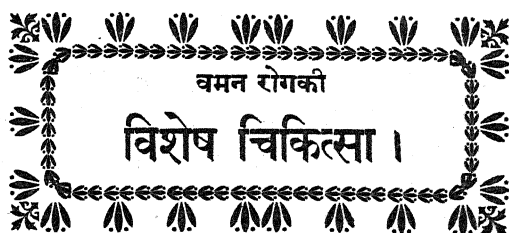
वातज वमन नाशक नुसख़े।

(१) दही डालकर दूधको फाड़ लो। फिर उसमें जो पानी सा हो जाय, उसे छान कर निकाल लो। उस फटे दूधके पानीके पीनेसे वातज वमन शान्त हो जाती है।

(२) घी और सैंधेनोनके साथ मूँगोंका यूष-रस अथवा आमलोंका यूष-रस पीनेसे वातज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(३) घीको सेंधेनोनके साथ पीनेसे वातज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(४) पञ्चमूलके साथ बनाई हुई यवागू खिचड़ी "शहद" मिलाकर पीनेसे वातज वमनको शान्त करती है।

(५) बराबर-बराबर दूध और पानी मिला कर पीनेसे वातज वमन शान्त हो जाती है।

पित्तज वमन नाशक नुसख़े।

(६) गिलोय, हरड़, बहेड़ा, आमला, नीम और पटोल पत्र—इनको कुल दो तोले लेकर काढ़ा बनालो और छान लो। शीतल होने पर ३ माशे "शहद" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेसे पित्तज वमन आराम हो जाती है।

नोट—इस काढ़ेसे पित्त-प्रधान त्रिदोषज कष्टसाध्य वमनका नाश हो जाता है और अम्लपित्तकी वमन भी शान्त हो जाती है। बड़ा ही अच्छा नुसख़ा है। परीक्षित है।

(७) बड़ी हरड़के छिलके पीस-छानकर चूर्ण बना लो। फिर चार या छे माशे चूर्णमें ६ माशे "शहद" मिलाकर चाटो। इस नुसख़ेमें यह ख़ूबी देखी गई है कि, दस्त होकर अथवा आमाशयका दोष नीचे जाकर वमन शान्त हो जाती है। इस नुसख़ेसे अनेक प्रकारकी वमन और ख़ास कर पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(८) चन्दनका काढ़ा बनाकर छान लो। फिर उसमें शहद और मिश्री मिलाकर पीलो। इससे पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(९) मक्खीका २ रत्ती गू ३ माशे शहदमें मिलाकर चाटनेसे पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१०) खीलोंका सत्तू ना-बराबर घी और शहद मिलाकर पीनेसे पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(११) उड़द, मूँग, मसूर या जौका यवागूमें "शहद" मिलाकर खानेसे पित्तज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(१२) आमलोंका रस, चन्दन और शहद मिलाकर पीनेसे पित्तज वमन शान्त हो जाती है।

नोट—चन्दनका रस २ तोले और आमलोंका रस २ तोले लेकर, उनमें ६ माशे "शहद" मिला लो।

(१३) ईंट या लोहेकी चीज़को आगमें लाल करके पानीमें बुझाने और फिर वही पानी पीनेसे प्यास शान्त हो जाती है। वमनमें जब प्यासका ज़ोर हो, यही उपाय करना चाहिये। परीक्षित है।

(१४) दो तोले पित्तपापड़ेके काढ़ेमें १ तोले "शहद" मिलाकर पीनेसे ज्वरयुक्त वमन शान्त हो जाती है।

नोट—नागरमोथेका काढ़ा भी वमनको आराम करता है।

(१५) हरड़, कालीमिर्च, सोंठ, पीपर, धनिया और सफ़ेद ज़ीरा—इनका चूर्ण "शहद"में मिलाकर चाटनेसे पित्तकी वमन और तीनों दोषोंसे हुई वमन शान्त हो जाती हैं। परीक्षित है।

(१६) इमली मुँहमें रखनेसे पित्तकी वमन नाश हो जाती है।

(१७) बड़े मुनक्के, खट्टे अनारदाने सात-सात माशे और काला ज़ीरा १ माशे—पीसकर रख लो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा खानेसे पित्तकी वमन शान्त हो जाती है।

(१८) पीपरकी सूखी छाल जलाकर, पानीमें उसकी एक तोले राख मिला दो। जब पानी नितर जाय, छानकर थोड़ा-थोड़ा पीओ। इससे पित्तकी वमन शान्त हो जाती है।

(१९) मीठे अनारका रस बराबरकी चीनीमें पकाकर चाटनेसे पित्तकी वमन शान्त हो जाती है।

(१९क) फालसेका शर्बत पित्तकी वमन और उबकीको आराम करता और पक्वाशयमें ताक़त लाता है। गरमी, पित्त और खूनके उपद्रवोंको भी शान्त करता है।

नोट—काले फालसोंको पानी और गुलाब-जलमें मसल लो। फिर छानकर, रससे दूनी मिश्रीमें शर्बत पका लो। यही फालसेका शर्बत है।

कफज वमन नाशक नुसख़े।

(२०) बायबिड़ंग, सोंठ, त्रिफला और तगर समान-समान लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "शहद"में मिलाकर चाटनेसे कफज वमन शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(२१) बायबिडंग, केवटी मोथा और सोंठको बराबर-बराबर

लेकर पीस छान लो। इस चूर्णको "शहद"में मिलाकर चाटनेसे कफज वमन आराम हो जाती है।

(२२) जामनके रसमें मुलहटीका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे कफकी वमन आराम हो जाती है।

(२३) नागरमोथा और काकड़ासिंगीका चूर्ण "शहद"में चाटनेसे कफकी वमन शान्त हो जाती है।

(२४) दुरालभाको "शहद"के साथ चाटनेसे कफकी वमन शान्त हो जाती है।

(२५) हरड़, कालीमिर्च और छोटी पीपर—इनके चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे कफज वमन शान्त हो जाती है।

(२६) थोड़ासा घी गरम करो। फिर उसमें दो बताशे डालकर निकाल लो। शीतल होने पर, एक-एक बताशा आध-आध घन्टेमें खा लो। इस नुसख़ेसे विशेषकर कफकी वमन आराम हो जाती है।

(२७) बड़की जटा जलाकर राख कर लो। इसमें से थोड़ी-थोड़ी राख खानेसे कय आराम हो जाती है।

(२८) चार माशे बालछड़ पानीमें पीसकर सेवन करनेसे कफकी वमन शान्त हो जाती है।

(२९) मसूरका सत्तू, शहद और अनारदानेका चूर्ण मिलाकर खानेसे—वात, पित्त, और कफ इन तीनों दोषोंसे पैदा हुई वमन और प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है

(१) पीपरकी छालको जलाकर राख करलो, फिर उसे उसी समय पानीमें भिगो दो। इस पानीको नितार और छानकर दो-दो तोले पीनेसे अत्यन्त कष्टसाध्य वमन और प्यास दोनों ही शान्त हो जाती हैं। खूब परीक्षित है।

(२) चाँवलोंके पानीमें, मरोड़फलीका ६ माशे चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे त्रिदोषज वमन भी शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—मरोड़फलीको पीस-छान लो। फिर चाँवलोंके धोवनमें ६ माशे चूर्ण और शहद मिलाकर पीलो।

(३) गिलोयके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे वमन रोग आराम हो जाता है। अथवा रातको १ तोले गिलोय कुचलकर भिगो दो। सवेरे मलकर छान लो और ६ माशे "शहद" मिलाकर पीलो। यही "हिम" है। इसके पीनेसे त्रिदोषज और कष्टसे आराम होनेवाली पाँच तरहकी वमन आराम हो जाती हैं। परीक्षित है।

(४) बेलगिरीके काढ़ेमें "शहद" मिलाकर पीनेसे त्रिदोषज वमन रोग शान्त हो जाता है।

(५) जामुनके पत्ते और आमके पत्ते—दो तोले लेकर काढ़ा बना लो और छानकर शीतल कर लो। इस काढ़ेमें "शहद" और "खीलोंका चूर्ण" मिलाकर सेवन करनेसे छर्दि या वमन, अतिसार और घोर प्यास,—ये सब शान्त हो जाते हैं। यह काढ़ा मशहूर है।

(६) बेरकी गुठली, आमलोंकी गुठली, छोटी पीपर और मक्खी का गू—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको "मिश्री और शहद" मिलाकर चाटनेसे वमन रोग तत्काल आराम होता है। इस नुसख़ेसे कीड़ोंके कारणसे हुई, हृद्रोगसे हुई तथा शूल और उबकी सहित वमन शान्त हो जाती हैं। परीक्षित है।

(७) आमले, धानकी खील और चीनी कुल चार तोले लेकर पीस-छान लो। फिर उसमें चार तोले "शहद" और सोलह तोले "पानी" मिलाकर कपड़ेमें छान लो। इसके कई बारमें थोड़ा-थोड़ा पीनेसे त्रिदोषज वमन शान्त हो जाती है।

(८) इलायची, लौंग, नागकेशर, बेरका गूदा, धानकी खीलें, फूल प्रियंगू, नागरमोथा, सफेद चन्दन और पीपर—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमें "शहद और मिश्री" मिलाकर चाटनेसे वात, पित्त और कफसे पैदा हुई वमन आराम हो जाती है। इसका नाम "एलादि चूर्ण" है। यह ख़ूब परीक्षित है। कभी भी फेल नहीं होता।

(९) सूखी हुई मौलसरीकी छालको जलाकर पानीमें बुझा दो। इस पानीके पीनेसे मुश्किलसे आराम होनेवाली वमन भी तत्काल आराम हो जाती है।

(१०) आमकी गुठलीकी मींगी और बेलगिरी दोनोंको समान-समान एक-एक तोले लेकर सेर-भर पानीमें औटा लो; जब आधा पानी रह जाय छान लो। फिर इसमें १ तोले "मिश्री" और १ तोले "शहद" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेके पीनेसे वमन और अतिसार इस तरह नाश हो जाते हैं, जिस तरह अग्निमें आहुति नाश हो जाती है। ख़ूब परीक्षित है।

(११) मूर्वा, धनिया, नागरमोथा, मुलैठी और रसौत—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको शहदमें मिलाकर

चाटनेसे वह वमन आराम हो जाती है, जिसमें डकारें बहुत आती हैं।

(१२) कालानोन, सफेद ज़ीरा, मिश्री और कालीमिर्च—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इस चूर्णको शहदमें मिलाकर चाटनेसे वमन तत्काल आराम हो जाती है; इसमें ज़रा भी शक नहीं। यह स्वयं हमने अपने ऊपर आज़माया है। परीक्षित है।

(१३) बरफका पानी पीने या बर्फ़का टुकड़ा मुहमें रखनेसे वमन आराम हो जाती है।

(१४) कच्चे नारियलका पानी भी वमनको फौरन आराम करता है।

(१५) जली हुई रोटीको पानीमें भिगो दो और उस पानीको पीओ। इस पानीसे वमन बन्द हो जाती है।

(१६) बड़ी इलायचीका काढ़ा पीनेसे वमन शान्त हो जाती है।

(१७) मूर्व्वाकी जड़का काढ़ा चाँवलके धोवनके साथ पीनेसे वमन रोग आराम हो जाता है।

(१८) मुलेठी और लालचन्दन दूधमें पीस कर पीनेसे रक्तवमन या लाल वमन आराम हो जाती है।

(१९) आमलोंका रस १ तोले और कैथका रस १ तोले मिला लो। फिर इसमें १ माशे पीपरका चूर्ण और १ माशे कालीमिर्चका चूर्ण तथा ४ माशे शहद मिला दो और पीलो। इससे कष्टसाध्य वमन भी आराम हो जाती है।

(२०) तिलचिट्टेकी बीट तीन-चार दाने थोड़ेसे पानीमें मिलाकर पीनेसे बड़ी कठिनसे आराम होनेवाली वमन भी आराम हो जाती है।

(२१) पद्मकाष्ठ, गिलोय, नीमकी छाल, धनिया और सफेद

चन्दनका बुरादा लेकर, पानीके साथ सिलपर पीस लो। इन्हीं सब चीज़ोंका काढ़ा भी पका लो। फिर यह लुगदी, लुगदीसे चौगुना घी और घीसे चौगुना काढ़ा—सबको कड़ाहीमें रखकर पका लो ; घी मात्र रहने पर उतार लो और छान कर रख लो। इसका नाम "पद्मकाद्य घृत" है। इसके खानेसे वमन, अरुचि, प्यास और दाह आदि नाश हो जाते हैं।

(२२) सफेद ज़ीरा, धनिया, पीपर, छोटी इलायची, त्रिकुटा, शहत और रससिन्दूर—सबको बराबर-बराबर लेकर खरल करो। इसमेंसे ३ रत्ती चूर्ण खानेसे वमन रोग जाता रहता है। इसका नाम "रसेन्द्र" है।

(२३) शुद्ध पारा, शुद्ध गन्धक, लोहभस्म, मुलेठी, सफेद चन्दन, आमले, छोटी इलायची, लौंग, भुना सुहागा, छोटी पीपर और जटामासी—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णमें सात दिन तक "ईखके रस"की भावना दो और फिर सात दिन तक "सरिवनके रस"की भावना दो। शेषमें, ३ घण्टे तक, इसे "बकरीके दूध"में खरल करो। इसका नाम "वृषध्वज रस" है। इसकी रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंको "सरिवनके काढ़े"के साथ खानेसे वमन रोग आराम हो जाता है।

(२४) थोड़ासा गेरू लेकर आगमें तपाकर लाल करो ; फिर उसे पानीमें बुझा दो। इस तरह तीन बार तपा-तपाकर पानीमें बुझा दो। इस पानीके पीनेसे वमन आराम हो जाती है।

(२५) रीठेकी कुछ मींगी दो घण्टे तक पानीमें भिगो रखो। जब वे नर्म हो जावें, थोड़ी-थोड़ी चबाओ। इससे मितलीया जी मिचलाना आराम हो जाता है। इसका रस गलेमें पहुंचा नहीं, कि वमन आराम हुई नहीं। खूब परीक्षित है।

(२६) मिट्टीका पुराना चिराग आगमें जलाओ। जब उसकी

आग बुझ जाय, उसे पानीमें ठण्डा कर दो। उस पानीमेंसे थोड़ा-थोड़ा पानी पीनेसे वमन और उबकी फौरन नाश हो जाती हैं। आश्चर्यदायक नुसख़ा है।

(२७) झड़-बेरीके बीजोंकी गिरी ४ माशे, तुलसीकी पत्ती ४ माशे, मिश्री ४ माशे और कालीमिर्च २ माशे—इनको कूट-पीस कर छान लो और पानीके साथ खरल करके बेर-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली खानेसे पुरानी वमनकी बीमारी भी आराम हो जाती है।

(२८) थोड़ासा "मक्खीका गू" गुडमें मिलाकर खानेसे कितनी ही ज़ियादा वमन होती हों बन्द हो जायँगी।

(२९) लाल चाँवल साँठीके पानीमें भिगो दो। इसमेंसे आधपाव पानी पीनेसे शराब पीनेसे होनेवाली वमन आराम हो जाती है।

(३०) बादामका रस पानीमें मिलाकर पीनेसे वमन रोगमें अपूर्व चमत्कार दीखता है।

(३२) टाट जलाकर उसकी राखको पानीमें मिला दो। जब राख पानीमें बैठ जावे, पानी नितार छान कर पीओ। इस पानीसे वमन फौरन आराम हो जाती हैं।

(३४) हरा पोदीना आध सेर लेकर डेढ़ सेर पानीमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, छानकर एक सेर चीनीमें पकाओ और ४ माशे "मस्तगी" पीस कर मिला दो। शर्बत-जैसी चाशनी होने पर उतार लो। इस दवासे जी मिचलाना, कय होना और हिचकी रोग आराम हो जाते हैं।

(३५) कालीमिर्च ५ तोले, पीपर २ तोले, अनारदाना ४ तोले और जवाखार ६ माशे—इनको कूट-पीस कर "गुड़"में सान लो और

गोलियाँ सवेरे-शाम या कयके समय खानेसे वमन नाश करके भूख लगातीं और खाना हज़म करती हैं।

(३६) पोदीनेकी चालीस पत्तियाँ, ५ कालीमिर्च, २ माशे कालानोन, ४ छोटी इलायची भूँजी हुई और ३ माशे कच्ची या पकी इमली—इन सबको पीसकर चटनी बना लो। इस चटनीके चाटनेसे सब तरहकी वमन और अरुचि नाश हो जाती है। यह नुसख़ा कभी फेल नहीं होता। खूब परीक्षित है।

(३७) इमलीका चियाँ चने-बराबर मुँहमें रख कर चबानेसे वमन और ज्वरकी वमन अवश्य नाश हो जाती हैं। खब परीक्षित है।

(३८) हल्दी जलाकर पानीमें बुझा दो और उस पानीको पीओ; वमन नाश हो जायगी।

(३९) बिजौरे नीबूका रस ६ माशे, शहद १ माशे और पीपर १ माशे—इनको मिलाकर चाटनेसे वमन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(४०) करंजकी कोंपलें पीस लो। फिर उस लुगदीमें अन्दाज़से "इमली या नीबूका रस और सेंधानोन" मिलाकर खाओ। इससे वमन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(४१) केलेके कन्दका स्वरस ६ माशे और शहद ६ माशे मिलाकर पीनेसे वमन रोग नाश हो जाता है। खूब परीक्षित है।

(४२) करंजके बीज लाकर भून लो। फिर एक बीजकी मींगी निकाल कर, उसके तीन भाग कर लो। एक भाग चाबनेसे घोर वमन बन्द हो जाती है। पर जबतक पूरा आराम न हो, बीजकी मींगी बारम्बार चाबनी चाहिएँ। खूब परीक्षित है।

शहद १ तोले मिलाकर खानेसे वमन और उबकी नाश हो जाती हैं। पराया परीक्षित है—हमारा नहीं।

(४४) धानकी खीलें, लौंग, इलायची और कमलके बीज—इनको खूब महीन पीस-छानकर चूर्ण बना लो। इसमेंसे ३ माशे चूर्ण "शहद या चीनी" मिलाकर खानेसे वमन रोग जाता रहता है।

(४५) गर्भवतीको उबकी आती हों या कै होती हों, तो पीसा-छना धनिया ३ माशे और मिश्री १ तोले—मिलाकर खिलाओ और ऊपरसे चाँवलोंका धोवन पिला दो। खूब परीक्षित है।

(४६) ३ माशे कुटकीका चूर्ण ६ माशे शहदमें मिलाकर खानेसे हिचकी और वान्ति बन्द हो जाती हैं। खूब परीक्षित है।

(४७) शारिवाकी जड़ें पानीमें औटाकर बीचका रेशा निकाल दो। फिर इसमें ज़रासी "हींग" मिलाकर पीस लो और "घी" मिलाकर सवेरे ही खालो। एक ही मात्रामें वान्ति-कय बन्द हो जायगी। खूब परीक्षित है।

नोट—शारिवाको गौरीसर, गौरिया साउ, या कालीसर कहते हैं। अंगरेजोमें Indian sarsaparilla कहते हैं। यह खून साफ करनेमें अव्वल दर्जेकी दवा है।

(४८) काकमाचीकी जड़ और हींग मिलाकर पीनेसे वमन आराम हो जाती है। खूब परीक्षित है।

(४९) राई २ तोले और कपूर ६ माशे—इन दोनोंको महीन पीसकर, पानीमें फिर पीस लो। छाती पर "घी" लगाकर ऊपरसे इस लेपको लगा दो ; इस लेपके लगानेसे कय बन्द हो जाती हैं। पर इसे पाँच मिनटसे ज़ियादा न रखना चाहिये अथवा जलन होते होते ही उतार देना चाहिये। हैज़ेकी कय बन्द करनेमें भी इससे बड़ा काम निकलता है। आजकल राईके पलस्तर भी बने-बनाये आते हैं। डाक्टर लोग उन्हें लगाते हैं। बात एक ही है। खूब परीक्षित है।

(५०) कड़वे नीमके पत्ते पीस-छानकर पीनेसे वमन, कोढ़, पित्त और कफ शान्त हो जाते हैं ।

(५१) तन्तरीक-तिन्तड़ीक, डासरिया और स्याह ज़ीरा—दोनोंको पानोमें पीसकर और "मिश्री" मिलाकर चाटनेसे वमन नाश हो जाती है ।
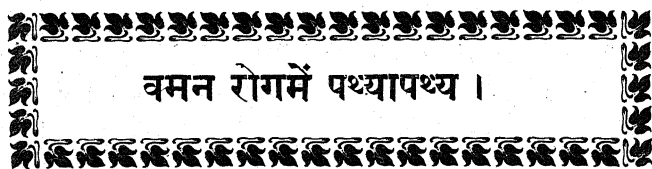
वमन रोगमें पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

वमन रोगमें पहले उत्क्लेश होता है; यानी जी मिचलाता है, अन्न बाहर नहीं निकलता, मुँहमें पानी भर-भर आता है थूक गिरता है और हृदयमें अत्यन्त वेदना होती है। इस हालतमें, वमन रोगीको खानेके लिए कुछ भी न देना चाहिये, उपवास या लङ्घन कराने चाहियें ।

जब वमन होना और जी मिचलाना बन्द हो जाय, तब वमन-रोगीको जल्दी पचने वाले और वायुको अनुलोमन करने वाले रुचिकर पदार्थ देने चाहिएँ ।

अगर वमनका वेग जारी रहते समय ही खानेको देनेकी ज़रूरत हो जाय, तो भुने हुए मूँगोंके काढ़ेके साथ, धानकी खीलोंका चूर्ण "शहद और चीनी" मिलाकर देना चाहिये। इस पथ्यसे वमन, ज्वर, दाह—जलन और प्यास ये सब उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

जब वमन-रोग बिलकुल जाता रहे, उसके उपद्रव ज्वर आदि भी न रहें; तब रोगीको जिन-जिन पदार्थोंके खानेकी आदत हो, वही क्रम-क्रमसे देने चाहियें। सब तरहसे निरोग होने पर ही, रोगीको स्नान करनेकी इजाज़त देनी चाहिये ।

इस रोगमें—साफ़-स्वच्छ रहनेकी जगह, साफ़ ही खाने-पीनेके

पदार्थ, इत्र आदि सुगन्धित पदार्थ और दिलको खुश रखना,—ये सब पथ्य हैं ;

प्राचीन ग्रन्थोंमें लिखा है, इस रोगमें जुलाब लेना, वमन करना, लंघन या उपवास करना, दिलको खुश करनेवाले खानेके पदार्थ खाना, भोजन करनेके बाद मुंहमें शीतल जल भरना, दिल-खुश और हितकारी चीजें देखना, सुन्दर सुखद गाना या बातें सुनना, मनको प्रसन्न करनेवाले रस चखना, खुशबूदार पदार्थ सूंघना और चित्तप्रसन्न करनेवाली चीजें छूना, तथा नाभिस्थल, त्रिकस्थान—पीठका बाँसा, दोनों पसवाड़े और पीठमें लोहे आदिको तपाकर दागना—ये सब पथ्य या हितकर हैं।

नोट—लिख चुके हैं कि सभी तरहके वमन रोगमें उत्क्लेश होता है, इसलिये इस रोगमें लंघन कराने चाहियें अथवा कफ और पित्त नाशक संशोधन—वमन-विरेचन देना चाहिये। लेकिन वातज वमन रोगमें ऐसा इलाज न करना चाहिये। वीभत्स पदार्थोंके देखनेसे पैदा हुई वमनको अत्यन्त प्रिय पदार्थोंका उपयोग करके जीतना चाहिये। गर्भके कारणसे होनेवाले वमन रोगमें प्यारे-प्यारे फल देने चाहियें। आम या कच्चे रससे पैदा हुई वमनको लङ्घनोंसे जीतना चाहिये। अहित पदार्थोंसे पैदा हुई वमनको हितकारी पदार्थोंसे जीतना चाहिये। कृमियोंसे पैदा हुई वमनको कृमि रोगकी चिकित्सासे नाश करना चाहिये। मतलब यह है, जहाँ जैसी ज़रूरत हो वहाँ वैसा ही काम करना चाहिये, सब धान बाईस पसेरी वाली बात नहीं करनी चाहिये।

पुराने साँठी चाँवल, लाल चाँवल, मूंग, मटर, गेहूं, जौ, शहद, मदिरा, बेंतकी कोंपल, धनिया, नारियलकी गरी, जंभीरी नीबू, आमला, आम, बेर, दाख, पका हुआ, कैथा, हरड़, अनार, जायफल, नेत्रवाला, नीम, अड़ूना शक्कर, सौंफ, शतावर, नागकेशर, कस्तूरी, चन्दन, चाँदनी, मनोहर इत्र आदिका लेप, उत्तम पान फल फूल आदि पदार्थ भी वमन रोगीको पथ्य हैं।

अपथ्य।

नस्य कर्म, गुदामें पिचकारी लगाना, पसीने निकालना,

स्नेहपान करना यानी तेल आदि चिकने पदार्थ पीना, फस्त खोलना, दाँतुन करना, कढ़ी आदि पतले पदार्थ खाना, भयंकर पदार्थ देखना या देखना चाहना, डरना, गर्म चीज़ खाना-पीना, चिकने पदार्थ, असात्म्य पदार्थ, अप्रिय और हृदय-विरुद्ध पदार्थ वमन रोगमें अपथ्य हैं।

सेम, कुंदरू, घीया या गलका तोरई, सरसों, कसरत और अंजन आदि भी अपथ्य हैं तथा जिन पदार्थों से घृणा हो वह भी अपथ्य हैं।

दशवाँ अध्याय।

तृष्णा रोगीके लक्षण।

जो मनुष्य बारम्बार पानी पीता है, पर पानी पीनेसे उसकी प्यास नहीं बुझती, इसलिये फिर पानी पर पानी माँगता है, ऐसे आदमीको "तृष्णारोग" या "प्यास-रोग"का रोगी कहते हैं।

कहा है—

असकृद्यः पिबेत्तोयं तृप्तिं नैवाधिगच्छति।
पुनः पुनः कांक्षति तं तृष्णार्दितमथादिशेत्॥

भावार्थ वहीं है, जो ऊपर लिखा है।

तृष्णा रोगके निदान।

तृष्णा रोग या बहुत ज़ियादा प्यास लगनेका रोग नीचे लिखे कारणोंसे होता है :—

(१) क्रोधसे, (२) शोकसे,
(३) मिहनतसे, (४) शराब पीनेसे,

(५) धातुक्षयसे, (६) धूपसे,
(७) आगकी तपतसे, (८) लंघन या उपवाससे,
(९) भयसे, (१०) अजीर्णसे,
(११) हथियारसे घाव होने या चोट लगनेसे,
(१२) रूखे, सूखे, खट्टे और गरम पित्त बढ़ानेवाले पदार्थोंके खानेसे।

नोट—हारीतने दो दलवाले, कुल्थो आदि अन्न खानेसे और ज्वरसे तृष्णा रोग होना अधिक लिखा है।

तृष्णाकी सम्प्राप्ति।

"सुश्रुत"में लिखा है,—क्रोध, शोक आदि कारणोंसे "पित्त और वायु" अत्यन्त बढ़ जाते हैं। जब ये बढ़ जाते हैं, तब ये जल बहानेवाले स्रोतोंको दूषित कर देते हैं। जब वे स्रोत दूषित हो जाते हैं, तब मनुष्यको प्रबल प्यास लगती है।

"भावप्रकाश"में लिखा है, अपने स्थानमें ठहरा हुआ पित्त—अपने बढ़ानेवाले तीखे, खट्टे, गरम आदि पदार्थोंसे कुपित होता है। उधर अपने स्थानमें संचित हुई वायु—भयसे, मिहनतसे, बलक्षयसे और लंघन या उपवास आदिसे—कुपित होती है। इस तरह पित्त और वायु कुपित होकर ऊपर आते हैं और तालूको दूषित करके, तृषा या प्यास पैदा करते हैं। मतलब यह, केवल तालूके दूषित होनेसे प्यास उत्पन्न होती है।

नोट—तालु यहाँ उपलक्षण मात्र है। तालु कहनेसे हृदयमें जो प्यास लगने की जगह है, जिसे क्लोमस्थान कहते हैं, उसे भी समझना चाहिये। क्योंकि चरकाचार्य कहते हैं।

रसवाहिनीश्च धमनीर्जिह्वाहृदयगलतालुक्लोमसंशोषान्।
नृणां देहेषु कुरुतस्तृष्णामतिबलां पित्तानिलौ॥

पित्त और पवन—रस बहानेवाली नाड़ी, जीभ, गला, तालू और प्यास लगनेके स्थानको सूखा करके—तृषा या प्यास पैदा करते हैं।

तृष्णा रोगकी संख्या ।

प्रायः सभी आचार्योंने सात तरहकी तृष्णा लिखी हैं :—

(१) वातज, (२) पित्तज,
(३) कफज, (४) क्षतज,
(५) क्षयज, (६) आमकी,
(७) भोजनकी ।

नोट—हारीतने पाँच प्रकारकी तो यही लिखी हैं। छठी अजीर्णसे, सातवीं रूखे पदार्थ खानेसे और आठवीं ज्वरसे लिखी है। छटी और सातवींमें तो कोई भेद नहीं हैं; केवल आठवीं अधिक लिखी है।

पूर्वरूप ।

तृष्णा या प्यास रोग होनेसे पहले—तालु, होंठ, कंठ और मुँह सूखते हैं तथा दाह, सन्ताप, मोह, भ्रम और प्रलाप-बकवाद तृष्णा रोगके "पूर्वरूप" हैं। ये ही सब लक्षण तृष्णा रोग होनेसे पहले दीखते हैं और तृष्णा रोगके पैदा हो जाने पर भी ये ही नज़र आते हैं। फ़र्क़ इतना ही है कि, पूर्वरूपके समय इनमें ज़ोर कम होता है, पर तृष्णा रोगके पैदा हो जाने पर इनमें ज़ोर ज़ियादा हो जाता है; अर्थात् उस समय ये विशेषतासे होते हैं। तृष्णाके पूर्वरूप और रूपमें ज़रासा भेद है, इसीसे सुश्रुतके सिवा और किसीने तृष्णाके पूर्वरूप नहीं लिखे।

वातज तृष्णाके लक्षण ।

वायुकी प्यासमें मुँह उतर जाता है, कनपटियों और मस्तकमें पीड़ा होती है, रस और जल बहाने वाली धमनियाँ रुक जाती हैं और मुँहका स्वाद जाता रहता है। बादीकी प्यास शीतल जल पीनेसे उल्टी बढ़ती है।

खुलासा—मुँहका सूखना, सिर और कनपटियोंमें दर्द होना तथा शीतल जल पीनेसे प्यास बढ़ना—ये तीन वातज तृषाके मुख्य लक्षण हैं।

नोट—(१) किसी-किसीने यह भी कहा है कि, वातज तृषा रोगमें नींद भी नहीं आती। शीतल जल पीनेसे प्यास बढ़ती है, यह अनुपशयका लक्षण है। इस एक लक्षणसे ही वातज तृषाकी पक्की पहचान हो सकती है। हारीत मुनि कहते हैं, वातज तृषा रोगीका शरीर दुबला, चेहरा कालासा और मुँह बेस्वाद हो जाता है और कँप-कँपी आती है।

नोट (२)—क्षतज या घाव होने या चोट लगनेसे होनेवाली, अन्नके कारणों से होनेवाली और शराब पीनेसे होनेवाली प्यासकी ज़ियादतीके रोगको दृढ़बल आचार्यने वातज तृषाके अन्तर्गत माना है। इसीसे जब और आचार्योंने सात प्रकारका तृषा रोग लिखा है, तब-दृढ़बलने पाँच प्रकारका ही लिखा है, क्योंकि उन्होंने क्षतज और अन्नजा तृषाको वातजमें ही शामिल कर दिया है। वजह यह है कि चोट आदि लगने और भोजन करनेसे वातका कोप होता है।

पित्तज तृषाके लक्षण।

पित्तज तृषारोग होनेसे मूर्च्छा-बेहोशी, अन्नमें अरुचि, प्रलाप या बकवाद, दाह या जलन, आँखोंमें सुर्ख़ी, लगातार मुँह सूखना, शीतल जल पीनेकी इच्छा, मुँहका कड़वा रहना और कंठसे धूआँसा निकलना —ये लक्षण देखे जाते हैं।

खुलासा—पित्तज तृषामें प्रलाप, बेहोशी, भ्रम, मुँह सूखना, जलन और मुँहका कड़वा रहना—ये मुख्य लक्षण हैं।

नोट—यों तो सभी प्रकारकी तृषाओंमें पित्तका प्रकोप रहता है, पर पित्तजमें अधिक रहता है। सभी प्रकारकी तृषाओंमें पित्तका कोप रहनेकी वजहसे ही सुश्रुतने कहा है कि, सभी तरहकी तृषाओंमें पित्त नाशक चिकित्सा करनी चाहिये, क्योंकि बिना पित्तकी शान्तिके प्यास शान्त हो नहीं सकती। चिकित्सकोंको, प्यास रोगका इलाज करते समय, इस सिद्धान्तको न भूलना चाहिये।

कफज तृषाके लक्षण।

"सुश्रुत"में लिखा है, भाफ या पसीनोंके रुकने या भीतरी भाफके रुकने और जठराग्निके कफसे ढक जानेसे कफज तृषा रोग होता है।

कफज तृषा होनेसे नींद आना, शरीर भारी रहना, मुँहका मीठा-मीठा रहना और रोगीका दुबला या सूखा सा हो जाना—ये लक्षण देखे जाते हैं।

खुलासा—जब कफ अपने कारणोंसे कुपित होता है, तब वह जठराग्निको ढक-लेता है। उस समय जठराग्निकी गरमी रुक कर, अधोगत जलवाही स्रोतों या नाड़ियोंको सुखाकर प्यास रोग पैदाकर देती है।

नोट—अकेले कफके कोपसे प्यासका रोग हो नहीं सकता, क्योंकि प्यास लगाना "वात पित्त"का काम है। यही कारण है, जो चरकने "कफज तृषा" नहीं कही; सुश्रुतने कफज तृषा कही है। पर चिकित्सामें भेद होनेके कारणसे हारीतने भी पित्त-सहित कफकी प्यास मानी है। हारीतने कहा है, जब ऐसी या कफज प्यास लगती है, तब नींद बहुत आती है; मुँह कालासा हो जाता है, कफ गिरता है, गरम पदार्थों पर मन चलता है और शरीर कड़ा, काला और शीतल हो जाता है।

त्रिदोषज तृषाके लक्षण।

हारीत मुनिने कहा है, जब आँखोंमें शूल चलें, कय आवें, दाह हो, भ्रम हो, सिरमें दर्द हो, कँप-कँपीसी आवें, शरीर शीतल हो तब "त्रिदोषज प्यास रोग" समझो। त्रिदोषज प्यासके लक्षण अकेले हारीतने ही लिखे हैं।

क्षतज तृषाके लक्षण।

जब हथियार आदिके लगनेसे मनुष्यके शरीरमें घाव हो जाते हैं, तब उनसे खून बहता और वेदना होती है। खूनके बहने और पीड़ासे प्यास लगती है। उस प्यासको "क्षतज" या "घावोंसे पैदा हुई" तृषा कहते हैं।

सुश्रुतने लिखा है,—"तयाभिभूतस्य निशादिनानि गच्छन्ति दुःखं पिबतोऽपि तोयम्"। क्षतज या घावोंसे लगने वाली प्यासमें रोगी रात-दिन पानी पीता है, तोभी उसे सुख नहीं मिलता—आठ पहर चौंसठ घड़ी दुःख-ही-दुःखमें कटते हैं। हारीतने इतना अधिक

लिखा है—"क्षतक्षयेषु या तृष्णा तस्यां नान्नाभिनन्दनम्"। क्षत-क्षयकी प्यास वालेकी अन्नमें रुचि नहीं रहती—उसे भोजन अच्छा नहीं लगता ।

नोट—सभी आचार्योंने क्षतज तृषाको चौथी तृषा लिखी है, पर दृढ़बलने इसे वातज तृषामें शामिल कर लिया है ।

क्षयज तृषाके लक्षण ।

क्षयज तृषा पाँचवीं है। यह रसादिक धातुओंके क्षय या नाश से होती है। इस प्यास वाले रोगी रात-दिन पानी पीने पर भी सुखी नहीं होते। कोई-कोई इसे सन्निपातकी प्यास मानते हैं ।

नोट—रस क्षयके जो लक्षण हैं, वे इस प्यास रोगमें पाये जाते हैं। रस क्षयके क्या लक्षण हैं? सुश्रुतमें लिखा है—रसक्षयेहृत्पीड़ाकम्पशोषबधिरतातृष्णा चेति; अर्थात् रसके क्षय होनेसे हृदयमें पीड़ा, कँप-कँपी, शोष, बहरापन और प्यास ये लक्षण होते हैं। इस प्यास रोगमें मुँहके पानी लगाये रहने पर भी शान्ति नहीं मिलती ।

आमज तृषाके लक्षण ।

आमकी या अजीर्णकी तृषामें वात, पित्त और कफ—तीन दोषोंके लक्षण होते हैं। इस प्यासमें हृदयमें शूल चलते, मुँहसे लार गिरती और ग्लानि होती है ।

सुश्रुतमें लिखा है, आम * बाक़ी रहनेसे जो प्यास रोग होता है, उसमें रस क्षयकी प्यासके सब लक्षण होते हैं ।

हारीत कहते हैं, अजीर्ण की प्यासमें शोष होता है, जँभाइयाँ आती हैं, सिरमें दर्द होता है और पेट भारी रहता है। दृढ़बलने कफकी प्यास इसी आमज तृषाके अन्तर्गत मानी है ।

---

* आम—कच्चे अन्नरसको कहते हैं। अजीर्ण—पेटमें अन्नको जैसेका तैसा [illegible] रहनेको कहते हैं ।

अन्नजा तृषा ।

अन्नजा तृषा उसे कहते हैं जो अन्नसे होती है। इसीको भुक्तोद्भव तृषा या खाना खानेसे हुई प्यास भी कहते हैं। चिकना, खट्टा, खारी, कड़वा, कसैला, ज़ियादा और भारी या देरमें पचने वाला अन्न खानेसे शीघ्र ही तृषा रोग होता है। ऐसे तृषा रोगको "अन्नजा तृषा" कहते हैं। इसमें बराम्बार जल्दी-जल्दी जल पीनेकी इच्छा होती है।

नोट—कोई वैद्य भोजन करते समय जो प्यास लगती है उसीको "अन्नजा" कहते हैं ; किन्तु वास्तवमें यह प्राकृतिक तृषा प्राकृत बुभुक्षाकी तरह है, रोगज नहीं।

तृषाके उपद्रव ।

दीन स्वर, ग्लानि, मुँह और हृदयकी दीनता, गले और तालुका सूखना—ये तृष्णाके उपद्रव हैं। जिस प्यास रोगमें ये उपद्रव होते है, वह कष्टसाध्य होता है ; यानी बड़ी कठिनाइयोंसे आराम होता है। ऐसी उपद्रव वाली प्यास धातुओंको भी सुखाती है। "वैद्य-विनोद"में तृषाके सात उपद्रव लिखे हैं :—

तृष्णायोपद्रवाः सप्त श्वासकासक्षयज्वराः।
बहिर्निर्गतजिह्वत्वं मोहोवाधिर्य्यमेवच ॥

श्वास, खाँसी, क्षय, ज्वर, जीभका बाहर निकलना, मोह और बहरापन,—तृषाके ये सात उपद्रव हैं।

उपद्रवयुक्त तृषाका अरिष्ट ।

हारीत कहते हैं,—बुख़ारके ज़ोरसे प्यास लगती है तथा अतिसार और शूलसे भी प्यास लगती है।

ज्वर, प्रमेह, क्षय, खाँसी, श्वास और अतिसार वग़ैरः रोगोंसे पीड़ित रोगियोंको, रोगसे कमज़ोर और दुबले आदमीको और वमन या कय करने वालेको जो घोरातिघोर प्यास लगती है वह

आदमीके मारनेको ही लगती है। जिस प्यासमें मुँह सूखना आदि उपद्रव होते हैं, वह भी मारक होती है।

असाध्य तृषाके लक्षण।

वातज, पित्तज प्रभृति सब तरहकी अत्यन्त बढ़ी हुई प्यास, रोगसे कमज़ोर हुएकी प्यास, वमन या कयसे पैदा हुई प्यास और भयंकर उपद्रवों वाली प्यास असाध्य होती हैं। ऐसी प्यासों वाले प्रायः मर जाते हैं। हारीत कहते हैं :—

तृष्णातिसार वमन दाह मूर्च्छाभ्रम शोषोद्भवा।
तोयेन न याति तृप्तिमसाध्यां तां विजानीहि॥

अतिसार, वमन, दाह, मूर्च्छा, भ्रम और शोष या क्षय रोगसे पैदा हुई प्यास अगर पानी पीनेसे शान्त न हो—न बुझे तो असाध्य समझो।
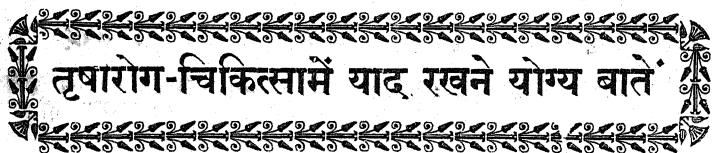
तृषारोग-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें

(१) अकेली अन्नजा या खाना खानेसे पैदा हुई प्यास ही वमन करानेसे शान्त नहीं होती; क्षयज प्यासको छोड़कर और सभी तरह की प्यास वमन करा देनेसे शान्त हो जाती हैं। "सुश्रुत"में कहा है—क्षयजके सिवा, सभी तरहकी प्यासोंको वमन कराकर शान्त करो।

अगर प्यासके बढ़नेसे, पानी पीते-पीते पेट फूल जावे तो वैद्य पीपरोंका काढ़ा बनाकर रोगीको पिलावे और कय करा देवे। कहा है—तृष्णाप्रवृद्धौ मतिमान् वामयेत कणाम्बुना। छोटी पीपरोंका काढ़ा कंठतक पिलाकर वमन कराना सर्व्वोत्तम उपाय है। कोई-कोई पीपरका चूर्ण खिलाकर पानी पिला देते हैं और कोई पानीमें पीपरोंका चूर्ण घोलकर पिला देते हैं।

"वृन्दवैद्य" कहते हैं, शीतल जलमें शहद घोल कर, प्यासेको कंठ

तक पिला दो और कय करा दो। इससे फौरन प्यास शान्त हो जाती है। यह उपाय भी उत्तम है।

नीमकी छाल या नीमके पत्ते या नीमके फूलोंका काढ़ा बना कर रोगीको पिला देने और कय करा देनेसे कफज तृषा शान्त हो जाती है।

(२) अगर प्यासके मारे रोगीका पेट फूल गया हो, तो नीचे लिखे उपाय करो :—

(१) पीपरोंके काढ़ेसे वमन करा दो।

(२) अनारदाना, आमला और बिजौरा नीबूको समान-समान लेकर, सिलपर पीस लो और रोगीकी जीभ पर इस मसालेका लेप कर दो। इस उपायसे लार बहेगी।

(३) रस-वीर्यमें शीतल और प्यास मिटानेवाली दवा रोगीको खिलाओ।

(४) अगर मुँहका ज़ायका ठीक न हो—बेस्वाद हो, तो खट्टी चीज़ें और आमलोंका चूर्ण खिलाकर कुल्ले कराओ।

(३) बुद्धिमानको उपद्रव-सहित तृष्णाकी चिकित्सा न करनी चाहिये ; यानी जिस तृषामें श्वास, खाँसी, क्षय, ज्वर, जीभ निकलना, बेहोशी और बहरापन हो, उसका इलाज न करना चाहिये ; क्योंकि ऐसी प्यास वाला रोगी आराम नहीं होता।

(४) सब तरहका तृषाओंमें पित्त नाशक क्रिया करनी चाहिये ; क्योंकि बिना पित्तके शान्त हुए तृषा शान्त नहीं होती।

(५) अगर तत्काल प्यास रोग पैदा हो जाय, तो जो रोग प्यास को पैदा करने वाला हो, उसे शान्त करो। प्यास पैदा करने वाले रोगके शान्त होते ही प्यास भी शान्त हो जायगी।

(६) वातज तृषा हो, तो वातनाशक अन्न पान दो और सोने, चाँदी, लोहे या ईंट मिट्टी द्वारा बुझाया हुआ पानी पिलाओ। [illegible]

बुझाया, कच्चा और शीतल पानी वातज तृषाको बढ़ाता है ; पर बुझाया हुआ पानी प्यासको शान्त करता है । इस प्यासमें शीतल बृंहण रस देना अथवा गुड़-मिला दही या गिलोयका स्वरस पिलाना हित है ।

(७) पित्तज तृषा रोग वालेको मीठे, शीतल, कड़वे और पतले पदार्थ सेवन कराना हित है । कड़वे नीमके पत्ते, परवलके पत्ते और अड़सेके पत्ते बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो । फिर इस चूर्णको एक मात्रा—कोई ६ माशेकी ख़ूराक—खिलाकर, शीतल जल ख़ूब पिलादो और फिर वमन या कय करादो । वमन होते ही, पित्त-विकार दूर होकर, प्यास शान्त हो जायगी । पित्तज प्यासमें वमन करानेके लिए यह नुसख़ा बहुतही उत्तम और सुपरीक्षित है । इसके बाद, अगर कुछ ख़रख़शा बाक़ी हो, तो कड़वे नीमकी छाल, धनिया, सोंठ और मिश्रीका काढ़ा पिलाओ । इस काढ़ेसे निश्चय ही पित्त शान्त हो जाता है । परीक्षित है ।

(८) कफज तृषा वालेको कड़वे, पतले, कटु और गरम पदार्थ सेवन कराओ । नीमकी छाल या पत्तोंका काढ़ा गरमा-गरम पिलाकर वमन या कय करा दो । कफज तृषा पर यह काढ़ा उत्तम और परीक्षित है । इसके बाद ज़ीरा, अदरख, सोंठ और संचर नमक—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और इस चूर्णको तीन-तीन माशे फँकाकर, थोड़ा-थोड़ा पानी पिलाओ । यह नुसख़ा परीक्षित है । ज़ीरा, ताज़ा अदरख और काले नोनका काढ़ा बना लो और आधा पानी रहने पर रोगीको पिलाओ । यह भी उत्तम और सुपरीक्षित योग है ।

(९) क्षतज तृषामें, रोगीको बकरेका मांसरस पिलाओ । घावको आराम करने, ख़ून बन्द करने और पीड़ा शान्त करनेके उपाय करो । घावकी पीड़ा कम होनेसे ही क्षतज तृषा शान्त हो जाती है । इस प्यासमें हिरनका ख़ून पिलाना भी हितकारी है ।

(१०) क्षयज तृषामें, बकरेका मांस-रस, मुलहटीका काढ़ा, दूध-मिला पानी, शहद-मिला पानी ; दूध-पानी और शहद मिले हुए, अथवा दूध-घी या शर्बत आदि पिलानेसे लाभ होता है। क्षयज प्यास-वालेको वमन कराना मना है, इस बातको न भूलना चाहिये।

(११) आमज और भारी भोजनसे पैदा हुई प्यास दीपन पदार्थों या दीपन काढ़े वग़ैरः से आराम होती है। भारी भोजनकी प्यास वालेको वमन कराना बहुत लाभदायक है। "बच और बेलगिरीका काढ़ा" आमकी प्यासमें उत्तम और सुपरीक्षित है। भारी अन्नकी प्यासवालेको पानी गरम पिलाना चाहिये।

(१२) रूखे, सूखे, दुबले, कमज़ोर और डरे हुए की प्यास "दूध"से शान्त हो जाती है। ऐसे प्यास-रोगियोंको "दूध" राम-वाण है। वागभट्टकी रायमें बकरेका मांसरस भी अच्छा है।

(१३) चिकना अन्न खानेसे अगर प्यास रोग हो जाय, तो गुड़ोदक या गुड़का शर्बत पिलाना हित है।

(१४) भोजन करनेके पीछे पैदा हुई प्यासमें भी गुड़ोदक या गुड़-घोला पानी लाभदायक है।

(१५) शराब पीनेसे अगर तत्काल प्यास बढ़ जाय, तो आधा पानी मिलाकर फिर शराब पिलाओ। पीनेके लिए शीतल पानी दो। क्योंकि मद्यपान, स्त्रीप्रसंग, दाह, मूर्च्छा, वमन, रक्तपित्त और मदा-त्ययकी प्यासमें शास्त्रमें "शीतल जल" पिलानेकी ही आज्ञा है।

(१६) मिहनत करनेसे अगर प्यास रोग हो जावे, तो मांस रस या गुड़का शर्बत अथवा मन्थ देना चाहिये। वागभट्टने मिश्री-मिली शराबकी भी राय दी है।

(१७) अगर भोजनके अवरोधसे प्यास बढ़ जाय, तो प्यासेको गरम यवागू या शीतल मन्थ देना चाहिये।

(१८) स्नेहपान करने यों चिकनी चीज़ जियादा खाने और उनके

जीर्ण न होने या न पचनेसे प्यास बढ़ जावे तो गरम जल पिलाओ। अगर रोगीकी अग्नि अत्यन्त तेज़ हो, तो स्वभावानुसार शीतल जल दो।

(१६) गरमीकी प्यासमें, शीतल जलमें चीनी घोल कर और कपड़ेमें छानकर शर्बत पिलाओ।

(२०) ज्वरको छोड़कर सब तरहकी प्यासोंमें, साधारणतया, नीचे लिखे हुए उपाय करो।

(१) शीतल लेप करो।
(२) स्नान कराओ।
(३) शरीर पर शीतल जलके छींटे मारो।
(४) गुलाब जल छिड़को।
(५) रोगीको शीतल मकानमें रक्खो।
(६) ख़सके पंखेकी हवा करो।
(७) घी, दूध, मांस-रस या मीठे शीतल अवलेह सेवन कराओ।
(८) रोगी और रोगका विचार करके वमन-विरेचन कराओ।

(२१) धूपसे पैदा हुई प्यासमें जौ, बेर और नेत्रवालेका सत्तू मिश्री मिलाकर मन्थके रूपमें पिलाओ। तिलोंको पानीके साथ सिल पर पीस कर और काँजी मिलाकर सारे शरीर पर पोतो या लेप करो।

(२२) अगर शीतल जलमें स्नान करनेसे प्यास पैदा हो जाय, तो शराब और पानी पिलाओ अथवा गुड़का शर्बत पिलाओ।

(२३) ऊर्ध्ववातके कारणसे पैदा हुई प्यासमें क्षय और खाँसीकी दवाओंसे पकाया हुआ दूध या बकरेका मांस-रस दो।

(२४) रोगके उपसर्गसे पैदा हुई प्यासमें धनियेका पानी

पिलाना हित है। मिश्री और शहद मिलाकर काँजी पिलाना भी हित है।

नोट—रातको दो तोले धनिया पाव भर पानीमें भिगो दो। सवेरे ही मल-छान कर, उसमें एक या दो तोले मिश्री मिलाकर, वही पानी थोड़ा-थोड़ा पिलाओ। इससे प्यास शान्त हो जाती है। खूब परीक्षित है :

(२५) अगर प्यास-रोग पुराना हो, तो लाल चाँवलोंका भात पकाकर शीतल कर लो। फिर उसमें "शहद" मिलाकर खाओ। इससे बहुत समयकी प्यास आराम हो जाती है।

(२६) किसी हालतमें भी रोगीको पानी पिलाना बन्द न करना चाहिये। शास्त्रमें हर हालतमें कमो-बेश पानी पिलानेकी आज्ञा है। अन्न बिना प्राणी कुछ समय तक जी सकता है, पर जल बिना तो क्षण भरमें ही देह त्याग देता है।

कहा है :—

तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति।
तस्मात्सर्वास्ववस्थासु न क्वचिद्वारि वारयेत्॥
तृषापूर्वमपक्षीणो न लभेत जलं यदि।
मरणं दीर्घरोगं वा प्राप्नुयात्त्वरितं नरः॥

प्यासेको बेहोशी हो जाती है, बेहोशीसे प्राण छुट जाते हैं, इसलिये सब अवस्थाओंमें पानी पिलाना चाहिये। पानी किसी हालतमें भी न रोकना चाहिये।

प्यासेको अगर पहले जल न मिले, तो वह मर जाता है या उसे कोई बड़ा रोग हो जाता है।

"सुश्रुत उत्तरतंत्र"में लिखा है, प्यासके बहुत रोकनेसे जल-सम्बन्धी धातु क्षीण हो जाते हैं और शरीरकी गरमी बढ़ जाती है। उस समय मनुष्यके बाहर और भीतर दाह पैदा हो जाता है, सारा शरीर जलने लगता है, चेतना या बुद्धि मन्दी हो जाती है; गला,

तालु और होंठ, सूखने लगते हैं और रोगी काँपने लगता है। इस हालतमें इच्छापूर्व्वक थोड़ा-थोड़ा पानी पिलाना चाहिये अथवा मिश्री मिला दूध या ईखका रस पिलाना चाहिये। दाह पैदा हो जाने पर, गरमी शान्त करनी चाहिये और जलीय धातुएँ बढ़ानी चाहियें।
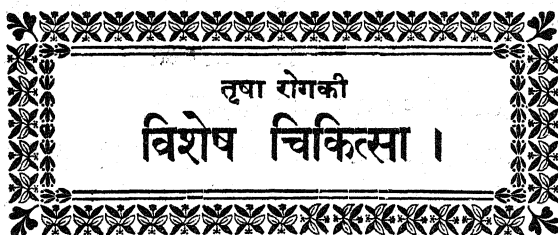
वातज तृषा नाशक नुसखे।

(१) सोने, चाँदी, लोहे या ईंट अथवा मिट्टीके ढेलेको आगमें खूब लाल करके पानीमें बुझा दो। इस पानीसे वातज तृषा शान्त हो जाती है।

(२) गुर्च या गिलोयका स्वरस निकाल कर तोले-तोले या छै-छै माशे कई बार पिलाओ। इस नुसख़ेसे वातज प्यास अवश्य शान्त हो जाती है।

(३) गुड़ मिलाकर दही खिलानेसे भी वातज प्यास आराम हो जाती है।

(१) कड़वे नीमके पत्ते, परवलके पत्ते और अड़ूसेके पत्ते—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। इसमेंसे ३ से ६ माशे

तक चूर्ण खिलाकर शीतल जल पिला दो और कय करा दो। कय होनेसे पित्त-विकार शान्त हो जायँगे। सुपरीक्षित है।

(२) कड़वे नीमकी छाल, धनिया, सोंठ और मिश्री—कुल दो तोले लेकर, डेढ़ पाव पानीमें पकाओ। जब आधा जल रह जाय, मल-छान कर रोगीको पिलाओ। इस काढ़ेसे पित्त शान्त होकर प्यास मिट जायगी। सुपरीक्षित है।

(३) कैथका गूदा निकाल कर उसमें बराबरकी चीनी या मिश्री मिला दो और रोगीको खिला दो अथवा कैथके पत्तोंको सिल पर पीस कर, कपड़ेमें रस निचोड़ लो और उसे गायके दूधमें मिलाकर रोगीको पिला दो। इन दोनोंमेंसे कोई एक उपाय करनेसे प्रबलसे प्रबल पित्त शान्त हो जायगा। सुपरीक्षित है।

(४) नागरमोथा, पित्तपापड़ा, नेत्रवाला, धनिया, खस, और लाल चन्दन—इसमें से प्रत्येक चार-चार माशे लेकर, एकमें मिला कर, डेढ़ या दो सेर जलमें औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, छान लो। इसमें से थोड़ा-थोड़ा पानी पिलानेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(५) गंभारीफल, मिश्री, लाल चन्दन, खस, पद्मकाष्ठ, दाख और मुलेठी—इन सबको दो तोले लेकर कुचल लो। शामके समय आध पाव खौलते हुए गरम जलमें इनको डालकर भिगो दो। दूसरे दिन सवेरे ही मल-छानकर रोगीको पिला दो। इससे भी पित्तज प्यास शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(६) गूलरके पके हुए फलोंका स्वरस या काढ़ा पीनेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है।

(७) अन्नके पचने पर "चाँवलोंका धोवन" पीनेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है। सुपरीक्षित है।

(८) धनिया, ख़स, काश्मरी, दाख, महुआ और चन्दन—इनको चार-चार माशे लेकर, डेढ़ पाव जलमें काढ़ा बना लो। आधा रहने पर मल-छान लो और १ तोले मिश्री मिलाकर रोगीको पिला दो। परीक्षित है।

(९) बड़की कोंपल, पठानी, लोध, चन्दन, अनार दाना और मिश्री—इनको पानीके साथ पीसकर और छान कर पीनेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है।

(१०) कूट, नील कमल, धानकी खील और बड़की कोंपल—इनको महीन पीस-छान कर और "चीनी" मिला कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके मुँहमें रख कर चूसनेसे पित्तकी प्यास जाती रहती है।

(११) दाख और नील कमल पीस कर खानेसे पित्तज प्यास मिट जाती है।

(१२) ईखका रस पीने या गंडेली चूसनेसे पित्तज प्यास जाती रहती है।

(१३) जली हुई मिट्टी, लोहा या बालूको आगमें तपाकर पानीमें बुझा दो। इस पानीके पीनेसे पित्तज प्यास जाती रहती है।

(१४) शर्बत चन्दन पानीमें मिलाकर पीनेसे पित्तज प्यास शान्त हो जाती है। अगर शर्बत न हो, तो सफेद चन्दनका चूर्ण ६ माशे सिल पर पीस कर पानीमें छान लो और अन्दाज़की चीनी मिलाकर पीओ।

(१) नीमकी छाल या पत्तोंका काढ़ा गरमा गरम पीकर कय करनेसे कफज तृषा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(२) ज़ीरा, अदरख़ और कालानोन—तीनों आठ-आठ माशे लेकर दो सेर पानीमें औटाओ। जब आधा पानी रहे, मल छानकर थोड़ा-थोड़ा पीलो। इस काढ़ेसे कफज तृषा शान्त हो जाती है।

(३) बिजौरा नीबू, कैथ, अनार, लोध्र और बेरोंका गूदा—इनको समान-समान लेकर सिल पर पीसो और मस्तक पर लेप करो। इससे दाह, शोष और प्यास रोग अवश्य नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) बेलकी छाल, अरहरके पत्ते, धायके फूल, पीपरामूल, चव्य, चीता, सोंठ और कुशमूल—इनको कुल मिलाकर दो तोले ले लो। फिर दो सेर जलमें औटाओ और आधा पानी रहने पर छान कर थोड़ा-थोड़ा पीओ। इससे कफज तृषा नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(५) इमलीको पानीमें भिगा दो। फिर उसके कुल्ले करो। इससे मुखका सूखना आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(६) बड़की जटा, महुआ, चाँवलकी खील, कूट और कमल-गट्टेकी गरी—इनको बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। चूर्णको "शहद"में सान कर जंगली बेर समान गोलियाँ बनालो। इन गोलियाँके चूसनेसे प्यास शान्त हो जाती है।

(७) शीतल जलमें खीलोंका मंड बनाकर और उसमें गुड़ तथा शहद" मिलाकर पीनेसे कफज तृषा शान्त हो जाती है।

(८) ज़ीरा, अदरख, सोंठ और संचर नोनको बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्णको पानीके साथ खानेसे कफज तृषा शान्त हो जाती है।

(९) खुशबूदार और ज़ायकेदार शराब पीनेसे कफज तृषा तत्काल आराम हो जाती है।

(१०) जामुनकी कोंपल, आमकी कोंपल, चाँवलोंकी खील,

चन्दन और धायके फूल—सबको समान-समान लेकर पीस लो। फिर अड़ूसेके पत्तोंके रसमें चूर्णको पीस कर चाटो। इससे कफकी प्यास, दाह और मूर्च्छा आदि नाश हो जाते हैं।

(११) अरहरकी दालके यूषमें धानकी खील और चीनी मिला कर पीनेसे कफज प्यास शान्त हो जाती है।

(१२) दूधमें कालीमिर्च मिलाकर पीनेसे कफज प्यास जाती रहती है।

(१३) बड़बेरीके पत्तोंका स्वरस पीनेसे कफज प्यास आराम हो जाती है।

तृषा या प्यासकी

सामान्य-चिकित्सा।
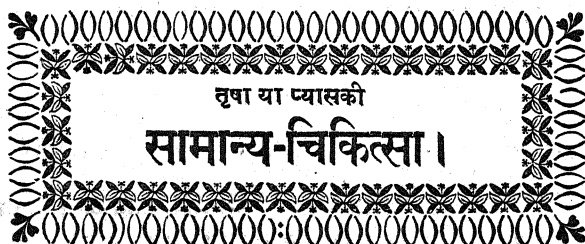
(१) भीगे कपड़े पर सोने और भीगा कपड़ा ओढ़नेसे प्यास और घोर दाह शान्त हो जाते हैं।

(२) ईखके रस और दूधको मिला लो। फिर उसमें दाख, मुलेठी, शहद और कमलकी जड़ डालकर नाकसे पीओ। इससे दारुण प्यास भी शान्त हो जाती है।

(३) शहदको मुँहमें भर कर १ घन्टा रखने और कुल्ले करनेसे घोर प्यास शान्त हो जाती है। सुपरीक्षित है।

(४) बिजौरे नीबूके १ तोले रसको १ माशे घी और १ माशे सेंधेनोनमें मिलाकर पीस लो और सिर पर लगा दो। इससे जीभ, तालू, कंठ और प्यास लगनेका स्थान सूखता हो, तो फौरन आराम मिलता है। सुपरीक्षित है।

(५) अनार, बेर, लोध, कैथ और बिजौरा नीबू—इनको महीन पीस कर माथे पर लेप करनेसे प्यास और जलन मिट जाती है।

(६) सवेरे ही दो तोले धनिया हाँडीमें औटाने और छान कर तथा "चीनी" मिलाकर पीनेसे प्यास और दाह शान्त एवं स्रोत शुद्ध हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) आमले, कमलकी जड़, कूट, धानकी खील और बड़के अङ्कुर—समान-समान लेकर पीस लो। फिर "शहद"में मिलाकर बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके मुहमें रखनेसे महा उग्र प्यास और दारुण शोष शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(८) बहुधा प्यास गरमीसे लगती है; इसलिये सादी सिकंजबीन पिलाने अथवा इसबगोलका लुआब शर्बत नीलोफरमें मिलाकर पिलाने या नीबू और चीनीका शर्बत पिलानेसे प्यास शान्त हो जाती है। यह यूनानी नुसखा है।

(९) पीपर-वृक्षकी छाल जलाकर पानीमें डाल दो। जब पानी नितर जाय, छान कर दूसरी हाँडीमें रखलो। इस पानीके दोदो तोले पीनेसे घोर प्यास और वमन शान्त हो जाती हैं। अनेक बारका परीक्षित नुसख़ा है।

(१०) अक्सर बच्चोंको गरमियोंमें तोंस या प्यासका रोग हो जाता है। दो तोले कमलगट्टे—हरीपत्ती निकालकर—जौ-कुट-करके, बालकके पीनेके आध सेर पानीमें डाल दो। फिर वही पानी उसे बारम्बार पिलाओ। आराम हो जायगा। सुपरीक्षित है।

(११) अगर आदमीको तोंस लगती हो, तो जंगली कण्डोंकी राख एक काँसीके बासनमें डालकर, ऊपरसे जल भर दो और उस बासनको प्यासेकी नाभिपर रख दो। इसके रखते ही जलन मिट जायगी। परीक्षित है।

(१२) आमले और सफेद कत्था पीसकर या रकते ही मुँहमें

रखकर चूसनेसे प्यास नाश हो जाती है। आमला १ भाग और कत्था आधा भाग मिलाकर, पानीके साथ पीसकर गोलियाँ बना लेनी चाहिये। इन गोलियोंके मुँहमें रखनेसे प्यास मिट जाती है।

(१३) बड़के अङ्कुर, पठानी लोध, अनारदाना, मुलेठी, मिश्री और शहद—इनको बराबर-बराबर लेकर पीस लो और ३।३ माशेकी गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली मुँहमें रख कर, ऊपरसे चाँवलोंका धोवन पीनेसे घोर प्यास नाश हो जाती है। सुपरीक्षित है।

(१४) खीलोंको पानीमें भिगोकर मसल लो। फिर उस पानीमें "शहद और सफेद कटेरीका स्वरस" डालकर पीलो। इससे घोर प्यास शान्त हो जायगी।

नोट—अगर सफेद कटेरी न मिले, तो दाख और खजूर मिलाकर पीओ।

(१५) नीलोफर, कूट, धानकी खील, बड़की कोंपल और शहद—इनमेंसे नीलोफरादि चारों दवाओंको पीसकर "शहद"में सान लो और बेर-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियोंके मुँहमें रखकर चूसनेसे घोर प्यास जाती रहती है।

(१६) अनार, बेर, चूका, बिजौरा नीबू और अम्लवेत—इनके रसोंमें पिसा-छना "हरड़का चूर्ण" मिलाकर तालू पर लेप करो। इससे मुँह सूखना और प्यास शान्त हो जाती है।

(१७) बिजौरे नीबूकी केशर चाँवलोंके पानीमें पीस कर पीनेसे तालू सूखना और ज्वर सहित प्यास नाश हो जाती है।

(१८) गरम किये हुए शहदका तालू पर लेप करनेसे मुँहका सूखना नाश हो जाता है।

(१९) शहद और चीनी मिलाकर तालू पर लेप करनेसे प्यास शान्त हो जाती है।

(२०) कमलकन्दको पानीमें पीसकर तालू पर लेप करनेसे प्यास नाश हो जाती है।

(२१) जामुनके पत्ते और आमके पत्ते पीस कर तालू पर लेप करनेसे प्यास मिट जाती है।

(२२) कागज़ी नीबू, बिजौरा नीबू और अचारका नीबू—इनको प्यास वालेके सामने खानेसे रोगीकी जीभ तर हो जाती है, देखनेसे ही उसकी जीभसे पानी छूटने लगता है। स्वयं रोगीके खानेको ये चीज़ें न देनी चाहिये।

(२३) लाल शालि चाँवलोंका भात "दही और मिश्री" मिलाकर खानेसे प्यास रोग आराम हो जाता है। बड़ी उत्तम दवा है। इस प खट्टे, नमकीन और चरपरे पदार्थ न खाने चाहिये।

(२४) शोष, प्यास, वमन, मिहनत और पानात्ययमें दिनमें सोना हितकर है।

(२५) लाल चाँवलोंके भातमें, शीतल होने पर, "शहद" मिलाकर खानेसे बहुत समयकी प्यास भी आराम हो जाती है।

(२६) धनिया, अडूसा, आमला, काले दाख और पित्त-पापड़ा—इनको २।३ तोले लेकर जौकुट करलो और रातके समय मिट्टीकी हाँडीमें, सेर-भर पानी डालकर, भिगो दो। सवेरे ही यही पानी रोगीको थोड़ा-थोड़ा पिलाओ। इससे प्यास निश्चय ही शान्त हो जाती है। खूब परीक्षाकी है।

(२७) रातको २ तोले धनिया मिट्टीकी हाँडीमें पानी डालकर भिगो दो। सवेरे ही छानकर और १ तोले "मिश्री" मिलाकर रोगीको पिलाओ। इससे प्यास और दाह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२८) धनिया सिल पर पानीके साथ पीस लो। फिर उसे पानीमें घोलकर और कपड़ेमें छानकर, उसमें थोड़ा-थोड़ा "शहद और चीनी" मिला दो और रख लो। इसमेंसे थोड़ा-थोड़ा पानी पीनेसे प्यास और दाह आराम हो जाते हैं। खूब परीक्षित है।

पत्तोंको पीस कर रस निचोड़ लो। उस रसमें "सफेद ज़ीरा और और मिश्री" पीस कर मिला दो। इसमेंसे माशे-माशे भर दवा, दिनमें कई बार, पिलानेसे बालकोंकी प्यास शान्त हो जाती है। खूब परीक्षित है।

(३०) सफेद प्याज़को भूँज कर महीन पीस लो और थोड़ा-सा "घी" मिलाकर गोली बना लो। इस गोलीको बालकके भेजे पर लगाकर, ऊपरसे अरण्डका हरा पत्ता रखकर, कपड़ा बाँध दो। नित्य शामके समय गोलीको सिरसे छुड़ा लो और सिरको अच्छी तरह धोकर, उस जगह "गायका ताज़ा मक्खन" लगा दो। साथ-साथ, थोड़ेसे सफेद प्याज़के रसमें ज़रासा "सफेद ज़ीरा और मिश्री" पीस कर मिला दो और बालकको पिलाओ। जब तक आराम न हो जाय, नित्य इस तरह करो। बालकोंके प्यास रोग पर यह उपाय सर्व्वोत्तम और सुपरीक्षित है।

(३१) आमके पत्ते और जामुनके पत्ते अथवा आम और जामुन की छाल अथवा आम और जामुनकी गुठलियोंकी मींगी लेकर पानीमें औटा लो। आधा पानी रहने पर मल-छान लो। फिर इसमें "शहद" मिलाकर पीलो। इस काढ़ेसे प्यास और वमनके रोग निश्चय ही शान्त हो जाते है।

(३२) धनियाका काढ़ा बासी करके पीनेसे भी प्यास शान्त होती देखी गई है।

(३३) बड़े नीबूका ज़ीरा, शहत और अनारके दाने एकत्र पीस कर कुल्ले करनेसे प्यास नाश हो जाती है;

(३४) अगर तालू सूखता हो तो दूध, ईखका रस, गुड़ या किसी खट्टी चीज़को पानीमें घोलकर कुल्ले करनेसे आराम हो जाता है।

(३५) ताम्रभस्म २ माशे और वंगभस्म १ माशे, दोनोंको

मिलाकर खरलमें डालो और ऊपरसे "मुलेठीका काढ़ा" डाल-डालकर १२ घन्टे तक खरल करो। इसका नाम "कुमुदेश्वर रस" है। इसकी मात्रा २ रत्तीकी है। इसको "चन्दनादि काढ़े"के साथ सेवन करनेसे हर तरहका प्यास रोग शान्त हो जाता है। प्यास रोगकी यह सर्व्वश्रेष्ठ दवा है। जब और जड़ीबूटीकी दवाओंसे प्यास रोग शान्त न हो, इसे काममें लाओ।

नोट—चन्दन, अनन्तमूल, नागरमोथा, छोटी इलायची और नागकेशर तीन-तीन माशे लो और धानकी खीलें १५ माशे लो। इन सबको १६ गुने पानीमें औटाओ, जब आधा पानी रह जाय उतार लो। यही "चन्दनादि क्वाथ" है। काढ़े के साथ कुमुदश्वेर रसकी १ मात्रा खानेसे प्यास और वमन दोनों आराम हो जाते हैं।

(३६) आलू बुखारा लाकर ज़रा आगमें भून लो और उसे मुँहमें रखकर चूसो। इससे प्यास अवश्य दब जाती है। सुपरीक्षित है।

तृष्णा रोगमें पथ्यापथ्य ।
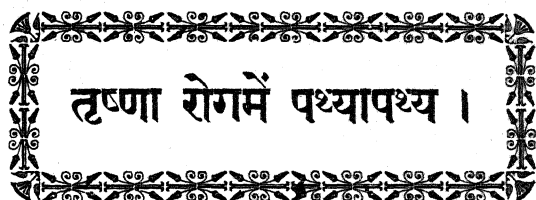
पथ्य ।

संशोधन, वमन—कय करना, स्नान करना, मुँहमें कवल या दवाओंका गोला रखना, जीभके नीचेकी शिराओं-नसोंको चिराग़ पर जलाई हुई हल्दीसे दागना, चन्दन लेपित स्त्रीको आलिङ्गन करना, रत्नादि आभूषण पहनना और शीतल पदार्थोंका लेप करना ये सब पथ्य हैं।

भुने हुए मूँग, मसूर या चनोंका रस, केलेका फूल, माठेमें रही हुई घीकी गोलियाँ, दाख, पित्तपापड़ेके पत्ते, कैथ, बेर, कमरख, कुम्हड़ा, खजूर, अनार, आमले, ककड़ी, खसका पानी, जँभीरी नीबू, बिजौरा नीबू, करौंदा, महुएके फूल, गायका दूध, चरपरे और मीठे रस, शीतल जल, पना, शहद, सरोवरका जल और शीतल हवा ये सब पथ्य हैं।

हाऊबेर, शतावर, नागकेशर, इलायची, जायफल, हरड़, धनिया, सुहागा, कपूर और कपूरकचरी आदि द्रव्य भी पथ्य हैं।

सारांश यह है कि, रुचिजनक, मधुर रस वाले और शीतल पदार्थ तृष्णा रोगमें सुपथ्य हैं।

अपथ्य ।

स्नेह कर्म, पसीने निकालना, अंजन लगाना, धूआँ पीना, कसरत-कुश्ती करना, नस्य लेना, धूपमें रहना, दाँतुन करना, भारी अन्न खाना ; खट्टे, कसैले और अति नमकीन रस सेवन करना ; त्रिकुटा—सोंठ, मिर्च, पीपर सेवन करना, दूषित मैला पानी और तीखे पदार्थ तृष्णा रोगमें अपथ्य हैं।

दवाएँ बनाने और सेवन करनेमें जानने योग्य बातें ।

स्वरस ।

स्वरस, कल्क, क्वाथ, हिम और फाँट इन पाँचोंको "कषाय" कहते हैं। ये उत्तरोत्तर हल्के होते हैं। स्वरससे कल्क, कल्कसे

उत्तम बनस्पति लाकर, सिलपर कूट-पीस कर कपड़ेमें होकर रस निचोड़ लो। इस निचुड़े हुए रसको ही "स्वरस" या "अङ्गरस" कहते हैं।

अगर गीली दवा न मिले, तो सूखी दवाको दवासे दूने पानीमें, मिट्टीके बर्तनमें, २४ घण्टे तक भिगो रखो। फिर मसलकर पानीको छान लो। यह पानी भी "स्वरस" ही है।

अगर गीली बनस्पति न मिले तो सूखी लाकर, उससे अठगुने पानीमें डालकर आगपर पकाओ। जब जलते-जलते चौथाई पानी रह जाय, मल-छान लो। यह भी "स्वरस" है।

अगर स्वरसमें शहद, चीनी, मिश्री, गुड़, जवाखार, ज़ीरा, सैंधा-नोन, घृत, तेल या चूर्ण वगैरः मिलाने हों, तो एक-एक कोल या आठ-आठ माशे डालने चाहियें।

स्वरस भारी होता है, अतः वह दो तोले देना चाहिये। यदि रात में दवा भिगोकर सवेरे काढ़ा किया जाय ; यानी दवा आगपर पकाई जाय, तो चार तोले दे सकते हैं।

कल्क।

गीली या सूखी दवाको पानी मिलाकर सिल पर पीस लो। यही "कल्क" है। इसकी मात्रा १ तोले की है।

कल्कमें शहद, घी, तेल प्रभृति मिलाने हों, तो स्वरससे दूने यानी दो-दो कोल या १६।१६ माशे डालने चाहियें। मिश्री और गुड़ डालने हों तो बराबर डालने चाहियें और पतले पदार्थ चौगुने डालने चाहिय।

पुटपाक।

पुटपाक और कल्क इन दोनोंका ही स्वरस लिया जाता है, अतः यहाँ पुटपाकके सम्बन्धमें लिखना उचित है।

सोलह तोले गीली दवाकी महीन पीसकर उसका गोला बनालो।

उस गोले पर बड़के पत्ते या जामुनके पत्ते अथवा कंभारीके पत्ते लपेट कर, एक अंगुल मोटा या दो अंगुल मोटा मिट्टी और कपड़ोंका लेप करो। मिट्टीका लेप करनेसे पहले, पत्तों पर डोरी या रस्सी लपेट दो, ताकि पत्ते जमे रहें। मिट्टी लपेटकर, गोलेको धूपमें सुखा लो। इसके बाद एक गज़-भर गहरा गड्ढा खोदो। उस गढ़ेके तीन भागमें जंगली या आरने कण्डे भर दो। कण्डोंके उपर दवाका गोला रख दो और गोले पर फिर कण्डे डालकर उसे ढक दो। अब आग लगा दो। जब उस गोलेकी मिट्टी अंगारोंके समान लाल हो जाय और कण्डोंकी राख हो जाय, उस गोलेको निकाल लो।

अब उस गोलेकी मिट्टी और पत्ते दूर करके, भीतरकी पकी हुई दवाको कपड़ेमें रखकर रस निचोड़ लो।

इस रसमें कल्क, चूर्ण या पतले पदार्थ मिलाने हों, तो स्वरसमें लिखे अनुसार यानी आठ-आठ माशे डालने चाहियें।

नोट—जब गोलेके ऊपरकी मिट्टी लाल हो जाय, तब समझ लो कि पुटपाक हो गया। उस समय गोलेको आगसे निकाल लेना चाहिये।

क्वाथ या काढ़ा।

चार तोले जौकुटकी हुई दवाको, सोलह गुने पानीके साथ, मिट्टीके बासनमें, मुँह खुला रखकर पकाओ। आग सदा मन्दी रखो। जब आठवाँ भाग पानी बाक़ी रहे, छानकर गरमागर्म या निवाया-निवाया रोगीको पिला दो। इसको शृत, कषाय, क्वाथ, और निर्यूह कहते हैं। वृद्ध वैद्योंके मतानुसार ८ तोले काढ़ा पीना चाहियें।

अगर काढ़ेमें ज़ीरा, गूगल, खार, नमक, शिलाजीत, हींग, सोंठ, मिर्च और पीपल—ये पदार्थ डालने हों तो चार-चार माशे डालो। अगर दूध, घी, गुड़, तेल, मूत्र या और पतले पदार्थ तथा कल्क और चूर्ण वगैरः डालने हों तो एक-एक तोले डालो।

अगर काढ़ेमें "चीनी या मिश्री" डालनी हो, तो वातरोगमें काढ़ेकी चौथाई ; पित्तरोगमें काढ़ेका आठवाँ हिस्सा और कफरोगमें काढ़ेका सोलहवाँ भाग डालो।

अगर काढ़ेमें "शहद" डालना हो, तो वातरोगमें काढ़ेका आठवाँ भाग, पित्तरोगमें सोलहवाँ भाग और कफरोगमें चौथाई डालना चाहिये।

नोट—काढ़े के बासन को ढकना ठीक नहीं है ; ढकने से काढ़ा भारी हो जाता है।

आजकल के योग्य नियम।

काढ़ेमें जितनी दवाएँ हों, वह सब बराबर-बराबर कुल मिलाकर दो तोले लेनी चाहियें। जैसे,—काढ़ेमें दो दवा हों तो दोनों एक-एक तोले लेनी चाहियें ; चार हों तो ६।६ माशे और आठ हों तो तीन-तीन माशे लेनी चाहियें। इस तरह जितनी दवाएँ हों, सब मिलाकर दो तोले लेनी चाहियें। सब दवाओंको सोलह गुने या ३२ तोले पानीमें औटाना चाहिये। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर काढ़ा छान लेना चाहिये। काढ़े में कोई और चीज़ मिलानी हो, तो काढ़ा पीनेके समय मिलानी चाहिये। अगर एक चीज़ मिलानी हो, तो ६ माशे मिलानी चाहिये। अगर दो चीज़ें मिलानी हों, तो तीन-तीन माशे मिलानी चाहियें। अगर रोगी कमज़ोर हो, तो मात्रा कम भी कर सकते हैं। काढ़ा नित्य ताज़ा बनाकर पीना चाहिये। सवेरे का पकाया हुआ भी शाम को न पीना चाहिये।

नोट—आजकल के लोग आयुर्वेद ग्रन्थ लिखे जानेके समय के जैसे बलवान नहीं होते, इसीसे वैद्योंने चार तोले की जगह दो तोले दवा काढ़े के लिये मुकर्रर कर दी है। काढ़े के सम्बन्ध में "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ट १३२-१३४ और पृष्ठ १७३ में बहुत कुछ लिखा है, उसे ज़रूर देख लेना चाहिये।

हिम।

चार तोले दवाको जौकुट करके, छैगुने जल में, मिट्टी के बासन में,

रातके समय भिगो दो। सवेरे ही उसे मल-छानकर पी लो; इसकी मात्रा ८ तोले की है। इसे "हिम" या "शीत कषाय" कहते हैं।

नोट—आजकल हिमके लिये भी चार तोले की जगह दो तोले दवा लेते हैं और छैगुने यानी बारह तोले पानी में रात को भिगो कर, सवेरे ही मल छान कर पीते हैं। आजकल यही नियम ठीक है। मात्रा भी २ तोले की है।

फाँट।

मिट्टी के बासन में चार तोले जौकुट की हुई दवा रखकर, ऊपर से चौगुना यानी सोलह तोले गरम पानी डाल दो और कुछ देर बाद दवा को मसल कर पानी को छान लो। यही "फाँट या चूर्ण" द्रव कहलाता है। इसकी मात्रा ८ तोले की है। इस में मिश्री, शहद और गुड़ प्रभृति काढ़े के नियमानुसार डालने चाहियें।

चूर्ण।

अगर दवाओं का चूर्ण बनाना हो, तो सब दवाओं को अलग-अलग कूटकर कपड़े में छान लो। फिर चूर्ण में जितनी चीज़ें मिलानी हों, सबको अलग-अलग तोलकर एक बर्तन में इकट्ठी कर लो। इसके बाद फिर कपड़े में छान लो। चूर्ण जितना ही महीन होगा, उतना ही अच्छा और गुणकारी होगा।

सभी चीज़ों को एक में मिलाकर कूट डालना और चलनी में छान लेना ठीक नहीं है। उस तरह आफ़त काटकर बनाये हुए चूर्ण आदि ठीक काम नहीं देते और रोगी खाते भी बेमन से हैं।

जो चीजें एक मेल की हों, उन्हें उनके मेल से ही कूटना-पीसना चाहिये—सबको मिलाकर नहीं। मान लो, किसी नुसख़े में और-और दवाओं के अलावः "पारा और गंधक" हों, तो पारे और गंधक को सब से अलग करके खरल करना चाहिये। जब इनकी काली कज्जली में पारे की चमक न रहे, तब ठीक घुटी समझ कर अलग रख देनी चाहिये।

और सब दवाओं के कुट-छन जाने पर, शेष में कज्जली को मिला देना चाहिये।

मुनक्का, अंजीर और छुहारे एक मेलके पदार्थ हैं। ये यदि सोंठ मिर्च आदि के साथ पीसे जायें, तो ठीक नहीं पिसेंगे, अतः इन्हें अलग पीसकर शेषमें मिला देना चाहिये। यह बात दवा बनाने वाले की बुद्धि पर मुनहसिर है। वह बुद्धि से समझ कर प्रत्येक वर्ग की दवाओं को मिला-मिला कर कूट सकता है।

पारा और गंधक कहीं भी आवें, सदा दोनोंको अलग पीसना चाहिये और पीछे और चीज़ों में मिलाना चाहिये। अगर किसी नुसखे में अभ्रक भस्म, बंग भस्म और ताम्बा भस्म के साथ सोंठ, मिर्च, पीपर आदि हों, तो इन भस्मों को सोंठ, मिर्च आदि में मिलाकर न पीसना चाहिये। ऐसा करने से ये छीजेंगी और गड़बड़ हो जायगी। किसी दवाकी भी तोल ठीक न रहेगी। ये तो आप ही काजल के समान बारीक होती हैं। सोंठ मिर्च आदि को अलग-अलग पीस-छानकर रखना चाहिये। मिलाने के समय अभ्रक भस्म आदि को तोलकर मिला देना चाहिये।

अनेक नुसखों में हींग पड़ती है। हींग को खाने की दवाओं में बिना घीमें भूने कभी न डालना चाहिये। कच्ची हींग डालने से चूर्ण और गोली आदि बदज़ायके हो जाते हैं। हाँ, लेपादि में हींग डालनी हो तो कच्ची ही डाल सकते हैं।

अगर किसी नुसखे में गंधक, पारा, कुचला, विष जमालगोटा, सिंगरफ, धतूरे के बीज, कपूर, गूगल, शिलाजीत, मूंगा, मोती, भिलावे, सुहागा, फिटकरी, चिरमिटी, अफीम और मैनशिल आदि पदार्थ लिखे हों, तो चाहे उनके पहले "शुद्ध" शब्द लिखा हो या न लिखा हो, आप शुद्ध ही डालें। ऐसे पदार्थ विना शोधे हुए डालने से लाभके बजाय हानि होती है।

नोट—प्रायः इन सभी चीज़ों के शोधने की विधियाँ "चिकित्सा चन्द्रोदय" चौथे भाग में और दूसरे भाग के अन्त में मिलेंगी ।

वटिका या गोली ।

अगर गोली बनानी हों, तो लिखी हुई दवाओं का चूर्ण बनाकर, जिस चीज़ के साथ खरल करने को लिखा हो, उसके साथ खरल करके जौ भर, सरसों के दाने बराबर, जंगली बेर-समान अथवा रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बनानी चाहियें । जितनी घुटाई ज़ियादा होगी, गोलियाँ उतनी ही अच्छी बनेंगी ।

अगर यह न लिखा हो कि, अमुक पतली चीज़ के साथ खरल करके गोलियाँ बनाओ, तो आप को "पानी" के साथ खरल करके गोलियाँ बनानी चाहियें । अगर गोली का परिमाण या तोल न लिखी हो, तो रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बनानी चाहियें ।

अवलेह या लेह ।

अवलेह बनाना हो, तो पहले दवाओं का काढ़ा पकाओ । काढ़ा पक जाने पर छान लो और उसे फिर आग पर पकाओ । जब गाढ़ा हो जाय, तब समझो कि अवलेह बन गया । मतलब यह है, कि काथादि को फिर दुबारा औटाकर गाढ़ा करने से जो रसकर्म होता है, उसे ही "अवलेह या लेह" कहते हैं ।

अगर चीनी से अवलेह बनाना हो, तो जितना चूर्ण हो उससे चौगुनी चीनी डालनी चाहिये । अगर गुड़ डालना हो, तो चूर्ण से दूना डालना चाहिये । अगर पतले पदार्थ के साथ अवलेह बनाना हो, तो वह भी चौगुना डालना चाहिये ।

अवलेह की चाशनी भी मोदक की तरह पकी होनी चाहिये । अवलेह को परीक्षा यह है कि, चाशनी में से तार छूटें, पानी में डालने से चाशनी डूब जाय और फैले नहीं तो समझो कि अवलेह ठीक बन गया ।

मोदक।

जो मोदक पाक करके न बनाने हों, तो दवाओं के चूर्ण को चूर्ण से दूने गुड़ और बराबर के शहद में खरल करके निर्दिष्ट मात्रा में गोलियाँ बनालो। अगर पकाकर मोदक बनाने हों, तो चूर्ण से दूना गुड़ या चीनी पानी में औटाओ; जब पक्की चाशनी हो जाय, तार छूटने लगें, चाशनी पानी में डूब जाय और फैले नहीं—तब चाशनी को नीचे उतार कर, उस में चूर्ण डाल दो और अच्छी तरह मिलाकर गोलियाँ बना लो। मोदक या गोलियाँ बन जाने पर, उन्हें घीके या चीनी-मिट्टी के बर्तन में रख दो।

नोट—कभी-कभी चाशनी के आग पर रहते हुए ही उसमें चूर्ण डाल दिया जाता है और नीचे उतार कर मोदक बनाये जाते हैं।

गुग्गुल पाक।

त्रिफला के काढ़े में गूगल को गलाकर छान लो और उसे फिर पका कर जिस में मिलाना हो मिला लो। इस तरह गूगल शुद्ध हो जाता है। अथवा गायके दूध या त्रिफला के काढ़े में गूगल को पकाकर छान लो। फिर उसे धूप में सुखाकर उसमें घी मिला दो। इस तरह भी गूगल शुद्ध हो जाता है। अगर गूगल को आग में पकाने को लिखा हो, तो पकाना चाहिये; नहीं तो चूर्ण वगैरः के साथ मिला लेना चाहिये।

नोट—गूगल शोधने की विधि बहुत अच्छी तरह समझाकर "चिकित्सा चन्द्रोदय" चौथे भाग के पृष्ठ ७५ में लिखी है।

तेल और घी पकाने की तरकीबें।

तिली के तेल को मूर्च्छित करने की विधि।

तेल को पकाने से पहले उसे मूर्च्छित कर लेना चाहिये। अगर तिलके तेल को मूर्च्छित करना हो, तो तेल को लोहे की या क़लईदार कड़ाही में डालकर, कड़ाही को चूल्हे पर रख दो और नीचे से मन्दी-

मन्दी आग लगाओ। जब तेलमें झाग आने बन्द हो जायँ, कड़ाही को नीचे उतार लो और तेल को शीतल होने दो।

कुछ शीतल होने पर, उस में हल्दी का पानी, फिर मँजीठ और उस के बाद क्रमशः लोध, नागरमोथा, नालुका, आमले, बहेड़ा, हरड़, केवड़े के फूल, बड़ की सोर और नेत्रवाला पीसकर मिला दो। ऊपर से तेल से चौगुना पानी डाल दो और मन्दाग्नि से पकाओ। जब थोड़ा सा पानी रह जाय, उतार कर रख दो और सात दिन तक मत छेड़ो। इसके बाद जब कोई तेल पकाना हो, तेलको छानकर ले लो और यथाविधि पकाओ। इस क्रिया से तेल मूर्च्छित हो गया।

नोट—चार सेर तिली का तेल लिया हो, तो मँजीठ पाव-भर और बाक़ी की हल्दी आदि दवाएँ छटाँक-छटाँक भर लो। हल्दी को पानीमें घोलकर तेल में पहले ही मिला दो। इसके बाद पिसा हुआ मँजीठ मिला दो और मँजीठ के बाद क्रमशः लोध प्रभृति मिला दो।

वातनाशक तेल में एक खास बात।

अगर वात नाशक तेल पकाना हो, तो मूर्च्छित तेल के आठवें-आठवें भाग आम, जामुन, कैथ और बड़े नीबू के पत्ते ले लो। जितने पत्ते हों, उनसे चौगुना पानी मिलाकर पत्तों को औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, पानी को छान लो। इस काढ़े को पहले के मूर्च्छित किये हुए तेल में मिलाकर औटाओ। जब थोड़ा सा पानी रह जाय तेल को उतार लो। यह तेल वातनाशक तेल पकाने के लिये उत्तम है।

नोट—जब वातनाशक तेल पकाना होता है, तब पहले के मूर्च्छित किये हुए तिलके तेल को आम-जामुन आदि के पत्तों के काढ़े के साथ फिर पकाते हैं, तब वह तेल वातनाशक दवाओं के साथ पकाने लायक होता है। वातनाशक तेल पहले हल्दी और मंजीठ आदि के साथ पकाया जाता है, इसके बाद आम-जामुन आदि के काढ़े के साथ पकाया जाता है। दो बार इस तरह पका लेने पर, तीसरी बार वातनाशक दवाओं के साथ पकाया जाता है। तीन बार पकने पर वातनाशक तेल

उत्तम बनता है। और तेल (सिवाय वातनाशक तेलके) दो बार ही पकते हैं। एक बार मूर्च्छित होते हैं और दूसरी बार जिन दवाओं के काढ़े वगैरः के साथ पकाने होते हैं पकाये जाते हैं। वातनाशक तेल ही तीन बार आग पर रखे जाते हैं। यह भी याद रखो, कि तिलोके तेलके मूर्च्छित करने को और दवाएँ हैं तथा सरसों के तेल और रेंडो के तेल वगैरः की और हैं।

सरसों का तेल मूर्च्छित करने की विधि।

सरसों के तेलको मूर्च्छित करना हो, तो यथाक्रम हल्दी, मँजीठ, आमले, नागरमोथा, बेल की छाल, अनार की छाल, नागकेशर, काला-ज़ीरा, नेत्रवाला, नालुका और बहेड़ा—इन सबको पीसकर तेल में मिला दो और तेल से चौगुना पानी ऊपर से डाल दो और पकाओ। जब थोड़ा पानी रह जाय, तेलको उतार लो।

नोट—चार सेर सरसों के तेल में मँजीठ पाव-भर और बाकी हल्दी प्रभृति दवाएँ दो दो तोले डालनी चाहियें।

रेंडी का तेल मूर्च्छित करने की विधि।

रेंडी के तेल को मूर्च्छित करना हो, तो मँजीठ, नागर मोथा, धनिया, त्रिफला, जयन्ती के पत्ते, बन-खजूर, बड़की सोर, हल्दी, दारुहल्दी, नालुका, केवड़े का फूल, दही और काँजी—इन सब चीज़ों और पानीको तेल में डालकर तेलको पका लो। मँजीठ पाव-भर लो और बाक़ी चीज़ें चार-चार तोले लो।

घी को मूर्च्छित करने की विधि।

अगर घीको मूर्च्छित करना हो, तो पहले घीको आग पर चढ़ा कर मन्दाग्नि से पकाओ; जब झाग उठने बन्द हो जायँ नीचे उतार लो। जब घी कुछ शीतल हो जाय, उसमें पहले हल्दीका पानी, फ़िर नीबू का रस और उसके भी बाद पिसी हुई हरड़, आमले, बहेड़े और नागरमोथा डालो। ये सब दवाएँ चार सेर तेल में कुल मिलाकर आठ तोले होनी चाहियें और पानी तेल की तरह चौगुना डालना चाहिये। जब पकते-पकते थोड़ा पानी रह जाय, घी को उतार कर रख देना चाहिये।

तेल और घी पकाने की विधि ।

तेल और घी—कल्क और काढ़े अथवा दूध, मूत्रादि पतले पदार्थों के साथ पकाये जाते हैं। जब पतले पदार्थ जलकर तेल या घी मात्र रह जाते हैं, तब तेल और घीको पका हुआ समझते हैं। जैसे—पाव भर दवाओं की पिसी लुगदी, सेर भर तेल और चार सेर दवाओं का काढ़ा इन तीनों को मिलाकर आग पर पकाओ। जब काढ़ा जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही साधारण विधि है।

पर शास्त्रमें अनेक स्थलों में तेलकी तोल लिखी रहती है, पर लुगदी या कल्ककी तोल नहीं लिखी रहती ; काढ़े की दवाएँ लिखी रहती हैं, पर कितना काढ़ा होना चाहिये, यह नहीं लिखा रहता। कहीं तेल या घी और लुगदी की दवाएँ लिखी रहती हैं, पर पतली चीज़ का नाम नहीं लिखा रहता। ऐसे मौक़ों पर अनजान आदमी चकराता है। इसके लिए शास्त्रमें नियम हैं। उन्हें तेल और घी वगेरः चिकने पदार्थ पकाने वालों को जानना चाहिये। हमने तो हर जगह तेल, कल्क और काढ़े आदि का वज़न वगेरः लिख दिया है। फिर भी कहीं भूल से हमने न लिखा हो, इसलिये नियम बतलाये देते हैं :—

(१) कल्क या लुगदी की दवाओं के वज़न से चौगुना घी या तेल लेना चाहिये। तेल-घी से चोगुने काढ़े, दूध और गोमूत्रादि लेने चाहिये। जैसे—पाव-भर लुगदी या कल्क हो, तो एक सेर तेल या घी और चार सेर काढ़ा या गोमूत्र आदि पतले पदार्थ लेने चाहिएँ।

(२) दूध, दही, स्वरस अथवा माठा डाल कर तेल और घी आदि पकाने हों, तो तेल या घी का आठवाँ भाग कल्क होना चाहिये ; यानी एक सेर तेल हो, तो आध पाव कल्क या लुगदी होनी चाहिये। यह भी नियम है और वह भी नियम है। ऊपर पाव-भर कल्क और सेर भर तेल-घी का नियम है और यहाँ आध पाव कल्क और सेरभर तेल-घी का नियम है। पर ख़ास बात यह है, कि अगर तेल-घी—दूध, दही,

स्वरस या माठा डाल कर पकाने हों। अगर काढ़ा डालकर पकाने हों, तो कल्क तेल का चौथाई ही रहना चाहिये।

नोट—काढ़ेसे तेल या घी चौथाई लेने चाहियें अथवा तेल या घीसे काढ़ा चौगुना होना चाहिये। काढ़ा चार सेर हो, तो तेल या घी एक सेर होने चाहियें। अथवा तेल या घी एक सेर हों तो काढ़ा चार सेर होना चाहिये।

(३) अगर तेल या घी पकाने के लिये काढ़ा पकाना हो, तो काढ़े की दवाओं में उनसे चौगुना पानी डालकर उन्हें पकाना चाहिये और जब चौथाई पानी रह जाय, काढ़े को उतार कर छान लेना चाहिये। इस काढ़े के साथ घी या तेल मिला कर औटाना चाहिये। जब तेल या घी मात्र बाक़ी रह जाय, उतार कर तेल या घी को छान लेना चाहिये। तेल या घी एक सेर हो तो काढ़ा चार सेर होना चाहिये।

नोट—गिलोय वगैरः नर्म दवाओं का काढ़ा पकाना हो, तो दवाओं से चौगुना पानी डाल कर काढ़ा पकाना चाहिये ; किन्तु अमलताश आदि सख़्त दवाओं में अथवा दशमूल आदि मध्यम दवाओं में अठगुना पानी डालकर काढ़ा पकाना चाहिये। पद्माख प्रभृति बहुत ही कड़ी दवाओं का काढ़ा पकाना हो, तो सोलह गुना पानी डालकर काढ़ा पकाना चाहिये, यह शास्त्र का नियम है। पर आजकल लोग इन नियमों का पालन बहुत कम करते हैं। बंगाल के नामी-नामी कविराज चौगुना या पँचगुना पानी डालकर काढ़ा पका लेते हैं और चौथाई रहने पर छान लेते हैं। फिर भी विचार के साथ काम करना उत्तम है। जितना ही ज़ियादा काढ़ा पकेगा, उतना ही अच्छा होगा। यह बात साधारण आदमी भी समझ सकता है। काढ़े की सभी दवाओं को अठगुने पानी में पकाना और चौथाई रहने पर उतार लेना सबसे अच्छा नियम है। यह बीचका नियम है। जैसे,—आठ सेर काढ़े की दवा को ६४ सेर पानी में औटाओ, जब सोलह सेर पानी रह जाय छान लो।

(४) अगर किसी तेल या घी में कल्क या लुगदी की दवाओं का ज़िक्र न हो, तो उस तेल या घी को काढ़े और दूध आदि के साथ अथवा केवल काढ़े के साथ पकाना चाहिये।

(५) बहुत बार तेल और घी काढ़े के साथ पकाये जाने के बाद

दूध, दही, काँजी, गोमूत्र और स्वरस आदिके साथ फिर पकाये जाते हैं। अगर ऐसा हो, तो पहले काढ़े के साथ पकाकर, फिर दूध, दही आदि जिसके साथ पकाना हो पकाने चाहिये। अगर कहीं दूध, दही आदि कितने लेने चाहियें—यह बात न लिखी हो, तो इनको घी या तेलके बराबर लेना चाहिये ; बशर्तें कि ये पाँच से अधिक हों। जैसे किसी तेल को काढ़े, दूध, गोमूत्र और काँजी के साथ पकाना हो, तो काढ़ा तेल से चौगुना और दूध वगैरः तेलके समान लेने चाहियें। मसलन एक सेर तेल पकाना हो, तो काढ़ा चार सेर, दूध एक सेर, काँजी १ सेर, गोमूत्र १ सेर इत्यादि।

नोट—यह भी क़ायदा है, कि अगर दूध, गोमूत्र, काँजी आदि पदार्थ गिन्ती में पाँच से ज़ियादा हों, तब तो ये तेल और घी के बराबर लिये जायँ, लेकिन यदि ये पाँच से कम हों—दो, तीन या चार हों—तो इन को तेल और घी से चौगुना लेना चाहिये।

(६) कहीं तेल के साथ काढ़े वगैरः पतले पदार्थों के साथ पकाने की बात न लिखी हो, केवल दूध के साथ पकाने की बात लिखी हो, तो दूध तेलसे चौगुना लेना चाहिये—नं ५ नियम के अनुसार तेल या घी के समान न लेना चाहिये।

(७) अगर कहीं कल्क का ज़िक्र तो हो, पर पतले पदार्थ का उल्लेख न हो, तो उस जगह तेल या घी से चौगुना "पानी" लेना चाहिये। जैसे,—एक सेर कल्क, चार सेर तेल या घी और सोलह सेर पानी मिलाकर तेल पकाना चाहिये।

(८) अगर कहीं तेल वगैरः फूलों के कल्क के साथ पकाने को लिखा हो, तो तेल या घी का चौगुना पानी डालना चाहिये और फूलों का कल्क तेल या घी का आठवाँ भाग डालना चाहिये।

नोट—यह भी कायदा है, कि अगर काढ़ेके साथ घी या तेल पकाने हों, तो उस में घी या तेल का छठा भाग कल्क डालना चाहिये। अगर माँस-रस के साथ घी या तेल पकाने हों, तो घी या तेल का आठवाँ भाग कल्क डालना चाहिये।

गन्धपाक विधि।

बहुत से तेल गन्ध पाक करने से उत्तम होते हैं। गन्धपाक की चाल बंगाल में बहुत है और अच्छी चाल है; अतः हम "गन्धपाक-विधि" लिखते हैं:—

कूट, नालुका, खस की जड़, जटामासी, तेजपात, जायफल, शीतल-चीनी, दालचीनी, लता कस्तूरी, बच, अगर, माथा, गठिवन, धूप—सरल, गुन्द बरोसा, लौंग, गन्धमात्रा, शिलारस, सोवा, मेथी, नागर मोथा, कचूर, जावित्री, देवदारु और ज़ीरा—इन सब को पानी के साथ सिल-पर पीस कर, चौगुने पानी में औटाओ। जब चौथाई पानी रहे छान लो। इस पानी के साथ तेल को पकाओ। पकते समय तेल में "खटासी" डालो। जब वह पककर गल जाय, निकाल लो। जब तेल का पाक हो जाय, पानी जल जाय, नीचे उतार लो। तब उसमें छरीला, कुंकुम, नखी, इलायची, सफेद चन्दन, कस्तूरी और कपूर—इन सब को डाल दो। फिर पाँच दिन तक तेल को मत छेड़ो। छठे दिन तेलको छान कर बोतलों में रख लो।

नोट—घीका गन्ध पाक नहीं होता।

दवा सेवन करने के समय।

रोगी और रोगी की अवस्थानुसार भिन्न-भिन्न समयोंमें दवा सेवन करायी जाती है:—

पित्त और कफ के रोग में तथा विरेचन आदि संशोधन के लिए सवेरे के समय दवा लेनी चाहिये।

अपान वायु दूषित हो, तो भोजन से पहले; समान वायु का कोप हो तो भोजन के बीच में यानी भोजन करते समय; व्यान वायु कुपित हो, तो भोजन के बाद; उदान वायु के कोप में सन्ध्या समय—भोजन के

साथ और प्राण वायु के कोप में सन्ध्या समय भोजनके बाद औषधि सेवन करनी चाहिये ।

हिचकी, आक्षेपवात और कम्प रोगों में भोजन से पहले और पीछे दवा सेवन करनी चाहिये ।

अग्निमांद्य और अरुचिमें भोजन के साथ दवा खानी चाहिये ।

प्यास, वमन, हिचकी, श्वास और विष रोग में बारम्बार दवा सेवन करनी चाहिये ।

साधारणतया प्रायः सभी औषधियाँ सवेरे ही सेवन करानेकी चाल है, पर यदि दो तीन दवाये रोज़ सेवन करानी हों, तो विचार-पूर्वक कोई सवेरे, कोई उसके दो तीन घण्टे बाद, कोई दोपहरको और कोई तीसरे पहर या शाम के समय सेवन करानी चाहिये ।

नोट—दवा खाने के समयों के सम्बन्ध में विशेष जाननेके लिये "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भागके पृष्ठ १३१-१३३ देखिये ।

अनुपान-विधि ।

अनेक दवाएँ सेवन करने के बाद कोई पतला पदार्थ पीते हैं, इसी को "अनुपान" कहते हैं । लेकिन आजकल "शहद" वगैरः जिस भी पतले पदार्थ में दवा को मिलाकर खाते हैं, उसे ही "अनुपान" कहते हैं । अनुपान के साथ दवा सेवन करनेने दवा जल्दी अपना काम करतो है, अतः प्रायः सभी दवाओं को अनुपान के साथ सेवन कराना चाहिये ।

जिस रोग को नाश करनेवाली दवा हो, उसी रोगको नाश करनेवाला अनुपान भी होना चाहिये ।

शीतल जल, गरम जल, आसव, मदिरा-शराब, यूष, काँजी, दूध, स्वरस वगैरः इनमें से जो भी रोगी के लिए मुफीद हो, उसीको अनुपान रूप से देना चाहिये ।

संसारको जन्म से मरण तक पानी हितकारी है । सारे रस

पानीसे ही तैयार होते हैं, इसलिये किसी भी अनुपानमें पानीकी मनाही नहीं है। मतलब यह कि स्वच्छ साफ पानी सभी अनुपानों में उत्तम है। कहा है—तोयं वा सर्वत्रेति; अर्थात् सर्वत्र जलका अनुपान ही श्रेष्ठ है।

वातादि रोगों में अनुपान।

वात रोग में चिकना और गरम; कफ रोगमें गरम और रूखा तथा पित्त रोगमें शीतल और मीठा अनुपान हित है।

वात और कफ के रोग में गरम पानी तथा पित्त और रक्त के रोग में शीतल जल पथ्य है।

ज्वरमें अनुपान।

वात ज्वर में—शहद, गिलोय का स्वरस और चिरायतेके भिगोये पानी आदि का अनुपान पथ्य है।

पित्त ज्वर में—परवल के पत्तोंका रस, पित्तपापड़ेका रस या काढ़ा, गिलोय का स्वरस और नीमकी छाल का रस या काढ़ा अनुपान रूप से पथ्य है।

कफ ज्वर में—शहद, पान का रस, अदरख का रस और तुलसी के पत्तों का रस अनुपान रूपसे पथ्य है।

विषमज्वर में अनुपान।

विषम ज्वर में—शहद, पीपर का चूर्ण, तुलसी के पत्तों का रस, हार सिंघार के पत्तों का रस, बेल के पत्तों का रस एवं काली मिर्च का चूर्ण आदि अनुपान रूप से पथ्य हैं।

अतिसार में अनुपान।

अतिसार रोग में बेल की छाल, कुड़े की छाल और धाय के फूल—इन का अनुपान देना चाहिये।

श्वास, खाँसी में अनुपान।

खाँसी, कफ प्रधान श्वास और ज़ुकाम में—अड़ूसे के पत्ते, तुलसी के पत्ते, पान और अदरख का रस, अड़ूसे की छाल, बभनेटी, मुलेठी, कटेली, कायफल और कूट आदि का काढ़ा एवं बच, तालीसपत्र, पीपर काकड़ासिंगी और बंसलोचन आदि का चूर्ण अनुपान के तौरपर दिये जा सकते हैं।

वात प्रधान श्वास में—शहद, बहेड़े का काढ़ा या बहेड़े के बीजों का चूर्ण अनुपान रूप में दे सकते है।

रक्तभेद, रक्तवमन और रक्तस्राव में अनुपान।

खून गिरने या खून की कय होने वगैर: में—अड़ूसे के पत्तों का स्वरस, अनार के पत्तों का रस, दूब का रस, कुड़े की छाल का काढ़ा, मोचरस का चूर्ण, विशल्यकरणी का रस या काढ़ा या बकरी का दूध अनुपान के तौर पर देना चाहिये।

शोथ रोग या सूजन में अनुपान।

बेल के पत्तों का रस, सफेद पुनर्नवे का रस या काढ़ा, सूखी मूली का काढ़ा और काली मिर्चका चूर्ण वगेरः अनुपान रूपमें दे सकते हैं।

पाण्डु और कामला में अनुपान।

पाण्डु और कामला अथवा पीलियामें पित्तपापड़े का रस या गिलोय का रस आदि अनुपान रूपसे देने चाहिये।

दस्त कराने के लिये अनुपान।

निशोथका चूर्ण, दन्ती की जड़ का चूर्ण, सनाय का काढ़ा या सनाय-भिगोया जल, गरम दूध, कुटकी का काढ़ा या हरड़-भिगोया पानी अनुपान के तौरपर दे सकते हैं।

पेशाब कराने के लिए अनुपान।

पेशाब कराने के लिये पत्थरचूर के पत्तों का स्वरस, शोरा-भिगोया

पानी, शीतल मिर्चों का चूर्ण, गोखरू के बीजों का चूर्ण, खस की जड़ का काढ़ा या काली ऊख की जड़ का काढ़ा अनुपान के तौरपर दे सकते हैं।

बहुमूत्र नाश करने के लिये अनुपान।

बहुमूत्र रोग नाश करनेके लिये गूलरके बीजोंका चूर्ण, जामुन के बीजों का चूर्ण, मोचरस, कच्ची हल्दी का रस, आमलों का स्वरस, सेमलके नये मूसले का रस, दारुहल्दी का चूर्ण, मँजीठ और असगन्ध का काढ़ा, घिसा हुआ सफेद चन्दन, कदम की छाल का स्वरस और गोंद भिगोया हुआ पानी अनुपान के तौरपर दे सकते हैं।

प्रदर रोग नाशार्थ अनुपान।

प्रदर रोग में अशोक की छाल का काढ़ा या गिलोय का रस वगैरः अनुपान रूप से देना चाहिये।

मन्दाग्नि रोग में अनुपान।

मन्दाग्नि नाश करने को अजवायन, अजमोद और सौंफका भिगोया पानी, या पीपल, पीपरामूल, काली मिर्च, चव्य, सोंठ और हींग का चूर्ण—इनमें से किसी को अनुपान के तौरपर दे सकते हैं।

वमन रोग में अनुपान।

वमन रोग में बड़ी इलायची का काढ़ा या चूर्ण अनुपान रूप से दे सकते हैं।

वात रोगों में अनुपान।

वात रोगों में त्रिफले का भिगोया पानी, शतावरका रस या बरियारे का काढ़ा इनमें से कोई अनुपान के तौर पर दे सकते हैं।

वीर्यवृद्धि के लिए अनुपान।

वीर्यवृद्धि और शरीर-पुष्टि के लिये मलाई, मक्खन, दूध, विदारीकन्द,

असगन्ध, कौंच के बीज, सेमर के मूसले का रस आदि अनुपान के तौर पर दे सकते हैं।

गिलोय के अनुपान।

घी के साथ गिलोय सेवन करने से वात रोग नाश हो जाते है।

गुड़ के साथ गिलोय खानेसे मल की रुकावट नाश हो जाती है।

मिश्री के साथ गिलोय पित्त को नाश करती है।

शहद के साथ गिलोय कफ को नाश करती है।

रैंडीके तेल के साथ गिलोय वातरक्त को नाश करती है।

सोंठ के साथ गिलोय आमवात को नाश करती है।

शहद के साथ गिलोय का स्वरस कामला या कमल पीलिया को नाश करता है। इतना ही नहीं, गिलोय का स्वरस शहद के साथ खाने से बीसों तरह के प्रमेह नाश कर देता है।

गिलोय का काढ़ा छोटी पीपरों के चूर्ण के साथ पीने से कफज जीर्ण ज्वर को नाश करता है।

गिलोय के काढ़े में घी औटाना चाहिये, जब "घी" मात्र रह जाय छान लेना चाहिये। इस घी के सेवन करने से वातरक्त और कोढ़ नाश हो जाते हैं।

गिलोय का १० माशे स्वरस एक माशे शहत और १ माशे सेंधा-नोन इन को मिलाकर खरल करो। इसको नेत्रों में लगाने से पिल्लार्म, तिमिर, दिनौंधी, काँच बिन्दु, खुजली, लिंगनाश और नेत्र के सफेद और काले भागके सब रोग आराम हो जाते हैं।

त्रिफले के अनुपान।

त्रिफले के चूर्ण को नित्य रात को शहद और घी के साथ खाने से समस्त नेत्र रोग आराम हो जाते हैं।

त्रिफले का काढ़ा गोमूत्र के साथ पीने से बादी और कफ से उत्पन्न हुई फोतों की सूजन भी दूर हो जाती है।

त्रिफले का काढ़ा शहद के साथ पीने से मेदवृद्धि नाश हो जाती है।

नोट—गरम पानी शीतल करके और उसमें शहद मिलाकर पीने से भी मेदवृद्धि नाश हो जाती है।

त्रिफले के काढ़े को बहेड़े की मींगी, मिश्री और शहद के साथ पीने से रक्तपित्त, दाह और पित्त शूल आराम हो जाते हैं।

त्रिफले के काढ़े को केवल शहद के साथ सेवन करने से कामला नाश हो जाता है।

त्रिफले का चूर्ण—शहद, घी और कान्तिसार इन तीनों के साथ, नित्य रात को, खाने से पुरुष चिड़े के समान मैथुन करने लगता है; यानी मैथुन से थकता नहीं।

निर्गुण्डी के अनुपान।

निर्गुण्डी का चूर्ण गोमूत्र के साथ सेवन करने से कोढ़ नाश हो जाता है।

निर्गुण्डी का चूर्ण घी के साथ खाने से दुबला-पतला और कमज़ोर आदमी खूब ताक़तवर हो जाता है।

निर्गुण्डी का चूर्ण गरम पानी के साथ खाने से मनुष्य रोगरहित हो जाता है।

निर्गुण्डी की जड़ घर में रखने से साँप घर में नहीं आता।

भाँगरे के अनुपान।

भाँगरे के पत्तों का रस काले ज़ीरे के चूर्ण अथवा तेल के साथ पीने से मनुष्य बुढ़ापे में भी जवान हो जाता है।

भाँगरे के पत्तों का रस गिलोय के रसके साथ एक महीना सेवन करने से समस्त रोग नाश हो जाते हैं।

मृत्युञ्जय रस के अनुपान।

सब तरह के ज्वरों में ... ... शहद के साथ।
वातज्वर में ... ... दही के पानी के साथ।
भयंकर सन्निपात में ... ... अदरख के रस के साथ।
अजीर्णज्वर में ... ... जम्बीरद्राव के साथ।
विषमज्वर में ... ... ज़ीरे और गुड़ के साथ।

वसन्त कुसुमाकर रस के अनुपान।

समस्त क्षय रोगों में ... शिलाजीत, मिर्च और शहद के साथ।
सब तरह के प्रमेहों में ... हल्दी, शहद और मिश्री के साथ।
हर्ष, पुष्टि और कामवृद्धि को...त्रिजात, गजपीपल और चन्दन के साथ।
वमन में ... ... शंखाहूली के रसके साथ।
अम्लपित्त में ... ... शतावर के रस, मिश्री और मधु के साथ।
भयंकर रक्तपित्त में ... मिश्री और चन्दन के काढ़े के साथ।

लोकनाथ रस के अनुपान।

ज्वर में ... धनिया और गुर्च के काढ़े के साथ।
रक्तपित्त में ... शहद और मिश्री मिले अड़ूसे के काढ़े के साथ।
कफ रोग में ... " "
श्वास में ... " "
खाँसी में ... " "
स्वरभंगमें ... " "
निद्रानाश में ... शहद में मिली हुई सिकी भाँग के साथ।
अतिसार में ... " "
संग्रहणी में ... " "
मन्दाग्नि में ... " "

शूल में	...	सांचरनोन, हरड़ और पीपर के चूर्ण एवं गरम
	...	जल के साथ।
अजीर्ण में	...	,, ,,
प्लीहोदर में	...	अनार के फूल के रस के साथ।
वातरक्त में	...	,, ,,
वमन में	...	,, ,,
गुदांकुर में	...	,, ,,
नकसीर में	...	,, ,,
नकसीर में	...	दूबके रस और चीनी में मिला कर सुँघाओ।
वमन में		शहद में मिलाकर खिलाओ।
हिचकी में		,, ,,

नोट—जो अनुपान लोकनाथ रसके हैं वे ही पोटली रस, मृगांक, हेमगर्भ और मौक्तिक रसके हैं।

स्वर्ण मालिनी वसन्त के अनुपान।

जीर्ण ज्वर में	...	छोटी पीपर और शहद के साथ।
धातुगतज्वर में	...	,, ,,
रक्तातिसार में	...	,, ,,
रक्तजनेत्र रोग में	...	,, ,,
पित्तज सब रोगों में	...	,, ,,
गर्भिणी के ज्वर में	...	जयन्ती के फूलों के साथ।

शिलाजीत के अनुपान।

मूत्रकृच्छ्रमें	...	छोटी इलायची और पीपर के साथ।
मूत्ररोध में	...	,, ,,
प्रमेह में	...	,, ,,
क्षयी में	...	,, ,,

रससिन्दूर के अनुपान।

वातरोग में .... पीपर और शहद के साथ।

कफरोग में ... त्रिकुटा और चीतेके चूर्ण के साथ।

पित्तरोग में ... शिलाजीत, मिश्री और कपूर के साथ।

व्रणरोग में ... त्रिफला और गूगलके साथ।

पुष्टिके लिये—चतुर्जात अथवा त्रिफला और सेमर के मूसले के साथ।

गंधक के अनुपान।

नेत्रज्योतिवृद्धि को—४ माशे गंधक त्रिफला, घी और भांगरेके रस में।

दीर्घायु को ... " " "

वीर्यवृद्धि को ... ...४ माशे गंधक दूध के साथ।

निर्बलता नाश करने को ... ... चीते के साथ।

चमड़े के दोषों को... ... ... मोचाफल के साथ।

खाँसी और श्वास नाश करने को ... ... अड़ूसे के काढ़े के साथ।

मन्दाग्नि नाश करने को ... ... त्रिफले के काढ़े के साथ।

शरीर के ऊपरी भाग के रोगों को ... " "

अनुपान की दवाओं का वज़न।

काढ़ा या दवा का भिगोया हुआ पानी पाँच तोले; स्वरस दो तोले या एक तोले और चूर्ण एक माशे या आधा माशे अनुपान में देना चाहिये। चूर्ण में शहद का अनुपान हो, तो उपयुक्त मात्रा में देना चाहिये। पित्त की अधिकता के सिवाय और सब हालतों में शहद देना चाहिये। गूगल, मोदक और गुड़ वगैरः दवाएँ अवस्था विशेष के अनुसार गरम जल, शीतल जल या गरम दूध के साथ देनी चाहियें। दवाओं से बने घी को छटाँक भर गरम दूध और तीन माशे चीनी के साथ खाना चाहिये।

रसादिक सेवन में अनुपान।

कोई रस या रसों के योग से बनी दवा अथवा मकरध्वज, अभ्रक,

बंग वग़ैरः सेवन करानी हों और अनुपान में कपूर, जायफल, पीप वग़ैरः का चूर्ण हो, तो ये एक-एकरत्ती देने चाहियें। शहद एक माशे देना चाहिये। अगर रस खिला कर काढ़ा पिलाना हो, तो सूखी या हरी दवा एक तोले लेकर आध पाव पानी में पकाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, शीतल करके छान लो और ३ माशे "शहद" मिलाकर पिलाओ। अगर गिलोय वग़ैरः का हिम अनुपान में हो, तो एक तोले दवा लेकर आधी छटाँक पानी में भिगो दो। सवेरे ही मलछान कर और "मिश्री" मिलाकर सेवन कराओ।

दवा सेवन कराने के क़ायदे।

दवा सेवन-विधि

नये रोग में सवेरे-शाम या चार-चार घण्टे के अन्तर से दवा देनी चाहिये और दवा के एक घण्टे बाद पथ्य दे सकते हैं। तेज़ और प्राणनाशक अथवा मारात्मक रोगों में दो-दो घण्टे या एक-एक घण्टे पर दवा देनी चाहिये।

पुराने रोगों में "चन्द्रोदय" आदि दवाओं के देने से अधिक लाभ होता है। पहले जड़ी बूटी से बनी हुई दवा ही देनी चाहिये; क्योंकि आज कल के अधिकांश रोगी गरमी सोज़ाक की सनद पाये हुए होते हैं। ऐसे रोगियों को एकाएकी बिना विचार किये रस दे देने से हानि होती है। हाँ, जब काष्ठादिक की बनी दवा से लाभ न दीखे, तब रस देना ही चाहिये। काष्ठादिक दवाओं की अपेक्षा रस अपना फल जल्दी दिखाते हैं।

अगर चार दफा या दो दिन तक दवा देनें से कोई लाभ नज़र न आवे, तो दूसरी दवा देनी चाहिये। कैसी ही उत्तम और परीक्षित दवा क्यों न हो, सभी को फायदा नहीं कर सकती। यही बात न होती, तो एक-एक रोग की हज़ारों दवाएँ मुनि लोग न ईजाद करते।

अगर एक ही रोग की दवा सेवन करानी हो, तो दिन में दो बार सवेरे-शाम सेवन करानी चाहिये ।

अगर दो रोग एक साथ हों, तो सवेरे के समय प्रधान रोग की दवा सेवन करानी चाहिये और शाम को अप्रधान रोग की अथवा सवेरे-शाम प्रधान रोग की दवा और बीच में दुःखदायी उपद्रव की दवा देनी चाहिये ।

कुछ पथ्य तैयार करने की विधि ।

बारली या अरारूट ।

बारली या अरारूट पकाने हों, तो इन्हें पहले गरम पानी में खूब मिला लो । इसके बाद दूध और मिश्री मिलाकर पका लो ।

साबूदाना ।

अगर साबूदाना पकाना हो, तो पहले साबू को बीनचुन कर शीतल जल में भिगो दो, फिर गरम औटते हुए जल में डाल दो और पकने दो । जब गल जाय—दाना अँगुली से पिस जाय, उसमें मिश्री वगैरः मिलाकर उतार लो । साबूदाना पानी में भी पकाया जाता है और दूध में भी ।

आटे की रोटी ।

आटे को एक घण्टे तक गूँद कर भिगो रखो, फिर खूब गूँद कर एक गोला सा बना लो और औटते हुए जल में उसे रख कर २० मिनट तक पकाओ । इसके बाद उसे निकाल कर फिर गूँदो और पतली-पतली रोटियाँ बना लो । रोटियों को ऐसी सेको, कि वे जलें भी नहीं और कच्ची भी न रहें । जब लाल-लाल चित्तियाँ पड़ जायँ, रोटी को तवे से उतार कर कोयलों में फुला लो । ये रोटियाँ हर किसी को हज़म हो जाती हैं । इनके खाने से बदहज़मी का ज़रा भी डर नहीं ।

मूँग-मसूर का जूस।

मूँग या मसूर जिसका जूस बनाना हो, उसमें नमक और मसाला बहुत कम मिलाओ। रोगी के लिये एकाध तेजपातका पत्ता, ५।७ काली-मिर्च और ज़रासा पिसा हुआ धनिया ही काफी मसाला है।

नोट—यस वगैरः की विधि चिकित्सा चन्द्रोदय दूसरे भाग में देखिये।

मानमण्ड।

मानकन्द का चूर्ण दो भाग और चाँवलों का आटा एक भाग उन्नीस गुने पानी में औटाओ। फिर माँड़को निकाल लो। यही मानमण्ड है।

लाजामण्ड।

ताज़ा धान की खीलें लाकर थोड़े से गरम जल में थोड़ी देर तक भिगो रखो। फिर खूब मसल कर कपड़े में छान लो। जो मांड़ जैसा पदार्थ कपड़े से नीचे गिरे उसे ही लाजामण्ड या धानकी खीलों का मण्ड समझो।

यवागू।

अधकचरे चाँवल या जौके चाँवलों की यवागू बनती है। मण्ड, पेया और लापसी तीन तरह की यवागू होती हैं। चावलों को १८ गुने पानी में पकाकर कपड़े में छान लेने से सफ़ेद पानीसा नीचे गिरता है। उसे "माँड़" कहते हैं। चाँवलोंको ग्यारह गुने पानीमें पकानेसे "पेया" बनती है और नौ गुने पानी में पकाने से "लपसी" बनती है। यवागू जब पानी की तरह पतली होती है, तब उसे पेया कहते हैं और जब वह गाढ़ी होती है "लपसी" कहते हैं। यह पेया और मांडकी तरह छानी नहीं जाती।

नोट—चिकित्सा-चन्द्रोदय दूसरे भाग में पेया वगैरः की अनेक विधियाँ खूब समझा कर लिखी हैं।

अन्नपथ्य।

लंघनों के बाद या यवागू वगैरः के बाद अन्नका पथ्य देना हो, तो चाँवलों को पच गुने पानी में पकाना चाहिये। चाँवलों के खूब सीज जानेपर मांड निकाल देना चाहिये। यह भात रोगी खा सकता है।

कुछ विष-उपविषोंके शोधनेकी विधि

मीठा विष।

विष के छोटे छोटे टुकड़े करके, तीन दिन तक, गोमूत्र में भिगो रखो, विष शुद्ध हो जायगा। गोमूत्र हर सवेरे रोज़ ताज़ा बदलो। शेष में उसकी छाल निकाल डालो।

नोट—सींगिया विष गोमूत्र में भीगने से नर्म हो जाय, उसमें सूई घुसाने से पार हो जाय, तब ठीक हुआ समझो। उसके टुकड़े करके सुखा लो और काम में लो।

जमालगोटा।

जयपाल के बीज के बीच में जो पतलीसी जिभली या पत्ता रहता है, उसे निकाल डालो। फिर दोलायन्त्र की विधि से बीजों को दूध में पका लो। जमालगोटा शुद्ध हो जायगा।

कुचला।

घीमें भून लेनेसे ही कुचला शुद्ध हो जाता है। अथवा मुलतानी-घोले पानी में पन्द्रह दिन तक कुचले के बीज भिगो रखो। फिर एक दिन दूध में और एक दिन गोमूत्र में उबाल लो। फिर छीलकर टुकड़े कर लो। टुकड़े करते समय बीज की दोनों पर्त्तं अलग कर दो। उन पत्तों के बीच में पान के आकार की पत्तीसी निकले उसे फेंक दो। इन टुकड़ों को गीले ही पीसकर सुखा लो।

धतूरे के बीज।

धतूरे के बीज कूटकर, गोमूत्र में १२ घण्टे तक भिगो रखो। बस, वे शुद्ध हो जायगें।

नौसादर।

नौसादर को गरम पानी में घोंटकर, रेज़ी के कपड़े में छान लो और उस पानी को रखा रहने दो। बासन के पेंदे में, पानी के शीतल होने पर, जो चीज़ जमी हुई दीखे, उसे शुद्ध नौसादर समझो।

भिलावे।

ईंट के चूर्ण में खूब घिसने से भिलावे शुद्ध हो जाते हैं। पका हुआ भिलावा जो पानी में डूब जाय, वही अच्छा होता है।

नोट—भिलावे के फलों को आग पर खूब लाल किये हुए ठीकरे पर डाल दो। गरमी के मारे तेल निकल जायगा और ये कामके योग्य हो जायंगे; क्योंकि भिलावे का ज़हर उसके तेलमें ही होता है। जहाँ तेल निकल गया कि ये शुद्ध हो गये। यह तरकीब आसान है, पर भिलावे का धूआँ शरीर के लगने से शरीर सूज जाता है। अतः अगर इस तरकीब से भिलावे शोधो, तो धूआँ से बिल्कुल बचना; नहीं तो एक व्याधि खड़ी हो जायगी। यदि ग़फ़लत से धूआँ लग जाय और शरीर सूज जाय, तो सातवें भाग में "शोथ-चिकित्सा" में भिलावे की सूजन नाश करने के जो उपाय लिखे हैं उनसे काम लेना। धूआँ से बचने के लिए ही लोग भिलावों को ईंटके चूर्ण या कूकुए से घिसकर शोधते हैं। अनेक वैद्य भिलावों को भैंसके गोबर में डालकर भी उबालते हैं, पर उसमें भी धूआँ का कुछ भय रहता है।

हींग।

लोहे की कड़ाही में थोड़ा घी डालकर गरम करो, फिर उसमें हींग डालकर चलाओ। जब हींग लाल हो जाय, उसे शुद्ध समझो।

समन्दर फेन।

कागज़ी नीबू के रस में समन्दरफेन को पीसो। बस, वह शुद्ध हो जायगा।

गेरू।

गाय के दूध में पीसने या गाय के घीमें भून लेने से गेरू शुद्ध हो जाता है।

सुहागा और फिटकरी ।

इन दोनोंको आगपर रखकर फुलाओ ; जब खीलसी हो जायँ, शुद्ध समझो ।

रसौत ।

रसौत को बड़े नीबू के रस में मिलाकर दिन भर धूप में रखो, रसौत शुद्ध हो जायगी । अगर नीबू न मिले तो पानी में घोलकर छान लो । इस तरह भी शुद्ध हो जायगी ।

सिन्दूर ।

दूध और नीबू के रस में खरल करने से सिन्दूर शुद्ध हो जाता है ।

शंख, सीप और कौड़ी ।

शंख आदिको काँजी में दोला यंत्र की विधि से तीन घण्टेतक औटाओ, बस ये शुद्ध हो जायेंगे ।

नोट—अगर शंख वगेरः की भस्म करनी हो, तो इन्हें एक मिट्टी की हाँडी में रखो और हाँडी का मुँह बन्द करके, हाँडी को आग के बीच में रख दो, भस्म हो जायगी ।

शिलाजीत ।

शिलाजीत को तीन घण्टेतक गरम जल में भिगो रखो । फिर उसे कपड़े में होकर एक मिट्टी के बर्त्तन में छान लो और धूपमें दिन-भर रखा रहने दो । सन्ध्या-समय पानी के ऊपर जो मलाई सी जमी देखो, उसे उतार-उतार कर दूसरे बर्तन में रख लो । इसी तरह फिर उस पानीवाले बर्त्तन को दूसरे रोज़ धूप में रखो । शाम को, पहले के मलाई वाले बर्त्तन में फिर मलाई उतार कर रख लो । यह मलाई ही शुद्ध शिलाजीत है । इसे सुखाकर रख लेना चाहिये ।

शिलाजीत को त्रिफले के काढ़े में घोल कर धूप में रख दो । ज्यों-ज्यों सूख-सूख कर मलाई सी जमे, उसे उतारते जाओ और सुखा लो । यह भी शुद्धि की एक विधि है ।

नोट—शिलाजीत शोधने की और भी अनेक विधियाँ हमने "चिकित्सा चन्द्रोदय" चौथे भाग के पृष्ठ ५०-५३ और ४०८-४०६में लिखी हैं। ये सीधी तरकीब हैं, इसीसे लिखी हैं।

मण्डूर।

सौ बरसके पुराने लोहे के मैल को आगपर सात बार तपा-तपाकर गोमूत्र में बुझा दो। इसके बाद उसे पीसकर गजपुट में फूँक दो। बस, वह कामका हो जायगा।

खपरिया।

दोला यंत्र की विधि से, सात दिन तक गोमूत्र के साथ औटाने से खपरिया शुद्ध हो जाता है।

गंधक।

लोहे की कलछी में थोड़ा घी गरम करो। फिर उसमें गंधक पीस कर डाल दो। जब गंधक गलकर घी में मिल जाय, उसे पानी मिले दूध में डाल दो। फिर उसे दूध से निकाल कर और साफ पानीसे धोकर सुखा लो। इस तरह गंधक शुद्ध हो जायगी।

हरताल।

पहले हरताल को दोला यंत्रकी विधिसे सफेद कुम्हड़े के रसमें औटाओ। इसके बाद चूनेके पानी में औटाओ। उसके भी बाद तेल में औटाओ। तीनों ही बार, तीन-तीन घण्टे तक, दोला यंत्र की विधि से औटाओ।

वंसपत्र हरताल सात दिन तक चूने के पानीके साथ खरल करने या भावना देने से शुद्ध हो जाती है।

हिंगुल से पारा निकालना।

पहले हिंगलू को ३ घण्टे तक बड़े नीबू के रस या नीम के पत्तों के रस में खरल करो। फिर उसे एक हाँडी में भर दो। उसके ऊपर दूसरी हाँडी औंधी रखकर, दोनों के जोड़ोंपर पाँच सात कपड़मिट्टी कर

दो। ऊपरवाली हाँडी पर मोटे कपड़े की आठ दस तह कर के रख दो और उस कपड़े को पानी से तर कर दो। हाँडी को चूल्हे पर रख दो और नीचेसे आग देते रहो। जब ऊपर की हाँडी का कपड़ा गरम हो जाय, उस पर शीतल पानी टपकाते रहो। इस तरह करने से हिंगुल से पारा निकल-निकल कर ऊपर वाली हाँडी में लगता रहेगा। आठ घण्टे बाद उतार कर, ऊपर की हाँडी से पारा निकाल लो। यह पारा काले-काले मैले धूले में मिला होगा। पारे को कपड़े में होकर पाँच सात बार छान लो। यह पारा शुद्ध होता है और सब काम में बरता जा सकता है।

नोट---अगर यह हिंगल से निकाला हुआ पारा नीब के रस में दो तीन घण्टे घोटकर पानी में धो लिया जाय, तो बहुत ही विशुद्ध हो जाय। अगर नीबू न मिले तो इमली के घोले हुए पानी में भी खरल करने से काम चल जायगा।

भीमसेनी कपूर।

भीमसेनी कपूर बनाने की विधि: चिकित्सा चन्द्रोदय चौथे भाग के पृष्ठ ८७-८८ में लिखी है। जहाँतक हो सके भीमसेनी कपूर ही बना लेना चाहिये। अगर न बन सके, तो कपूर के छोटे-छोटे टुकड़े करके एक तवे पर रखो और ऊपर से एक गहरा कटोरा औंधा मार दो। कटोरे और तवे की सन्धियों को पानी में सने हुए उड़द के आटेसे बन्द कर दो। जब जोड़ सूख जायँ, तवे को आग पर चढ़ा दो। थोड़ी देरमें कपूर उड़-उड़ कर कटोरे में जा लगेगा। यह कपूर शुद्ध होगा। शुद्ध कपूर या भीमसेनी कपूर की जगह इसी कपूरको काम में लाना चाहिये।

मोती-मूंगा।

मोती और मूंगों को तीन घण्टे तक चूने के पानी में औटाकर धो लो। फिर इन को अर्क गुलाब के साथ खूब घोटो। जितनी ही ज़ियादा घुटाई होगी, उतने ही ये अच्छे होंगे। यह सीधी शोधन-विधि है।

नोट--अगर शुद्ध मूंगों को सफेद काँच के बर्तन में भरकर ऊपर से अर्क गुलाब

भर दोगे और उस बर्तन को चार दिनतक चन्द्रमा की चाँदनी में खुले मुँह रखोगे तो "चन्द्रसिद्धप्रवाल" तैयार हो जायगा।

सत्त।

अगर किसी चीज़का सत्त निकालना हो, तो उसे गीली ही पीसकर पानी में घोल दो और ऊपरका पानी निकालो। फिर पानी दो और निकालो; इस तरह बारम्बार करने से नीचे सफ़ेद पदार्थ रह जाता है; वही "सत्त" है। अगर गिलोय का सत्त निकालना हो, तो इसी तरह निकाल लो। उसे गीली ही पीस कर पानी में घोल दो और बारम्बार पानी डाल-डालकर धोओ। नीचे जो श्वेत पदार्थ रह जाय, उसे गिलोयका सत्त समझो।

संखिया।

संखिया के छोटे-छोटे टुकड़ों को पोटली में बाँधकर, दोला यंत्र की विधि से, चूने के पानी में औटाओ। इसके बाद उनको गोमूत्र में औटाओ। इस तरह दो चीज़ों में दो बार स्वेदन करने या औटाने से संखिया शुद्ध हो जाता है।

मैनशिल।

मैनशिल के उत्तम रंगीन टुकड़ों को तोड़कर अदरख के रस में तीन घण्टे तक घोटो और सुखा लो। बस, मैनशिल शुद्ध हो जायगा।

नोट—अगर अदरख न मिले तो अगस्त के पत्तों के रस में मैनशिल को घोट कर सुखा लो। इस तरह भी मैनशिल शुद्ध हो जाता है।

अफीम।

अफीम अदरख के रस की बारह भावना देने से शुद्ध हो जाती है। अथवा अफीम के छोटे-छोटे टुकड़े करके अदरख के रस में घोल दो। फिर रसको कपड़ेमें छान कर सुखा लो। इस तरह भी अफीम शुद्ध हो जाती है।

क्षार या खार।

किसी चीज़ को जलाकर, उससे उसके क्षार या ऐसिडको अलग

करना ही क्षार बनाना है। कमोबेश खार या क्षार सभी तरह के काठों में पाया जाता है। अगर चिरचिरे का क्षार बनाना हो, तो चिरचिरे का पेड़ जड़ से उखाड़ लाओ और सुखा लो। जब सूख जाय, उसमें आग लगा दो। जब राख हो जाय, उस राख को एक बासन में राख से दूना पानी डालकर भिगो दो। छै घण्टेतक मत छेड़ो। इसके बाद उस राख के पानी को धीरे-धीरे नितारकर दूसरे बासन में छान लो और उस राखको फेंक दो। फिर एक घण्टा होने पर, उस साफ पानी को धीरेसे नितारकर कड़ाही में छान दो और मन्दी आग लगने दो। जब सारा पानी जल जाय, यहाँतक कि एक बूँद भी न रहे, कड़ाही को नीचे उतार लो और उसमें जो पदार्थ लगा दीखे उसे चाकूसे छील-छीलकर उतार लो। बस, यही चिरचिरेका खार है। इसी तरकीब से आप ढाक का क्षार, जवाखार, चने का खार, मूली का खार, केले का खार, कटेरी का क्षार और इमली का खार वगेरः तैयार कर सकते हैं।

नोट—इमली का वृक्ष आप जड़ से उखाड़कर जला नहीं सकते, अतः ऐसे-ऐसे भारी वृक्षों की पत्तियों को ही जलाकर राख कर लो और ऊपर की विधि से क्षार बना लो।

संख्यावर्ग।

क्षारद्वय।

सज्जी और जवाखार, दोनों को मिलाकर "क्षारद्वय" कहते हैं। ये मिले हुए भी गुल्म रोग नाशक हैं।

क्षारत्रय।

सज्जी, जवाखार और सुहागा—ये तीनों मिले हुए "क्षारत्रय" या "त्रिक्षार" कहाते हैं।

क्षारषट्क।

तिलों की नाल का खार, कलिहारी का खार, उड़दका खार, चिरचिरे का खार, मोखे का खार और कुड़ेका खार—इन को "क्षारषट्क" कहते हैं। ये वात, गर्भ, गुल्म और रुधिर-विकार नाशक हैं।

द्विकटुक।

पीपल और काली मिर्च को "द्विकटुक" कहते हैं।

त्रिकटु।

पीपर, मिर्च और सोंठ को, "त्रिकटु" त्र्यूषण, व्योष और कटुत्रिक कहते हैं।

लवण त्रय।

सधानोन, विरिया संचर नोन और संचल नोन,—इन तीनों को "लवणत्रय" कहते हैं। ये कफनाशक और पित्तवर्द्धक हैं।

लवण पञ्चक।

सैंधा नोन, संचर या काला नोन, विरिया संचर नोन, औद्भिद नोन और समन्दर नोन,—इन पाँचों को "लवणपंचक" कहते हैं। ये शोषक, रुचिकारक, मल अनुलोमक तथा वात, कफ और शूलनाशक होते हैं।

त्रिफला।

हरड़, बहेड़ा और आँवले—इनको समान-समान लेने से "त्रिफला" कहते हैं। इनको "फलत्रिक और वरा" भी कहते हैं।

नोट—किसी-किसी के मत से एक हरड़, दो बहेड़ा और चार आमले मिले हुए को "त्रिफला" कहते हैं। त्रिफला कफपित्तनाशक, प्रमेहहारक, कुष्ठ निवारक, दस्तावर, नेत्रों को हितकारी, अग्निप्रदीपक, रुचिकारी, विषम ज्वरनाशक, मुख-रोगनाशक, गलगण्ड निवारक, व्रणनाशक, अवस्था स्थापक, वीर्यवर्द्धक, किसी, कदर दस्तावर, नासूरनाशक, कण्डू-खुजली नाशक, मेधा और स्मरणशक्तिवर्द्धक, रोगनाशक और व्रणपूरक तथा क्लेदनाशक है।

मधुर त्रिफला।

दाख, कुम्भेर और खजूर—इन तीनों को "मधुर फलत्रय" कहते हैं। ये धातुवर्द्धक और कफवातनाशक हैं।

सुगन्ध त्रिफला।

जायफल, सुपारी और लौंग—इन तीनों को "सुगन्ध त्रिफला" कहते हैं।

त्रिसुगन्धि।

दालचीनी, तेजपात और इलायची—इनको "त्रिसुगन्धि" कहते हैं।

नोट—इन तीनों में "नागकेशर" मिली हो, तो "चतुर्जातक" कहते हैं।

त्रिसम।

हरड़, सोंठ और गुड़—इन तीनों एकत्र मिले हुओं को "त्रिसम" कहते हैं।

चतुर्जातक।

इलायची, दालचीनी, तेजपात, और नागकेशर—इन चारों मिले हुओं को "चतुर्जातक" कहते हैं।

पञ्चकोल।

पीपर, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ—ये पाँचों एकत्र मिले हुए "पञ्चकोल" कहाते हैं।

पञ्चत्वक्।

बड़, नदी बड़, गूलर, बैत और पीपल,—इन पाँचों की एकत्र मिली हुई छालों को "पञ्चत्वक्" कहते हैं।

नोट—कोई-कोई के मत से बड़, गलर, पीपर, पारिस पीपर और पाखर—इन पाँचों की एकत्र मिली छालोंको "पंचत्वक" कहते हैं। इन पाँचों वृक्षों के पत्तों को "पंच पल्लव" कहते हैं।

पञ्चाङ्ग।

किसी एक वृक्ष के पत्ते, फल, फूल, छाल और जड़—इन सबको एकत्र "पञ्चाङ्ग" कहते हैं।

लघु-पञ्चमूल।

शालपर्णी, पृष्ठपर्णी, कटाई, कटेरी और गोखरू—इन पाँचों को ग्घुपञ्चमूल" कहते हैं। ये न अत्यन्त गर्म और न अत्यन्त शीतल हैं।

बृहत्-पञ्चमूल।

बेल, स्योनापाठा, कुम्मेर, पाढल और अरणी—ये पाँचों एकत्र मिले "बृहत्-पञ्चमूल" या "महत्-पञ्चमूल" कहाते हैं। यह कफ-वात-ाक, श्वाँस-खाँसी हरनेवाले, हल्के और अग्निदीपक हैं।

मध्यम पञ्चमूल।

खिरेंटी, पुननवा, मुगवन, मषवन और अरण्ड—इन पाँचों को ळाकर "मध्यम पञ्चमूल" कहते हैं।

तृण पञ्चमूल।

शर, ईख, दाभ, काँस और नल—इन पाँचों की जड़ को "तृण पञ्च-" कहते हैं।

नोट—"चक्रदत्त" में लिखा है,—कुश, कांस, सरपता, दाभ और ईख—इन ों की मूल को "तृण पंचमूल" कहते हैं।

अष्टवर्ग।

जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, ऋद्धि, वृद्धि, काकोली और क्षीर-कोली—इनको "अष्टवर्ग" कहते हैं।

जीवनीयगण।

अष्टवर्ग की दवाओं में "जीवन्ती" और मिला देने से "जीवनीयगण" जाती है।

स्वास्थ्यरक्षा

पर

मौजी की मौज

श्रीमान् पण्डितवर महादेव सिंहजी शर्म्मा एम० ए० सम्पादक-"मौजी" मौजी में लिखते हैं :—

"स्वास्थ्य-रक्षा उर्फ तन्दुरुस्तीका बीमा। लेखक ;—श्रीयुक्त बाबू हरिदास वैद्य ; प्रकाशक ;—हरिदास एण्ड कम्पनी ; कलकत्ता। आठवाँ संस्करण है। पृष्ठ-संख्या कोई साढ़े चार सौ। मूल्य अजिल्द तीन रुपये ; बढ़िया सजिल्द पौने चार रुपये ; प्रस्तुत पुस्तक प्रकाशकसे प्राप्त। इस समय अन्यान्य भाषाओंकी तरह हिन्दीमें भी स्वास्थ्य-सम्बन्धी पुस्तकोंका बाहुल्य होता जा रहाहै, किन्तु यह स्वास्थ्य-रक्षा अनेक पुस्तकों में एक है। अपनी उपादेयता ; सरलता और उत्तमताके लिये बेजोड़ है। वैद्यक जैसे नीरस विषयको इतनी सरल भाषामें लिखके समझाना यह बाबू हरिदास जैसे सिद्धहस्त लेखकके घोर परिश्रमका ही प्रतिफल है। हिन्दी जाननेवाले दूर-दूरके ग्रामोंमें रहनेवाले देहाती भाई ; शहरके जीवनसे बिल्कुल अनभिज्ञ मनुष्य ; डाक्टर और वैद्यहीन ग्रामका कृषक केवल स्वास्थ्य-रक्षा घरमें रखके किस तरह भीषण रोगोंसे अपनी रक्षा कर सकता है ; यह इस पुस्तकमें अच्छी तरह समझा दिया गया है। आज प्रायः वैद्यराजोंकी भारमार हो रही है ; इनमें से बहुतेरे इस 'स्वास्थ्य-रक्षा' पुस्तककी करतूतसे ही हुए हैं ; इस पुस्तकके इतने संस्करणोंका होना ही इसकी उपयोगिताका अकाट्य प्रमाण है। जो तन्दुरुस्तीको लाख नियामत समझते हैं ; जो अपने जीवनको निरामय बिताना चाहते हैं और केवल हिन्दी जानते हैं ; उनके लिये यह पुस्तक दोस्तका काम करेगी ; समयपर वैद्यकी तरह प्राण बचायेगी ; बेकारी छुटायेगी और चिकित्सा-शास्त्र-प्रेमियों की प्रवेशिका बनेगी। पुस्तक सर्व्वथा संग्रहणीय है।"